Mangal Kosha I Part

मङ्गल कोष

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दोंका तात्पर्य्य प्रकाशक

प्रथम भाग

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जन मण्डलीमण्डन कालिन्ब्रौनिङ्गसाहब एम०ए०

पूर्व डैरेक्टर वीरेश के समय में

मुंशी मङ्गलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर

प्रदेश सीतापुर ने अति परिश्रम से

रचना किया

अब

श्रीयुत विद्या गुण ग्राहक, गुणिगन सुख दायक जान० सी०

नैस्फील्ड साहब अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश ने

पौरजानपदीय पाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के

उपकारार्थ अङ्गीकार कर

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के यंत्रालयमें सीसाक्षरोंसे मुद्रित कराया ॥

जनवरी सन् १८७७ ईसवी ॥

Digitized by Google

Digitized by Google

मङ्गल कोष

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दोंका तात्पर्य्य प्रकाशक

प्रथम भाग

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जन मण्डलीमण्डन कालिन्ब्रौनिङ्गसाहब एम० ए०

पूर्व डैरेक्टर बीरेश के समय में

मुंशी मङ्गलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर

प्रदेश सीतापुर ने अति परिश्रम से

रचना किया

अब

श्रीयुत विद्या गुण ग्राहक, गुणिगन सुख दायक जान० सी०

नेस्फील्ड साहब अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष बीरेश ने

पौरजानपदीय पाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के

उपकारार्थ अङ्गीकार कर

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के यंत्रालयमें सीसाक्षरोंसे मुद्रित कराया ॥

जनवरी सन् १८७७ ईस्वी ॥

Digitized by Google

भूमिका ॥

दोहा ।

बन्दिप्रथमपरमात्मा कारणकरताजोय ।
ग्रन्थकारकेअर्थमधि करैअनुग्रहसोय ॥ १ ॥
सिधिदातागुणगणविमल सुमतिबढ़ावनहार ।
करताहरतापालका तासुचरणआधार ॥ २ ॥
गुरुमातावाणीविशद सुमतिसम्हिसदाहि ।
करिप्रणामतनमनवचन करौंकोषचितचाहि ॥ ३ ॥
ईसासनविधुमुनिगयन धराफरवरीमास ।
संवत्विक्रमद्वीपवष नभमहितपक्षविलास ॥ ४ ॥
आनंदमङ्गलसहृढ़मन पैंतेपुरचटसाल ।
कोषरच्योलखिग्रन्थबहु समनशब्दजञ्जाल ॥ ५ ॥

जानना चाहिये कि यह आधीन मतिमन्द मङ्गलीलाल कायस्थ श्रीबास्तव सरहीग्राम ज़िलअ शाहजहांपुरका निवासी १५ मई सन् १८५४ ई० से परिश्रतहत्तालीसमें कि २३ वर्ष के अनुमान हुये नौकर है और अब, मुख्यपाठक अर्थात् अफ़सरमुदरिंस मदर्सह, पैंतेपुर प्रदेश सीतापुरका है कुछ काल से हिन्दी भाषा के कोषके खोजमें यत्न करता था और बहुधा कोष फ़ारसी भाषा आदि मिलित दृष्ट आये जिनसे कुछ प्रयोजन हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों का नहीं निकल सक्ता कोई ग्रन्थ हिन्दी भाषाका ऐसा

Digitized by Google

दृष्टि गोचर न हुआ जिसकी सहायता से हिन्दी भाषानुरागी विद्यार्थी रामायण आदि ग्रन्थों में संस्कृत भाषादि शब्दों का अर्थ शिक्षक की कृपा विना विचार करलेते, यद्यपि बहुतेरे ग्रन्थ नाम माला आदि भाषा पद्य में पाये गये तथापि वे सब निरनुप्रास अर्थात् बेरदीफ़ हैं उनमें भी शब्दार्थ शीघ्रता से नहीं मिलता है जब तक समस्त पुस्तक मुखाग्र न हो, इसलिये आधीन ने निम्न लिखित पुस्तकों और बहुत अन्य भाषा ग्रन्थों के शब्द जो देखे और सुने थे इकट्ठा करना प्रारम्भ किया कि जिसमें सामान्य भाषा विद्यार्थियों को लाभ हो और जब बहुतसे शब्द सार्थ इकट्ठा हो गये तब श्रीमन्निखिल सुखसमाज विराजमान विमल धार्मिकानेक गुणसमाज समान मानस्तोपकारी सतत प्रजामय गजाश्व शब्दायितद्वारदेश मोहगड प्रचण्डाखण्ड विपल्लवक मोह्वटभट समूह सहार्ण हिन्दियाविद्यासरणोपकार सहायीकृत [illegible] दिग्विजयी विनोदानन्दित महाभूता धिपशिव श्रीयुत आलिम् औलिङ्ग साहब एम, ए, अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेशकी आज्ञानुकूल वर्ण-माला के अनुसार मित्र शिष्य सीताराम और हरदेव दत्त की सहायता पाकर सानुप्रास करके मङ्गलकोष नाम रख—उक्त साहब वीरेश साहबी की प्रतिष्ठित प्रतिष्ठा में निवेदन किया, तब साहब गुणज्ञ गुणवान ने दृष्टिगोचर कर आज्ञा दी कि यह पुस्तक और अधिक की जावे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोष दिया किया और एक ग्रन्थ तसहीलुलुग़ात द्वितीय भाग जिसमें भाषा शब्दों की फ़ारसी भाषा लिखी है हस्तामलक हुवा फिर सन् १८७२ ईसवी में यह कोष और अधिक किया गया परन्तु

इसी अवसर में उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश याचा से ग्रन्थकार के मनोरथ हृदय के हृदयभेदी रहगये थे कि दैवयोग से हमलोगों के आनन्ददायी स्वस्तिश्री मदुद्दाम गुणगण ग्राम विस्फुरत्कमलमुखभरत विशदी कृतानेक सङ्गीत प्रकारा-स्मदीय विद्या प्रचाराग्रणीय गुणिजनजेगीयमान यशोदा नन्दकन्द कर्म्म पराक्रम अथवा रसास्वादानन्दार्थिमनोभिलषित विविध पदार्थ दानसंसक्त मानस श्रीयुत जान्, सी, सफोल्ड साहब एम, ए, पूर्व्वोक्त नागपुर गामी के स्थान पर अवध देशीय पाठ-शालाओं के डेरेक्टर पबलिक इन्स्ट्रक्शन् वीरेश नियत होय ब्रह्म लोकसे सुशोभित हुये और ग्रन्थको कृपाकटाक्षसे अवलोकनकरतेही आधीन के परिश्रम सफल करने के हेतु सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर वर्म्म के मुद्रालय में सीसाक्षरों से मुद्रित होने के लिये आज्ञा दी अब यह ग्रन्थ अति सावधानता से छपकर दो भाग में श्रीमहाशय की अनुमति से तैयार हुआ इस कारण सम्पूर्ण विद्वानों की उत्तम सेवा में निवेदन है कि जिस शब्द की लिपिवा अर्थ आदि में रंचकविभेद वा अशुद्धता पावें उसको कृपा दृष्टिसे शुद्धकर लेवें मेरी मूर्खता पर ध्यान न देवें क्योंकि इस अज्ञान मूर्तिने पूर्व्वोक्त साहब वीरेश पराक्रमी की अभिज्ञता देख अपनी मूढ़ता विदित की ॥

यथा सोरठा ॥

साहब पाय प्रवीन सबे जनावत विज्ञता ।
पदवी कर्माधीन सब पावत संसार मह ॥ १ ॥

Digitized by Google

जाकर गुण गण चक्र लखि भागत भव मूढ़ता ।
यथा देखि शशि चक्र तम नहिं आवत निकटही ॥ २ ॥

दोहा ॥

अति प्रवीण गाहक चतुर नित प्रति करत समोद ।
श्री बुधिवर विज्ञान मय सुयश छवो चहुं कोद ॥ ३ ॥

सवैया छन्द ॥

कीरति सोहत देश विदेश प्रसिद्ध महा गुण ज्ञान बड़ाई ।
साहब कालिन ब्रौनिंगधों रविदेखि गई कुधिरैनि पराई ।
मूढ़ खगामि अबूझ निशाकर मन्द रहे सब ठाम छपाई ।
ज्ञान गुणादि सरोज प्रफुल्लित बच सरोवर देत दिखाई ॥ ४ ॥

दोहा ॥

विद्यमान कीरति विमल कवि पण्डित मनुहारि ।
धन्यबाद भाषत सबै आदर दानि विचारि ॥ ५ ॥
सुनि अभिज्ञता स्वामिकी चित उछाह अधिकान ।
रच्यो कोष मंगल सुरुचि निजमत अखि सन्मान ॥ ६ ॥
श्री कालिन् ब्रौनिङ्ग जू गमन गजपुरहि कीन ।
कोश छपन की आश तब मनसों मैं तजि दीन ॥ ७ ॥
ग्रन्थ रचत जो अमकिहों जाब्यङ्ग भावेकाज ।
दैव योग सें तुरतही सजी तासु पुनि साज ॥ ८ ॥
करुणालय ताही समय विद्याचय गुणराशि ।
नैसफील्ड साहब इहां आये सुयश प्रकाशि ॥ ९ ॥

Digitized by Google

मेडैरक्टर प्रबन्ध के विद्याकेहि सुधारि ।
पोत बीच जनु उदधि सों सबकंहलीन उबारि ॥ १० ॥
गुणगाहक धनदायकहि लैके में निज कोश ।
न्यायदिखायऊं निज प्रभुहि तासु शरणकरि पेश ॥ ११ ॥
तासु छपन की शीघ्रही आज्ञासाहब दीन ।
यन्त्रित सो अब यह भयो जामें निर्म्मितकीन ॥ १२ ॥
निज स्वामी सों विनययह करत अहोंमन लाइ ।
करहिं प्रकट यहि कोशको देशदेश चलिजाइ ॥ १३ ॥
कीन परिश्रम मैं बहुत करत ताहि निर्माण ।
बहुतक पारितोषिक अधिक यहही आश प्रमाण ॥ १४ ॥
गुणी जानि हैं श्रम अधिक चतुर जांचिहैं भूल ।
दोष अदोष दुहून को कविके हृदय न शूल ॥ १५ ॥

ग्रन्थनामानि ॥

(१) श्रीरामायण भाषा तुलसी दास कृत ॥
(२) रामचन्द्रिका केशव दासकृत ॥
(३) व्रजविलास व्रजवासी दासकृत ॥
(४) नाममाला नन्ददास कृत ॥
(५) अनेकार्थ नन्ददास कृत ॥
(६) तत्व संज्ञा चन्दन कवि कृत ॥
(७) सप्त शतिका विहारी लालकृत ॥
(८) वैद्य निघंट मदन सिंहकृत ॥
(९) अध्यात्म प्रकाश सुखदेव कृत ॥

Digitized by Google

(१०) हिन्दी कोष पादरी आदम कृत ॥
(११) अन्य भाषा बहुतसे ॥

चिह्न ॥

नाम पुल्लिङ्ग =	ना० पु०	नाम स्त्रीलिङ्ग =	ना० स्त्री०
गुण वाचक =	गु०	सकर्मक क्रिया =	स० क्रि०
अकर्मकक्रिया =	अ० क्रि०	अव्यय =	अव्य०
सर्वनाम =	सर्व		

प्रकट होवे कि

बहुत से शब्द अप्रचलित इस ग्रन्थ में लिखे गये उनके उदाहरण अमर कोषादि संस्कृत और भाषा ग्रन्थों में से दिये हैं और जहां २ उचित होवें वहां २ कवि लोग और उदाहरण दे देवें ॥

अ० अव्य० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर जिस शब्द के प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा होजाता है यथा अकारण अर्थात् कारण रहित और स्वरादि शब्द के पहिले जब आवे तब अन होजाता है यथा अनन्त अर्थात् अ अन्त।

अंकवार० ना० स्त्री० गोदी, कोला।

अंगरखा० ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष।

अंगिया० ना० स्त्री० चोली, वस्त्र विशेष।

अंगीठी० ना० स्त्री० पात्र, जिसमें आग रखते हैं।

अंगूठी० ना० स्त्री० जो आभूषण अंगुली में पहिनते हैं।

अंगोछा० ना० पु० देह पोंछने का वस्त्र, रूमाल।

अंत० ना० पु० अन्त, समाप्ति, पूरा।

अंतर० अव्य० अन्तर, फ़रक़।

अंतर्गति० ना, स्त्री, भीतरी चाल

अंतरिक्ष० } ना० पु० छत्त। ऊपरकी जगह।
अंतरीक्ष० }

अन्तर्यामी० गु० अंतर्जामी, जो दिलमें रहे यह शब्द ईश्वरके लिये है।

अंतर्ध्यान० गु० अन्तर्ध्यान, छिपजाना, गुप्त होना।

अंत:पट० ना० पु० भीतर का वस्त्र।

अंधाकुंवा० } ना० पु० कुआं, जो कूड़ा आदि से भरगया हो।
अंधकूप० }

अंधेर० ना० पु० अन्याय, उपद्रव।

अंधकार० गु० अंधेरा।

अंब० ना० पु० आम।

अंबर० ना० पु० आकाश कपड़ा।

Digitized by Google

अंवारी० ना० स्त्री० हौदा जो हाथी पर रखते हैं।

अंश० ना० पु० भाग, हिस्सा; दर्जा जो ६९ $\frac{1}{2}$ मील का होता है।

अंशी० गु० भागी अर्थात् हिस्सेदार।

अंशु० ना० पु० किरण।

अंशुमती० ना० स्त्री० शालपर्णी।

अंशुमान्० ना० पु० सूर्य, सूर्यवंशी राजा वि० ।

अंशुमाली० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा।

अंस० ना० पु० कन्धा।

अकृत० ना० पु० निर्वंशी, विन व्याहा।

अक्खड़० गु० उजाड़, बेबाक।

अकच्छ० गु० नङ्गा, मेहरा, वस्त्र रहित।

अकण्टक० गु० बेखटके, बेधड़क।

अकथ०
अकथनीय०
अकथ्य०
} गु० जो कहने के योग्य न हो। जो वर्णन रहित होवे।

अकनि० अ० क्रि० सुनिके, रामायणे यथा (तुरंग नचावहिं कुंवर वर अकनि मृदङ्ग निशान)।

अकम्पन० ना० पु० राक्षस विशेष० कम्पहीन।

अकर्कश० गु० कोमल, नरम

अकर्म० ना० पु० अपराध, कुकर्म।

अकर्मक० गु० कर्म रहित धातु ना० क्रिया अर्थात् जो कर्त्ता की शक्ति में होवे।

अकर्मण्य० गु० निकम्मा, बेकाम

अकलङ्क०
अकलङ्कित०
} गु० निर्दोष वे दाग़।

Digitized by Google

अकल्याण॰ गु॰ कल्याण रहित अमङ्गल।

अकवार॰ ना॰ स्त्री॰ अंकवार।

अकस॰ ना॰ स्त्री॰ बैर, अदावत

अकस्मात्॰ अव्य॰ अचानक, निमित्त हीन।

अकाज॰ ना॰ पु॰ काम का विनाश, खराबी।

अकाम॰ ना॰ पु॰ व्यर्थ, निष्फल, काम हीन।

अकारण॰ ना॰ पु॰ निमित्त हीन, बेमतलब, बे सबब।

अकारथ॰ गु॰ व्यर्थ, निष्फल।

अकारान्त॰ गु॰ जिस शब्द के अन्तमें अकार होवे।

अकाल॰ ना॰ पु॰ दुर्भिक्ष, कुसमय, कहत।

अकालफल॰ ना॰ पु॰ कुसमय के फल, बे मौसमकी वस्तु, दुर्भिक्ष की वस्तु वा फल।

अकालमृत्यु॰ ना॰ पु॰ कुसमय में मरना, धोखेमें मरना, बे मौत मरना।

अकाश॰ ना॰ पु॰ आकाश, प्रकाश हीन।

अकिञ्चन॰ गु॰ कङ्गाल, कुछ पास नहीं, केवल भगवान भरोसे।

अक्रिय॰ गु॰ कुछ नहीं करता, कर्ने के योग्य न होवे।

अकुण्ठ॰ गु॰ तीक्ष्ण, तेज, विनाश रहित।

अकुताना॰ अ॰ क्रि॰ ऊबना, घबड़ाना।

अकुताहो॰ गु॰ ऊबे, घबरावे।

अकुल॰ गु॰ कुछ जाति नहीं, नीच घराना। ना॰ पु॰ विशेष ईश्वर।

अकुलाना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुल होना, घबड़ाना।

Digitized by Google

अकुलीन० } गु० धाकर, कुल
अकुलीना० } हीन, नीच।

अकेल० } गु० दुःखी, एकाकी।
अकेली० }

अक्रूर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जीकेचचा। गु० जिसका अन्तःकरण कोमलहो।

अखण्ड० गु० समस्त, सम्पूर्ण, खण्ड हीन।

अखर्व० गु० समस्त, बहुत।

अखल० गु० अखिल, ना० पु० देवता, सुर।

अखाड़ा० } ना० पु० जहांमल्ल-
अखारा० } युद्ध होता है, अंगनाई।

अखिल० गु० समस्त, सम्पूर्ण, बिल्कुल।

अखेट० ना० स्त्री० मृगया, शिकार।

अखयवट० } ना० पु० अक्षय
अखयवृक्ष० } वृक्ष।

अख्याति० ना० स्त्री० अपयश, अयश, बदनामी।

अग० ना० पु० पर्वत, अगम्य, जहां जा न सके।

अगम० } गु० जहां जाय न
अगम्य० } सके, जो बूझने के योग्य नहीं।

अगर० ना० पु० सुगन्धि, प्रसिद्ध।

अगस्त० ना० पु० वृक्ष विशेष।

अगस्ति० } ना० पु० मुनि विशेष
अगस्त्य० } जिन्होंने समुद्रको सुखा दिया था।

अगणित० गु० बहुत, जो गिना न जावे, बेहिसाब।

अगवानी० ना० स्त्री० आगे जाकर लेना, पेशवाई।

अगहन० ना० पु० नवमें महीना का नाम।

अगाऊ० अव्य० पहिलेसे, आगे।

अगाध० गु० अथाह, अत्यन्त-गम्भीर।

अगार० ना० ० घर, आगे।

अगास॰ ना॰ पु॰ अपराध, दोष, नाममालायां, अघ अगास हेलन अहित औगुण जो कक्षुपीय।

अगुआ॰ ना॰ पु॰ मार्ग दिखाने वाला, सन्देशी, आगे चलने हारा, प्रधान, चौधरी।

अगुण॰ गु॰ औगुण, गुणहीन, ना॰ पु॰ ईश्वर।

अगुरु॰ ना॰ पु॰ जिसका गुरु न हो, नीच, ह्रस्व।

अगूढ़॰ गु॰ सुगम, जो गूढ़ नहीं।

अगूढगन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ हींग।

अगोचर॰ गु॰ अदृश्य, अलक्ष, अव्यय।

अगोटना॰ }
अगोरना॰ } स॰ क्रि॰ चौकी देना, रखाना।

अगौनी॰ ना॰ स्त्री॰ अगवानी।

अग्नि॰ ना॰ पु॰ आगि, अगुआ।

अग्निका॰ ना॰ स्त्री॰ कलिहारी।

अग्निजिह्वा॰ ना॰ पु॰ देवता।

अग्निमाली॰ ना॰ स्त्री॰ चीता, बूटी।

अग्निमन्थ॰ ना॰ पु॰ अरणी।

अग्निमुखी॰ }
अग्निवक्त्रका॰ } ना॰ पु॰ भिलावां वृक्ष।

अग्निवल्लभ॰ ना॰ पु॰ राल, रार।

अग्निशिखा॰ ना॰ स्त्री॰ केशर, ज़ाफ़रान्।

अग्निसंस्कार॰ ना॰ पु॰ दाह देना, मृतक को जलाना वा उसके हेत क्रियाविशेष।

अग्निहोत्री॰ ना॰ पु॰ आगि-पूजने हारा, ब्राह्मण जाति विशेष।

अग्र॰ ना॰ पु॰ मुख्य॰ आगे॰ प्रथम भाग।

अग्रगण्य॰ गु॰ जो पहिले होवे, वा गिना जावे।

अग्रगामी॰ गु॰ आगे चलने-हारा, पेशवा।

Digitized by Google

अग्रज० गु० जो पहिले प्रगट हुआ होवे, बड़ा।

अग्रता० } ना० स्त्री० पु० अगुआ
अग्रत्व० } पन, ना० पु० पेशवाई

अग्रशोची० ना० पु० गु० पहिले शोचने वाला प्रथमही समझने हारा, दूरअन्देश।

अग्रसर० गु० वा० पु० मुखिया, प्रधान, पेशवा, आगे चलने हारा, सर्दार।

अग्रहायण० ना० पु० अगहन।

अघ० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह, अघासुर दैत्य।

अघटित० गु० अयोग्य, जो पूरा न परै।

अघाई० गु० पूरी, भरी।

अघाना० अ० क्रि० अफरना, आसूदः होना, गु० सन्तुष्ट, धनवान।

अघारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी।

अघासुर० ना० पु० दैत्य विशेष, जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने वध किया था।

अघी० गु० पापी, दोषी।

अघोर० ना० पु० भयानक, अचूक, शिवकृत मन्त्र, धर्म विशेष, श्री महादेव जी।

अघोरपन्थ० ना० पु० धर्मविशेष।

अघोरपन्थी० } ना० पु० जो अघोर पन्थ का सेवन करे।
अघोरी० } मलादि संयुक्त, सर्व भक्षी।

अघ्न० गु० मारने हारा, ना० पु० मारण, हनन।

अङ्क० ना० पु० अक्षर, गोदी कनियां, चिन्ह, संख्या गिन्ती के नव अक्षर, निशानी।

अङ्कदुन० ना० पु० दुःख, पीड़ा नाममाला। (बियरक देन अब अंकदुन गहन हनिन अघनाच)।

Digitized by Google

अङ्कन।० अ० क्रि० मोल ठहरना, परीक्षित होना।

अङ्काना।० स० क्रि० मोल ठह-राना, जाना।

अङ्कित० गु० चिन्ह किया गया, लिखित, परीक्षित।

अङ्कुर० ना० पु० बीज बोने से जो अंखुआ पहिले नि-कलता है।

अङ्कुश० ना० पु० आंकुड़ी जिस से महावत हाथी को मारता है।

अङ्कोल० ना० पु० ओषधि प्रसिद्ध।

अङ्ग० ना० पु० अवयव, शरीर, देह।

अङ्गद० ना० पु० बालिकापुत्र, भूषण, बाजूबन्द।

अङ्गदा० ना० स्त्री० नाम चन्द्रमा की एक कला का, वा शरीर कीदाता।

अङ्गन० ना० पु० आंगन, सहन।

अङ्गना।० ना० स्त्री० पत्नी, जोरू, स्त्री, आंगन।

अङ्गवना।० अ० क्रि० सहना, गवारा करना।

अङ्गराग० ना० पु० उबटन, केसर चन्दनादि का शरीर विषे मर्द्दन।

अङ्गारक० ना० पु० मंगल अंगरा, पौदा।

अङ्गाङ्गिभाव० ना० पु० शरीर के अवयवों का सम्बन्ध।

अङ्गिरा० ना० पु० मुनि विशेष, बृहस्पतिजी के पिता।

अङ्गीकार० ना० पु० स्वीकार, क़बूल, मंजूर।

अङ्गुल० ना० पु० आंगुल।

अङ्गुली० ना० स्त्री० हाथ का अवयव।

अङ्गुष्ठ० } ना० पु० अंगूठा।
अङ्गुष्ठा० }

Digitized by Google

अङ्गठा० ना० पु० अङ्गुष्ठ।

अङ्गूठी० ना० स्त्री० अंगूठी, मुंदरी।

अङ्गेठी० ना० स्त्री० इंगीठी।

अचगरी० ना० स्त्री० अनुचित, अकरकर्म, ब्रजविलासे, यथा--सुनो महरि निज सुत की करनी। करत अचगरी जात न बरनी॥

अचम्भा०
अचम्भव०
अचरज० } ना० पु० आश्चर्य, ताज्जुब।

अचल० गु० जो चल नहीं सक्ता ना० पु० पर्वतादि।

अचला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।

अचानक० अव्य० अकस्मात्, एकाएक ना० पु० कल-कत्ता के निकट नगर विशेष।

अचानचक० अव्य० अकस्मात्, नागहान।

अचाना० स० क्रि० भोजन कर के मुख धोना।

अचार० ना० पु० आम इत्यादि का जो बनता है, और आचार।

अचिन्त० गु० चिन्ता रहित, निधड़क।

अचूक० गु० जो न चूके, ठीक।

अचेत० गु० संज्ञा रहित, बेहोश, मूर्छित।

अच्छत० ना० पु० अक्षत, घाव रहित।

अच्छा० गु० भला, सुडोल, सुन्दर।

अच्युत० गु० स्थिर, अचल- विशेष, ईश्वर।

अच्युताग्रज० ना० पु० श्रीबल-देव जी।

अछेह० गु० बहुत, बिहारी लाल सप्तशतिकायां, धरे रूप गुण को गरब फिरै अछेह उछाह।

अज० अव्य० आज, अब, ना० पु० ब्रह्मा, बकरा, ईश्वर, शिव, यौवन, और आभरण, गु० जो पैदा न होवै वा उपजा किसी से न हो।

अजगर० ना० पु० बड़ासांप, अजदहा सांप।

अजगुत० गु० अद्भुत, अजायब।

अजगन्धा० ना० स्त्री० बबरी पौधा।

अजन्म० गु० जिसका जन्म न होवे।

अजय० गु० जय रहित, जो जीता न जावे। ना० स्त्री० बीर भूमि जिले की नदी विशेष।

अजया० ना० स्त्री० अजा।

अजर० गु० जरा रहित अर्थात् जो बूढ़ा न हो। ना० पु० देवता।

अजलोक० ना० पु० अयोध्या जी, ब्रह्मलोक।

अजवीथी० ना० स्त्री० सुफ़ेदी जो छोटे २ घने तारा गणों की आकाश में दीख पड़ती है।

अजहूं० अव्य० अब भी, अभी।

अजा० ना० स्त्री० बकरी, माया।

अजात० गु० जन्म रहित, जो न उपजे।

अजातअरि० } ना० पु० राजा युधिष्ठिर।
अजातरिपु० }

अजान० गु० अज्ञान, मूर्ख, नादान।

अजामिल० } ना० पु० नाम एक मनुष्य पापिष्ठ का जो नारायण कहके मरा और मुक्ति पाई।
अजामील० }

अजित० } गु० जो जीता न जा सके, ईश्वर।
अजीत० }

अजिन० ना० पु० सिंह इत्यादि का चर्म जो ब्रह्मचारी लोग बिछाते हैं।

Digitized by Google

अजिर० ना० पु० आंगन, सहन।

अजीर्ण० ना० पु० कुपच, बाई, नवीन।

अजौं० अव्य० अब तक, अभी।

अज्भल० ना० पु० अच् और हल अर्थात् स्वर और व्यञ्जन।

अञ्चल० ना० पु० आंचल, अंचला, वस्त्र का अन्त।

अञ्जन० ना० पु० काजल, सुरमा।

अञ्जलि० } ना० स्त्री० दोनों
अञ्जली० } हाथ का सम्पुट।

अञ्जि० क्रि० अञ्जन लगाकर।

अञ्जित० गु० अञ्जन अर्थात् सुरमा लगाये।

अटक० ना० स्त्री० रोक, प्रतिबन्ध, सिन्धु नदी।

अटकना० अ० क्रि० रुकना, लगना।

अटकल० ना० स्त्री० अनुमान, प्रमाण, अन्दाज़।

अटकलना० स० क्रि० ताड़ना, बूझना, जांचना।

अटका० ना० पु० श्रीजगन्नाथ जी में प्रसाद पकाने का पात्र वा प्रसाद।

अटकाना० स० क्रि० रोकना, ठहराना।

अटकाव० ना० पु० रोक, प्रतिबन्ध।

अटखेल० गु० खिलाड़, चञ्चल।

अटखेली० ना० स्त्री० खिलाड़पन, चञ्चलाहट।

अटन० अ० क्रि० फिरना, घूमना, ना० पु० ऊपरकीकोठरी।

अटना० अ० क्रि० समाना, भरजाना, फिरना।

अटपट० गु० उलट पुलट, मोल बात।

अटपटी० गु० अशोभ, अनरीति।

अटल० गु० पूरा, दृढ़, अचल, जो न टले।

अटवी० ना० पु० वन, जङ्गल।

Digitized by Google

अटा० } नाo स्त्री० ऊपरकी
अटारी० } कोठरी, कोठा।

अटाला० नाo पुo ढेर, सामग्री

अटूट० गुo जो टूट न सके।

अटेक० गु० जो टेक रहित हो, सहारा बिना।

अटेरन० नाo पुo फ़ेंटी, चरखी, घोड़े को चक्कर देने का स्थान।

अटेरना० सo क्रिo फेंटी बनाना, घोड़े को चक्कर देना।

अटेरि० नाo पुo नगरविशेष।

अटोक० गुo टोकबिन, अछेड़।

अट्टहास० नाo पुo ठट्ठा मार-के हंसना।

अट्टालिका० नाo स्त्रीo अटारी

अठतालीस० गुo चालीस और आठ ४८।

अठतीस० गुo तीस और आठ ३८।

अठवारा० नाo पुo आठवां दिन, सप्ताह।

अठसठ० गु० साठि और आठ ६८।

अठहत्तर० गुo सत्तर और आठ ७८।

अठाईस० गुo बीस और आठ २८।

अठानवे० गुo नब्बे और आठ ९८।

अठारह० गुo दश और आठ १८।

अठासी० गुo अस्सी और आठ ८८।

अठेल० गुo जो ठेला न जावे।

अड़० नाo स्त्रीo झगड़ा, विरोध, हठ।

अड्डा० नाo पुo मंडी अर्थात् दिसावर की वस्तु का उतार, गुo झगड़ालू, टर्रा।

अड़ना० अo क्रिo रुकना, हठ करना।

Digitized by Google

अडूसा० ना० पु० बांसा अर्थात औषधि वि०।

अडोल० गु० जो न डुले, अटल

अणि० ना० स्त्री० मोनी, अनी, नोक।

अणिमा० ना० स्त्री० अन्तर्ध्यान होनेकीशक्ति, सिद्धि विशेष।

अणु० ना० पु० अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु।

अण्ड० ना० पु० अण्डा, आंडा।

अण्डकोष० ना० पु० आण्ड कटाह।

अण्डज० ना० पु० गु० जो अण्ड से उपजे।

अण्डा० ना० पु० अण्ड० रण्ड।

अण्डाकार० } गु० अण्डे के
अण्डाकृति० } डोल।

अतनु० ना० पु० कामदेव, शरीर रहित।

अतर्क्य० गु० जो तर्क रहित है, बेदलील।

अतर्क्य० गु० जो लखा न जावे, बेदलील।

अतल० ना० पु० सातपातालों में से एक।

अतलस्पर्श० गु० अथाह, अगाध

अतसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।

अति० अव्य० जिस शब्द के प्रथम इसका मेल होता है उसका अर्थ अधिक लिया जाता है यथा अति सुन्दर अर्थात् अधिक सुन्दर।

अतिकण्टक० ना० पु० जवासा

अतिकाल० ना० पु० अबेर।

अतिकाय० ना० पु० रावणका पुत्र।

अतिकुचै० अ० क्रि० समिटे, सकुचै, झूले, रामचन्द्रिका, यां, यथा—कपे बर बाणो डगे उरडीठि त्वचा तिकुचे सकुचे मतिवेगी।

अतिगुहा॰ ना॰ स्त्री॰ शाल पर्णी औषधि।

अतिचञ्चुल॰ ना॰ पु॰ लाल अरण्ड।

अतिजिह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ कलि-हारी।

अतिथ॰) ना॰ पु॰ यात्री,
अतिथि॰) पाहुन, संन्यासी।

अतिपराक्रम॰ ना॰ पु॰ बड़ा प्रताप।

अतिपान॰ ना॰ पु॰ अधिक मदिराका पीना।

अतिपार्श्व॰ गु॰ बहुत निकट।

अतिरविहका॰ ना॰ स्त्री॰ ऊ-धाहोली औषधि।

अतिरसा॰ ना॰ स्त्री॰ रास्ना, औषधि।

अतिरिक्त॰ गु॰ अतिशय, अ-धिक।

अतिवक्ता॰ गु॰ बकवादी, जो बहुत बके।

अतिबला॰ ना॰ स्त्री॰ बरियारा औषधि।

अतिविकट॰ गु॰ बहुत दुर्गम, जिस हाथी में औगुण हो।

अतिवृष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ बहुत वर्षा।

अतिव्ययक॰ गु॰ उड़ाऊ, बहुत खर्च कर्ता।

अतिव्याप्ति॰ गु॰ स्त्री॰ अलक्ष्य में लक्षण का गमन।

अतिशय॰ गु॰ बहुत अधिक।

अतिशीत॰ गु॰ बहुत शीत।

अतिसार॰ ना॰ पु॰ पेटोखा, संग्रहणी।

अतिस्थूल॰ गु॰ बहुत भारी।

अतीत॰ गु॰ हो चुका, व्यतीत, रहित।

अतीस॰ ना॰ पु॰ औषधि, वि-शेष।

अतीसार॰ ना॰ पु॰ अतिसार।

Digitized by Google

अतुल० } गु० जो तोला नहीं गया० जो तोलने के योग्य नहीं, बहुत।
अतुलित०
अतोल०

अत्यंशु० ना० पु० सूरज।

अत्यन्त० गु० अतिशय, बहुत।

अत्यन्तसुन्दर० गु० बहुत-सुन्दर।

अत्यल्पतर० गु० बहुतही थोड़ा

अत्यावश्यक० गु० बहुत आवश्यक, बहुत जरूरी जिसके बिना निबाह न होसके।

अत्युग्र० गु० बहुत कठिन, ना० पु० हींग।

अत्युत्तम० गु० बहुत अच्छा।

अत्युत्तमा० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।

अथ० अव्य० अनन्तर, आरम्भ, उपरान्त।

अथर्वण० ना० पु० नाम चतुर्थ वेद का।

अथवा० अव्य० वा, या, प्रकारान्तर, किम्बा।

अथाई० ना० स्त्री० बैठक का स्थान, समूह, चौपाड़।

अथान० गु० अचार, खटाई, बेठिकाने।

अथाह० गु० गम्भीर, अगाध, गहरा, ना० पु० खोह।

अदत्त० गु० जो नहीं दिया गया, देने के योग्य नहीं है।

अदत्ता० गु० स्त्री० अविवाहिता।

अदर्शन० ना० पु० दर्शना भाव गु० लुप्त अगोचर।

अदवायन० ना० स्त्री० पांइती की रस्सी।

अदाता० } गु० लोचड़, अनदेना।
अदानी०

अदिति० ना० स्त्री० कश्यप की स्त्री, देवमाता।

अदिष्ट० ना० पु० विपत्ति भाग्य कर्म।

Digitized by Google

अदृश्य० गु० जो देखा न जावे, अगोचर।

अदेय० गु० जो देने के योग्य नहीं।

अदेव० गु० दैत्य जो देने के योग्य न होवे।

अद्धी० ना० स्त्री० दमड़ी का आधा, कपड़ा विशेष।

अद्भुत० गु० अनोखा, अजायब।

अद्य० अव्य० आज।

अद्यापि० अव्य० अब तक।

अद्रक० ना० स्त्री० अदरक, कन्द विशेष।

अद्रि० ना० पु० पर्वत।

अद्वितीय० गु० जिसके समान दूसरा नहीं।

अद्वैत० गु० एकात्मा-आत्मा-की भेद रहित।

अध० अव्य० नीचे, ना० स्त्री० अंगा औषधि।

अधकपाली० ना० स्त्री० आधा सीसी अर्थात् आधे शिर की पीड़ा।

अधगो० ना० स्त्री० गुदा, शंका करने की इन्द्री।

अधन०
अधनी० } गु० कङ्गाल, गरीब।

अधवर० अव्य० आधी दूर अर्थात् मध्य।

अधम० गु० नीच, कुत्सित, धर्म-रहित।

अधमाधम० गु० अति नीच।

अधर० ना० पु० नीचेका होंठ, ओष्ठ, अन्तर, गु० मध्य।

अधरबुद्धि० गु० नासमझ, नादान।

अधरामृत० ना० पु० होठों में-की मिठास।

अधर्म० ना० पु० पाप, अन्धेर, अन्याय, अथवा धर्म रहित।

अधर्मी० गु० अन्यायी, पापी।

Digitized by Google

अधि० अव्य, जिस शब्द के प्रथम में इसका संयोग होता है उसका अर्थ साहिब वा मालिक वा हाकिम का होता है यथा नराधि अर्थात् नरों का मालिक ।

अधिक० गु० बहुत ।

अधिकता० ना० स्त्री० } ना० पु० बहुतात,
अधिकत्व० ना० पु० }

अधिकरण० ना० पु० सातवां कारक विशेष ।

अधिककोण० ना० पु० कोना जो सम कोण से अधिक हो ।

अधिकाई० ना० स्त्री० बढ़ती सरसाई बहुतात ।

अधिकाना० स० क्रि० अधिक करना, बढ़ाना ।

अधिकार० ना० पु० पदवी, ओहदा, योग्यता, स्वामित्व, राज्य, बपौती ।

अधिकारी० गु० पाने के योग्य स्वामी, पुजारी, पण्डा ।

अधिकार्द्धि० गु० बहुत सम्पदा ।

अधिकृत० ना० पु० नियुक्त, देखने वाला, जांचने वाला, पदाधिकार ।

अधिप० ना० पु० नायक, मालिक, राज नीति, प्रतिपालक, वा प्रजापालक ।

अधिपति० ना० पु० अधिप ।

अधिवास० ना० पु० निवास, सकूनत ।

अधिभू० ना० पु० नायक, स्वामी मालिक ।

अधिमास० ना० पु० लोंद, मलमास ।

अधियाना० स० क्रि० आधा-करना ।

अधिराज० ना० पु० महाराज, राजाधिराज ।

अधिरूढ़० ना० पु० सवार, असवार ।

Digitized by Google

अधीन० गु० वशीभूत, आज्ञाकारी ।

अधीनता० ना० स्त्री० आधीनता, परवश, दूसरे के इख़तियार में रहना ।

अधीर० गु० उतावला, धीरज रहित, व्याकुल, चञ्चल ।

अधीरता० ना० स्त्री० उतावली, व्याकुलता ।

अधीश० ना० पु० स्वामी, मालिक ।

अधूरा० गु० अधबना, अनबना ।

अधेड़० गु० आधी आयुर्दाय व्यतीत भई ।

अधेला० ना० पु० पैसेका आधा ।

अधेली० ना० स्त्री० रुपया वा मुहर का आधा ।

अधो० ना० पु० नरक, नीचे ।

अधोबन्धन० ना० पु० ज़ेरबन्द, नीचेका बन्धन विशेष ।

अधोमुख० गु० शिर झुकाये वा शिर नीचे और पांव ऊपर किये हुये ।

अधोयोनि० गु० नीचयोनि ।

अधोलोक० ना० पु० पाताल, नरक ।

अध्ययन० ना० पु० पाठपढ़ना, सीखना ।

अध्यक्ष० ना० पु० स्वामी, प्रधान, मालिक ।

अध्यात्म० ना० पु० आत्मज्ञान, ईश्वर विचार ।

अध्यापक० ना० पु० पाठ पढ़ाने हारा, शिक्षक ।

अध्यापन० ना० पु० पाठ पढ़ाना ।

अध्याय० ना० पु० पाठ, पर्व्व, प्रकरण, टुकड़ा, बाब, हिस्सा ।

अध्याहार० ना० पु० वाक्य को पूरा करने के निमित्त बाहिर से शब्द ले आना ।

Digitized by Google

अध्याहृत० गु० अध्य हार, किया गया शब्द ।

अध्वग० } गु० बटोही, यात्री,
अध्वनी० } मुसाफ़िर ।

अध्वा० ना० स्त्री० राह, मार्ग, बाट ।

अन० अव्य० निषेधार्थी शब्द, नहीं ।

अनख० ना० पु० बुरा ।

अनखाई० गु० जो बुरा मान गया ।

अनखाना० अ० क्रि० क्रोधित-होना, बुरा मानना ।

अनगढ़० गु० अनबना, अन-सीखा जो वस्तु आपही आप बनी हो ।

अनगढ़ा० ना० पु० अनगढ़ ।

अनगढ़ी० ना० स्त्री० अनगढ़ ।

अनगणित० गु० जो गिना नहीं वा गिना न जासके, वा हिसाब में न आवे ।

अनघ० गु० निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह ।

अनङ्ग० ना० पु० काम देव, राजा जनक, गु० देह रहित जो तनमें न होवे ।

अनजाना० गु० बिना पहि-चाना ।

अनट० ना० स्त्री० गांठि ।

अनत० अव्य० अन्यत्र, और स्थान में ।

अनधन० ना० पु० सम्पत्ति वा लक्ष्मी अर्थात् अन्ननामा लक्ष्मी ।

अनन्त० गु० जिसका अन्त नहीं वा भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को जो सूत में १४ ग्रन्थि देकर पूजते हैं और बाहु पर बांधते हैं बहुत० ना० पु० ब्रह्मा, आकाश, विष्णु जी शेषजी, लक्ष्मणजी ।

Digitized by Google

अनन्तकाल० गु० बहुत दिन।

अनन्तर० ना० पु० अत्यन्त, समीप, पीछे, दूसरा, अव्यवहित।

अनन्ता० ना० स्त्री० धरती, जवासा।

अनन्य० गु० एक भाव, एक भरोसे।

अनपढ़ा० गु० मूर्ख, कुपढ़ा, अज्ञानी।

अनपायन० गु० अचल, दृढ़।

अनबुझा० गु० जो समझा न जावे।

अनमन० } गु० बावरा, उदास, बेदिल।
अनमना० }

अनमिल० गु० मेल रहित, ना दुरुस्त।

अनमिष० गु० समय, बिना मिष, बे उज़र।

अनमेल० गु० अनमिल।

अनमैल० गु० मैल रहित, उज्वल, साफ़।

अनमोल० गु० जिसका मोल नहीं अर्थात् जो बहुत अपूर्व है।

अनयास० गु० बिना परिश्रम, बेमिहनत।

अनरस० ना० पु० रस रहित, झगड़ा, फीका, मिलों में अन बनाव।

अनरीति० ना० स्त्री० कुचालि, अपमान, अनादर।

अनर्गल० गु० निर्बाध, स्वेच्छक।

अनर्घ० गु० अपूज्य, अमूल।

अनर्थ० गु० अर्थ हीन, अनुचित, बेमतलब।

अनर्थक० गु० निष्प्रयोजन, निष्कारण, झूठा।

अनल० ना० पु० पावक, अग्नि आग।

अनलपक्ष॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष जो सर्बदा काल आकाश में उड़ा करता है और जब ईश्वरेच्छा से उस के गर्भ होता है तो अण्डे को आकाश से छोड़ देता है और वह अण्डा पृथ्वी पर पहुंचने के पहिले ही मार्ग में फूट कर बच्चा बन जाता है और उड़ने लगता है और अपने माता पिता का स्मरण कर ऊपर लौट जाता है, (यथा विचार मालायां) अनल पक्ष को चेटुवा गिरो धरणि अरराय, बहु अधीन यह लीन है मिल्यौ तासु को धाय।

अनवकाश॰ ना॰ पु॰ अवकाश रहित।

अनवट॰ ना॰ पु॰ भूषण विशेष जो स्त्रियां पांव के अंगूठे में पहनती हैं।

अनवस्थित॰ गु॰ बे ठिकाने, रंग रंग की।

अनशन॰ ना॰ पु॰ उपवास, लङ्घन।

अनश्वर॰ गु॰ जिसका नाश न हो, जो न मिटे।

अनसीखा॰ गु॰ अनपढ़ा, अज्ञानी।

अनसुनीकरना॰ स॰ क्रि॰ आना कानी करना।

अनसूया॰ ना॰ स्त्री॰ अत्रि मुनि की पत्नी।

अनहित॰ गु॰ स्नेह रहित, शत्रु, बैर, बुराई।

अनहोना॰ गु॰ असम्भव, जो होनहार नहीं।

अनाकुर॰ ना॰ पु॰ वृक्ष, पेड़।

अनाचार॰ ना॰ पु॰ कुचाल, आचार रहित।

अनाज॰ ना॰ पु॰ अन्न, ग़ल्ला।

अनाजक॰ ना॰ पु॰ काला-अगर।

Digitized by Google

अनाड़ी० गु० अट्टेसल, निर्गुणी, नवसिखा।

अनाथ० गु० दुःखी, जिसका कोई रक्षक न हो, यथा विधवा, पिता हीन पुत्र।

अनादर० ना० पु० अपमान, तिरस्कार।

अनादि० गु० जिसकी आदि न हो यथा ईश्वर।

अनामय० गु० रोग रहित, निर्दोष।

अनामिका० ना० स्त्री० तीसरी अंगुली।

अनायास० ना० पु० यत्नबिना, निरुपाय।

अनावृष्टि० ना० स्त्री० सूखा, पानी न बरसे।

अनाश्रम० गु० बिन मकान, बिना ठिकाने, और चारों-आश्रम रहित।

अनाहत० गु० वह शब्द जो ब्रह्माण्ड में अखण्ड होता है, ना० पु० चक्र विशेष।

अनिरुद्ध० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता।

अनिर्वचनीय०, अनिर्वाच्य० } गु० जो कहने के योग्य नहीं है।

अनिल० ना० पु० पवन, वायु, हवा।

अनिश्चित० गु० जो निश्चय नहीं किया गया।

अनिश्चितता० ना० स्त्री० जिसका निश्चय नहीं है उसकी स्थित।

अनिष्ट० गु० अप्रिय, अरुचि।

अनी० ना० स्त्री० सेन, बरछी, और बाण आदि की नोक।

अनीक० ना० पु० मत्था, ना० स्त्री० सेन, समूह।

Digitized by Google

अनीकिनी॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, फ़ौज ।

अनीति॰ ना॰ स्त्री॰ कुचाल, अन्याव ।

अनीश॰ ना॰ पु॰ ईश रहित, जीव ।

अनीह॰ गु॰ चेष्टा रहित, तृष्णा रहित ।

अनु॰ अव्य॰ यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ, कभी पुनः कभी सादृश्य, कभी निषेध, कभी सङ्ग, कभी पीछे, कभी समीप का होता है ।

अनुकम्पा॰ ना॰ स्त्री॰ कृपा, दया, रहम, मेहरवानी ।

अनुकरण॰ ना॰ पु॰ किसी के पीछे काम करना, किसी की प्रति वा नक़ल करना ।

अनुक्त॰ गु॰ जो उक्त नहीं, ना॰ पु॰ दृष्टान्त ।

अनुक्रम॰ ना॰ पु॰ क्रमसे, परिपाटी, रीति ।

अनुक्रोश॰ ना॰ स्त्री॰ दया, कृपा, रहम ।

अनुकारी॰ ना॰ पु॰ नोकर, सेवक ।

अनुकूल॰ गु॰ प्रसन्न, सहायक, व्याधि हीन ।

अनुख॰ ना॰ पु॰ आलस, बुराई ।

अनुखाल॰ ना॰ पु॰ किसी नदी का एक भाग किसी देश में प्रविष्ट हो थोड़ी दूर और भेद न करे उसका नाम अर्थात् छोटा खाल ।

अनुग॰ गु॰ सेवक वा सेवकिन, पीछे चलैया ।

अनुगत॰ ना॰ पु॰ आश्रित ।

अनुग्रह॰ ना॰ पु॰ कृपा, दया, मेहरवानी ।

Digitized by Google

अनुगामी॰ गु॰ सेवक, पीछे चलने हारा।

अनुचर॰ ना॰ पु॰ साथी, सह-चर, दास, सेवक।

अनुचरी॰ ना॰ स्त्री॰ दासी, सेवकिन्।

अनुचित॰ गु॰ अयोग्य, जो वाजिब न हो।

अनुज॰ ना॰ पु॰ छोटा भाई।

अनुजा॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी ब-हिन।

अनुत्तर॰ गु॰ उत्तरहीन, म-हज्जन, श्रेष्ठ।

अनुताप॰ ना॰ पु॰ पश्चात्ताप, शोच।

अनुतारा॰ ना॰ पु॰ तारे के पीछे का तारा।

अनुदिन॰ ना॰ पु॰ प्रतिदिन, नित प्रति।

अनुनासिक॰ ना॰ पु॰ जो नासिका से निकले।

अनुपक्ष॰ ना॰ पु॰ पक्ष का सा-ठिवां अंश।

अनुपस्थित॰ गु॰ जो उपस्थित न होवे।

अनुपान॰ ना॰ पु॰ औषधि आदि के साथ और जो कुछ मिलाय के पीते हैं।

अनुप्रास॰ ना॰ पु॰ समान जातिके वर्णोंसे रचित-पद, समूह, रदीफ़।

अनुभव॰ ना॰ पु॰ मानसज्ञान, अटकल, विचार, ध्यान।

अनुभूति॰ ना॰ व्याकरण के आचार्य का नाम है जि-न्होंने सारस्वत बनाई, और अपने चित्त के स्थिर निश्चय को भी कहते हैं, जिसका पर्याय अनुभव है।

अनुभाव॰ ना॰ पु॰ महिमा, बड़ाई।

Digitized by Google

अनुभूत० गु० बीता, जो मनसे जाना गया है।

अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, सलाह।

अनुमरण० ना० पु० एक चिता में विधि पूर्वक शरीर का दहन, सती होना।

अनुमान० ना० पु० अटकल, युक्ति से जो निश्चय होवे।

अनुमित० गु० विचारागया।

अनुमोदन० ना० पु० प्रशंसा वा बड़ाई करना।

अनुयायी० गु० पीछे जानेवाला, सेवक।

अनुरत० गु० मग्न, रत, मस्त।

अनुराग० ना० पु० स्नेह, प्रीति, थोड़ी ललाई।

अनुरागी० गु० प्रियतम, दोस्त।

अनुराधा० ना० स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र।

अनुरूप० गु० सदृश, समान, तुल्य।

अनुरूपक० गु० समान करनेवाला, प्रतिमा।

अनुरोध० गु० अपेक्षा, उपकार, रोक, मुवाफ़िक़, अनुरूप होना।

अनुरोधी० गु० विरोधी।

अनुलाप० ना० पु० दुखित-वार्त्ता।

अनुवह० ना० पु० मुख्य पवन।

अनुवाद० ना० पु० पुनःकथन, बात का पक्ष करना, हठ करना।

अनुशयना० ना० स्त्री० नायिका विशेष।

अनुशाखा० ना० स्त्री० पीछे की डाली, प्रशाखा।

अनुशासन० ना० पु० आज्ञा, हुक्म।

अनुसन्धान० ना० पु० कामना, पीछे लगाना।

अनुसरना० अ० क्रि० पीछे चलना वा आना।

अनुसार० ना० पु० सदृश, तुल्य, अनुरूप होना अथवा अनुरूप, मुवाफ़िक़ ।

अनुस्वार० ना० पु० बिन्दु जो अक्षर के मस्तक पर देते हैं ।

अनुहर० ना० पु० तुल्य, अनुहार ।

अनुहरण० ना० पु० चुराना, उठालेना ।

अनुहार० } गु० तुल्य, सदृश,
अनुहारि० } समान, योग्य ।

अनुपम० }
अनुपमा० } गु० उपमा रहित अर्थात् सबसे भला, एकता, बे नज़ीर ।
अनूप० }

अनूठा० गु० अपूर्व, निराला, नया, अजायब ।

अन्यून० गु० सब, बिल्कुल ।

अनृत० ना० पु० झूठ, मिथ्या ।

अनेक० गु० बहुत, एकसे अधिक ।

अनेकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द में एकसे अधिक वर्ण हों ।

अनैसी० ना० स्त्री० अनुचित, कुदृष्टि ।

अनैसे० गु० कुदृष्टि, क्रोध दृष्टि, रामायणे यथा, अजहुं अनुज तव चितव अनैसे ।

अनौषधि० गु० जिसकी औषधि नहीं, असाध्य ।

अन्त० ना० पु० समाप्ति, शेष भाग, सीमा, दूसरी जगह, अव्य० निदान ।

अन्तक० ना० पु० काल, यमराज ।

अन्तकाल० ना० पु० मरने का समय ।

अन्तःकरण० ना० पु० मन, बुधि, चित्त, और अहङ्कार ।

अन्तःकोण० ना० पु० भीतर का कोना ।

अन्तःपाती० गु० अन्तर्गत, भीतर ।

अन्तःपुर० ना० पु० घर जिस-में रानी आदि स्त्रियां रहती हैं ।

अन्तःसम्पात० ना० पु० भीतर कूना ।

अन्तड़ी० ना० स्त्री० आंत ।

अन्तर० अव्य० बीच, फ़र्क़, ना० पु० भीतर, समय, भेद, हृदय ।

अन्तरङ्ग० ना० पु० आत्मीय, अपना ।

अन्तर्हित० गु० छुप जाना, ग़ायब होना ।

अन्तरा० ना० पु० गीत के पह-ले पद को छोड़ के जो पद हैं, अन्य, मध्य, बाहिर ।

अन्तरापत्ति० ना० पु० गर्भ ।

अन्तरित० गु० छुपना, ग़ायब होना ।

अन्तरिया० ना० पु० तिजारी, ज्वर विशेष ।

अन्तरीप० ना० स्त्री० टापू, धरती की नोक जो समुद्र में चली गई हो ।

अन्तर्वेद० ना० पु० देश जो गङ्गा यमुना के मध्य में है ।

अन्तस्थ० गु० बीच में, दूरवाला, अन्त का ।

अन्तावली० ना० स्त्री० आंत ।

अन्तिम० गु० अन्त का ।

अन्तेवासी० ना० पु० पीछे रहने वाला, दूर रहने वाला, शिष्य ।

अन्त्य० गु० अन्त का, पिछला ।

अन्त्यज० ना० पु० धोबी, चमार, नट, बरट, किरात, भेद, भल्ल, पीछे उपजा, नीच जाति ।

अन्त्याक्षर० ना० पु० अन्त का अक्षर ।

अन्ध० गु० अन्धा ।

अन्धक० ना० पु० दैत्य विशेष जो सदाशिव से लड़ा था और मारा गया ।

Digitized by Google

अन्धकबन्ध० ना० पु० दैत्य-विशेष।

अन्धकरिपु० ना० पु० श्री-महादेव जी।

अन्धकार० ना० पु० अन्धेरा।

अन्धकारि० ना० पु० श्री-महादेव जी।

अन्धला० गु० अन्धा।

अन्धसुत० ना० पु० दुर्योधनादि सौ १००।

अन्धा० गु० नेत्र हीन।

अन्न० ना० पु० पक्क ओदनादि, अनाज।

अन्नकूट० } ना० पु० अन्न का ढेर लगाना।
अन्नपर्वत० } हिन्दुओं में त्योहार दीवाली के दूसरे दिन होता है।

अन्नप्राशन० ना० पु० बालक को पांचवें वा छठे मास खीर चटाना, माड़ चाटन।

अन्ना० } ना० स्त्री० दाया, दाई
अन्नी० } धाय।

अन्य० गु० दूसरा, भिन्न, कोई और।

अन्यच्च० गु० अन्यभी, और भी।

अन्यथा० अव्य० और प्रकार, प्रकारान्तर, अशुद्ध, झूठ।

अन्यथाचरण० ना० पु० उलटा व्यवहार।

अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० और प्रकार से ठहराना।

अन्यदेश० ना० पु० और देश ग़ैर मुल्क।

अन्यदेशीय० गु० परदेशी, विदेशी।

अन्यपुरुष० गु० जो परोक्ष में है, आन नर।

अन्यरक्ता० ना० पु० लालऊंगा। यथा, अन्यरक्ता: हस्तफलावसिर:कपिपिप्पली। इति निघण्टे।

Digitized by Google

अन्याय० ना० पु० अनीति, उपद्रव ।

अन्याय्य० } गु० अयोग्य, अधर्मी,
अन्यायी० } ज़ालिम ।

अन्यच्च० अव्य० और कहीं ।

अन्योन्य० गु० परस्पर ।

अन्वय० ना० पु० एकका एकके साथ सम्बन्ध, कुल ।

अन्वहं० गु० निरन्तर, सत्यकर ।

अन्वित० गु० संयुक्त, मिलित ।

अन्वेषण० ना० पु० अनुसन्धान, खोज ।

अन्वेषिणी० ना० स्त्री० खोजने वाली, ढूंढ़ने वाली ।

अप० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ, कु० निकृष्टता, विरुद्धता, भिन्नता, आसन्नता इत्यादि होता है सर्व० आप ।

अपकर्म० ना० पु० कुकर्म, बुरा काम ।

अपकार० ना० पु० अनिष्ट, बिगाड़, द्वेष, अधर्म ।

अपकारी० गु० द्वेषी, कुकर्मी ।

अपकृष्ट० गु० अधम, न्यून, छोटा ।

अपक्व० गु० जो पका न होवे ।

अपघात० ना० पु० निज करसों आपको मारना ।

अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि ।

अपजस० ना० पु० कलङ्क, अपमान, अपयश ।

अपटु० गु० जो काम करने में प्रवीण नहीं, निर्बुद्धि ।

अपडर० ना० पु० झूठ डर, निज ओरसे डर ।

अपत० गु० पापी, बेइज्ज़त ।

अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान ।

Digitized by Google

अपत्य॰ना॰ पु॰ सन्तान, औलाद ।

अपथ॰ना॰ पु॰ कुमार्ग, मार्ग रहित ।

अपथ्य॰गु॰ जिसके खाने से रोग अधिक होवे अर्थात् जठरानल जिसे न पचा सके ।

अपना॰ सर्व॰ निजका, स्वकीय ।

अपनाहत॰ना॰ स्त्री॰ घराना, कुटुम्ब, सम्बन्ध ।

अपबस॰गु॰ स्वाधीन, अपने वश में ।

अपभय॰ना॰पु॰ झूठ, डर, अपडर ।

अपभाषा॰ना॰ स्त्री॰ गंवारी बोली, वा यवनादिकों की बोली, फ़ारसी आदि ।

अपभ्रंश॰ना॰ पु॰ अपशब्द, अशुद्ध शब्द ।

अपमान॰ना॰ पु॰ अनादर, इज़्ज़त घटाना ।

अपमानी॰गु॰ जो अपमान के योग्य है ।

अपमृत्यु॰ना॰ स्त्री॰ अनमौत, रोग हीन मरना, अकाल मृत्यु ।

अपर॰ ना॰ पु॰ तगर औषधि, गु॰ दूसरा, अन्य, विरुद्ध ।

अपरम्पार॰गु॰ जिसका पार नहीं है, अनन्त ।

अपरा॰ना॰ स्त्री॰ जूही ।

अपराजय॰ना॰पु॰ पराभव, हीनता, हारि ।

अपराजित॰गु॰ जो जीता न जावे, ना॰ पु॰ श्री सदा शिवजी, श्रीविष्णुनारायण ।

अपराजिता॰ना॰ स्त्री॰ देवी, विशेष, पुष्प विशेष, जिस को विष्णुक्रान्ता वा कौआ गोड़ी कहते हैं ।

Digitized by Google

अपराध० ना० पु० दोष, पाप, घात, अधर्म।

अपराधी० गु० पापी, दोषी, अधर्मी।

अपराह्न० ना० पु० तीसरा पहर।

अपरिचित० गु० जाति वाचक शब्द जिससे परिचय न हो, जिससे पहिचान न हो।

अपरिमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।

अपर्णा० ना० स्त्री० पार्वती।

अपलक्षण० ना० पु० अपशकुन, बुरे चिन्ह।

अपलोक० ना० पु० अपयश, बदनामी।

अपवर्ग० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, निजात।

अपवाद० ना० पु० निन्दा, अपयश, उलहना, बुरी बातें आम को कहना, अनियम शब्द।

अपवादी० गु० अर्थी, जो अपवाद करे।

अपवित्र० गु० अशुद्ध, छूतहरा, नापाक।

अपवित्रता० ना० स्त्री० अशुद्धता, छूत, नापाकी।

अपशकुन० ना० पु० बुरा शगुन।

अपशब्द० ना० पु० शब्द जो अशुद्ध है।

अपश्य० गु० जो देखा न जावे।

अपसव्य० गु० दाहिना भाग अङ्गकावा दाहिना हाथ वा कांधा वा जलदान में अंगोछा दाहिने कांधे पर रखना, विरुद्ध।

अपस्मार० ना० पु० रोगविशेष, जिसको मिरगी कहते हैं।

अप्सरा० ना० स्त्री० स्वर्वेश्या, परी।

अपहरण० ना० पु० हरलेना, लूटलेना, लूटना।

Digitized by Google

अपहर्त्ता० }
अपहरता० } गु० चोर, डाकू, लुटेरा।
अपहारी० }

अपह्नव० ना० पु० छिपाव, नकार।

अपक्ष० गु० पक्ष रहित।

अपाक० गु० जो पक्का नहीं है।

अपाङ्ग० ना० पु० नेत्र का अन्त भाग, कटाक्ष।

अपादान० ना० पु० पांचवां कारक।

अपान० ना० पु० गुदा, नीचे की वायु, पाद, प्राण विशेष, सर्व, अपना।

अपाप० गु० पाप रहित।

अपामार्ग० ना० पु० ऊंगा।

अपार० गु० जिसका पार वार नहीं है, अनन्त।

अपावन० गु० अशुद्ध, नापाक।

अपूत० गु० निर्वंश, कुपुत्र, कपूत।

अपूर्ण० गु० जो अभी पूरा नहीं भया है।

अपूर्णभूत० गु० अभी व्यतीत नहीं भया।

अपूरब० }
अपूर्व० } गु० जो पहिले कभी नहीं देखा, अनूठा।

अपि० अव्य० निश्चय, ठीक, भी।

अपिधान० ना० पु० पोशाक, वस्त्र।

अपीड़० ना० पु० शिखा भूषण।

अपेय० गु० जो पीने के योग्य नहीं है।

अपेल० गु० अचल, जो टल न सके।

अपेक्षक० गु० अपेक्षा करने हारा, निसबत करने हारा, अनुरोधक।

अपेक्षा० ना० स्त्री० अनुरोध, आशा, भरोसा, रिश्तह, निसबत।

अपेक्षित० गु० आश्रित, अपेक्षा किया गया।

Digitized by Google

अपौरुष० गु० जिसके साध्यता नहीं है, नाताक़त ।

अप्रकाश० ना० पु० अंधेरा, जो प्रकट नहीं है ।

अप्रतिहत० गु० जिसको रोक नहीं है ।

अप्रतीत० गु० प्रतीति रहित, अर्थात् जो विश्वास के योग्य नहीं है ।

अप्रत्यय० ना० पु० अविश्वास ।

अप्रत्यक्ष० गु० जो देखा न जावे ।

अप्रधान० गु० मुख्य नहीं है, जो सर्दार नहीं है ।

अप्रबन्ध० ना० पु० बेबन्दोबस्त, प्रबन्धहीन ।

अप्रमाण० गु० बहुत, प्रमाण रहित, असत्य ।

अप्रसन्न० गु० जो प्रसन्न नहीं है, गंदला, नाख़ुश ।

अप्रसिद्ध० गु० जिसको कोई नहीं जानता है, गुप्त ।

अप्राकृत० गु० जो प्राकृत नहीं है ।

अप्राप्तयौवन० ना० पु० लड़का, नाबालिग़ ।

अप्रिय० गु० अहित, जो प्रिय नहीं है ।

अफरना० अ० क्रि० अधिक भोजन से पेट फूलना, अधिकधनवान होना ।

अफराना० स० क्रि० अधिक भोजन कराना ।

अफल० गु० निष्फल, व्यर्थ, बे फ़ायदह ।

अब० अव्य० इस समय, इदानीं, ना० पु० पानी ।

अबतक० } अव्य० अभी तक, इस समय तक ।
अबतलक० }

अब्भरण० ना० पु० पानी भरना ।

अबल० गु० निर्बल, पौरुष रहित ।

अबला० ना० स्त्री० नारी, स्त्री० गु० बलहीना ।

Digitized by Google

अबल॰ गु॰ निर्बल, बलरहित।
अबार॰ ना॰ स्त्री॰ विलम्ब, देर, कुसमय।
अबुध॰ गु॰ मूर्ख, मूढ़, अहमक़, दैत्य।
अबूझ॰ गु॰ नासमझ नादान।
अबूझा॰ गु॰ विना समझा, अनजाना।
अबुझित॰ गु॰ जो बूझा नहींगया।
अबेर॰ ना॰ स्त्री॰ अबार।
अबै॰ अव्य॰ अभी॰ गु॰ अनिश्चित।
अब्ज॰ ना॰ पु॰ कमल, अर्क, चन्द्रमा, देव वैद्य, शंख, वृक्ष विशेष।
अब्द॰ ना॰ पु॰ वर्ष, साल, संवत्।
अब्धि॰ ना॰ स्त्री॰ समुद्र, सीपी। समुद्र।
अभक्त॰ गु॰ जो भक्त नहीं, भक्तिहीन, जो हिस्सह नहीं हुआ है।
अभङ्ग॰ गु॰ जिसका नाशनहो।
अभय॰ गु॰ निर्भय, निडर।
अभया॰ ना॰ स्त्री॰ हड़।
अभरण॰ ना॰ पु॰ गहना, आभूषण, ज़ेवर।
अभरम॰ गु॰ प्रतिहीन, निडर।
अभाग॰ } ना॰ पु॰ दुर्गति,
अभाग्य॰ } विपत्ति।
अभागा॰ ना॰ पु॰ } गु॰ भाग्यहीन,
अभागी॰ ना॰ स्त्री॰ } निपद्ध।
अभाय॰ ना॰ पु॰ अनहोना
अभार॰ गु॰ हलका।
अभाव॰ ना॰ पु॰ अविद्यमान, नाश, मृत्यु, अनहोना।
अभास॰ ना॰ पु॰ छाया, प्रतिबिम्ब।
अभि॰ अव्य॰ सबदिशितें, यह जिस शब्दके प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ यथा, आगे, प्रत्येक इत्यादि होता है।
अभिगम्य॰ अ॰ क्रि॰ आपुजाकर।

Digitized by Google

अभिचार० ना० पु० मन्त्र जिस्से बधकिया जाता है ।

अभिजित्० ना० पु० मुहूर्त्त विशेष, इक्कीसवां नक्षत्र ।

अभिधान० ना० पु० नाम, कोष ।

अभिनव० गु० नया, नूतन, नवीन ।

अभिनन्दन० ना० पु० सराहे, सम्मति, सलाह ।

अभिप्राय० ना० पु० मतलब, सारार्थ, अर्थ, आशय, कारण ।

अभिभूत० गु० पराजित, बलहीन ।

अभिमत० गु० वाञ्छित, इच्छानुसार, सम्मत ।

अभिमान० ना० पु० अहङ्कार, घमण्ड, गरूर ।

अभिमानी० } गु० अहङ्कारी,
अभिमान्य० } मग़रूर ।

अभिमुख० गु० सम्मुख, सामने, वर्त्तमान ।

अभिरत० गु० संयुक्त, मिलत ।

अभिराम० गु० सुन्दर, सुखद, रमण ।

अभिरामी० गु० रमने वाला ।

अभिलाष } ना० स्त्री० इच्छा
अभिलाषा } मनोरथ, तमन्ना ।

अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना ।

अभिवाद० ना० पु० दुर्वचन, कुवचन, और बुरा बतकहाव ।

अभिवादन० ना० पु० चरण ग्रहण, पूर्वक नमस्कार ।

अभिषिक्त० गु० जिसका अभिषेक भया हो ।

अभिषेक० ना० पु० जलछिरकना, शान्ति, स्नान, पदकीप्राप्तिकेलिये पहिली क्रिया विशेष राज्य तिलक ।

अभिसार० ना० पु० नायक, रति ।
अभिसारिका० ना० स्त्री० नायिका, सेनापत्नी ।
अभिसारिणी० ना० स्त्री० नायिका ।
अभिज्ञ० गु० प्रवीण, क़दरदान, गुणग्राहक ।
अभी० अव्य, इसीसमय ।
अभीत० गु० निडर, अभय ।
अभीप्सित० गु० प्रिय, वाञ्छित, मनभावित ।
अभीशु० ना० पु० जीव, प्राण ।
अभीष्ट० गु० प्रिय, वाञ्छित, मनभावित ।
अभूत० गु० जो व्यतीत नहीं भया, अभाव ।
अभूतरिपु० गु० शत्रुरहित ।
अभेद० } गु० ऐक्य, परस्पर
अभेव० } सम्बन्ध, प्रकट ।
अभ्यन्तर० ना० पु० भीतरी, भीतरका ।
अभ्यास० ना० पु० साधन, चिन्तन, कर्तव्य ।
अभ्र० ना० पु० आकाश, मेघ ।
अभ्रक० ना० पु० अबरक, धातु विशेष ।
अमङ्गल० गु० मङ्गल रहित, अशोभा ।
अमत्त० गु० सीधा, सावधान, होशमें ।
अमर० गु० जो न मरे, ना० पु० देवता, निरङ्कार, अविनाशी ।
अमरपुर० ना० पु० ब्रह्मा देश का नगर विशेष इन्द्र, विष्णु, शिव, लोक, स्वर्ग ।
अमरस० ना० स्त्री० आमका रस ।
अमरावती० ना० स्त्री० इन्द्रपुरी ।
अमरीहत० ना० पु० कच

अमर्याद० } नाo स्त्रीo अनीति, अवज्ञा, असन्मान ।
अमर्यादा० }

अमल०गुo निर्मल, उजला, मादक वस्तु, राज्य ।

अमलतास०नाo पुo बन्दरलाठी, औषधि विशेष ।

अमात्य०नाo पुo मन्त्री, दीवान ।

अमान० गुo सीधे स्वभाव, मान रहित ।

अमाना० अo क्रिo समाना, भरना, खपना ।

अमान्य०गुo जो मानने के योग्य नहीं है ।

अमानुष०गुo मनुष्यता रहित, बिना मनुष्य ।

अमावस० } नाo स्त्रीo कृष्ण पक्षकी समाप्ति की । तिथि, वदी १५
अमावस्या० }
अमावास्या० }

अमार्ष० } गुo ईर्षा रहित, अक्रोध ।
अमर्ष० }

अमिट०गु० जो मिट न जावे, वा मेटा न जासके ।

अमित० गुo जो नापा नहीं गया, बहुत ।

अमिय०नाo पु० अमृत, आब हयात ।

अमियमूरि०नाoस्त्रीo सजीवन बूटी ।

अमिल०गुoखट्टा, जो न मिले ।

अमी०नाoपुo अमृत ।

अमुक० सर्वo कोई, वह, अमका, फलाना ।

अमूल०गु० जिसकी जड़ नहीं है ।

अमृत०नाo पुo पीयूष, सुधा, विष, पानी, देवता, गुo जो न मरे ।

अमृतफल०नाoपु०आंवला ।

अमृतवल्लरी०नाoस्त्रीo गुरच, गिलोय ।

Digitized by Google

अमृता० ना० स्त्री० हर्र, गुरच, फटकरी, नाम-चन्द्रमा की एक कला का ।

अमृताद्व० ना० पु० खरबूजा, यथा अमृताह्वो दशाङ्गुलो, इति निघण्टः ।

अमृतेश० ना० पु० देवता, इन्द्र ।

अमेध्य० ना० पु० विष्टा, मल ।

अमेय० गु० अप्रमाण, यथा श्री भगवान्, जिसका प्रमाण कोई न जान सके ।

अमोघ० गु० जो व्यर्थ नहीं, सफल, अचूक, फलदाता, ना० स्त्री० नदी विशेष ।

अमोघा० ना० स्त्री० हर्र ।

अमोल० गु० मोल रहित, अपूर्व वस्तु, बेक़ीमत ।

अम्ल० गु० खट्टा ।

अम्बक० ना० पु० नेत्र, आंख, यथा त्र्यम्बक, अर्थात् त्रिनयन, शिव ।

अम्बर० ना० पु० आदर, आकाश, वस्त्र ।

अम्बरमणि० ना० पु० सूर्य ।

अम्बरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।

अम्बरीष० ना० पु० राजा विशेष ।

अम्बष्ठकी० ना० स्त्री० माई ओषधि ।

अम्बा० ना० स्त्री० माता, महतारी ।

अम्बारी० ना० स्त्री० हाथी पर का आसन विशेष ।

अम्बिका० ना० स्त्री० माई ओषधि, माता, देवी, पार्वती ।

अम्बिष्ठा० ना० स्त्री० रायलता,

अम्बु० ना० पु० जल, पानी ।

अम्बुज० ना० पु० कमल ।

अम्बुद० ना० पु० मेघ ।

अम्बुधि० ना० पु० समुद्र ।

Digitized by Google

अम्बुपति॰ ना॰ पु॰ वरुणदेव।

अम्बुवल्लरी॰ ना॰ स्त्री॰ जल, पिप्पल।

अम्बुवह॰ ना॰ पु॰ मेघ।

अम्बुवासिनी॰ ना॰ स्त्री॰ मछली, कुम्भी।

अम्बुस्तत्॰ ना॰ पु॰ मेघ।

अम्बुज॰ ना॰ पु॰ कमल।

अम्भफल॰ ना॰ पु॰ आवीसेव, यथा अम्भफलःचापःइति निघण्टः।

अम्भोज॰ }
अम्भोरुह॰ } ना॰ पु॰ कमल।

अम्मा॰ ना॰ स्त्री॰ माता, मा, पची, यह शब्द अरबी का है।

अम्र॰ ना॰ पु॰ अम्ब, आम।

अम्ल॰ गु॰ खट्टा, खटाई।

अम्लान॰ गु॰ निर्मल।

अम्लिका॰ ना॰ स्त्री॰ इमिली हन।

अम्लिवेतस॰ ना॰ पु॰ अमल बेत।

अय॰ ना॰ पु॰ लोहा, रामायणे यथा-अयमय खण्डन जलमय अनहूं बूझ अबूझ।

अयं॰ अव्य॰ सर्व, यह।

अयन॰ ना॰ पु॰ वर्ष का आधा अर्थात् उत्तरायण वा दक्षिणायन, मार्ग, घर।

अयथार्थ॰ ना॰ पु॰ अन्याय, अन्धेर।

अयमात्मा॰ ना॰ पु॰ यह जीव।

अयान॰ }
अयाना॰ } गु॰ भोला, नादान, मूर्ख।

अयुक्त॰ गु॰ अनुचित, विना मेल।

अयुत॰ ना॰ पु॰ दश सहस्र, १००००।

अयोग्य॰ गु॰ अनुचित, असमर्थ, बेजा।

Digitized by Google

अयोध्या० ना० स्त्री० अवध की प्राचीन राजधानी जहां श्री रामावतार भया था।

अयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।

अरगट० ना० पु० छुपाव, घूंघट।

अरगा० गु० अलग, भिन्न।

अरगाना० अ० क्रि० अलगाना, अ० क्रि० अलग होना, ना० पु० चुपलगाना।

अरगानी० ना० स्त्री० चुप, चुपकी।

अरगे० अ० क्रि० हठ किया।

अरझना० अ० क्रि० उलझना, फसना।

अरटाता० ना० पु० देश विशेष।

अरणी० ना० स्त्री० अग्नि प्रचारक काष्ठ विशेष।

अरगड़० ना० पु० रेंडी का वृक्ष, अण्ड वृक्ष।

अरण्य० ना० पु० जङ्गल, वन।

अरना० ना० पु० जङ्गली भैंसा।

अरनी० ना० स्त्री० जङ्गली भैंस।

अरबराना० अ० क्रि० घबराना, हरबराना।

अरराना० अ० क्रि० बिनारोक गिरने का शब्द।

अरराय० गु० बिनारोक, बिना सहारा।

अरलू० ना० पु० स्योना वृक्ष।

अरविन्द० ना० पु० कमल।

अराजक० गु० राजाबिनादेश।

अरि० ना० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।

अरिल० ना० पु० छन्द विशेष,

अरिष्ट० ना० पु० अशुभ, मृत्यु दायक, रोग, नीब वृक्ष।

अरिष्टक० ना० पु० रीठा।

अरिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुघ्न।

Digitized by Google

अरो॰ अव्य॰ कौका सम्बोधन ।
अरु॰ अव्य॰ और, पुनः, ना॰ पु॰ कुम्हड़ा ।
अरुचि॰ ना॰ स्त्री॰ मतलाई, अनिच्छा ।
अरुण॰ ना॰ पु॰ लालरङ्ग, सूर्य, लाल अरयड, सूर्य का सारथी ।
अरुणचूड़॰ } ना॰ पु॰ मुर्गा ।
अरुणशिखा॰ }
अरुणा॰ ना॰ स्त्री॰ जपापुष्प, गुड़हल का फूल ।
अरुणाई॰ ना॰ स्त्री॰ लाली ।
अरुणारे॰ गु॰ लाल ।
अरुणोदय॰ ना॰ पु॰ सूर्योदय के पहिले दो मुहूर्त्त, सूर्योदय ।
अरुष्क॰ ना॰ पु॰ भिलावां ।
अरे॰ अव्य॰ नीचतरका सम्बोधन, गु॰ अड़ा, हठा ।
अरेब॰ ना॰ पु॰ अपराध ।
अरोग॰ गु॰ भलाचङ्गा, रोग रहित ।
अरोग्यशिवी॰ ना॰ स्त्री॰ किरवाली ।
अर्क॰ ना॰ पु॰ सूर्य, मदारवृक्ष, स्फटिक ।
अर्कपुष्पी॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंधाहोली ।
अर्कविषदा॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी कटाई ।
अर्गजा॰ ना॰ पु॰ सुगन्धि, द्रव्य विशेष ।
अर्गजी॰ गु॰ जो अर्गजे से रंगा गया ।
अर्घ॰ ना॰ पु॰ पूजा करने की एकरीति, आठ वस्तु को मिलाय के ईश्वर हेत अर्पण, सूर्य की पूजा करके जलदेना, मोल ।
अर्घा॰ ना॰ पु॰ पात्र विशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं वा जलदेते हैं ।

Digitized by Google

अर्चक० गु० पुजारी ।

अर्चन० } स० क्रि० आराधना,
अर्चना० } पूजा करना ।

अर्चा० ना० स्त्री० पूजा ।

अर्चि० ना० पु० आंच, टेम, ज्योति, चमक ।

अर्चित० गु० पूजित ।

अर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति ।

अर्जना० स० क्रि० कमाना, उपार्जन करना ।

अर्जुन० ना० पु० वृक्ष विशेष, सफ़ेद, सुवर्ण, सहस्त्र बाहु, पाण्डु का तीसरा पुत्र, ककुभ वृक्ष, धवल ।

अर्णव० ना० पु० सागर, समुद्र ।

अर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य्य, धन, दौलत, माने, मतलब ।

अर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र ।

अर्थसाधन० ना० पु० रीठा, अर्थ का ठीक करना ।

अर्थात्० अव्य० जाने, अर्थयह, यानी ।

अर्थानुरोध० ना० पु० नाम के अनुरूप होना, अर्थ के अनुरूप ।

अर्थान्तर० ना० पु० दूसरा अर्थ ।

अर्थी० गु० धनी, वादी, अर्थवक्ता, प्रयोजन युक्त, ना० पु० याचक, अरथी, ना० स्त्री० लाश, ताबूत, टिकटी ।

अर्दावा० ना० पु० मोटा पिसान ।

अर्द्ध० गु० आधा ।

अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधा चन्द्रमा ।

अर्द्धचन्द्रिका० गु० कालानिसेत, आधीचांदनी ।

अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल ।

अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीराति ।

Digitized by Google

अर्द्धाङ्ग॰ ना॰ पु॰ आधाशरीर, शीताङ्ग ।

अर्द्धाङ्गी॰ गु॰ शीताङ्गी, ना॰ स्त्री॰ पत्नी ।

अर्पण॰ ना॰ पु॰ दान, देवता को भेटदेना ।

अर्पना॰ स॰ क्रि॰ अर्पणकरना ।

अर्ब॰ ना॰ पु॰ सौ किरोड़-१००००००००० ।

अर्बुद॰ ना॰ पु॰ दशकिरोड़, पर्वत विशेष ।

अर्भक॰ ना॰ पु॰ पुत्र, शिशुगर्भ ।

अर्यमा॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य ।

अर्वाक्॰ गु॰ नीच, अन्य, पछिली ।

अर्शमर्श॰ ना॰ पु॰ शुद्धकरने के लिये जल छिड़कना, छूना ।

अर्हन्त॰ ना॰ पु॰ जैनी ।

अल॰ अव्य॰ अत्यर्थ, समर्थ, पूरण, ना॰ पु॰ आभरण, आलस, वक्रतायत ।

अलक॰ ना॰ स्त्री॰ बालों की लट, घूंघर ।

अलक्त॰ ना॰ पु॰ कुसुम्भ, महावर युत ।

अलकावली॰ ना॰ स्त्री॰ एक ओरके बालों कीलटें ।

अलख॰ गु॰ अगोचर, अनदेखा, जो पहिचाना नजावे, यथा ईश्वर ।

अलग॰ गु॰ भिन्न, जुदा, लगाव नहीं ।

अलगनी॰ ना॰ स्त्री॰ रस्सी जिसपर कपड़े धरते हैं ।

अलगर्द॰ ना॰ पु॰ पनिहां सांप, यथा अलगर्दो जलव्यालः इत्यमरः ।

अलगा॰ गु॰ भिन्न, निर्बन्ध ।

अलगाना॰ स॰ क्रि॰ जुदा करना, अ॰ क्रि॰ जुदाहोना, अलग होना ।

अलङ्कृत॰ गु॰ अलङ्कार युत, आभूषित ।

Digitized by Google

अलङ्कार॰ ना॰ पु॰ भूषण, गहना, और शास्त्र विशेष।

अलङ्ग॰ ना॰ स्त्री॰ ओर, पार।

अलभ्य॰ गु॰ जो मिलने के योग्य न हो।

अलम॰ अव्य॰ बहुत, ढेर।

अलखुषा॰ ना॰ स्त्री॰ स्वासा जो मुखसे निकलती है, स्थान सारावल्यां यथा मुखमधिअलखुषाविश्रामित कुङ्कुम के देश विरामित।

अलयाई॰ गु॰ थोड़े दिन की व्यानी, राम चन्द्रिका यां यथा, ज्यों सुतको सुरभी अलयाई।

अलवेश॰ गु॰ बहुतायत, अतिशयालवेशःइत्यभिधानः।

अलस॰ ना॰ पु॰ आलस्य।

अलसाना॰ अ॰ क्रि॰ ऊंघना।

अलसी॰ ना॰ स्त्री॰ तीसी, अतसी।

अलक्षण॰ ना॰ पु॰ दुष्टचिन्ह।

अलात॰ ना॰ स्त्री॰ बनेठी।

अलान॰ ना॰ स्त्री॰ हाथीबांधने की ज़ञ्जीर जिसको आंदू कहते हैं।

अलाप॰ ना॰ पु॰ आलाप, उच्चारण।

अलापना॰ स॰ क्रि॰ आलापना।

अलाव॰ ना॰ पु॰ धूनी, कूरा।

अलि॰ ना॰ पु॰ बिच्छू, भ्रमर, वृश्चिक ना॰ स्त्री॰ सखी।

अलिक॰ ना॰ पु॰ माथा, झूठ।

अलिन॰ ना॰ पु॰ भ्रमर, ना॰ स्त्री॰ स्त्रियां।

अलिनी॰ ना॰ स्त्री॰ भ्रमरी, भौंरी।

अली॰ ना॰ स्त्री॰ सखी, दूती, स्त्री।

अलीक॰ ना॰ पु॰ झूठ, मिथ्या।

Digitized by Google

अलीन॰ गु॰ अयोग्य, अनुचित, बेमेल।

अलीक॰ गु॰ अयोग्य, झूठ।

अलेख॰ गु॰ अत्यन्त, अगणित, बहुत।

अलैयाबलैया॰ ना॰ स्त्री॰ निछावर, और दीवाली में पूला जलाय के नचाना।

अलोन } गु॰ लोन रहित,
अलोना } फीका।

अलोप॰ गु॰ छुपा, बिगाड़ा, नष्ट, प्रकट।

अलोपना॰ स॰ क्रि॰ छुपाना, गुप्तकरना।

अलोल॰ गु॰ अटल, थिर, ना॰ स्त्री॰ खेलकूद।

अलौकिक॰ गु॰ जो लौकिक नहीं है अर्थात् परलोक का, लोकातीत।

अल्प॰ गु॰ थोड़ा किञ्चित्।

अल्पतर॰ गु॰ बहुत थोड़ा।

अल्पधी॰ गु॰ लघुबुद्धी, नासमुझ।

अल्पनिद्रा॰ गु॰ स्त्री॰ थोड़ा सोना।

अल्पज्ञ॰ गु॰ कमसमझ, थोड़ा-जानकार।

अल्लूक॰ ना॰ पु॰ आलूतरकारी।

अव॰ अव्य॰ जिस शब्दके प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी, भिन्नता, कभी फैलाव का होता है, कभी नास्ति, कभी अनादर।

अवकाश॰ ना॰ पु॰ औसर, सावकाश।

अवकेशी॰ गु॰ बांझ।

अवगति॰ ना॰ स्त्री॰ ज्ञान, वा बुरीदशा।

अवगाह॰ ना॰ पु॰ अथाह।

अवगाहन॰ ना॰ पु॰ स्नान। तैरना, थाह लगाना।

Digitized by Google

अवगाहि॰ अ॰ क्रि॰ थाह लगाके।

अवगीत॰ गु॰ निन्दित, दुष्ट, ना॰ पु॰ निन्दा, दोष।

अवगुण॰ ना॰ पु॰ खोट, दोष।

अवघट॰ गु॰ कुघाट।

अवचट॰ गु॰ एक दृष्टि, एकाएक।

अवडेरि॰ अ॰ क्रि॰ बहकाय, धोखा देकर, रामायण यथा, पश्च कहैं शिवसती बिवाही, पुनि अवडेरि मराइनि ताही।

अवतंस॰ ना॰ पु॰ पताका, शिरोमणि।

अवतरना॰ अ॰ क्रि॰ उतरना, प्रकट होना।

अवतार॰ ना॰ पु॰ ईश्वर का मनुष्यादि के रूप से पृथ्वीतल पर प्रकाशित होना, जन्म।

अवतारिक॰ } गु॰ परमात्मा, ईश्वर अवतार
अवतारी॰ } लेनेहारा, यथा राम, कृष्ण।

अवदात॰ गु॰ उज्ज्वल, उत्तम, सुन्दर।

अवदीच॰ ना॰ पु॰ गुजराती ब्राह्मणों की जाति।

अवध॰ } ना॰ स्त्री॰ वचन, मर्याद, सीमा, समय,
अवधि॰ } वा श्री आयोध्या जी वा उसके आर पास का देश प्रसिद्ध।

अवधान॰ गु॰ चौकस, सावधान, ना॰ पु॰ चौकसाई, बचन।

अवध्य॰ गु॰ जो बध करने के योग्य नहीं है।

अवधूत॰ ना॰ पु॰ जोगी, शिव पूजक।

अवधूतनी॰ ना॰ स्त्री॰ जोगिन्।

Digitized by Google

अवनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

अवनीश० ना० पु० राजा, बादशाह।

अवन्तिका० } ना० स्त्री० उज्जैन नगरी, नदीविशेष।
अवन्ती० }

अवम्० ना० पु० तिथिक्षय, गु० नीच।

अवयव० ना० पु० अङ्ग वा शरीर का भाग।

अवराधक० गु० सेवक, ध्यानी।

अवराधित० गु० सेवित, ध्यान-किये गये।

अवराधना० स० क्रि० सेवा करना।

अवरुद्ध० बंधा हुआ।

अवरेखना० स० क्रि० लिखना, लकीर करना।

अवरेखी० स० क्रि० लिखी, लकीर की।

अवरोध० ना० पु० बन्ध, रोक, अटक।

अवलम्ब० ना० पु० आश्रय, आसरा, सहारा।

अवि० ना० पु० पर्वत, शेष, सूर्य्य रक्षक।

अविलम्बित० } गु० आश्रित, लटकता, पक्षी।
अविलम्बी० }

अविलरि० ना० स्त्री० पांति, पङ्क्ति, कतार।

अवलोकन० ना० पु० दर्शन, दृष्टि, देखाव।

अवलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना।

अवश० गु० पराधीन, असमर्थ।

अवशिष्ट० गु० शेष, उच्छिष्ट, बाक़ी।

अवशेष० ना० पु० शेषबचा, बाक़ी रहा।

अवशेषित० गु० जो बाक़ी रह गया।

Digitized by Google

अवश्य अव्य० चाहिये, निश्चय कर्त्तव्य, ज़रूरी।

अवसर० ना० पु० सावकाश, घात, समय, मौक़ा, इत्तिफ़ाक़।

अवसान० ना० पु० अन्त, समाप्ति, आख़िर।

अवसेरि० ना० स्त्री० देर, राह देखना, वाट हेरना।

अवस्था० ना० स्त्री० दशा, उमर, हालत, और दुर्दशा।

अवज्ञा० ना० स्त्री० अपमान, निन्दा, अनादर, तुच्छ करना, आबरू उतारना।

अवाई० ना० स्त्री० नगिचाई, आमद।

अवाक्० ना० पु० गूंगा, मूक, मौनी।

अवाच्य० गु० अकथ्य, मौनी, निरर्थ, कुवच।

आवाधी० गु० स्त्री० सुखरूपी, वाधारहित।

अवाध्य० गु० बिना वाधा, अतर्क्य।

अवाध्योपकर्म० गु० वाधारहितकर्म, अतर्ककर्म।

अवारी० ना० स्त्री० दुकान, पङ्क्ति, रामायणे यथा चारु बजार विचित्र अवारी, मणिमय विधि जनु स्वकर संवारी, अम्बारी।

अवास० ना० पु० घर, मकान।

अविकल० } गु० निश्चिन्त,
अविकलित० } आनन्द।

अविकार० ना० पु० विकार रहित।

अविकारी० गु० जन्मादिविकार रहित।

अविगत० गु० व्यापक।

अविगति० ना० स्त्री० ज्ञान।

अविचल० गु० अचल, थिर, क़ायम।

अविचार० ना० पु० भूल, अन्याय, नादानी।

Digitized by Google

अविचारी० गु० विचाररहित, अन्यायी ।

अविदूर० गु० पास, निकट ।

अविद्या० ना० स्त्री० भूल, अज्ञानता, माया, विद्याहीन ।

अविनय० गु० ढिठाई, चञ्चलाहट, गुस्ताख़ी ।

अविनाश० ना० पु० नाश रहित, कुशल ।

अविनाशी० गु० कुशल, जिसका नाश नहोवे ।

अविनीति० गु० चञ्चल, ढीठ ।

अविन्दु० गु० विन्दु रहित ।

अविरल० गु० निरन्तर, अभेद ।

अविरोध० ना० पु० चैन, सुख, आनन्द, गु० विरोध रहित ।

अविरोधिनी० ना० स्त्री०
अविरोधी० ना० पु० } गु० सुखी, बेखटके ।

अविलम्ब० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी, चल ।

अविलम्बित० गु० शीघ्र, जल्द ।

अविवादी० गु० जो विवाद न करे, शान्त ।

अविवेक० ना० पु० अविचार, अज्ञानता, गु० जोविवेक रहित हो ।

अविवेकी० गु० विचार हीन, अज्ञानी ।

अविशेष० गु० समान, जो विशेष नहीं ।

अविश्वास० ना० पु० अप्रतीति, बेएतबार ।

अविश्वासी० गु० जिसको प्रतीति नहीं वाजो किसी की प्रतीति न माने ।

अविच्छीण० गु० निरन्तर, अखण्ड, पूरा ।

अवेगी० ना० पु० बिधारा औषधि गु० जो बेगतारहितहो ।

अवेर० ना० स्त्री० ढील, विलम्ब, कुसमय ।

Digitized by Google

अवेला॰ ना॰ स्त्री॰ कुसमय, बेवक्त।
अव्यक्त॰ गु॰ जो व्यक्त नहीं अर्थात् मालूम नहीं।
अव्यय॰ ना॰ पु॰ स्वर्ग, अक्षर, गु॰ जो व्यय नहो, जिस शब्दकाकारकत्वन हो, कृपण।
अव्यवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ जो शास्त्र से सम्मत नहीं है।
अव्यवस्थित॰ गु॰ जो ठीक नहीं है।
अव्यवहारित॰ गु॰ त्यागित, छोड़ा हुआ।
अव्यवहित॰ गु॰ मिला, व्यवधान रहित।
अव्याप्ति॰ ना॰ स्त्री॰ लक्ष्य में लक्षणका जोनहींजाना, प्रकटमें प्रकटता रहित।
अव्याहत॰ गु॰ विनरोक, मायाजित, रामायणेयथा अव्याहत गति शम्भु, प्रसादा।
अशकुन॰ ना॰ पु॰ अपशकुन, बुरा शगुन।
अशकुनी॰ गु॰ अपशकुनी, बुरेलक्षणयुत।
अशक्त॰ गु॰ निर्बल, लाचार, असमर्थ।
अशक्ति॰ गु॰ निर्बल, असमर्थता, शक्ति रहित हुवा।
अशक्य॰ गु॰ असाध्य, शक्यता रहित।
अशङ्क }
अशङ्का } गु॰ निर्भय, निडर, बेखौफ।
अशन॰ ना॰ पु॰ भोजन, खाना।
अशनि॰ ना॰ पु॰ वज्र।
अशरण॰ गु॰ रक्षा रहित, पनाह नहीं।
अशास्त्र॰ गु॰ जो शास्त्र से बाहर है।
अशास्त्रीय॰ गु॰ जो शास्त्र में उक्त नहीं है।
अशिव॰ गु॰ मङ्गल रहित अशुभ।

Digitized by Google

अशिष्ट॰ गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।

अशुक॰ गु॰ अशोक, अदुःख।

अशुचि॰ गु॰ अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।

अशुद्ध॰ गु० अपवित्र, जोठीक नहीं है, ग़लत।

अशुद्धता॰ ना० स्त्री० अपवित्रता, चूक, भूल।

अशुभ॰ गु० अमङ्गल, जो अच्छा नहो, ना० पु० पाप, दोष।

अशेष॰ गु० सम्पूर्ण, सारा, समस्त, सब।

अशोक॰ ना० पु० वृक्ष विशेष, सुख, चैन।

अशोभा॰ गु० अनगढ़, कुरूप, ना० स्त्री० सुन्दरता रहित, शोभा हीन।

अशौच॰ गु॰ नापाक, अशुद्ध।

अश्म॰ ना० पु० पत्थर।

अश्मरी॰ ना० स्त्री॰ पथरी, वा मूत्र कृच्छ्र रोग।

अश्मभेद॰ ना० पु० पाषाणभेद।

अश्रद्धा॰ ना० स्त्री० घिन, चिढ़ अविश्वास।

अश्रु॰ ना० पु० आंसू।

अश्रुपात॰ ना० पु० आंसुओं का गिरना।

अश्लेषा॰ ना० स्त्री० श्लेषा, नवां नक्षत्र।

अश्वा॰ ना० स्त्री० घोड़ा।

अश्वगन्धा॰ ना० स्त्री० असगन्ध औषधि।

अश्वतर॰ ना॰ पु० खच्चर।

अश्वत्थ॰ ना॰ पु० पीपलवृक्ष।

अश्वपति॰ ना० पु० वह राजा जिनके पास बहुत घोड़े वा घुड़चढ़े हों।

अश्वमेध॰ ना॰ पु० यज्ञविशेष यह यज्ञ राजाधिराज करसक्ता है, जो जगत जीतहो।

अश्वयुज॰ना॰पु॰कुंवारमास।

अश्वरत्नक॰ना॰पु॰ साइस।

अश्ववार॰ना॰ पु॰ असवार, सवार, घुड़चढ़ा।

अश्वशाला॰ ना॰ स्त्री॰ तबेला॰ घुड़साल।

अश्वहा॰ना॰ स्त्री॰ कनेर वृक्ष।

अश्वा॰ना॰ स्त्री॰, असगन्ध।

अश्वारूढ़॰ना॰पु॰ अश्ववार, सवार, घुड़चढ़ा।

अश्विनी॰ना॰ स्त्री॰ प्रथम नक्षत्र।

अक्षय॰गु॰ जिसका क्षय नहो, अमिट।

अक्षयवट॰ना॰ पु॰ वह बरगद जो प्रयाग में है।

असाढ़॰ना॰ पु॰ चतुर्थमास, आषाढ़, असाढ़।

अष्ट॰ना॰ पु॰ आठ ८।

अष्टकुरीसर्प॰ना॰ पु॰आठकुरी सांपों की अर्थात् अनन्त १ वासुकि २ तक्षक ३ कर्काटक ४ शङ्ख ५ कुलिक ६ पद्मक ७ महापद्मक ८।

अष्टकोण॰ना॰पु॰ आठकोने।

अष्टचत्वारिंशत्॰गु॰ अठतालीस ४८।

अष्टदिशाग्रह॰ना पु॰ आठों दिशा के ग्रह अर्थात् सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनैश्चर, चन्द्रमा, बुध, गुरु।

अष्टधातु॰ ना॰ पु॰ आठधातु अर्थात् सोना, रूपा, तांबा, पीतल, रांगा, कांसा, सीसा, लोहा।

अष्टपञ्चाशत्॰ गु॰ अट्ठावन ५८।

अष्टप्रहर॰ गु॰ आठपहर, दिन राति।

Digitized by Google

अष्टभैरव० ना० पु० आठ भैरव अर्थात् असिताङ्ग-रुरु, चण्ड, उन्मत्त, क्रोध, कपाली, भीषण, काल।

अष्टम० गु० आठवां।

अष्टमांश० ना० पु० आठवां भाग $\frac{1}{8}$।

अष्टमी० ना० स्त्री० आठवीं तिथि, आठैं।

अष्टवसु० ना० पु० आठवसु अर्थात् आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभावन्त।

अष्टविंशकुलक्षण० ना० पु० अट्ठाईस कुलक्षण अर्थात् काम १ क्रोध २ क्रियाहत ३ दुर्वाद ४ लोभ ५ लम्पटता ६ अलज्जा ७ अविद्या ८ अशोभा ९ आलस्य १० अति निद्रा ११ दुष्टता १२ अदया १३ कृपणता १४ दरिद्रता १५ रोग १६ मलिनता १७ कुपात्रदान १८ अबूझता १९ भोग्यता २० अत्याहार २१ अहङ्कार २२ अदृढ़ता २३ कुदान २४ दुर्भावता २५ अप्रतीति २६ मोह २७ व्यङ्ग्रवाक्यता २८।

अष्टविंशति० गु० अट्ठाईस २८।

अष्टसिद्धि० ना० स्त्री आठसिद्धि अर्थात् अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्रकाम ६ वशीकरण ७ ईशता ८।

अष्टाङ्गप्रणाम, } ना० पु०
वा दण्डवत० } स्त्री० आठ अङ्ग से प्रणाम अर्थात् उर, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पद, कर, जानु से नमस्कार करना।

Digitized by Google

अष्टाङ्गयोग० ना० पु० योग के आठ अङ्ग अर्थात् यम १ संयम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८।

अष्टादश० ना० पु० अठारह १८

अष्टादशपुराण० ना० पु० अठारहपुराण अर्थात् भागवत १ भविष्य २ मार्कण्डेय ३ मत्स्य ४ ब्रह्माण्ड ५ ब्रह्म ६ ब्रह्मवैवर्त्त ७ विष्णु ८ वायु ९ वामन १० वराह ११ अग्नि १२ नारद १३ पद्म १४ कूर्म १५ स्कन्द १६ लिङ्ग १७ गरुड़ १८।

अष्टादशस्मृति० ना० स्त्री० अठारह स्मृति अर्थात्, मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४ हारीत ५ उशना ६ अङ्गिरा ७ आपस्तम्ब ८ संवर्त्त ९ यम १० कात्यायन ११ वृहस्पति १२ पाराशर १३ व्यास १४ शङ्खलिखित १५ गौतम १६ वशिष्ठ १७ दक्ष १८।

अष्टापद० ना० पु० कञ्चन, सुवर्ण, पशु।

अष्टाशीति० गु० अस्सी ८०।

असङ्ख्य० } गु० अगणित, बे शुमार, बहुत।
असङ्ख्यात० }

असंशय० ना० पु० निश्चय, निस्सन्देह।

असकति० ना० स्त्री० आलस्य।

असकती० गु० आलसी।

असगन्ध० ना० पु० ओषधिविशेष

असङ्गत० गु० मिथ्या, अनुचित, अनर्थ।

असज्जन० गु० कुपात्र, नीच, दुष्ट।

असत्० गु० असाधु, अधर्मी।

अशन० ना० पु० भोजन, खाना, वृक्ष विशेष ।

अशनि० ना० पु० वज्र ।

असन्तान० गु० पुत्रहीन, निर्वंश ।

असन्तुष्ट० गु० अप्रसन्न, धीरज रहित ।

असन्तोष० गु० अधीरजता ।

असभ्य० गु० जो सभाके योग्य नहीं, दुष्ट, गवांर ।

असभ्यता० ना० स्त्री० दुष्टता, असज्जनता, गवांरपन, बदशात ।

असम० गु० जो बराबर नहो, विषम ।

असमञ्जस० ना० पु० दुविधा, सन्देह, बिनुलगाव ।

असमय० गु० अकाल, विपत्तिकाल ।

असमर्थ० गु० जो समर्थ न हो, निर्बल ।

असमशर० ना० पु० कामदेव ।

असम्पूर्ण० गु० जो पूरा न हो ।

असम्बन्ध० गु० अनमेल, अनर्थ ।

असम्भव० गु० अनहोना, जो न हो सके ।

असम्मत० गु० विरुद्ध, बेसलाह ।

असह्य० } गु० जो सहा न जावे,
असह्य० } कठिन ।

असाधि० गु० जो दूर न हो सके रामायणे यथा, देखी व्याधि असाधि बड़ि ।

असाधु० गु० अधर्मी, दुष्टमति, कमीना ।

असाध्य० गु० जो कामसिद्ध न हो सके, रोगी जो जीवे नहीं ।

असामर्थ० } ना० पु० कुछ सामर्थ नहीं, लाचार ।
असामर्थ्य० } गु० कुछ सामर्थ नहीं रखता ।

असार० गु० छूंछा, पोला, सूखा, कच्चा काठ, विनापौरुष, निर्बल ।

असि० ना० स्त्री० तलवार, अव्य० हे, ऐसे।

असिद्ध० गु० अनबना, अनपका, जो सिद्ध नहीं।

असिधेनुक० ना० स्त्री० छुरी।

असिनि० ना० स्त्री० तलवार।

असिपत्री० ना० स्त्री० बेकुंड।

असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी, कटारी।

असिदंष्ट्रक० ना० पु० मगर, मच्छ।

असीम० गु० सीमा रहित अर्थात् अनन्त।

असीस० गु० शिरर्हित।

असीस० ना० पु० आशीर्वाद, दुआ।

असु० ना० पु० पञ्च प्राण, जीव, शोच।

असुग० ना० पु० किरण, बाण।

असुर० ना० पु० दैत्य, राक्षस।

असुरविनायक० ना० पु० बाणासुर।

असुरारि० ना० पु० देवता, श्रीराम कृष्णादि।

असुहर० गु० प्राणहर, मारने वाला।

असूझ० गु० अदृश्य, निरूप।

असूया० ना० स्त्री० कलङ्क, दोष।

असों० अव्य० यहवर्ष, इसवर्ष।

असोक० ना० पु० अशोक।

असोच० गु० अचेत, जो विद्या वा विचार से न होसके, जो पछिताने के योग्य नहीं।

असोची० गु० निर्मोही, अज्ञानी।

असोस० ना० स्त्री० सूखीनदी।

असौ० अव्य० यह।

असौंध० ना० स्त्री० कुबास, बदबुय।

अस्त० ना० पु० छिपाव, छुपना।

अस्तव्यस्त० गु० भिन्न भिन्न, उलटा पुलटा, बेमेल।

Digitized by Google

अस्ताचल० ना० पु० बड़ पर्वत विशेष जहां सूर्य नारायण अस्त होते हैं।
अस्तित्व० ना० पु० मौजूदगी।
अस्थि० ना० पु० हाड़, हड्डी।
अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर।
अस्थिर० गु० चञ्चल, चलायमान।
अस्थिरता० ना० स्त्री० चञ्चलाहट, थिरताहीन।
अस्थिशृङ्खला० } ना० स्त्री०
अस्थिसंहार० } हरसिंघाड़।
अस्थूल० ना० पु० सूक्ष्म, न्यून।
अस्थूलभटा० ना० स्त्री० बड़ीकटाई।
अस्मसार० ना० पु० लोहा।
अस्वच्छन्द० } गु० आधीन, पराधीन, जो अपने
अस्वतन्त्र० } वशमें नहीं है।

अस्वत्थामा० ना० पु० द्रोणाचार्य्यका पुत्र।
अस्वीकार० ना० पु० नामंज़ूर, अङ्गीकार नहीं।
अस्सी० गु० अस्सी ८०।
अस्त्र० ना० पु० जिसको फेंक के मारते हैं यथा बाण आदि।
अह० ना० पु० दिन, अहङ्कार, कष्ट।
अहं० सर्व०, मैं, हम, निज का बोधक।
अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद, घमण्ड।
अहङ्कारी० } गु० अभिमानी,
अहङ्कृत० } दम्भी, मग़रूर।
अहमित० गु० अहङ्कार युक्त, मग़रूर।
अहरेणुका० ना० स्त्री० रेणुका, बालू।

Digitized by Google

अहर्निश० ना० पु० रात्रि दिन।

अह्लाद० ना० पु० प्रेम, अनुराग।

अहल्या० ना० स्त्री० गौतमजी की स्त्री।

अहह० अव्य० आर्त्त शब्द यथा हाय हाय।

अहार० ना० पु० आहार, कलेऊ, लेई।

अहारना० स० क्रि० मंडयाना, चिपकाना, लेई लगाना, जमाना।

अहारी० गु० खानेवाला, छांटो छई लकड़ी, कोई वस्तु जो मंडियाई गई, ना० स्त्री० कोयल पक्षी।

अहि० ना० पु० सांप, रुधिर, दैत्यविशेष।

अहिंसक० गु० भोला, साधु, जो हिंसा न करे।

अहित० ना० पु० शत्रु, वैर, शत्रुता।

अहिफेन० ना० स्त्री० अफ़यून, अफ़ीम।

अहिमाली० ना० पु० श्री महादेवजी।

अहिर० ना० पु० मोरपक्षी, जातिविशेष।

अहिवल्लरी० ना० स्त्री० नागबलि, पान आदि।

अहिवात० ना० पु० सुहाग स्त्रीका।

अहिवेलि० ना० स्त्री० नागबेलि, पान आदि।

अहीर० ना० पु० ग्वाला, आभीर।

अहीरणी० ना० स्त्री० ग्वालिन।

अहोला० गु० साहसी, निडर, बहादुर।

अहीश० ना० पु० शेषादि, सर्पादि।

अहे॰ अव्य॰ सम्बोधन, थे।

अहेर॰ ना॰ स्त्री॰ आखेट, शिकार।

अहेरिया॰ } गु॰ आखेटकी,
अहेरी॰ } शिकारी।

अहो॰ अव्य॰ सम्बोधन वा आश्चर्य वा हर्ष में बोला जाता है, यथा अहो भाग्य।

अहोरात्र॰ ना॰ पु॰ दिन राति।

अहौ॰ अव्य॰ हो।

अक्ष॰ ना॰ पु॰ नेत्र, बहेरावृक्ष, पांसा।

अक्षत॰ ना॰ पु॰ चावल, जव पूजा आदि के गु॰ घाव रहित, फोड़ा रहित।

अक्षर॰ ना॰ पु॰ ककारादि वर्ण, गु॰ सूक्ष्म, अविनाशी।

अक्षविद्या॰ ना॰ स्त्री॰ रमल।

अक्षविद्वान्॰ गु॰ रम्माल, पांसावाला।

अक्षांश॰ ना॰ पु॰ रेखा, भूमि के उत्तर वा दक्षिण केन्द्र तक नब्बे २ अंश।

अक्षि॰ ना॰ पु॰ नेत्र, आंखि।

अक्षिसङ्केत॰ ना॰ पु॰ आंखिसे इशारः करना, कटाक्ष, हावभाव।

अक्षुब्ध॰ गु॰ स्थिर, शान्त।

अक्षौहिणी॰ ना॰ स्त्री॰ सैन प्रमाण, इसका कथन कई प्रकार का है। यथा

नवनाग सहस्राणि नागे नागे शतं रथाः रथे रथे शतस्वा स्वाश्वे अश्वे शतन्नराः।

अथवा दश वाहनी अथवा १०९३५० पैदल, ६५६१० सवार, २१८७० रथ, २१८७० हाथी।

अच॰ अव्य॰ यहां, इसजगह।

अत्रि॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा के पिता, मुनि विशेष।

अत्रिज०ना० पु० चन्द्रमा, दुर्वासा, दत्तात्रेय।

अज्ञ०गु० मूर्ख, अजान, नादान।

अज्ञता०ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।

अज्ञात०गु० अनजान, ना मालूम।

अज्ञाता०गु० मूर्ख, भोला, नादान।

अज्ञान०गु० मूर्ख, मूर्खता।

अज्ञानता०ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।

[आ]

आ०अव्य० जिस शब्दके प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ न्यून वा उलटा होजाता है और कभी क्रिया के अवधिका ज्ञापक होता है।

आं०अव्य० खेदोक्तिका सूचक शब्द।

आंक०ना० पु० अङ्क, चिन्ह, मदार।

आंकना०स० क्रि० लखना, अङ्काना।

आंख०ना० स्त्री० चक्षु, नेत्र।

आंग०ना० पु० अङ्ग।

आंगन० } ना० पु० अंगना, सहन।
आंगना० }

आंच० स्त्री० अग्निकीताप।

आंचर० } ना० पु० अञ्चल।
आंचल० }

आंझू०ना० पु० आंसू।

आंट०ना० स्त्री० गांठि, विरुद्धता, ताक।

आंटना०अ० क्रि० समाना, पहुंचना।

आंटी०ना० स्त्री० फेंटी, अंटिया।

आंड०ना० पु० वृषण, अण्ड।

आंत०ना० स्त्री० आंतड़ी।

आंधी०ना० स्त्री० झक्कड़, झंझावायु।

Digitized by Google

आंब० ना० पु० आम्र ।

आम० } ना० पु० पेट में रोग
आंव० } विशेष, आम्र, आमाशय ।

आंवला० ना० पु० वृक्ष वा फल विशेष ।

आंसू० ना० पु० आंखों का पानी ।

आक० ना० पु० अर्क, मदार ।

आकर० ना० स्त्री० खानि अर्थात् धातु वा रत्नादि के उत्पन्न होने का स्थान ।

आकरीय० गु० जो खान से उत्पन्न हो ।

आकर्षण० ना० पु० बल से खींचना ।

आकर्षित० गु० जो खींचा गया ।

आकांक्षा० ना० स्त्री० वाञ्छा, इच्छा, चाह ।

आकांक्षित० गु० वाञ्छित, चाहिता ।

आकांक्षी० गु० इच्छा करने वाला, चाहक ।

आकार० ना० पु० स्वरूप, डौल, सैन, सूरति ।

आकारान्त० गु० जिसके अन्त में आकार होवे ।

आकाश० ना० पु० गगन, आस्मान, अम्बर ।

आकाशपवन० ना० पु० लता विशेष आकाश बेलि वा आकाश का पवन ।

आकाशवाणी० ना० स्त्री० वाणी जो आकाश से होती है ।

आकाशविलाशी० ना० पु० देवता, नक्षत्र, गु० जो आकाश में विलाश करे यथा पक्षी ।

आकाशबेलि० ना० स्त्री० अमरबेलि ।

Digitized by Google

आकाशो० गु० आकाश का, स्वर्गीय।

आकुल० गु० व्याकुल, कातर।

आकृति० ना० स्त्री० रूप, आकार, सूरति, डौल।

आकृष्ट० गु० खींचाहुआ।

आक्रम० ना० पु० बलको प्रकाश करके किसी काम में दूसरे से अधिक होना, चढ़ाव।

आखण्डल० ना० पु० इन्द्र।

आखण्डलपुर० ना० पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग।

आखत० ना० पु० अक्षत।

आखा० ना० पु० बारा, गठिया, चलनी।

आखात० ना० पु० खलीज।

आखु०
आखुक० } ना० पु० मूस, चूहा।

आखेट० ना० पु० अहेर, शिकार, मृगया।

आखेटको० गु० शिकारी, अहेरी।

आख्या० ना० स्त्री० संज्ञा, नाम।

आग० ना० पु० अग्नि।

आगत० गु० उपस्थित।

आगम० ना० पु० वेदवाशिवोक्त शास्त्र विशेष भविष्यत् वा० ई अवाई।

आगमन० ना० पु० अवाई, आन।

आगमवक्ता० ना० पु० शिव, गु० जो आगमकी बात बदे वा आगम का पाठक होवे।

आगमविद्या० ना० स्त्री० आगम कहने की विद्या।

आगमज्ञानी० ना० पु० तान्त्रिक, जो आगम को जानता होवे।

आगर० ना० पु० अधिक वा घर।

आगरा० ना० पु० नगर विशेष।

आगरी० ना० स्त्री० कोठरी।

Digitized by Google

आगलान्त० अव्य० गलेलग ।

आगा० ना० पु० सामना, अगवाड़ा ।

आगामी० गु० आनेहारा, अवैया ।

आगार० ना० पु० घर, मकान ।

आगिल० गु० पहिला ।

आगू० } अव्य० सामने, बढ़िके,
आगे० } अग्रे ।

आगोट० ना० स्त्री० चौकसी, क़ैद ।

आग्रह० ना० पु० उपकार, जहालत ग्रहण ।

आघात० ना० पु० चोट, मारपीट ।

आघार० ना० पु० घृत, घी, छिड़काव ।

आघु० ना० पु० मोल, मर्य्याद, यथा बिहारी लाल सप्रशतिकायां। दोहा। जन्म जलधि पानिपविमलभोजग आघु अपार, रहे गुणी है गरपरे भलोन मुक्ताहार ।

आङ्गिरस० ना० पु० बृहस्पति ।

आचमन० ना० पु० आचमन, अर्थात् भोजन वा पूजा करने के पहिले थोड़ा जल हथेली में रखकेपी नावा कुल्लीकर्ना ।

आचरण० ना० पु० करतूत, चालि, व्यवहार, आचार, शास्त्रोक्तक्रिया ।

आचार० ना० पु० विचारकरना, पाखण्ड, परहेज़, खटाई फ़ारसी ।

आचारी० गु० जोमनुष्यशास्त्रोक्तक्रियायत्न समेतकरे ।

आचार्य्य० ना० पु० वेद का उपदेशक, गुरु ।

आच्छादन० ना० पु० वस्त्र, ढकना, धोती, पोशाक ।

आच्छादित० गु० वस्त्र युत, ढकाभया ।

आछे० गु० अच्छे का बहुवाक्य ।

आज० अव्य, अद्य, इसरोज़ ।

Digitized by Google

आजनेय० ना० पु० घोड़ा, यथा, आजनेया: कुलीना: स्युर्विनीता: साधु वाहिन: इत्यमर:।

आजा० ना० पु० दादा, पिता का पिता।

आजाना० अ० क्रि० अचानक आना, पड़ना।

आजि० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई।

आजीव० ना० पु० } जीविका
आजीविका० स्त्री० } निर्वाह, मआश।

आटना० स० क्रि० भरना।

आटा० ना० पु० चोकर, सूजी, पिसान।

आठकी० ना० पु० तिल जिनमें से तेल निकलता है।

आड़० ना० स्त्री० ओट, परदा।

आडना० स० क्रि० ओटकर्ना, आड़देना।

आडम्बर० ना० पु० उद्योग, अभिमान, हर्ष।

आडा० गु० तिरछा, टेढ़ा।

आडी० ना० पु० रक्षक, ना० स्त्री० माने में स्वरविशेष, टेढ़ी, तिरछी, बेंडी।

आडेआना० अ० क्रि० रक्षाकर्ना, बचाव होना।

आढ्य० गु० धनाढ्य, धनी, स्वामी।

आतङ्क० ना० पु० भय, भीत, दु:ख, ठाठ, डर, प्रताप, इज्जत।

आततायी० गु० डकैत, हत्यारा, परस्त्री हारक।

आतप० ना० पु० घाम, धूप।

आतपत्र० ना० पु० छत्र।

आतपी० गु० धूपसे विकल।

आता० ना० पु० सीताफल।

Digitized by Google

आतिथेय० } गु० अतिथिका सत्कारकरना,
आतिथ्य० } अतिथि पालन, मेजवानी ।

आतुर० गु० दुखी, रोगी, व्याकुल, घाबरा ।

आतू० ना० स्त्री० गुरुवायिन् ।

आत्मघात० ना० पु० अपनी हत्या, निजघात ।

आत्मघाती० गु० निज जीव हन्ता, अधर्मी, जीव को दुखदाता ।

आत्मज० ना० पु० पुत्र, लड़का ।

आत्मनामी० गु० जो आप से प्रसिद्ध है ।

आत्मपालक० गु० आप स्वार्थी, आपकाजी ।

आत्मभू० ना० पु० ब्रह्मा ।

आत्ममात्र० ना० पु० समस्त जीव, जीवभर ।

आत्मरक्षा० ना० स्त्री० निज जीव की रक्षा, इन्द्रवारुणी औषधि ।

आत्मरक्षक० गु० निज जीव पालक ।

आत्मश्लाघा० ना० स्त्री निज मुख से अपनी बड़ाई ।

आत्महा० गु० निज जीवघाती, धर्मरहित ।

आत्मा० ना० पु० स्त्री० जीव, मन, बुद्धि, देह, स्वभाव, धन, अन्तर, अहङ्कार, आप ।

आत्मिक० गु० मनका, अपना ।

आत्मिकता० ना० स्त्री० अपनाइत ।

आत्मीय० गु० आत्मिक, अपना ।

आदर० ना० पु० सत्कार, सन्मान, प्रेम से लेना ।

आदरार्थ० गु जिसमें आदर पाया जाता है ।

आदर्श० } ना० पु० दर्पण,
आदर्शन० } टीका ।

आद्रक० ना० स्त्री० अदरक ।

आदान० ना० पु० लेना ।

Digitized by Google

आदि॰ गु॰ पहिला, जड़ वगैरह, शुरू।

आदिअन्त॰ गु॰ आरम्भ से समाप्तितक, वा आदि और अन्त, आद्यन्त।

आदिक॰ अव्य॰ इत्यादि और सब।

आदित॰ } ना॰ पु॰ सूर्य।
आदित्य॰ }

आदित्यवार॰ ना॰ पु॰ प्रथम दिन, इतवार।

आदित्यहृदय॰ ना॰ पु॰ ग्रन्थ विशेष।

आदितेय॰ ना॰ पु॰ देवता, अदितिजात।

आदेश॰ ना॰ पु॰ आज्ञा, अनुमति, योगी वैरागी का प्रणाम, व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर के बदलने को कहते हैं।

आदौ॰ अव्य॰ प्रथम, पहिले।

आद्य॰ गु॰ पहिला, प्रथमका।

आद्योपान्त॰ गु॰ पूरा, सब, समस्त।

आधुनिक॰ गु॰ इसकालका।

आधर्ष॰ ना॰ पु॰ भय, डर, कठिन।

आधा॰ गु॰ अर्द्ध, १/२।

आधान॰ ना॰ पु॰ गर्भ, गर्भ का धारण।

आधार॰ ना॰ पु॰ प्रतिपालक, अधिकरण, सहारा, योगमें एक चक्र का नाम।

आधारी॰ गु॰ सहारा पाने वाला।

आधासीसी॰ ना॰ स्त्री॰ अधकपाली।

आधि॰ ना॰ स्त्री॰ मनकी पीड़ा, उदासी।

आधिक्य॰ ना॰ पु॰ बढ़ती, अतिशयता।

आधिपत्य॰ ना॰ पु॰ ऐश्वर्य्य, स्वामित्व।

Digitized by Google

आधीन० गु० बश, आज्ञाकारी, तावेदार।

आधीनता० } ना० स्त्री०
आधीनताई० } नम्रता, आज्ञाको पालन करना, लघुताई, तावेदारी।

आन० पु० और, अन्य, ना० स्त्री० आज्ञा, सङ्कोच, सौगन्द।

आनक० ना० पु० दुन्दभी, डङ्का।

आनद्व० ना० पु० ओर ढिंढोरा।

आनन० ना० पु० मुख, अव्य० और, नहीं।

आनना० पु० क्रि० लाना।

आनन्द० ना० पु० } हर्ष, सुख,
आनन्दता० स्त्री० } खुशी।

आनन्दित० गु० खुश, हर्षित, प्रसन्न।

आनन्दी० गु० सुखी, खुश।

आनव० } क्रि० लाओगे।
आनिहौं० }

आनुकूल्य० ना० पु० सहायता।

आनुपूर्वी० ना० स्त्री० मर्यादा, बद्धि, क्रमी।

आनुमानिक० गु० युक्ति सिद्ध।

आन्ध्र० ना० पु० तैलङ्गदेश।

आप० ना० पु० पानी, सर्व० स्वकीय, निज।

आपकाज० ना० पु० अपना काम।

आपकाजी० गु० जो अपने काममें लगा रहता है।

आपगा० ना० स्त्री० नदी।

आपत्ति० ना० स्त्री० विपत्ति, आपदा, दोष।

आपद० ना० स्त्री० विपति, आपदा, कठिनता।

आपन्न० गु० प्राप्त, शरणमें, गत, आश्रित।

आपपति० ना० पु० वरुण देवता।

आपरूप० गु० आप, विशेष ईश्वर।

आपस० सर्व० अपने, भाई बन्द।

आपस्तम्ब० ना० स्त्री० स्मृति विशेष।

आपाधान० ना० पु० युद्ध, समर।

आप्त० गु० जो विश्वास के योग्य है, प्राप्त, सच्चा।

आप्लुत० गु० जो नहाय चुका।

आफ्रियो० स० क्रि० दिया, अख्-शा, यह शब्द अरबी-का है।

आफू० } ना० स्त्री० अफ़ीयून,
आफक० } अफ़ीम।

आबाल० ना० पु० लड़का पन, बालकपन।

आभरण० ना० पु० भूषण, गह-ना, ज़ेवर।

आभा० ना० स्त्री० भड़क, शोभा, चमक।

आभार० ना० पु० बोझ।

आभास० ना० पु० अभिप्राय, थोड़ा अंश, दोष विशेष।

आभीर० ना० पु० भीलादि, गोप, अहीर।

आभूषण० ना० पु० अलङ्कार, गहना।

आम० गु० ना० पु० कच्चा, आम्रफल।

आमय० ना० पु० रोग।

आमर्ष० ना० पु० क्रोध, [illegible], डाह।

आमर्षण० ना० पु० क्रोध करना।

आमर्षि० अ० क्रि० क्रोधयुक्त होकर।

आमलक० } ना० पु० आंवला
आमला० } फल विशेष।

आमान्न० ना० पु० कोरा अनाज, सीधा।

Digitized by Google

आमाशय० ना० स्त्री० पेटकी थैली जिसमें खाना रहता है वा इकट्ठा होकर पचता है ।

आमिष० ना० पु० मांस, गोश्त ।

आमिषाहार० ना० पु० मांसखाना ।

आमिषाहारी० गु० मांसखाने वाला ।

आमोद० ना० पु० आनन्द, हर्ष, सुगन्ध, सुबास ।

आम्बर० ना० स्त्री० वस्तुविशेष अर्थात् कहरुवा ।

आम्र० ना० पु० आंबका फल वा वृक्ष विशेष ।

आय० ना० पु० लाभ, धनागम ।

आयत० गु० लम्बा, दीर्घ, बर चौड़ा, ना० पु० घाम, धूप ।

आयतन० ना० पु० घर, मकान ।

आयत्त० गु० नम्र, प्रधीन, साऊ ।

आयसु० ना० पु० आज्ञा, हुक्म ।

आया० ना० स्त्री, लड़कों को खिलाने वाली ।

आयास० ना० पु० परिश्रम, मिहनत ।

आयु० ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर ।

आयुध० ना० पु० हथियार, अस्त्रशस्त्र ।

आयुर्दा०
आयुर्दाय०
आयुर्बल०
आयुष०
आयुस्०
} ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर, हयात ।

आरक्त० गु० लाल, सुर्ख ।

आरग्वध० ना० स्त्री० शिरवाली ।

आरज० ना० पु० मर्य्यादक, मानी, उत्तम, उत्तम, श्रेष्ठ, आर्य्य ।

Digitized by Google

आरग्वध० ना० पु० रवड, आड़ो का वृत्त ।

आरति० ना० स्त्री० दुःख, अतिप्रेम, इश्क वा पूजा प्रसिद्ध ।

आरती० ना० स्त्री० दीपक जलाय के देवता को दिखाना ।

आरम्भ० ना० पु० प्रारम्भ, उपक्रम, उत्थान, शुरूअ, लगा लगाना ।

आरा० ना० पु० ताक़, आला, लकड़ी चीरने का अस्त्रविशेष ।

आराति०
अराति० } ना० पु० शत्रु, वैरी ।

आराधक० गु० सेवक, भजन करनेहारा ।

आराधन० ना० पु० पूजा, भजन, सेवा ।

आराधना० स० क्रि० पूजा करना, अर्चना ।

आराम० ना० पु० उपवन, बगीचा, चैन ।

आरि० ना० स्त्री० झगड़ा, जिद्द, हठ, व्रजविलासे यथा, देखतरही खिलौना चन्द । आरिमकी-जिय कीलगोविन्दा ।

आरिण्य०
अरण्य० } ना० पु० जङ्गल वन, पुस्तकविशेष ।

आरिष्ट०
अरिष्ट० } गु० कठिन, दुखद, बुरा ।

आरुक० ना० पु० आडू का फल वा वृत्त ।

आरुष्क० ना० पु० भिलावां वृत्त ।

आरूढ़० ना० पु० सवार, गु० जो चढ़ा होवे ।

आरे० ना० पु० धारा का वक्र वचन ।

आरोग्य० ना० पु० क्षेम, कुशल, नीरोग ।

आरोपित० गु० कल्पना किया गया, बनाया गया, सौंपा गया ।

आमाशय॰ना॰ स्त्री॰ पेटकी थैली जिसमें खाना रहता है वा इकट्ठा होकर पचता है ।

आमिष॰ना॰पु॰ मांस,गोश्त ।

आमिषाहार॰ना॰ पु॰ मांसखाना ।

आमिषाहारी॰ गु॰ मांसखाने वाला ।

आमोद॰ना॰पु॰आनन्द,हर्ष, सुगन्ध,सुबास ।

आम्बर॰ना॰ स्त्री॰ वस्तुविशेष अर्थात् कहरवा ।

आम्र॰ ना॰ पु॰ आंबका फल वा वृक्ष विशेष ।

आय॰ना॰पु॰लाभ,धनागम ।

आयत॰गु॰ लम्बा, दीर्घ, चौड़ा, ना॰ पु॰ घाम, धूप ।

आयतन॰ना॰पु॰घर,मकान ।

आयत्त॰गु॰ नम्र, अधीन, ताबे ।

आयसु॰ना॰ पु॰ आज्ञा, हुक्म ।

आया॰ना॰ स्त्री, लड़कों को खिलाने वाली ।

आयास॰ना॰ पु॰ परिश्रम, मिहनत ।

आयु॰ना॰ स्त्री॰ जीवन,काल, उमर ।

आयुध॰ना॰ पु॰ हथियार, अस्त्रशस्त्र ।

आयुर्दा॰, आयुर्दाय॰, आयुर्बल॰, आयुष॰, आयुस्॰ — ना॰ स्त्री॰ जीवन, काल,उमर, हयात ।

आरक्त॰गु॰ लाल, सुर्ख ।

आरग्वध॰ना॰ स्त्री॰ फिटवाली ।

आर्य्य॰ना॰ पु॰ मर्यादक, मानी, उत्तम, जन, श्रेष्ठ, आर्य्य ।

Digitized by Google

आरग्वध० ना० पु० रवड, आडी का वृक्ष।

आरति० ना० स्त्री० दुःख, अतिप्रेम, इश्क़ वा पूजा प्रसिद्ध।

आरती० ना० स्त्री० दीपक समुदाय के देवता को दिखाना।

आरम्भ० ना० पु० प्रारम्भ, उपक्रम, उत्थान, शुरूअ, लगा लगाना।

आरा० ना० पु० ताक़, आला, लकड़ी चीरने का अस्त्रविशेष।

आराति० } ना० पु० शत्रु,
अराति० } वैरी।

आराधक० गु० सेवक, भजन करनेहारा।

आराधन० ना० पु० पूजा, भजन, सेवा।

आराधना० स० क्रि० पूजा करना, अर्चना।

आराम० ना० पु० उपवन, बाग़ीचह, चैन।

आरि० ना० स्त्री० झगड़ा, ज़िद्द, हठ, ब्रजविलासे यथा, देखत रही खिलौना चन्द। आरिन कीजिय लालगोविन्दा।

आरिण्य० } ना० पु० जङ्गल
अरण्य० } वन, पुस्तकविशेष।

आरिष्ट० } गु० कठिन, दु-
अरिष्ट० } ष्ट, बुरा।

आरुक० ना० पु० आड़ू का फल वा वृक्ष।

आरुष्क० ना० पु० भिलावां वृक्ष।

आरूढ़० ना० पु० सवार, गु० जो चढ़ा होवे।

आरे० ना० पु० धारा का बड़ा बचन।

आरोग्य० ना० पु० क्षेम, कुशल, नीरोग।

आरोपित० गु० कल्पना किया गया, बनाया गया, सौंपा गया।

Digitized by Google

आरोप॰ना॰ पु॰ कल्पना, बनावट ।

आरोह॰ना॰ स्त्री॰ } ऊपर
आरोहण॰ पु॰ } चढ़ना सीढ़ी, ज़ीना ।

आर्त्त॰ } गु॰ पीड़ित, दुःखित,
आरत॰ } ॰ व्याकुल ।

आर्द्र॰ गु॰ गीला, भीगा ।

आर्द्रा॰ना॰ स्त्री॰ छठवां न-क्षत्र ।

आर्य्य॰ गु॰ उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ ।

आर्य्यावर्त्त॰ ना॰ पु॰ वह पवित्र देश जो पूर्व समुद्र तट से पश्चिम सिन्धु तट तक और हिमा-लय से विन्ध्याचल तक है ।

आर्सी॰ ना॰ स्त्री भूषण विशेष जो स्त्रियां अंगूठे में पहिनती हैं, दर्पण ।

आल॰ना॰ पु॰ हलदी, [illegible] फल विशेष, पीला हर-ताल ।

आलम्ब॰ना॰ पु॰ सहारा, मदद ।

आलम्बन॰ना॰ पु॰ आश्रय, अवलम्ब ।

आलय॰ना॰ पु॰ घर, मकान ।

आलवाल॰ना॰ पु॰ थाला, थांवला ।

आलस॰ना॰ पु॰ ढील, सुस्ती, शिथिलता ।

आलसी॰ गु॰ ढीला, सुस्त, शिथिल ।

आलस्य॰ना॰ पु॰ आलस ।

आला॰ ना॰ पु॰ अरवा, ताक़, ताख जिसमें चिराग आदि रखते हैं ।

आलान॰ना॰ पु॰ खूंटा जिस में हाथी बांधाजाता है बेड़ी, ज़ंजीर ।

आलाप॰ ना॰ पु॰ बातचीत करना, स्वरमिलाप ।

आलि॰ ना॰ स्त्री॰ सखी, पङ्क्ति ।

Digitized by Google

आलिङ्गन॰ ना॰ पु॰ परस्पर गले लगाना।

आलिङ्गित॰ गु॰ प्रचलित, भीगीहुई।

आली॰ ना॰ स्त्री॰ सखी।

आलू॰ ना॰ पु॰ विलायती
आलू॰ कन्द विशेष।

आलोक॰ ना॰ पु॰ ज्योति, दृष्टि, यथलोकी।

आलोकन॰ ना॰ पु॰ दृष्टि देकर देखना।

आवझा॰ ना॰ पु॰ बाजा विशेष।

आवरण॰ ना॰ पु॰ ढाल, आच्छादन, विरूप भंवर, घेरा।

आवर्त्त॰ ना॰ पु॰ भंवर जो पानी में होता है।

आवर्दा॰ ना॰ स्त्री॰ आयुर्दाय, उमर।

आवतो॰ क्रि॰ आता।

आवभक्ति॰ } ना॰ स्त्री॰ मान, सन्मान, आदर।
आवभगत॰ }
आवभगति॰ }

आवलि॰ ना॰ स्त्री॰ पांति, पङ्क्ति।

आवश्यक॰ गु॰ निश्चय कर्त्तव्य ज़रूरी काम।

आवश्यकता॰ ना॰ स्त्री॰ ज़रूरत।

आवा॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा देश की राजधानी, कुम्हार जिसमें बर्त्तन पकाता है, पु॰ क्रि॰ आया।

आवाई॰ ना॰ स्त्री॰ चर्चा, समाचार।

आवागमन॰ } ना॰ पु॰ आनाजाना।
आवागवन॰ }

आवाजाई॰ ना॰ स्त्री॰ पीछे पड़ना, आनाजाना।

आवाती॰ ना॰ स्त्री॰ अवाई।

आवाभा॰ ना॰ स्त्री॰ भूमिखण्ड।

आवास० ना० पु० घर।

आवाहन० ना० पु० आदर बुलाना, बुलाना।

आविर्भाव० ना० पु० प्रकट होना।

आविर्भूत० गु० प्रकट वस्तु।

आविष्ट० गु० जो भूतादिक करके ग्रस्त है।

आवृत० गु० घिरा हुआ, वेष्टित।

आवृत्ति० ना० स्त्री० उच्चरिणी, पढ़ा हुआ, दुहराना, ढब।

आशक्त० गु० मोहित, गटपट, लीन और अतिरत।

[illegible]० ना० पु० मांग, ब्याह।

आशङ्का० ना० स्त्री० भय, डर, सन्देह, शंक।

आशय० ना० पु० अभिप्राय, आशय, मतलब, मज़मून।

आशर० ना० पु० निशाचर, दैत्य।

आशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा।

आशाबन्त० गु० आसरिका, उम्मेदवार।

आशावसन० गु० नङ्गा, तृष्णारहित।

आशावान्० गु० आशावन्त।

आशिष० ना० पु०
आशिषा० स्त्री०
आशीर्वाद० पु०
} दुआ, भला मनाना, अच्छा चाहना।

आश्चर्य० गु० अद्भुत, ना० पु० अचम्भा, विस्मय।

आश्चर्यवन्त० गु० ताज्जुब में, अचम्भित।

आस्रक० ना० पु० रुधिर, लोहू, खून।

आश्रम० ना० पु० हिन्दू लोगों में चारि आश्रम अर्थात् ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वानप्रस्थ ३ संन्यासी ४ और ऋषियों के रहने का स्थान, घर।

Digitized by Google

आश्रमी० पु० ब्राह्मणादि चारो आश्रम।

आश्रय० ना० पु० आसरा, समीपता, गु० अधीन, भरोसा करके।

आश्रित० गु० अधीन, क़ाबू, परवश।

आश्वास० ना० पु० भरोसा, समाप्ति, अध्याय।

आश्विन० ना० पु० कुंवार, सातवांमास।

आषत० ना० पु० अक्षत, चाव-लादि।

आषर० ना० पु० अक्षर, वर्ण।

आषाढ़० ना० पु० असाढ़, चौथा महीना।

आस० ना० स्त्री० आशा, भरोसा।

आसंसार्थ० गु० जिससे इच्छा का बोध होता है।

आसक्त० गु० आसक्त, कार्य-रत।

आसक्ति० ना० स्त्री० आशक्ति, प्रीति, प्रेम।

आसन० ना० पु० बिस्तर, सेज, योगासन, बैठने के लिये कुशा वा काष्ठ का बनी हुई वस्तु, बैठक, जांघ के भीतरी ओर।

आसनगत० गु० बैठा हुआ।

आसनी० ना० स्त्री० छोटे कम्बला-दि बिछोना।

आसन्न० गु० निकट, पास।

आसन्नकोण० ना० पु० पास का कोना।

आसन्नभूत० ना० पु० निकट हो व्यतीत भया।

आसपास० गु० लगभग।

आसमुद्र० ना० पु० समुद्र पर्यन्त।

आसय० ना० पु० आशय।

आसर० ना० पु० आशर, दैत्य।

आसव० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, शराब ।
आसा० ना० स्त्री० आशा ।
आसाम० ना० पु० देशविशेष ।
आसावरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, कपोत विशेष, कपड़ा विशेष ।
आसिख० ना० स्त्री० आशिष ।
आसीन० गु० बैठा हुआ ।
आसीविष० ना० पु० सांप ।
आसीस० ना० स्त्री० आशीर्वाद ।
आसु० गु० शीघ्र, जलदी ।
आसुग० गु० बाण, वायु, सूर्य ।
आसुतोष० गु० शीघ्र प्रसन्न होने वाला ।
आसुर० ना० पु० असुर वा कोई असुर ।
आसुरी० ना० स्त्री० असुरी माया, निशाचरी ।
आसूद० ना० स्त्री० आलस्य ।
आस्कन्दन० पु० ० आक्रमी ।
आस्ति० ना० पु० वेदधर्मों का फल, साधुता, धर्म शीलता, हस्ती ।
आस्तिक० ना० पु० वेदके धर्मों के फलकी विश्वासी, साधु ।
आस्था० ना० स्त्री० टेक, सभा, परिश्रम ।
आस्पद० ना० पु० स्थान, पद, खिताब ।
आस्फोट० ना० पु० कचनार वृक्ष ।
आस्यपू० ना० पु० असुर दैत्य ।
आस्वाद० ना० पु० स्वाद अनुभव ।
आस्था० ना० स्त्री० साहस, वीरता, धीरज ।
आहट० ना० पु० खटका, शब्द, आवाज़ ।
आहत० ना० ० बेद, शब्द ।

आहार॰ ना॰ पु॰ भोजन, खाना।

आहारी॰ गु॰ भोजन करने वाला, भोजन के योग्य।

आहि॰ अव्य॰ हे।

आहुत॰ } ना॰ स्त्री॰ देवता-
आहुति॰ } ओंके लिये होमने को लिये जो वस्तु, घृतादि।

आहवनीय॰ ना॰ पु॰ अग्नि, विशेष।

आहुक॰ ना॰ पु॰ उग्रसेन राजा का पिता।

आहूतदान॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणको बुलाकर घर पर दान देना इसको मध्यम दान कहते हैं।

आह्निक॰ ना॰ पु॰ प्रतिदिन धर्म का कार्य।

आह्निकगति॰ ना॰ स्त्री॰ एकदिन की चाल, प्रतिएक ग्रहका नित्यभचक्र।

आह्ला॰ ना॰ पु॰ चलावेश।

आह्लाद॰ ना॰ पु॰ हर्ष, आनन्द।

आह्लादित॰ गु॰ हर्षित, आनन्दित।

आह्वान॰ ना॰ पु॰ आवाहन, पुकारना।

आक्षेप॰ ना॰ पु॰ दुर्वचन, निन्दा।

आखेटक॰ ना॰ पु॰ आखेट।

आत्रेय॰ ना॰ पु॰ अत्रि का पुत्र।

आत्रेयी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो ब्रह्मदेशमें है।

आज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ आदेश, हुक्म।

आज्ञाकार॰ } गु॰ जो आ-
आज्ञाकारी॰ } ज्ञा पर चले, सेवक, ताबेदार।

आज्ञाद॰ ना॰ पु॰ जो आज्ञा देवे, हाकिम।

आज्ञानुयायी॰ गु॰ आज्ञा- वत् वर्त्तनेवाला ।

आज्ञानुसार॰ ना॰ पु॰ हुक्म के बमूजिब ।

आज्ञानुवर्ती॰ गु॰ तावेदार, सेवक ।

आज्ञाभिलाषी॰ गु॰ आज्ञा चाहनेवाला ।

आज्ञार्थ॰ गु॰ आज्ञा का बोध जिससे होता है ।

आज्ञालङ्घन॰ ना॰ पु॰ उ- दूल हुक्मी, हुक्म न मानना ।

[इ] ।

इक॰ गु॰ एक, १ ।

इकटक॰ ना॰ पु॰ एक ताक से देखना ।

इकट्ठा॰ }
इकट्ठी॰ } गु॰ जो एक
इकठौरा॰ } जगह में जमा
इकठौरी॰ } होवे ।

इकसार॰ गु॰ सरीखा, स- दृश, समान ।

इकारान्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें इकार है ।

इक्का॰ गु॰ अकेला, अद्वितीय, एका ।

इक्षुलता॰ ना॰ पु॰ देश वि- शेष जिसमें लाठ्य व- कर प्रसिद्ध है ।

इक्षुलाडी॰ गु॰ जो एक लाइका है ।

इङ्गितज्ञ॰ गु॰ इच्छा, स्वभाव, चलने वाला ।

इङ्गित॰ ना॰ पु॰ सैन, सङ्केत, आशय, खोज ।

इच्छा॰ ना॰ स्त्री॰ मनोरथ, चाह ।

इच्छाचारी॰ गु॰ मनोवत् गामी, स्वच्छन्द ।

इच्छित॰ गु॰ इच्छासमाना, चाहाहुआ ।

Digitized by Google

इच्छितफल० ना० पु० चाहा हुआ फल वा अर्थ।

इच्छानुसार० ना० पु० इच्छावत्, चाहना।

इक्षन० ना० पु० नेत्र, दृष्टि।

इड़ा० ना० स्त्री० धरती, देवी। बाईं श्वास।

इत० }
इतै० } अव्य० यहां, इधर।

इतना० गु० यह शब्द परिमाण वा अवधि का ज्ञापक है।

इतनी० ना० स्त्री० सैन्य, गु० इस प्रमाण।

इतर० गु० अन्य, रहित, नीच।

इतरलोग० ना० पु० छोटी जाति, लोकान्तर।

इति० अव्य० समाप्ति का बोधक है, अधिक, इस प्रकार।

इत्याक० ना० पु० मिलाप, सामना, मुक़ाबिलह।

इत्यादि० ना० पु० आदिक, वग़ैरह।

इतिहास० ना० स्त्री० वृत्तान्त, प्राचीनकथा, पुराणादि की वार्त्ता, तारीख़।

इतो० }
इतौ० } गु० इतना।

इदम्० सर्व० यह।

इदानीं० अव्य० इहां, इस जगह।

इधर० अव्य० यहां, इसठौर।

इन्दारा० ना० पु० बड़ा पक्का कूआं।

इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।

इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पोंधा विशेष।

इन्दु० ना० पु० चन्द्रमा।

इन्दुर० ना० पु० चन्दुर। चूहा।

इन्दौर० ना० पु० नगर विशेष।

Digitized by Google

इन्द्र० ना० पु० देवताओं का राजा, प्रधान।

इन्द्रगोप० ना० पु० बीरबहूटी।

इन्द्रजित० ना० पु० मेघनाद, गु० जो इन्द्रको जीते।

इन्द्रपुरी० ना० स्त्री० इन्द्रका नगर।

इन्द्रप्रस्थ० ना० पु० दिल्लीनगर।

इन्द्रवधू० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा लालरङ्ग का वर्षा में होता है, इन्द्रकी पत्नी।
इन्द्रवधूटी० }

इन्द्रयव० ना० पु० कुटज का फल, इन्द्र जौ, औषधि विशेष।

इन्द्रवारुण० ना० पु० } औषधि विशेष।
इन्द्रवारुणी० स्त्री० }
इन्द्रविमार्दिनी० }

इन्द्राणी० } ना० स्त्री० शची, इन्द्रकी पत्नी।
इन्द्रायणी० }

इन्द्रायन० ना० पु० वृक्ष विशेष वा उसका फल जो अति सुन्दर और कड़ुआ होता है।

इन्द्रासन० ना० पु० इन्द्र का सिंहासन।

इन्द्रिय० } ना० स्त्री० जिनसे रूप रसादिका ज्ञान होता है वह दो प्रकार के हैं पांच कर्मेन्द्रिय अर्थात् हाथ, पांव, गुदा, लिङ्ग, मुख, और पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
इन्द्री० }

इन्धन० ना० पु० जलाने की लकड़ी आदि, ईंधन।

इभ० ना० पु० हाथी।

इभ्यमालक्र० गु० महावत, फीलवान।

इभ्य० ना० पु० स्वामी।

इमं० सर्व० यह, गु० ऐसा, इस प्रकार।

Digitized by Google

इत्थ० गु० इस प्रकार ।

इला० ना० स्त्री० धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती ।

इलायची० ना० स्त्री० फल-विशेष, एला ।

इलावृत० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक ।

इल्ला० ना० पु० मसा ।

इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे ।

इष्ट० गु० पूजित, प्यारा, वाञ्छित, ना० पु० देवता, मनुष्य चहीता, वस्तु चाहती ।

इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवको सेवाकरे वा माने ।

इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारी ।

इष्टित० गु० विचारित, और चीने गये ।

इष्वासन० ना० पु० धनुष, कमठा, कमान ।

इषु० ना० पु० बाण, तीर, अग्नि-अमारक; और गणितमें ५ ।

इषुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कमठा ।

इषुधीपति० ना० पु० धनुर्द्धर, अर्जुनादि ।

इस्त्री० ना० पु० लोहे का यन्त्र जिससे धोबी कपड़े संभालता है ।

इस्पात० ना० पु० पक्का लोहा ।

इह० सर्व० यह ।

इहलोक० ना० पु० मनुष्य लोक, यहलोक ।

इक्षु० ना० ० ऊख, गांडा, गन्ना ।

इक्षुगन्धा० } ना० स्त्री० विदारी कन्द ।
इक्षुवल्ली० }

इक्षुविकार० ना० पु० रस, मिठाई, गुड ।

इक्ष्वाकु० ना० पु० सूर्यवंशियों में प्रथम राजा ।

[ई]

ईंट० ना० स्त्री० माटी की वस्तु, जिससे भीति उठाते हैं ।

Digitized by Google

ईडुआ॰ ना॰ पु॰ शिरपर बोझ रखने का टेकन जो कपड़ा वा सन सूत आदि का होता है।

ईकारान्त॰ गु॰ जिस शब्द के अन्त में ईकार है।

ईख॰ ना॰ स्त्री॰ ऊख, उखारी, इक्षु।

ईठ॰ गु॰ इष्ट, प्रिय, मित्र, ना॰ पु॰ भजन, देवता।

ईठि॰ ना॰ स्त्री॰ दोस्ती, प्रीति, सखी।

ईढि॰ ना॰ स्त्री॰ अपने को अधिक जानना, हठ।

ईति॰ ना॰ स्त्री॰ बाधा, दुःख।

ईद॰ ना॰ स्त्री॰ मुसलमानों और यहूदियों में एक पर्व होता है रमजान के पीछे, अरबी शब्द है।

ईदृश॰ गु॰ ऐसा।

ईर्षा॰ ना॰ स्त्री॰ द्विषता, द्वेष, डाह, मत्सर।

ईश॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, प्रभु, स्वामी विशेष शिवजू, विष्णु, नारायण।

ईशता॰ ना॰ स्त्री॰ प्रधानता, महत्व, माया, सिद्धि विशेष।

ईश्वर॰ ना॰ पु॰ प्रभु, स्वामी विशेष, परमात्मा, शिवजी विष्णु, नारायण।

ईश्वरता॰ ना॰ स्त्री॰ } माया-
ईश्वरत्व॰ ना॰ पु॰ } योगमाया, कुदरत।

ईश्वराराधन॰ ना॰ पु॰ परमेश्वर का भजन।

ईशान॰ ना॰ पु॰ सदाशिव, ईशान कोण।

ईशानकोण॰ ना॰ पु॰ पूर्व उत्तर को कोना।

ईषत्॰ }
ईषद्॰ } गु॰ थोड़ा २, स्वल्प।

ईस॰ ना॰ पु॰ ईश मालिक।

ईह॰ } ना॰ स्त्री॰ चेष्टा, इच्छा
ईहा॰ } उद्यम।

ईक्षण॰ना॰ पु॰ चक्षु, आंखि, दृष्टि।

[उ]

उचाई॰ना॰स्त्री॰ }
उचान॰ना॰ पु॰ } उचापा,
उचाव॰ ना॰ पु॰ } उन्नति,
उचाहट॰ स्त्री॰ } बलन्दी।

उचाना॰ स॰क्रि॰ ऊंचाकरना, उठाना।

उडेलना॰ स॰ क्रि॰ धक्कादेकर गिराना, डालना।

उकठा॰ गु॰ सूखा काष्ट वा वृक्ष।

उकत॰ना॰ स्त्री॰ उक्ति, कथन।

उकताना॰ अ॰क्रि॰ घबराना, थकना, कुढ़ना।

उकताहू॰ना॰ पु॰ उपजाऊ पक्षी।

उकतारना॰ स॰ क्रि॰ संभालना, पक्काकरना।

उकसना॰ अ॰ क्रि॰ उठना, ऊपरकोचढ़ना वा बढ़ना।

उकसाना॰ } स॰क्रि॰ उठाना
उकासना॰ } चढ़ाना।

उक्त॰ गु॰ कथित, कहा हुआ।

उक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ कथन, भाषा, चतुराई, कहना।

उखड़ना॰ अ॰क्रि॰ उजड़ना, निजस्थान से हटना।

उखड़हा॰ गु॰ उखड़ाभया।

उखड़ाना॰ } स॰ क्रि॰ उजा-
उखाड़ना॰ } ड़ना, निजस्थान से हिलाना।

उगना॰ अ॰क्रि॰ उत्पन्नहोना, जमना, बढ़ना।

उगलना॰ स॰ क्रि॰ मुख में कोई वस्तु डालकर फिर निकालना।

उगाल॰ना॰ पु॰ जो चबाय के मुखमें से फेंका।

उगाहना॰ स॰ क्रि॰ जमा करना, तहसीलना।

उगाही॰ ना॰ स्त्री॰ व्याज लेना वा कुछ रुपया को

Digitized by Google

महाजन आठ के नव वा नव के दश वा दशके ग्यारह प्रति मास एक२ रुपया करके लेता है।

उग्र० गु० क्रोधी, कठोर, भयङ्कर, तेज़, ना० पु० श्रीशङ्करजी।

उग्रगन्धा० ना० स्त्री० अजवायन, वच, और लहसुन, गु० जिसकी गन्धि कठिन है।

उग्रसेन० ना० पु० राजा कंस का पिता।

उघटना० स० क्रि० किसी पर उपकार करके कहना वा बात मारना, ताना देना।

उघड़ना० अ० क्रि० नङ्गा होना, खुलना।

उघरे० गु० खुले, प्रकट।

उघाड़ना० } स० क्रि० नङ्गा करना, खोलना
उघारना० }

उघारी० गु० नङ्गी, खुली।

उचकना० अ० क्रि० कूदिके उठना, उछलना।

उचकाना० स० क्रि० ऊपरको उठाना वा चढ़ाना।

उचक्का० गु० चोर, उठाईगीर।

उचटना० अ० क्रि० अलग २ होना, बिछुड़ना, न लगना, उलटना, फिसलना।

उचरङ्ग० ना० पु० पतङ्गा।

उचरना० अ० क्रि० बात निकलना, उखड़ना।

उचाट० गु० उदासी, जी न लगना।

उचाटना० स० क्रि० उदास करना, उखाड़ना।

उचारना० स० क्रि० उच्चारण करना, निकालना।

उचित० गु० योग्य, ठीक, मुनासिब।

उचिलना० अ० क्रि० फटना, छुटजाना।

Digitized by Google

उचेलना० स० क्रि० मिलीहुई वस्तु को अलग२ करना, उधेड़ना।

उच्च० गु० ऊंचा।

उच्चाटन० ना० पु० जी भड़कना, जीका न लगना।

उच्चार० ना० पु० पुरीष, मल, पाखाना।

उच्चारण० ना० पु० शब्द का कहना वा निकलना।

उच्चारना० स० क्रि० उचारना, बात कहना।

उच्चैःश्रवा० ना० पु० सूर्य का घोड़ा।

उच्छिन्न० गु० निर्मूल, उखड़ा, खराब।

उच्छलित० गु० उछलता भया।

उच्छिष्ट० ना० पु० जूठनि वा जूठा, भोजन अवशेष।

उच्छ्वास० ना० पु० श्वास, आशा।

उछङ्ग० ना० स्त्री० गोद, कनियां।

उछरना० } अ० क्रि० कूदना,
उछलना० } उठना।

उछालना० स० क्रि० कुदाना, ऊपर को फेंकना।

उछाह० ना० स्त्री० आनन्द, खुशी।

उजड़ना० अ० क्रि० नाश होना, मिटना, भगना, वैरान होना।

उजला० गु० उज्वल, सफ़ेद, निर्मल।

उजागर० गु० यशवन्त, चटकीला, सुन्दर।

उजाड़० गु० सूना, बनखण्ड, वैरान।

उजाड़ना० स० क्रि० सूना करना, नाश करना, वैरान करना।

उजालना० स० क्रि० उजला करना।

उजाला० ना० पु० ज्योति तेज, प्रकाश।

Digitized by Google

उजाली० ना० स्त्री० चांदनी ।
उजास० ना० पु० उजेला ।
उज्जल० } गु० निर्मल, चोखा,
उज्ज्वल० } चमकीला, साफ़, सुन्दर ।
उझकति० गु० झांकति, ताकत ।
उझकना० अ० क्रि० देखना, स० क्रि० निझाना ।
उटङ्गन० ना० स्त्री० पौदा विशेष, और नदी जो ग्वालियर के पास है ।
उठङ्गन० ना० पु० ठेकन ।
उठना० अ० क्रि० खड़ा होना ।
उठबैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधन विशेष ।
उठवैया० ना० पु० उठनेवाला ।
उठाना० ना० पु० उत्थान, दिखाई ।
उठाना० स० क्रि० खड़ा करना, ऊपर लेजाना ।
उड़ना० अ० क्रि० भागना ।
उड़ान० ना० स्त्री० उड़ने की चालि ।
उड़ाना० स० क्रि० उड़ा देना, भगा देना ।
उड़ाऊ० ना० पु० लुटेरा, बहुत ख़र्च करवैया ।
उडु० ना० पु० पक्षी, नक्षत्र, मेघ, ग्रह ।
उडुगण० ना० पु० तारागण ।
उडुप० ना० पु० धरनई, बेड़ा ।
उड़िया० ना० स्त्री० उड़ेसा देश की भाषा ।
उड़ी० ना० स्त्री० नाव ।
उड़ैसा० ना० पु० देश विशेष जहां श्रीजगन्नाथ पुरुषोत्तम विराजमान हैं ।
उड्डान० ना० स्त्री० उड़ान, संस्कृत में नपुंसक ।
उढ़ना० स० क्रि० ओढ़ना, ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र ।
उढ़ाना० स० क्रि० ओढ़ना, ढांपना ।

Digitized by Google

उत० अव्य० ऊपर, उधर, जिस शब्द के प्रथम में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया जाता है।

उतङ्ग० } गु० ऊंचा, रामायणे यथा, अति उतङ्ग
उत्तुङ्ग० } जल निधि चहुं पासा।

उतरना० अ० क्रि० नीचे आना।

उतला० गु० उतावला।

उताना० गु० उलटा, ऊपर को पांव किये।

उतार० ना० पु० नीचे आना, नीचला।

उतारना० स० क्रि० नीचे लाना, दूरि करना।

उतारा० ना० पु० ढालु, अपमान, छुड़ौती, पार जाना।

उतावल० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।

उतावला० गु० वेगी, शीघ्र, फुर्तीला।

उतावली० ना० स्त्री० शीघ्रता, फुर्त्ती, गु० फुर्त्तीली।

उताहिल० गु० शीघ्र, जल्द।

उत्कट० गु० बरजस: उसी समय तेज अधिक।

उत्कण्ठा० ना० स्त्री० अभिलाषा, चाहना।

उत्कर्ष० ना० स्त्री० बड़ाई।

उत्कल० ना० पु० उड़ेसादेश, उड़ेसा के बासी

उत्क्रम० ना० पु० ऊपर चढ़ना।

उत्कृष्ट० गु० अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।

उत्तमगन्धा० ना० स्त्री० मालती।

उत्तमाङ्ग० ना० पु० सिर, शीस।

उत्तमाशा० ना० स्त्री० आफ्रिका के दक्षिण की अन्तरीप, केप गुड होप।

Digitized by Google

उत्तर० ना० पु० प्रश्न का बोधक, जवाब, दक्षिण के सम्मुख की दिशा, राजा। विराट का पुत्र।

उत्तरकेन्द्र० ना० पु० जिसको भास्कराचार्य शास्त्री ने सिद्धान्तभूति में सुमेरु लिखा है, यह स्थान अत्यन्त शीत के कारण अगम्य है।

उत्तर कोशल० ना० पु०
उत्तर कोशला० अवधदेश।

उत्तरखण्ड० ना० पु० उत्तर का देश।

उत्तरा० ना० स्त्री० राजा विराट की कन्या जो अभिमन्यु को बिवाही थी।

उत्तराधिकारी० ना० पु० मरने के पीछे जो धनाधिकारी।

उत्तराफाल्गुनी० ना० स्त्री० बारहवां नक्षत्र।

उत्तराभाद्रपद० ना० पु० छब्बीसवां नक्षत्र।

उत्तरायण० ना० पु० माघादि छः मास।

उत्तरार्द्ध० गु० पिछिला, आधा।

उत्तराषाढ़० ना० स्त्री० इक्कीसवां नक्षत्र।

उत्तराहा० गु० जो उत्तर दिशा का है।

उत्तरी० गु० उत्तर का।

उत्तरीय० ना० स्त्री० ओढ़नी, रामचन्द्रिकायां यथा, पदपद्म की शुभ घूंघरी, मणि नील हाटक सों जरी, युत उत्तरीय विचारि कै भुवडारि दी पगटारि कै, गु० उत्तर देश का पदार्थ वा मनुष्यादि।

उत्तरोत्तर० अव्य० आगेआगे।

उत्तानपत्र० ना० पु० दोनों अरण्ड।

उत्तानपाद्० ना० पु० राजा विशेष, ध्रुव का पिता।

उत्ताल० गु० शीघ्र, जल्दी, वेग।

उत्तीर्ण० गु० पार पहुंचा, निर्मुक्त।

उत्तू० ना० पु० चुन्नति, चुनाई वस्त्रादिकी।

उत्थान० ना० पु० उठान, उद्योग।

उत्थापन० ना० पु० उठावना, न थपना।

उत्थित० गु० उठा हुवा।

उत्पत्ति० ना० स्त्री० जन्म, पैदायश।

उत्पन्न० गु० जन्मा, प्रकटा।

उत्पल० ना० पु० कमल, कोई।

उत्पाटन० ना० पु० जड़समेत उखाड़ना।

उत्पात० ना० पु० अशुभ का सूचक, उपद्रव।

उत्पादन० ना० पु० जन्मावना, पैदा करना।

उत्प्रेक्षा० ना० स्त्री० ठोक, सदृशता।

उत्सर्ग० ना० पु० देवतादि के लिये द्रव्य का त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा।

उत्सव० ना० पु० आनन्द, यज्ञ, अधीरज।

उत्साह० ना० पु० उद्योग, आनन्द।

उथपन० ना० पु० उखाड़ना, उठाना।

उथपना० स० क्रि० उठादेना, उखाड़ डालना।

उथपित० गु० उठाया गया।

उथलना० अ० क्रि० उलटना।

Digitized by Google

उथलपुथल० गु० उलट पुलट।
उथला० गु० छिछला, थोड़ा गहिरा।
उदक० ना० पु० जल, पानी।
उदघाटी० ना० स्त्री० उदयता, उदयाचल की घाटी।
उदधि० ना० पु० समुद्र।
उदधिनन्द० ना० पु० चन्द्रमा।
उदनपाक्य० ना० पु० पियावा सापौधा।
उदन्वान० ना० पु० समुद्र, सागर।
उदमाते० गु० मत्त, मस्त, मखमूर।
उदय० ना० पु० प्रकटना, रोशन, ज्योति।
उदयगिरि० } ना० पु० पर्वत
उदयाचल० } विशेष जहां सूर्योदय होता है।
उदयास्त० ना० पु० सूर्योदय से सूर्यास्त तक, उदयाचल से अस्ताचल तक।
उदर० ना० पु० पेट।
उदरनि० ना० पु० पेट का बहुवचन भाषा में।
उदरवृद्धि० ना० पु० जलन्धर रोग विशेष।
उदरे० गु० फटे।
उदात्त० ना० पु० ऊंचा स्वर।
उदान० ना० पु० पञ्च प्राण में से एक।
उदार० गु० दाता, सखी।
उदारता० ना० स्त्री० दातापन, दातव्यता।
उदास० ना० पु० एकान्त, गु० निराला, निर्मोह, दुख सुख समान, ज्ञाता, मन मलीन।
उदासी० ना० पु० एकान्ती, ना० स्त्री० मलीनता, गु० मनमलीन, एक प्रकार के सन्तों का धर्म यथा नानक पन्थी,

Digitized by Google

जो मनुष्य शत्रु मित्र रहित संसार में विचरै।

उदासीन॰ गु॰ जिसका कुछ शील नहीं जाना अर्थात् पाहुन, समानवर्ती गृहस्थाश्रम रहित।

उदाहरण॰ ना॰ पु॰ दृष्टान्त, मिसाल।

उदित॰ आविर्भूत, प्रकाशित, रोशन।

उदीची॰ ना॰ स्त्री॰ उत्तर दिशा।

उदीच्य॰ ना॰ पु॰ ऐरावती नदी के उत्तर और पश्चिम का देश।

उदुम्बर॰ ना॰ पु॰ गूलर वृक्ष, तांबा धातु।

उदूखल॰ ना॰ पु॰ गूगल।

उद्गार॰ ना॰ पु॰ डकार, वमन, छर्दि।

उद्गारवाची॰ गु॰ हर्षदुःखादि भाव बताने द्वारा।

उद्घाटन॰ ना॰ पु॰ कूप से पानी निकालने के लिये डोल रस्सी, चरसा, खुलवैया।

उद्दाल॰ ना॰ पु॰ कचनार।

उद्दालक॰ ना॰ पु॰ एक मुनि का नाम है।

उद्दिष्टलोहित॰ ना॰ पु॰ लाल चन्दन।

उद्दीप्त॰ गु॰ प्रज्वलित, अति-प्रकाशित।

उद्देश॰ } ना॰ पु॰ अन्वेषण,
उद्देश्य॰ } प्रीति की कामना निमित्त, व्याकरण में जिसका समाचार कहा जावे।

उद्धत॰ गु॰ कुचाल, अभिमानी, ना॰ पु॰ राजा का मल्ल।

उद्धार॰ ना॰ पु॰ अकरण, त्याग, रक्षा, छुट्टी।

उद्धारण॰ ना॰ पु॰ छोड़ना, छुटना।

उद्धारना॰ स॰ क्रि॰ छुड़ाना, आज्ञा देना।

उद्भव० ना० पु० जन्म, पैदायश ।

उद्भिज० } ना० पु० वृक्षलतादि
उद्भिद० } जो पृथ्वी पर उगते हैं ।

उद्यत० ना० पु० गु० परिश्रमी, तैयार ।

उद्यम० ना० पु० उद्योग, उपाय, रोज़गार ।

उद्यान० ना० पु० राजाकाउपवन, चाल, निमित्त ।

उद्योग० ना० पु० उद्यम, उत्थान ।

उद्योत० ना० पु० प्रकाश, चमक ।

उद्वाह० ना० पु० विवाह ।

उद्विग्न० गु० अधीरज, व्याकुल ।

उद्वेग० ना० पु० व्याकुलता, घबराहट, गड़बड़, दु:ख ।

उद्बोध० ना० पु० स्मरण ।

उधर० अव्य० वहां ।

उधार० ना० पु० करज़ ।

उधारन० ना० पु० छुड़ाने हारा ।

उधारना० स० क्रि० छुड़ाना, मुक्तिदेना ।

उधेड़ना० स० क्रि० सुलझाना, खोलना ।

उनचास० गु० चालीस और नौ ४९ ।

उनतालीस० गु० तीस और नौ ३९ ।

उनतीस० गु० बीसऔरनौ २९ ।

उनये० गु० घटा, दबिआये ।

उनसठ० गु० पचासऔरनौ ५९

उनासी० गु० सत्तर और नौ ७९

उनीदे० गु० नींद भरे ।

उनीस० गु० दश और नौ १९ ।

उन्दुर० ना० पु० चूहा, मूस ।

उन्नत० गु० ऊंचा, बलन्द ।

उन्नति० ना० स्त्री० ऊंचाई, बढ़ती ।

Digitized by Google

उन्मत्त० }
उन्मद० } गु० मतवाला, विक्षिप्त, सिड़ी, और अष्टभैरव में एक उन्मत्त नामी है ।

उन्माद० ना० पु० चितभ्रम, सिड़पन ।

उन्मादन० ना० पु० रोगविशेष जिस में चितभ्रम होकर सिड़पन हो जाता है ।

उन्मुख० ना० पु० ऊर्द्ध्वमुख, ऊपर देखना ।

उन्मेष० ना० पु० पलक, झपक ।

उन्हार० ना० स्त्री० ढाल, गु० रूप, समान, सदृश ।

उप० अव्य० समीप, यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी अधिकाई कभी समीपता कभी न्यूनता आदिक होजाता है ।

उपकण्ठ० ना० पु० किनारा, तट ।

उपकरण० ना० पु० सामग्री, सामान ।

उपकानन० ना० पु० कृत्रिमवन, बाग़ ।

उपकार० ना० पु० कृपा, सहायता, अहसान ।

उपकारी० गु० कृपावन्त, सहायक, सुमिष्ट, लाभयुत, फायदः मन्द ।

उपकालिका० }
उपकुञ्चिका० } ना० स्त्री० कलौंजी ।

उपक्रम० ना० पु० प्रारम्भ धोखा ।

उपगति० गु० जिस वस्तु के लिये वाचा दिया ।

उपग्रह० ना० पु० बंधुआ, कृपा, सहायता, ग्रहसम्बन्धी तारा ।

उपचार० ना० पु० उपाय, सेवा, वैद्यकाई, व्यवहार, घूस ।

उपज० ना० स्त्री० जो तत्काल में कहाजावे अथवा गायाजावे ।

उपजना० अ० क्रि० उगना, बढ़ना, जन्मना ।

उपजा० गु० जन्मा, उगा, पैदाहुआ ।

उपजाऊ० गु० उपजनेहारा ।

उपजाना० स० क्रि० उत्पन्न करना, सिरजना ।

उपजित० गु० जो उत्पन्न भया, जन्मित ।

उपजीविका० ना० स्त्री० जीविका, वृत्ति ।

उपड़ना० अ० क्रि० उखड़ना ।

उपताप० ना० पु० रोग, फुर्त्त, उष्णता, पीड़ा ।

उपदंश० ना० पु० सवार, सुज़ाक ।

उपदा० ना० स्त्री० भेंट ।

उपदेश० ना० पु० शिक्षा, मन्त्र, ज्ञान ।

उपदेशक० } गु० जो उपदेश देवे, गुरु ।
उपदेशी० }

उपद्रव० ना० पु० उत्पात, अन्याय, और विग्रह, बखेड़ा ।

उपद्रवी० गु० बखेड़िया, उत्पाती ।

उपद्वीप० ना० पु० द्वीप समीप, छोटा टापू ।

उपधान० ना० स्त्री० तकिया, रज़ाई ।

उपधि० गु० साथीराहका, धोखा ।

उपनन्द० ना० पु० नन्दकी सन्तान वा उनके सम्बन्धी ।

उपनयन० ना० पु० ब्राह्मणादि तीन वर्णों का यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊधारण के हेतु संस्कार ।

Digitized by Google

उपनाम० ना० पु० पदवी, खिताब वा एकही मनुष्य का द्वितीय नाम अथवा कुटुम्बी नाम यथा, लाला, साह, तिवारी।

उपनिषद्० ना० स्त्री० वेदका रहस्य भाग।

उपनेत्र० ना० पु० चशमह, ऐनक।

उपपति० ना० पु० जार, द्वितीय कान्त स्त्री का।

उपपत्ति० ना० स्त्री० मुख्यता, सबूत।

उपपातक० ना० पु० महापाप, यथा गोबधादि।

उपमा० ना० स्त्री० समानता, दृष्टान्त, नज़ीर।

उपमान० ना० पु० सादृश्य, जिससे उपमा दी जावे यथा कमल नयन यहां कमल उपमान औ नयन उपमेय है।

उपमेय० ना० पु० जिसकी उपमा दी जाती है।

उपयुक्त० गु० योग्य।

उपयोगी० गु० अनुकूल, लाभकारी, मुफ़ीद।

उपराग० ना० पु० चन्द्रमा सूर्य का ग्रहण वा विषय भोग।

उपराजा० ना० पु० युवराज, राजा का नायब।

उपरान्त० अव्य० पीछे, पश्चात्।

उपराम० ना० पु० संसारीसुख की निवृत्ति, वैराग्य, ऊपरी।

उपराला० ना० पु० सहायता, मदद, अधिक।

उपरि० अव्य० ऊपर।

उपरोध० ना० पु० सङ्कोच, सहायता, बड़ाई, गौरव।

उपर्ना० ना० पु० अंगोछा, एकपट्टा, ओढ़नी।

उपल० ना० पु० पत्थर।

Digitized by Google

उपलक्षण॰ ना॰ पु॰ थोड़ा जिससे समूचा समझा जावे, गु॰ जिससे गुणी जाना जावे ।

उपला॰ ना॰ पु॰ कण्डा ।

उपवन॰ ना॰ पु॰ कृत्रिमवन, आराम, बाग़ ।

उपवर्ह॰ }
उपवर्हण॰ } ना॰ पु॰ तकिया, सिरहाना ।

उपवास॰ ना॰ पु॰ व्रत, लङ्घन, रोज़ह ।

उपवीत॰ ना॰ पु॰ यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

उपवेद॰ ना॰ पु॰ जो विद्या वेदों से निकली है और चारि उपवेद हैं अर्थात् आयुष, गन्धर्व, धनुष, धर्म शास्त्र ।

उपशम॰ ना॰ पु॰ शान्ति, समाई ।

उपशास्त्र॰ ना॰ पु॰ विद्या जो शास्त्र से निकली है ।

उपस॰ ना॰ स्त्री॰ दुर्गन्धि, सड़ाहिंद ।

उपसना॰ ध॰ क्रि॰ उबसना, सड़ना ।

उपसर्ग॰ ना॰ पु॰ क्रिया के साथ संयुक्त जो प्र॰ पर, अप, सम, इत्यादि ।

उपस्थ॰ ना॰ पु॰ स्त्री॰ लिङ्ग, योनि ।

उपस्थित॰ गु॰ सन्मुख गत, प्राप्त, तैयार ।

उपसागर॰ ना॰ पु॰ छोटा समुद्र, समुद्र का भाग ।

उपहार॰ ना॰ पु॰ भेंट, नज़र, पूजा ।

उपहास॰ ना॰ पु॰ ठट्ठा हंसी ।

उपाख्यान॰ ना॰ पु॰ पुराण की कथा ।

उपाटना॰ स॰ क्रि॰ उखाड़ना ।

उपादान॰ ना॰ पु॰ विभेदरूप, निमित्त, कारण ।

Digitized by Google

उपाधि॰ ना॰ स्त्री॰ उपद्रव, अन्याय, समीप, प्राप्त, माया, बाधा, ना॰ पु॰ स्वामी, मालिक, धर्म की चिन्ता, गु॰ छल, कपट।

उपाधी॰ गु॰ अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी।

उपाध्या॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मण, जाति विशेष।

उपाध्याय॰ ना॰ पु॰ अध्यापक, पढ़ानेहारा।

उपाना॰ स॰ क्रि॰ सिरजना, उत्पन्न करना, उपार्जन करना।

उपानत्॰ ना॰ पु॰ जूता।

उपान्त्य॰ ना॰ पु॰ अन्त अक्षर का पूर्व वर्णादि।

उपाय॰ ना॰ पु॰ उद्योग, यत्न, रीति, तदबीर।

उपायी॰ गु॰ उद्योगी, यत्नी।

उपार्जन॰ ना॰ पु॰ विद्या वा धनादिका सङ्ग्रह, कमाई, प्राप्त।

उपार्जित॰ गु॰ जो प्राप्त भया, कमाया।

उपालम्भ॰ ना॰ पु॰ उलाहना।

उपास॰ ना॰ पु॰ व्रत, उपवास।

उपासक॰ }
उपासी॰ } गु॰ जो उपासना करे, सेवक।

उपासना॰ ना॰ स्त्री॰ सेवा, टहल, अनुवृत्ति, देवादि विषय भावना विशेष।

उपास्य॰ गु॰ उपासना के योग्य, आराध्य।

उपेक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ धोखा, त्याग।

उफन्ना॰ }
उफनाना॰ } अ॰ क्रि॰ उबलना जोश खाना।

उफाल॰ ना॰ पु॰ कूर्दन, कूदनि, कूदना।

उबकना॰ अ॰ क्रि॰ वमन होना, जीमलकनाकी।

उबकाई॰ ना॰ स्त्री॰ वमन, जीकी मलक।

Digitized by Google

उबकाना। अ० क्रि० वमन करना, उछाल करना।

उबटन। ना० पु० वस्तु आटा वा बेसनवासरसों जिससे देहका मैल छुड़ाते हैं।

उबटना। स० क्रि० उबटन लगाना।

उबरना। अ० क्रि० बचना।

उबरा। गु० बचगया।

उबलना। अ० क्रि० खलबलाना, खौलना।

उबाल। ना० पु० खलबलाहट के पीछे उफनाना।

उबसना। अ० क्रि० सड़ना-कुगन्धि करना।

उबसाना। स० क्रि० सड़ाना।

उबारना। स० क्रि० बचाना, छुड़ाना।

उबारू। ना० पु० बचाव, छुटकारा।

उबालना। स० क्रि० पकाना, खौलना।

उभक। ना० पु० रीछ, भालू।

उभय। सर्व० गु० दो।

उभरना। अ० क्रि० उठना, निकलना, उमड़ना।

उभार। ना० पु० उठान, फूलावट, गुमड़ा।

उभारना। स० क्रि० फूलना, उठाना।

उभौ। ना० पु० दोनो।

उमगा। गु० फूला, उठा।

उमगाना। स० क्रि० स० फुलाना, उठाना, मन बढ़ाना।

उमंग। ना० स्त्री० मग्नता, धुन, तृष्णा, चाहक।

उमंगना। अ० क्रि० उमंगसे आगेजाना।

उमंगी। गु० धुनी, अभिलाषी।

उमगड़ना। } अ० क्रि० उभरना, घिरआना।
उमड़ना। }

उमरी। ना० स्त्री० गुलरहन।

Digitized by Google

उमड़ाना। स० क्रि० उमड़ना।

उमा। ना० स्त्री० पार्वती, भवानी।

उमानाथ। ना० पु० श्री महादेव जी।

उर। ना० पु० छाती, गोदी, हृदय।

उरग। ना० पु० सांप, सर्प।

उरगना। स० क्रि० सहना, जोग बना, रामचन्द्रिका यां यथा, आइ भरत्थ कहाधों करैं जियभाय गुनो जो दुख देंय तो लैउर गौयह बातसुनो।

उरग्र। ना० स्त्री० भेंड़ी।

उरगाद। }
उरगारि। } ना० पु० गरुड़, मयूर, मोर न्योला।

उरझना। स० क्रि० अटकना, लगना।

उरला। गु० दूधरका।

उरु। ना० स्त्री० जंघ का ऊपरी भाग, गु० बहुत।

उर्णा। ना० स्त्री० भेंडी।

उर्मि। ना० स्त्री० लहरी, बीची।

उर्द। ना० पु० माष, अन्न विशेष।

उर्वरा। ना० स्त्री० उपजाऊ धरती, खेतीकेयोग्य।

उर्विज। ना० पु० जो धरतीमें उपजा है, मंगल।

उर्विजा। ना० स्त्री० श्रीजान, कीजी।

उर्वशी। ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा, मनवसी, धुकधुकी, आभरण।

उर्वी। ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।

उरसराड़न। ना० पु० कुच, स्तन, चूची।

उरहन। ना० पु० गिल्ला, शिकायत।

उरोज। ना० पु० कुच, स्तन।

उलझनि। ना० स्त्री० फसाव, अटकाव।

उलझना। अ० क्रि० फसना, लपटना, स० क्रि० झगड़ना।

उलझाना॰ स॰ क्रि॰ फसाना, अटकाना, भिड़ाना, लपटाना।

उलझेड़ा॰ ना॰ पु॰ उलझन, फसाव।

उलटना॰ स॰ क्रि॰ पलटना, फेरना, अ॰ क्रि॰ औंधा होना, उलटिजाना।

उलटा॰ गु॰ औंधा, पलटा।

उलटाना॰ स॰ क्रि॰ औंधाना पलटाना।

उलटापुलटा॰ गु॰ गटपट, नीचे ऊपर।

उलयना॰ अ॰ क्रि॰ लहराना।

उलया॰ ना॰ पु॰ उलथा, तर्जुमा, रागिनी विशेष, नृत्यभेद।

उलहना॰ ना॰ पु॰ दोष, निन्दा गिल्ला, अ॰ क्रि॰ उगना, लहलहाना।

उलाहना॰ ना॰ पु॰ गिल्ला, शिकायत।

उलूक॰ ना॰ पु॰ उल्लू, दिवान्ध, घूघूपक्षी।

उलूखल॰ ना॰ पु॰ ओखली।

उलूपी॰ ना॰ स्त्री॰ मकड़ी, बभ्रुवाहन की माता।

उल्का॰ ना॰ पु॰ लूका, अग्नि वा तारा जो आकाश से गिरता है वा दीपक का फूल।

उल्कापात॰ ना॰ पु॰ तारा छूटना, लूका गिरना उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य्य।

उलया॰ ना॰ पु॰ उलथा, तर्जुमा, नृत्यविशेष।

उल्मुक॰ ना॰ पु॰ लूका, कोयला, जलीलकड़ी।

उल्लङ्घन॰ ना॰ पु॰ अन्यथा वा भङ्ग करना वानमानना लांघिजाना।

उल्लाला॰ ना॰ पु॰ छन्द विशेष।

उल्लास॰ ना॰ पु॰ मेल, लेख

Digitized by Google

उल्लू० ना० पु० पक्षी विशेष, मूर्ख, अहमक।

उल्लूपन० ना० पु० मूर्खता, अहमकी।

उशीर० ना० पु० तृण विशेष की जड़ जिसमें गन्धि होती है खस।

उशना० ना० पु० शुक्राचार्य्य, स्मृति विशेष।

उष्ट्र० ना० पु० ऊंट।

उष्ण० ना० पु० गरम, तप्त, तपन, गरमी।

उष्णकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का मध्यस्थान अर्थात् मध्य रेखा के उत्तर २३ 1/2 अंश और दक्षिण २३ 1/2 अंशतक।

उष्णज० ना० पु० वनस्पति, जो पृथ्वीपर उगते हैं।

उष्णीष० ना० पु० पगड़ी, मुकुट

उसन्ना० अ० क्रि० उबलना, पकना।

उसरना० अ० क्रि० टलना, पीठदेना।

उसाना० स० क्रि० उबालना, बुरकाना।

उसारा० ना० पु० ओसारा, डेवढ़ी।

उसास० ना० पु० श्वास, दम।

उसासी० ना० स्त्री० फुरसत, कल।

उसाह० गु० कुसमय, बेमोसम।

उसीजना० स० क्रि० उबलना।

उसीसा० ना० पु० सिरहना, तकिया।

उस्तर० गु० संत, बिनमोल।

उहरना० अ० क्रि० बैठना, दबना।

[ऊ]

ऊंघ० ना० स्त्री० घोघाह, झपकी, नींद।

Digitized by Google

ऊघना० अ० क्रि० नींद आना, झपकी आना।

ऊघाई० ना० स्त्री० ऊंघ।

ऊचा० गु० उच्च, बलन्द।

ऊंट० ना० पु० पशु विशेष।

ऊटकटारा० ना० पु० भर भोंड।

ऊटकटोला० ना० पु० पौधा विशेष।

ऊकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऊकार है।

ऊख० ना० स्त्री० गन्ना वा गन्नों का खेत।

ऊखल० ना० पु० बड़ी उखली।

ऊखाड़ी० ना० पु० गन्नों का खेत।

ऊत० ना० पु० मनुष्य जो सन्तान हीन मरे, बिरोध, अवि वाञ्छित अति दुष्ट वा मूर्ख।

ऊतर० ना० पु० उत्तर, जवाब।

ऊत्क्रम० गु० विपरीत क्रम, बिना मिलान, बेसिलसिल:।

ऊदबिलाव० ना० पु० जल जन्तु विशेष।

ऊदा० गु० भूरा।

ऊदाई०, ऊदाहट० } ना० स्त्री० कपिश, भूरा पन।

ऊधौ० ना० पु० श्रीकृष्ण का एक सखा।

ऊन० ना० स्त्री० भेड़ी आदि के बाल, थोड़ा न्यून।

ऊनबिंश०, ऊनविंशति० } ना० पु० उन्नीस १९।

ऊना० ना० पु० खड्ग विशेष, दोष।

ऊनी० गु० जो ऊन से बना है।

ऊपर० ना० पु० उपरि, बाला।

ऊपरिस्थ० गु० ऊपर ठहरा भया।

Digitized by Google

ऊबट० गु० औघट, अगम्य, कुमार्ग।

ऊमरि० ना० स्त्री० गूलरि का वृक्ष।

ऊर्ज्ज० ना० पु० कार्त्तिक मास।

ऊर्ण० ना० पु० मेषादि के लोम, ऊन।

ऊर्णनाभि० ना० स्त्री० मकड़ी।

ऊर्णायु० ना० स्त्री० भेड़ी।

ऊर्द्ध० गु० ऊपर।

ऊर्द्धकाण्डा० ना० स्त्री० बड़ी सतावर।

ऊर्द्धतिक्त० ना० पु० चिरायता।

ऊर्द्धपुण्ड्र० ना० पु० वैष्णवीतिलक।

ऊर्द्धरेता० ना० पु० संन्यासी, ऋषि, और जितेन्द्रिय, जिसका स्त्री प्रसङ्ग में काम पतन न हो।

ऊर्द्धश्वास० } ना० पु० ऊपर
ऊर्द्धसांस० } को स्वांस।

ऊर्द्ध० अव्य० ऊपर।

ऊर्मिला० ना० स्त्री० संज्ञा विशेष।

ऊलुआ० ना० पु० तृणविशेष।

ऊषण० ना० पु० कालीमिरच, और पीपरा मूल।

ऊष्मा० ना० स्त्री० गर्मी, क्रोध रोष।

ऊसर० ना० पु० ऊसर।

ऊसरपा० ना० पु० खारीलोन।

ऊषा० ना० स्त्री० बाणा सुर की कन्या।

ऊषाकाल० ना० पु० प्रातःकाल, तड़का।

ऊसर० ना० पु० वह धरती जिसमें अन्नादि उत्पन्न नहीं होता है।

ऊह० ना० पु० तर्क।

[ऋ]

ऋक्० } ना० पु० प्रथम वेद।
ऋग्० }

Digitized by Google

ऋकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऋकार हो।

ऋचा० ना० स्त्री० बेदके मन्त्र ।

ऋजु० गु० सरल, सीधा ।

ऋजुभुज० गु० सीधीरेखा वा भुजा वा मेंड़ ।

ऋजुभुजक्षेत्र० ना० पु० वह क्षेत्र जो कई सूधीरेखाओं से घिरा हो ।

ऋण० ना० पु० उधार, क़र्ज़ह।

ऋणक० गु० क़र्ज़दार ।

ऋणिया० गु० धरता, क़रज़ी।

ऋणी० गु० क़रज़ दार ।

ऋतु० ना० स्त्री० बसन्तादि छः, अर्थात् बसन्त, १ ग्रीष्म, २ बर्षा, ३ शरद, ४ हेमन्त, ५ शिशिर, ६ और रज समय, (मौसम ।

ऋतुमती० ना० स्त्री० रजस्वला, अपडों से ।

ऋतुराज० ना० पु० बसन्त, बहार ।

ऋद्धि० } ना० स्त्री० पार्वतीजी,
ऋधि० } औषधि पौधा बिशेष, धन, सम्पदा ।

ऋषि० ना० पु० बेदज्ञ, मुनि, और तपस्वी।

ऋषिप्रति० ना० पु० ऋषियों में जो प्रधान, बड़ा बिद्या निधान, भागवत धर्मी ।

ऋषिमित्र० ना० पु० शान्त प्रिय, फ़क़ीरोंका दोस्त, राम चन्द्रिका में लिखा मित्र बोधक ।

ऋषिराज० } ना० पु० ऋषि पति ।
ऋषीश० }
ऋषीश्वर० }

ऋषभ० ना० पु० राग, स्वर, विशेष, श्रेष्ठ ।

ऋक्ष० ना० पु० भालू, रीछ, तारा ।

Digitized by Google

ऋक्षपति०, ऋक्षराज०, ऋक्षेश० } ना० पु० जाम्बुवन्त, और चन्द्रमा ।

[ए]

ए० अव्य० ग्यारहवां अक्षर सम्बोधन का सूचक ।

एक० गु० गिनती का प्रथम अङ्क, अद्वितीय १ ।

एककाल० गु० समान समय, और एक समय ।

एककालीन० गु० समान काल में उत्पन्न भया, हम उमर ।

एकटक० ना० पु० एक ताक से देखना, ।

एकट्ठा० गु० जो एक स्थान में जमा कियावा भया है ।

एकतराज्वर० ना० पु० अन्तरिया, तिज रावा तजारी ।

एकतही० ना० पु० एक जगह, ना० स्त्री० मिर्जाई ।

एकता० ना० स्त्री० एकाई, मेल समानता ।

एकतान० गु० एकमति, दुविधारहित ।

एकदा० अव्य, एक समय ।

एकरस० गु० षट्भाव विकार रहित ।

एकरूप० ना० पु० समभाव ।

एकलोटा०, एकलौता० } गु० जो लड़का अपने मातापिता का अकेला होवे ।

एकवचन० गु० बात, एक मुख्यमर ।

एकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द में एक अक्षर है ।

एकसर० गु० एकमति, दुविधा रहित ।

एकसा० गु० समान, बराबर

एकसार० समान, एकरस ।

एकछत्र० ना० पु० बिना खटके एकही राज्य ।

एकच० अव्य० एकठौर, एकस्थान।

एकचता० ना० स्त्री० एकठौर होना।

एकाई० ना० स्त्री० एकता।

एकाएकी० अव्य० अचानक, एकबार में।

एकाकार० गु० समानरूप, कलि धर्म, एक जाति, एकाचार, ब्राह्मणादिका विशेषवर्ण धर्मको त्यागि केपश्चादिसमानरहना।

एकाकी० गु० अकेला।

एकाग्र० गु० एकमन, एकमति, दुविधा रहित।

एकाङ्ग० गु० निश्चयकरि सत्य।

एकादशी० ना० स्त्री० पक्षकी ग्यारहवीं तिथि।

एकाधिपति० ना० पु० अनेक देशों का एक राजा।

एकान्त० गु० निराला, निपट, निर्जन स्थान।

एकान्तर० ना० पु० एक ओर।

एकान्तरकोण० ना० पु० एक ओर का कोना।

एकायन० गु० एकमति, एकमार्ग।

एकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में एकारहो।

एकाक्ष० ना० पु० काक, काना।

एकैकांक० अव्य० निश्चय करि सत्य।

एकैक० गु० प्रत्येक, हरएक।

एड० ना० स्त्री० घोड़े को दौड़ाने वा चलाने के निमित्त पांव के पिछले भाग की ठोकर मारना।

एडी० ना० स्त्री० पांव का पिछला भाग।

Digitized by Google

एण० नाο पुο पाप, हानि, मृग हरिया, घर कपट।

एणी० नाο स्त्रीο हरिणी।

एणीन० नाο स्त्रीο एणी का बहुवाक्य।

एणमद० नाο पुο कस्तूरी, मुश्क।

एतदर्थ० अव्यο इसलिये।

एतना० गुο इतना, इसक़दर।

एतान्० गुο इतने, इसक़दर, इसप्रकार।

एतादृश० गुο ऐसे, इसप्रकार।

एतावता० अव्यο इस करके, इस कारण।

एतावन्मात्र० गुο इतनाही, यही केवल।

एरण्ड० नाο पुο अरण्ड, रेंड़।

एलवा०
एलवालुक०
एलवालु० } नाο पुο ओषधि विशेष अर्थात् मुसब्बर।

एला० नाο स्त्रीο इलायची।

एलेई० नाο पुο हेइमारें ईश्वर।

एव०
एवं०
एवम्० } अव्यο इस प्रकार, और।

एवमस्तु० अव्यο ऐसाही हो।

[ऐ]

ऐंच० नाο पुο सङ्कोच, खेंच।

ऐंचना० सο क्रिο खेंचना।

ऐठ० नाο स्त्रीο बल, मड़ोड़।

ऐठना० सο क्रिο मरोड़ना बलदेना, अο क्रिο बलखाना, मरोड़िजाना।

ऐकाधिपत्य० नाο पुο अद्वितीय देशाधिपत्य, पदवी।

ऐकाह्निक० नाο पुο अन्तरिया

ऐक्य० नाο पुο एकता, समानता।

ऐगुन० गुο औगुण।

ऐनमैन० गुο ज्यों का त्यों

Digitized by Google

ऐन्द्रजालिक॰ना॰ पु॰ नटवर, दिठवन्ध।

ऐरावत॰ ना॰ पु॰ इन्द्र का हाथी।

ऐरावती॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष।

ऐवक्रा॰ना॰स्त्री॰ककराशिंगी।

ऐश्वर्य्य॰ना॰ पु॰ विभव, माहात्म्य, सम्पत्ति, प्रताप, बढ़ती।

ऐश्वर्य्यवान॰ }
ऐश्वर्य्यशाली॰ } गु॰ सम्पत्ति करके सुशोभित।

ऐसा॰ गु॰ इस प्रकार, इसके समान।

ऐहिक॰गु॰ इसलोक के भोग, जो इहां होवैं।

[ओ]

ओ॰ अव्य॰ सम्बोधन, करुणा, स्मृति।

ओंठ॰ना॰पु॰ओष्ठ, होंठ।

ओंडा॰गु॰ गम्भीर।

ओंधा॰ गु॰ औंधा, रस्सी जो छप्पर में बांधते हैं।

ओक॰ना॰ पु॰ घर, आश्रय, ठिकाना ना॰ स्त्री॰ उबकाई।

ओकना॰ अ॰ क्रि॰ वमनकर्ना, उछाल, करना।

ओकारान्त॰गु॰ जिसके अन्त में ओकार है।

ओखली॰ ना॰ स्त्री॰ गाली, उलूखल।

ओघ॰ना॰ पु॰ समूह, बहुतायत।

ओछा॰गु॰ छिछोरा, हलका, छोटा।

ओज॰ ना॰ पु॰ प्रताप, बल, तेज।

ओझ॰ना॰ पु॰ पचौनी, झोंझ पेट।

ओझल॰ना॰स्त्री॰ झोंक, धक्का।

ओझड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ पचौनी आंत।

Digitized by Google

ओकाल० ना० स्त्री० ओट, कुपाव गु० जो कुपा है।

ओझा० ना० पु० भोंकस, टोनहा यंत्री वा शाक्तधर्म्मी।

ओट० ना० स्त्री० आड़, पक्ष।

ओटना० स० क्रि० आड़ करना, बचाना, रेतना रुई से बिनोला निकालना, रोकना।

ओटा० ना० पु० आड़, बेठन।

ओड़न० ना० स्त्री० ढाल, फरी।

ओड़ना० स० क्रि० सहना, रोकना।

ओडा० ना० पु० खांचा, बड़ा टोकरा।

ओढ़ना० स० क्रि० पहिरना, ना० पु० रजाई, पट्टू, लोई आदि।

ओढ़नी० ना० स्त्री० स्त्रियों का ओढ़ना।

ओत० ना० स्त्री० बढ़ोतरी, बढ़ती, छीनता।

ओतप्रोत० ना० पु० तानी-बाना, चौड़ाई लम्बाई में ग्रथित, पलटे पर बिवाह।

ओदन० ना० पु० भात, चावल-पक्का।

ओदा० गु० गीला, भीगा।

ओधे० गु० अधिकारी, लागे।

ओप० ना० स्त्री० सुन्दरता, चमचमाहट, घोट।

ओपना० स० क्रि० घोटना, साफ़ करना।

ओपनी० ना० स्त्री० वह फ़िसान जिसपर जिलाकरते हैं।

ओपी० अव्य० उधर, कि, गु० साफ़ की।

ओर० ना० स्त्री० डगर, मार्ग अलङ्ग।

ओरी० गु० पत, पत्नी, मदद, ना० स्त्री० ओलती।

ओल० ना० पु० सूरण, जिमीकन्द, मनौती, बदले।

Digitized by Google

ओलती० ना० स्त्री० ओरौनी, ओरो।

ओला० ना० पु० जलमयपत्थर, और चीनी शक्करका जो बनता है।

ओषधि० ना० स्त्री० जो पौधा फलझरजाने के पीछे फिर से उत्पन्न हो।

ओष्ठ० ना० पु० दांतों का ढकना, होंठ।

ओस० ना० स्त्री० जो रात्रि समय छोटी २ फुहार पड़ती है, शीत।

ओसर० ना० स्त्री० कलोर भैंस।

ओसरा० ना० पु०
ओसरी० ना० स्त्री० } पारी० बारी, पन्ती।

ओसीसा० ना० पु० उसीसा, सिरहाना।

ओहो० अव्य० वा० हर्ष, आहा।

[औ]

औ० अव्य० और।

औंगी० ना० स्त्री० चुप्पी, भुगापन, चुपड़ी छुई गाड़ी।

औंघाना० अ० क्रि० झपकी आना।

औंडु० ना० पु० बेलदार।

औंडा० गु० गम्भीर।

औंधना० अ० क्रि० उलटना; उमलटना।

औंधा० गु० उलटा।

औंधाना० स० क्रि० उलटाना।

ओकारान्त० गु० जिसके अन्त में ओकार है।

औघट० गु० अगम्य, जहां आयन सके।

औचक०
औचट० } अव्य० अचानक, नागहान्।

औक्रु० ना० पु० मद्यविशेष।

औटन० ना० पु० उबाल।

औटना॰ स॰ क्रि॰ जलाना, सुखाना।

औत्तानपादि॰ ना॰ पु॰ ध्रुव भक्त प्रसिद्ध।

औत्कर्ष्य॰ ना॰ पु॰ श्रेष्ठता, उत्तमता।

औत्सुक्य॰ ना॰ पु॰ चिन्ता, व्याकुलता, पछितावा।

औथरो॰ गु॰ उथला, कम गहरा।

औदात॰ गु॰ अवदात, स्वेत।

औदार्य्य॰ ना॰ पु॰ दातापन, उदारता।

औदासीन्य॰ ना॰ पु॰ विषयों में वैराग्य।

और॰ अव्य॰ पुनः॰ फिर, गु॰ अधिक, दूसरा।

औरस॰ ना॰ पु॰ व्याहिता का पुत्र।

और्द्धदैहिक॰ ना॰ पु॰ मृतक की क्रिया।

औषध॰ } ना॰ स्त्री॰ रोग
औषधि॰ } नाशक द्रव्य, दवा, दवाइ।

औषधिपति॰ } ना॰ पु॰
औषधीश॰ } चन्द्रमा।

[क]

कं॰ अव्य॰ ना॰ पु॰ जल, सुख, अग्नि, शिर, काम, सुवर्ण।

ककड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ फलवातर-कारी विशेष।

ककरहा॰ } ना॰ पु॰ बारा-
ककहरा॰ } खड़ी, वर्ण।

ककार॰ ना॰ पु॰ क।

ककुभा॰ ना॰ स्त्री॰ दिशा, थोर, छन्द विशेष।

ककुष्ट॰ ना॰ पु॰ नीबवृक्ष।

ककुस॰ ना॰ पु॰ धनियां मसाला, कथनीज।

ककोरना॰ स॰ क्रि॰ खोदना, खरोचना।

कखरी॰ ना॰ स्त्री॰ कांख, बगल।

Digitized by Google

कखवारी० } ना० स्त्री० कांख
कखौरी० } का फोड़ा ।

कगर० ना० स्त्री० छोर, अन्त, किनारा ।

कङ्क० ना० पु० कङ्कपक्षी ।

कङ्कण० ना० पु० हाथका भूषण विशेष ।

कङ्कर० ना० पु० जिससे चूना बनता है, बजरी, कड़ी मिट्टी, नीच ।

कङ्काली० ना० स्त्री० डाकिनी ।

कङ्गुनी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, मालकंगुनी ।

कङ्करोड़० ना० पु० रोढ, पक्षी विशेष ।

कङ्गाल० पु० अधनी, भिखारी दरिद्री ।

कङ्गालता० ना० स्त्री० दरिद्रता० निर्धनता ।

कङ्गालिन० ना० स्त्री० डाकिनी, डायन, दरिद्रन ।

कङ्गनी० ना० स्त्री० कङ्गनी ।

कङ्गूरा० ना० पु० गुम्बद मठादिक, का कंवार: ।

कङ्घा० ना० पु० } बाल झाड़ने
कङ्घी० ना० स्त्री० } के लिये काष्ठादि की वस्तु ।

कच० ना० पु० बाल, केश ।

कचकना० अ० क्रि० मुरकना, पिराना ।

कचकचाना० अ० क्रि० किर किराना, भिनभिनाना ।

कचकाना० अ० क्रि० मुरकाना ।

कचनार० ना० पु० वृक्षविशेष ।

कचपचिया० ना० पु० गुच्छातारोंका, कृतिका ।

कचरा० ना० पु० } फल
कचरी० ना० स्त्री० } विशेष ।

कचहरी० ना० स्त्री० सभा, समाज, मजलिस ।

कचाई० ना० स्त्री० अजीर्ण, कच्चापन ।

कचालू० ना० पु० कन्दविशेष ।

Digitized by Google

कचियाहट॰ना॰ स्त्री॰ घिन घिनामा।

कचर॰ना॰ पु॰ औषधि विशेष।

कचौरी॰ना॰ स्त्री॰ पूरी पोठी वा घोई भरी।

कच्चा॰गु॰ आम, अनाड़ी, अनपका।

कच्छ॰ना॰ पु॰ कछुआ वा द्वितीय विष्णु जी का अवतार, देश जो गुजरात के पास है कछनी।

कच्छप॰ना॰पु॰ कूर्म्म,कछुआ।

कच्छी॰गु॰ जो कच्छ देश का घोड़ा आदि हो।

कछ॰ना॰ स्त्री॰ काछ।

कछना॰स॰ क्रि॰ धोना, पोछना, ना॰ पु॰ काछ।

कछनी॰ना॰ स्त्री॰ काछ बांधना।

कछलम्पट॰गु॰ कुकर्मी, व्यभिचारी, अजितेन्द्रिय।

कछवाहा॰ना॰ पु॰राज पुत्र का वर्ण जो श्री रामचन्द्र के पुत्र कुशनामी से उत्पन्न भया।

कछार॰ना॰ स्त्री॰ नदी की तराई वा किनारा।

कछारना॰स॰ क्रि॰ छांटना, धोना।

कछु॰सर्व॰ कुछ, किञ्चित्।

कछुवा॰ना॰ पु॰ जवासा।

कछू॰सर्व॰ कुछ, किञ्चित्।

कज॰ना॰ पु॰ कञ्ज, कमल।

कजरा॰ना॰ पु॰ काजल, गु॰ काजल लगाये।

कजरारे॰गु॰ काजल लगाये हुये।

कजला॰गु॰ काला, काजल लगाये।

कज्जल॰ना॰ पु॰ काजल, अञ्जन, सुरमा।

कज्जलगिरि॰ना॰पु॰ काजल का पर्वत।

Digitized by Google

कञ्चन॰ना॰ पु॰ सुवर्ण, कनक, जाति विशेष ।

कञ्चनक॰ना॰ पु॰ कचनार, मैनफल ।

कञ्चनी॰ना॰ स्त्री॰ कञ्चन जाति की स्त्री॰ नोची, पतुरिया, सोनेकी पुतली ।

कञ्चु॰ } ना॰ स्त्री॰ चोली,
कञ्चुकी॰ } अंगिया ।

कञ्ज॰ना॰ पु॰ कमल ।

कञ्जर॰ना॰ पु॰ जाति विशेष जो रस्सी वा सिर की वेचते हैं ।

कञ्जा॰गु॰ जिसकी आंखि की पुतली नीली पीली हैं, ना॰ पु॰ वृक्ष वा उस का फल ।

कञ्जिया॰ना॰ स्त्री॰ आंखकी फुड़िया, छोटी फुड़िया ।

कञ्जूस॰गु॰ सूम, कृपण, लालची ।

कञ्जूसी॰ना॰ स्त्री॰ कृपणता ।

कटक॰ना॰ पु॰ सेन, फौज, दल, नगर विशेष जो उड़ेसा देश में है ।

कटकट॰ना॰ पु॰ झगड़ा, दांतों से दांत खड़ाना ।

कटकटाना॰स॰ क्रि॰ चबाना किसी वस्तु का ।

कटकटेरि॰ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी ।

कटकना॰ना॰ पु॰ बांधना, उपाय, ठेका ।

कटकाया॰ना॰ स्त्री॰ सेमर वृक्ष ।

कटघरा॰ना॰ पु॰ कटहरा ।

कटङ्कटी॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी ।

कटना॰अ॰ क्रि॰ कटिजाना, लज्जित होना घायल होना, मोहित होना ।

कटनी॰ना॰स्त्री॰ कटाई, अनाज काटने का समय, वा काटने को वस्तु यथा कैंची ।

Digitized by Google

कटफल॰ ना॰ पु॰ कायफल।

कटम्भरी॰ ना॰ स्त्री॰ स्योना वृक्ष।

कटरा॰ ना॰ पु॰ हाट, चौक।

कटहरा॰ ना॰ पु॰ कटहरा, बड़ा पिंजड़ा।

कटु॰ गु॰ काटने वाला।

कटा॰ ना॰ स्त्री॰ मारा जाना बहुत लोगों का।

कटाक॰ ना॰ स्त्री॰ जो दस्त दर्द होकर आवे।

कटाना॰ स॰ क्रि॰ किसी पदार्थ के टुकड़े कराना।

कटार॰ ना॰ पु॰ खञ्जर।

कटारा॰ ना॰ पु॰ औषधि, पौधा विशेष।

कटारी॰ ना॰ स्त्री॰ खञ्जर, छुरी।

कटाह॰ ना॰ पु॰ कड़ाह, कड़ाही।

कटाक्ष॰ ना॰ पु॰ वानरविशेष, ना॰ स्त्री॰ तिरछी चितवन।

कटि॰ ना॰ स्त्री॰ लङ्क, कमर।

कटित॰ गु॰ खपत।

कटिबन्ध॰ ना॰ पु॰ पृथ्वी के लघु भाग करने के लिये उसके पांच कटिबन्ध नियत किये अर्थात् शीत कटिबन्धद्वय, और सम कटिबन्धदोर उष्ण१।

कटीला॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष, गु॰ कांटोंवाला सजीला, सावन्त।

कटु॰ } गु॰ कडुवा, कड़ा,
कटुक॰ } बुरा।

कटुकी॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी औषधि।

कटुग्रन्थ॰ ना॰ स्त्री॰ पिपरामूल

कटुकटे॰ }
कटुभद्र॰ } ना॰ स्त्री॰ सोंठि।

Digitized by Google

कटुभी० ना० स्त्री० मालकङ्गुनी।

कटुरोहिणी० ना० स्त्री० कुटकी औषधि।

कटैया० ना० स्त्री० पौधा कांटोंवाला विशेष।

कटोरा० ना० पु० }
कटोरी० ना० स्त्री० } भोजन करने का पात्र विशेष।

कट्ठा० ना० पु० काठका जिसपर कपड़ा धोते हैं।

कण्टकित० गु० रोमाञ्चित, रोम खड़े हुये।

काठन्दर० ना० पु० काष्ठोदर, रोग विशेष।

काठड़ा० ना० पु० }
काठड़ी० ना० स्त्री० }
काठरा० ना० पु० }
काठरी० ना० स्त्री० } काठकी थाली वा पात्र विशेष।

काठवत० ना० स्त्री० काठका वर्त्तन विशेष।

कठारी० ना० स्त्री० काठका वर्त्तन, कमण्डल।

कठिन० गु० निष्ठुर, कठोर, कड़ा, मुश्किल।

कठिनता० ना० स्त्री० }
कठिनत्व० ना० पु० } कठोरता, निष्ठुरता, कड़ापन, सख्ती।

कठिया० ना० स्त्री० काठ की छोटी माला काठ का छोटा सा पात्र।

कठिल्ल० ना० पु० करेला तरकारी।

कठेठी० ना० स्त्री० कड़ी, कठिन।

कठोर० गु० निठुर, कड़ा, असह, ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल।

कठोरता० ना० स्त्री० निठुरता निठुराई।

कठोलिया० ना० स्त्री० काठ का छोटा सा पात्र।

Digitized by Google

कठौता॰ना॰पु॰ } काठ का
कठौती॰ना॰स्त्री॰ } बड़ापात्र

कड़क॰ ना॰ स्त्री॰ धड़ाका, चटक,गर्जनि, स्फुर्त्त ।

कड़कना॰ अ॰ क्रि॰ चटकना धड़कना, गरजना ।

कड़खा॰ ना॰ पु॰युद्ध में बढ़ावा देनेकी बात कहना ।

कड़खैत॰गु॰ भाट जो बढ़ाव देता है ।

कडुआ॰ गु॰ तीता, तीक्ष्ण, निठुर, योद्धा ।

कडुवाहट॰ ना॰ स्त्री॰ तीक्ष्णता ।

कड़ा॰गु॰ कठोर, दृढ़, भगरा, ढीठ, निठुर, ना॰ पु॰ लोहे का वा चांदीआदि का भूषण जो हाथ में पहिनते हैं ।

कड़ाड़ा॰ ना॰ पु॰ नदी का ऊंचा किनारा ।

कड़ाह॰ ना॰ पु॰ दुग्धादि औटने के लिये लोहे का पात्र, गुरुनानक का भोग ।

कड़ाही॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा कड़ाह ।

कड़ी॰ना॰स्त्री॰कांडी, धरनी, धन्नी ।

कडु॰ना॰स्त्री॰खुजलीखारिश्त

कढ़ना॰अ॰ क्रि॰ निकलना, उठना, चितना ।

कढ़िल्लक॰ना॰ पु॰ लालपुनर्नवा ।

कढ़ी॰ना॰ स्त्री॰ भोजनविशेष जो वेसन औ दही से बनता है ।

कढुआ॰ना॰पु॰ उधार कर्ज़ ।

कण॰ ना॰ पु॰ धान्य, अनाज, राज्यग्राह्य द्रव्य,ज़र्रा ।

कणा॰ना॰स्त्री॰ पीपरी ।

कणामूल॰ ना॰ पु॰ पीपरा मूल ।

Digitized by Google

कणागुफल० ना० पु० अङ्कोल औषधि।

कणिका० ना० स्त्री० सोनजुही, अणु, लेश, टुकड़ा, ज़र्रः।

कणी० ना० स्त्री० छिटक, टुकड़ा, ज़र्रः।

कण्टक० ना० पु० कांटा, गोखुरू, शत्रु, क्षपणा, पित्तपापड़ा।

कण्टकलता० ना० स्त्री० खीरा फल विशेष।

कण्टकारि० } ना० स्त्री०
कण्टकिनी० } छोटी कटाई, सफेद घीकुवारि।

कण्टकिफल० ना० पु० कटहल।

कण्टकी० ना० पु० बिल्वबेलु।

कण्टफल० ना० पु० गोखुरू।

कण्टार० गु० कटीला।

कण्टारिका० ना० स्त्री० छोटी सफेद कटाई।

कण्टिया० ना० स्त्री० आंकडी।

कण्ठ० ना० पु० गला, घांटी, स्पर्शस्थित, मुखाग्र।

कण्ठगत० गु० गले में, जान बलब।

कण्ठमाल० } ना० स्त्री० गले
कण्ठमाला० } की माला, मुखरोग जिसमें गला सड़जाता है।

कण्ठला० ना० पु० माला जो लड़कों के लिये बज्रयंत्र युत बनाते है।

कण्ठस्थ० ना० पु० मुखाग्र।

कण्ठा० ना० पु० बड़ी गुरियों का माला।

कण्ठाग्र० गु० मुखाग्र, ज़बानी

कण्ठाभरण० ना० पु० गलेका भूषण।

कण्ठी० ना० स्त्री० छोटी माला तुलसी आदि की।

कण्ठीरव० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर।

Digitized by Google

कण्ठ्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण कण्ठ से होवे।
कण्डा० ना० पु० उपला।
कण्डी० ना० स्त्री० छोटा उपला।
कण्डुघ्नी० ना० स्त्री० शंखाहोली।
कण्डू० ना० पु० रोग विशेष, स्त्री० खुजुलाई।
कण्डूम० ना० स्त्री० पवांर, ओषधि।
कण्डेरा० ना० पु० धुनियां, जाति विशेष जो तीर बनाते हैं, कमानगर।
कण्व० ना० पु० मुनि विशेष।
कत० अव्य० कहां, क्योंकर, किसलिये।
कतना० अ० क्रि० काता जाना।
कतरन०
कतरा० } ना० पु० काटन।
कतरना० स० क्रि० काटना।
कतरनी० ना० स्त्री० कटनी, कैंची।
कतराना० स० क्रि० कटवाना।
कतहुं० अव्य० कभी।
कताई० ना० स्त्री० कातने का काम, कातने का पैसा।
कतीरा० ना० पु० गोंद विशेष।
कत्र० अव्य० कहां, क्योंकर।
कत्था० ना० पु० खदिर, खैर।
कत्थायन० ना० पु० काला हरिण।
कथक० गु० पौराणिक, पवांरिया, कथिक।
कथन० ना० पु० कहना, वाक्य का प्रयोग कहना।
कथना० स० क्रि० कहना।
कथनीय० गु० कहने के योग्य।
कथा० ना० स्त्री० कहानी, वृत्तान्त, पवांरा।
कथित० गु० कहा हुआ।

Digitized by Google

कथोपकथन॰ ना॰ पु॰ आलाप परस्पर बात चीत।

कथ्य॰ ना॰ स्त्री॰ कहं, गु॰ कहने योग्य।

कद॰ अव्य॰ कब।

कदध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ अतिमार्ग, कठिन मार्ग।

कदन॰ ना॰ पु॰ नाशक, बधिक।

कदम्ब॰ ना॰ पु॰ समूह, वृक्ष विशेष, कदम।

कदम्बक॰ ना॰ पु॰ समूह, शिरोह।

कदर्य्य॰ गु॰ लोभी, कञ्जूस।

कदली॰ ना॰ पु॰ केला वृक्ष।

कदक्षर॰ ना॰ पु॰ कुत्सित वर्ण।

कदा॰ अव्य॰ कब।

कदाचार॰ गु॰ शास्त्र से विपरीत, व्यवहार।

कदाचित्॰ } अव्य॰ जो कभी
कदापि॰ } होता हो। शायद।

कद्दन॰ ना॰ पु॰ दुःख, क्लेश।

कद्रू॰ ना॰ स्त्री॰ काली नाग की माता, कश्यप जीकी स्त्री।

कधू॰ अव्य॰ कभी।

कन॰ ना॰ पु॰ कण अणु।

कनक॰ ना॰ पु॰ सोना, धतूरा।

कनकटा॰ गु॰ बूचा।

कनकाचल॰ ना॰ पु॰ सुमेर पर्वत जो मनुष्य को अगम्य है।

कनखजूरा॰ ना॰ पु॰ गोजर, कीट प्रसिद्ध।

कनल॰ ना॰ पु॰ भिखावां।

कनवाई॰ ना॰ स्त्री॰ कान छेदना।

कनामत॰ ना॰ पु॰ आश्विन कृष्ण पक्ष में पितरों का श्राद्ध।

कनिक॰ ना॰ पु॰ चून, पिसान, आटा।

Digitized by Google

कनियाना॰ स॰ क्रि॰ सङ्कोच से कतरायजाना आंख चुराना।

कनियाहट॰ ना॰ स्त्री॰ खींच संकोच।

कनिष्ठ॰ गु॰ छोटा।

कनिष्ठा॰ ना॰ स्त्री॰ पांचवीं, अङ्गुली, नीच स्त्री।

कनिष्ठिका॰ ना॰ स्त्री॰ पांचवीं अङ्गुली।

कनिष्ठा॰ गु॰ चूना।

कने॰ अव्य, पास, साथ।

कनेर॰ } ना॰ पु॰ करवीर वृक्ष
कनेल॰ } जिसका फूल देवतों को चढ़ता है।

कनैया॰ ना॰ पु॰ कर्ण वेधन, ना॰ स्त्री॰ डाली।

कनौज॰ ना॰ पु॰ प्राचीन नगर, विशेष देश।

कनौजिया॰ गु॰ कनोज देश का वासी।

कन्त॰ ना॰ पु॰ स्वामी, भर्तार प्रियतम, मालिक।

कन्था॰ ना॰ स्त्री॰ कथड़ी, गूदड़ी, नीति यथा, शनैः कन्था शनैः पन्था शनैः पर्व्वत लंघनं। शनैर्विद्या शनैर्वित्त मेते पञ्च शनैः शनैः।

कन्द॰ ना॰ पु॰ जड़ विशेष वा जो अड़म फलता है यथा, सूरण, घुइयां, आलू, और मेथ, मूलि।

कन्दरा॰ ना॰ स्त्री॰ खोह, गुफा।

कन्दराल॰ ना॰ पु॰ अख-रोट।

कन्दर्प॰ ना॰ पु॰ कामदेव

कन्दलकन्द॰ ना॰ पु॰ ज़िमी-कन्द।

कन्दला॰ ना॰ पु॰ कोंचबीज।

कन्दासी॰ ना॰ स्त्री॰ पिया-वासा।

Digitized by Google

कन्दुक० ना० पु० कंथा वृक्ष वा उसका फल, गेंद।

कन्ध० ना० पु० कांधा।

कन्धर० ना० पु० गला, मेघ।

कन्धा० ना० पु० कांधा।

कन्धियाना० स० क्रि० कोई वस्तु कांधे पर रखना।

कन्धेली० ना० स्त्री० खोगीर, जो घोड़ों को चढ़ाते हैं।

कंन्यका० ना० स्त्री० कुमारी, कन्या।

कंन्या० ना० स्त्री० बेटी, छठी-राशि, दश वर्ष तक की लड़की।

कंस० ना० पु० श्री कृष्ण का मामू।

कन्हाई० } ना० पु० श्रीकृष्ण
कन्हैया० } चन्द्र जी का एक नाम।

कपना० अ० क्रि० थर थराना।

कपकपी० ना० स्त्री० थरथ-राहट, फुरफुरी।

कपट० ना० पु० छल, फ़रेब, खोटाई, और मगल।

कपटभू० ना० स्त्री० माया भूमि, तिलसमाती जमीन।

कपटी० पु० छली, खोटा, बज्ञ रूपिया।

कपड़ा० ना० पु० वस्त्र।

कपड़ोंसेहोना० अ० क्रि० रजो-धर्म होना ऋतुमती होना।

कपर्दी० ना० पु० श्रीमहादेव जी, बरगद।

कपाट० ना० पु० किवाड़, पट।

कपार० } ना० पु० माथा, लि-
कपाल० } लाट, भाग्य।

कपालभृत्० ना० पु० श्रीमहा-देवजी।

कपाली० ना० पु० श्रीमहादेव जी, और श्री भैरवजी।

Digitized by Google

कपास॰ ना॰ स्त्री॰ रूई का वृक्ष, कर्पास।
कपि॰ ना॰ पु॰ वानर, बन्दर।
कपिकुञ्जर॰ ना॰ पु॰ श्रेष्ठ वानर।
कपिजन॰ ना॰ पु॰ पारस पीपल।
कपित्थ॰ ना॰ पु॰ कैथा का वृक्ष।
कपिध्वज॰ ना॰ पु॰ अर्जुन पाण्डु पुत्र।
कपिन्द्र॰ } ना॰ पु॰ मुख्य
कपीन्द्र॰ } वानर, और श्रेष्ठ वानर।
कपिपति॰ ना॰ पु॰ सुग्रीव, पु॰ जो वानरों का राजा होवे।
कपिपिप्पली ना॰ स्त्री॰ लाल-ऊंगा।
कपिभूत॰ ना॰ पु॰ पारस पीपल।
कपिल॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष सांख्य शास्त्र के वक्ता, पीतल धातु।
कपिला॰ ना॰ स्त्री॰ पिङ्गल वर्ण की गाय, रेणुका।
कपिलदेव॰ ना॰ पु॰ आदि अवतार।
कपिल्ल॰ ना॰ स्त्री॰ कपाली औषधि।
कपीश॰ ना॰ पु॰ सुग्रीव वानरों का राजा।
कपूर॰ ना॰ पु॰ सुगन्धि विशेष काफूर।
कपोत॰ ना॰ पु॰ कबूतर, परेवा।
कपोतवर्णा॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी इलायची।
कपोताञ्जन॰ ना॰ पु॰ मद विशेष
कपोतिका॰ ना॰ स्त्री॰ मूली तरकारी।
कपोल॰ ना॰ पु॰ गाल।
कफ॰ ना॰ पु॰ खखार, श्लेष्मा बलग़म।
कफाब्धिज॰ ना॰ पु॰ समुद्र फेन।
कब॰ अव्य, कहां, कोदा।

कबड्डी॰ ना॰ स्त्री॰ गबड्डी खेल विशेष।

कबन्ध॰ ना॰ पु॰ बिना मस्तक की देह, और पानी, मेघ, राहु, उभे पूर्वा परे सन्ध्ये नित्यम्पश्यामि भारत, उदयास्त मने सूर्य्यं कबन्धैः परिवारितं इति महा भारते।

कबरा॰ गु॰ कर्बुर, चितला, चबलक।

कबाड़॰ ना॰ पु॰ काम, उद्यम, तरकारी।

कभी॰ } ना॰ पु॰ अव्य, कभी,
कभू॰ } कदापि, कधी।

कमठ॰ ना॰ पु॰ कछुवा।

कमठा॰ ना॰ पु॰ धनुष, कमान।

कमठी॰ ना॰ स्त्री॰ कछुई, घलुही।

कमण्डलु॰ ना॰ पु॰ दण्डियों का जल पात्र, करवा।

कमनीय॰ गु॰ सुन्दर, मनोवत्।

कमन्दर॰ ना॰ स्त्री॰ सीपी यथा, मुक्ता स्फोटाब्धि मण्डूकी शुक्ति मौक्ति कमन्दरः इति निघण्टे।

कमरख॰ ना॰ पु॰ फलविशेष, और वस्त्र विशेष।

कमल॰ ना॰ पु॰ पद्म।

कमलज }
कमलभव } ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

कमलवायु॰ ना॰ पु॰ कांवर, रोग विशेष जिसमें देह और आंखी पीली हो जाती है।

कमला॰ ना॰ स्त्री॰ लक्ष्मी, श्री।

कमलाकर॰ ना॰ पु॰ तालाव।

कमलासन॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

कमलासिनी॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती।

कमलाक्ष॰ ना॰ पु॰ कमल नयन।

कमलिनी॰ ना॰ स्त्री॰ पद्मिनी

Digitized by Google

कमाई॰ना॰ स्त्री॰ उपार्जन, प्राप्ति, पैदायश।

कमाऊ॰गु॰ उद्यमी, यत्नी, देश विशेष पु॰।

कमाना॰अ॰ क्रि॰ उपार्जन करना, पैदा करना।

कमेरा॰गु॰ परिश्रमी, मिह-नती।

कमोदिनी॰ना॰ स्त्री॰ कमल विशेष जो राति को खिलता है अर्थात् फफूल।

कमोरी॰ना॰ स्त्री॰ मटकी, हथडी दुग्धादि।

कम्प॰ना॰ पु॰ कपकपी, थर थराहट।

कम्पना॰अ॰ क्रि॰ कांपना, थर थराना।

कम्पवाय॰ ना॰ पु॰ रोग विशेष जिसमें सारा शरीर कम्पा करता है।

कम्पाहा॰गु॰ थर थराहा।

कम्पित॰गु॰ कांपता भया।

कम्पनी॰ना॰ स्त्री॰ साझिव लोगों के बकतों का मेल बासाझा, अंगरेज़ी शब्द।

कम्बल॰ना॰ पु॰ ऊनका वस्त्र।

कम्बु॰ ना॰ पु॰ शंख॰ हाथी, कम्बासुर।

कम्बुज॰ना॰ स्त्री॰ करसिंघाड़ु।

कम्बुमालिनी॰ ना॰ स्त्री॰ शंखा होली।

कम्बोज॰ना॰ पु॰ घोड़ा, राजा विशेष।

कम्भारी॰ना॰ स्त्री॰ ओषधि विशेष।

कम्मल॰ ना॰ पु॰ रोम, वस्त्र, कम्बल।

कर॰ ना॰ पु॰ हाथ, राजा सधन, महसूल, किरण, पुष्कर, बिषया।

करक॰ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, दर्द।

करकस॰गु॰ कर्कश, लड़ाकू

करका॰ ना॰ पु॰ ओला, हिमोपल।

Digitized by Google

कर्कसा० ना० स्त्री० लड़ाकी ।

कारज० ना० स्त्री० अंगुली, नख ।

कारट० ना० पु० कौआ ।

कारटो० ना० पु० रांगा, ना० स्त्री० काक पत्नी ।

करण० ना० पु० साधन, कारक विशेष, ।

करणी० ना० स्त्री० कर्म्म, क्रिया, थवई की एक हथियार करनी सम्बन्धी ।

करणीय० गु० अवश्य कर्त्तव्य ।

करतल० ना० पु० हथेली ।

करतलगत० गु० हाथमें ।

करताल० } ना० स्त्री० बाजा
करताली० } विशेष काठ का हथेली की ताल ।

करतूति० ना० स्त्री० कर्त्तव्य, चाल, करणी ।

करतोया० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगाले मेंहै ।

करना० स० क्रि० बनाना, रचना ।

करनी० ना० स्त्री० करणी, कर्त्तव्य ।

करपल्लव० ना० पु० अंगुलीका उसका छोर ।

करपृष्ठ ना० स्त्री० हाथ की पीठ ।

करबी० ना० स्त्री० ज्वारिका पोधा ।

करभ० ना० पु० हाथी ।

करभप्रिय० ना० पु० पीलूवृक्ष ।

करभूषण० ना० पु० कङ्कनादि आभरण ।

करम० ना० पु० कर्म ।

करमर्दी० ना० पु० बड़ाकरौंदा ।

करमूल० ना० पु० कंधा ।

करवार० गु० अल्पघातादिविघ्न, ब्रजविलासे यथा, नन्द यथामति भाग बडेरी, सुतकीकरवरटरीकरेरी।

करवाल० ना० पु० तलवार।

करवीर० ना० पु० कनेलवृक्ष, विशेष।

करवीरक० ना० पु० कनेलवृक्ष।

कररुह० ना० पु० नख, नाखून।

करसम्पुट० ना० पु० हाथजोड़ना।

करहाट० ना० पु० सिफाकन्द, मैनफल।

करहाटक० ना० पु० सिफाकन्द

करांत० ना० पु० आरा।

करांती० गु० आरे से चीरने हारे।

कराना० स० क्रि० बनाना, रचाना।

करायल० ना० पु० भोजन विशेष जूस।

करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल।

करारा० ना० पु० कड़ारा, किनारा।

कराल० गु० भयङ्कर, टेढ़ा, ना० स्त्री० बिडङ्ग ओषधि।

कराली० ना० स्त्री० भयङ्कर, कठिन।

करावलि० ना० स्त्री० किरणों का समूह।

कराहना० अ० क्रि० सांसभरना, दुखकरना।

करिया० ना० पु० केवट, मल्लाह।

करिल० ना० पु० मठोर जिसका शिर टूटा हो वा सकानया पोधा।

करी० ना० पु० हाथी।

करीर०
करीरक०
करील०
ना० पु० वृक्ष विशेष जो कांटे वाला होताहे।

करीष० ना० पु० गोवर की मांदि वा सूखे कण्डा और कोई २ कोयला बताते है।

Digitized by Google

कर्कसा॰ ना॰ स्त्री॰ लड़ाकी।

करज॰ ना॰ स्त्री॰ अङ्गुली, नख।

करट॰ ना॰ पु॰ कौआ।

करटी॰ ना॰ पु॰ रांगा, ना॰ स्त्री॰ काक पत्नी।

करण॰ ना॰ पु॰ साधन, कारक विशेष,।

करणी॰ ना॰ स्त्री॰ कर्म्म, क्रिया, थवई का एक हथियार करना सम्बन्धी।

करणीय॰ गु॰ अवश्य कर्त्तव्य।

करतल॰ ना॰ पु॰ हथेली।

करतलगत॰ गु॰ हाथमें।

करताल॰ } ना॰ स्त्री॰ बाजा
करताली॰ } विशेष काठ का हथेली की ताल।

करतूति॰ ना॰ स्त्री॰ कर्त्तव्य, चाल, करणी।

करतोया॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो बंगाले मेंहै।

करना॰ स॰ क्रि॰ बनाना, रचना।

करनी॰ ना॰ स्त्री॰ करणी, कर्त्तव्य।

करपल्लव॰ ना॰ पु॰ अंगुलीवा उसका छोर।

करपृष्ठ ना॰ स्त्री॰ हाथ की पीठ।

करबी॰ ना॰ स्त्री॰ ज्वारिका पौधा।

करभ॰ ना॰ पु॰ हाथी।

करभप्रिय॰ ना॰ पु॰ पीलूवृक्ष।

करभूषण॰ ना॰ पु॰ कङ्कनादि आभरण।

करम॰ ना॰ पु॰ कर्म।

करमर्दी॰ ना॰ पु॰ बड़ाकरौंदा।

करमूल॰ ना॰ पु॰ कब्जा।

करवार॰ गु॰ अल्पघातादिविघ्न, ब्रजविलासे यथा, नन्द यथामति भाग बडेरी, सुतकीकरवरटरीकरेरी।

Digitized by Google

करवाल० ना० पु० तलवार ।
करवीर० ना० पु० कनेलवृक्ष, विशेष ।
करवीरक० ना० पु० कनेल-वृक्ष ।
कररुह० ना० पु० नख, नाखून ।
करसम्पुट० ना० पु० हाथ-जोड़ना ।
करहाट० ना० पु० सिफाकन्द, मैनफल ।
करहाटक० ना० पु० सिफाकन्द ।
करात० ना० पु० आरा ।
कराती० गु० आरे से चीरने हारे ।
कराना० स० क्रि० बनाना, रचाना ।
करायल० ना० पु० भोजन विशेष जूस ।
करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल ।
करारा० ना० पु० कड़ारा, किनारा ।
कराल० गु० भयङ्कर, टेढ़ा, ना० स्त्री० बिडङ्ग औषधि ।
कराली० ना० स्त्री० भयङ्कर, कठिन ।
करावलि० ना० स्त्री० किरणों का समूह ।
कराहना० अ० क्रि० सांसभ-रना, दुखकरना ।
करिया० ना० पु० केवट, मल्लाह ।
करिल० ना० पु० मठोर जि-सका शिर टूटा हो वा सकानया पोधा ।
करी० ना० पु० हाथी ।

करीर०, करीरक०, करील० } ना० पु० वृक्ष विशेष जो कांटों वाला होताहै ।

करीष० ना० पु० गोवर की मांदि वा सूखे कण्डा और कोई २ कोयला बताते है ।

Digitized by Google

करुणा॰ ना॰ स्त्री॰ दया, कोमलता।

करुणाकर॰ गु॰ दयाकर, दयाकीराशि, कोमलता की खानि।

करुणाकरना॰ स॰ क्रि॰ गुणकहि कररोना, दयाकरना।

करेरा॰ गु॰ दृढ़, कड़ा, बलवान।

करेरी॰ ना॰ स्त्री॰ दृढ़, कड़ी।

करेला॰ ना॰ पु॰ तरकारी विशेष।

करेत॰ ना॰ पु॰ सांप विशेष।

करोड़॰ गु॰ सौलाख-१०००००००।

करोड़ा॰ ना॰ पु॰ उगाहने वाला, प्रधान।

करौंदा॰ ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फल विशेष।

कर्क॰ } ना॰ पु॰ चौथी राशि
कर्कट॰ } विशेष, केकड़ा, गंगटा।

कर्कटशृङ्गिका॰ ना॰ स्त्री॰ ककरासिंगी।

कर्कटा॰ ना॰ पु॰ बेर फल विशेष।

कर्कटाख्या॰ ना॰ स्त्री॰ ककरासिंगी।

कर्कटी॰ ना॰ स्त्री॰ ककड़ी, पिण्डखजूर।

कर्कन्धु॰ ना॰ पु॰ बेर का वृक्ष वा फल।

कर्कल॰ ना॰ पु॰ अजमोद, सूक्ष्मवायु।

कर्कश॰ गु॰ कड़ा, कठोर, लड़ाका, असह।

कर्कशच्छदा॰ ना॰ स्त्री॰ केतकी।

कर्कारु॰ ना॰ स्त्री॰ पु॰ कुम्हड़ा खभड़ा।

कर्कीज॰ ना॰ पु॰ घोड़ा।

कर्कोटक॰ ना॰ पु॰ मुख्य सर्प।

कर्कोटिका॰ ना॰ स्त्री॰ ककोड़ी औषधि।

Digitized by Google

कर्चूर॰ ना॰ पु॰ कचूर।

कर्चूरिका॰ ना॰ स्त्री॰ हाथ की चूड़ी, कचूरी।

कर्छी॰ ना॰ पु॰ कफगीर, बड़ा चमचा।

कर्छी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटाकर्छा।

कर्ण॰ ना॰ पु॰ कान, पतवार, सूर्यसुत, कमानकारोद: वतर।

कर्णधार॰ ना॰ पु॰ मांझी, चढ़नदार।

कर्णफूल॰ ना॰ पु॰ कान का भूषण विशेष।

कर्णवेधन॰ ना॰ पु॰ कान का छेदना, कनछेदन।

कर्णवेष्टन॰ ना॰ पु॰ कुण्डल जो कानमें पहिनतेहै।

कर्णाट॰ } ना॰ पु॰ दक्षिण
कर्णाटक॰ } भरत खण्ड का एक भाग विख्यात।

कर्णालम्बित॰ गु॰ कानतक खींचना।

कर्णिकार॰ ना॰ पु॰ किरवाली औषधि।

करणी॰ ना॰ स्त्री॰ क्रिया, कर्म, करण, जात।

कर्त्तव्य॰ ना॰ पु॰ करतूति, करने के योग्य।

कर्तव्यता॰ गु॰ स्त्री॰ चाल, करतूति।

कर्त्ता॰ } ना॰ पु॰ क्रिया में प्रधान होता है,
कर्त्तार॰ } करनेवाला, सिरजनहार, प्रभु, भर्त्ता विशेष ब्रह्मा।

कर्तृकर्मभाव॰ ना॰ पु॰ कर्त्ता, और कर्म का सम्बन्ध।

कर्तृत्व॰ ना॰ पु॰ कर्त्ता का धर्म्म।

कर्तृप्रधान॰ ना॰ पु॰ गु॰ जिसपद में कर्त्ता प्रधान है।

कर्तृवाचक॰ गु॰ जिसपद में कर्त्ता पाया जावे।

कर्दम॰ ना॰ पु॰ कीचड़, कादो, लेप, और मुनि विशेष

Digitized by Google

कर्दमक० ना० पु० कीचड़।

कर्धनी० ना० पु० कटिबन्धन, सूत जो कमर में बांधते हैं।

कर्पर्दी० ना० स्त्री० कौड़ी, यथा कर्पर्दी चवराटिकः इति निघण्टः।

कर्पास० ना० स्त्री० कपास, कपासका वृक्ष।

कर्पूर०ना०पु०कपूर,काफ़ूर।

कर्म० ना० पु० द्वितीय कारक, काम, भाग्य प्रारब्ध, शास्त्रविहितजपयज्ञादि।

कर्मकर०' गु० सेवक, नौकर।

कर्मकाण्ड० ना० पु० जप यज्ञादि।

कर्मकारक०ना० पु० कारक विशेष।

कर्मच्युत० गु० काम से भ्रष्ट, क्रिया भ्रष्ट।

कर्मनाशा० ना० स्त्री० नदी विशेष जो काशी और गया के मध्य में है।

कर्मप्रधान० गु० कर्म मुख्य विहित कर्त्ता।

कर्मभोग० ना० पु० प्रारब्ध का भोग, और तपस्या, पक्षी विशेष।

कर्मरङ्ग० ना० पु० कमरख।

कर्मवाच्य० गु० जिस क्रिया पद का कर्म उद्देश्य हो।

कर्मवाचक० गु० कर्मसूचक।

कर्मविपाक० ना० पु० कर्मों का फल, ग्रन्थ विशेष।

कर्मसाक्षी० ना० पु० सूरज।

कर्माधर्मी० गु० जपतपिया, भाग्यवान् दैवागत।

कर्मार० ना० पु० बांस।

कर्मिणी० ना० स्त्री० कागज, जंघा।

कर्मी०गु०कर्मोंकाकरनेवाला।

कर्मेन्द्रिय० ना० स्त्री० इन्द्रियां जिनसे कर्म करते हैं, वहपांच हैं अर्थात् गुदा, लिङ्ग, हाथ, पांव, मुख

Digitized by Google

कर्रीना० अ० क्रि० कड़ापड़ना।

कर्बुक०
क्रव्याद०
} ना० पु० निशाचर, क्रव्याद।

कर्बुर० ना० पु० सुवर्ण, राक्षस।

कर्ष० ना० पु० प्रमाण, को, बैर।

कर्षण० ना० पु० खेंच।

कर्षफल० ना० पु० बहेड़ा।

कर्षा० ना० स्त्री० ईर्षा, उत्साह।

कर्षित० गु० खींचागया।

कल० ना० स्त्री० चैन, सुख, यन्त्र, गु० अव्यक्त, सुन्दर, मीठा, मधुर शब्द, धान का पहिलापा पिछला दिन।

कलकण्ठ० ना० स्त्री० कोयल पक्षी।

कलकत्ता० ना० पु० नगर विशेष।

कलकल० ना० पु० कोलाहल, शोर, झगड़ा।

कलकाञ्ची० ना० स्त्री० नगर विशेष।

कलङ्क० ना० पु० अपवाद, चिह्न, दोष।

कलङ्की० गु० दोषी, पापी।

कलङ्किनी० ना० स्त्री० दूषिता, अपवादिनी, जिसको कलङ्कलगा।

कलधौत० ना० पु० सोना, चांदी।

कलप० ना० पु० रङ्ग, जिससे बाल रंगे जाते हैं, वसमा, माड़ी।

कलपना० अ० क्रि० कुढ़ना, दुखितहोना, कलपकरना, माड़ी लगाना।

कलपाना० स० क्रि० कुढ़ाना, दुखीकरना, कलपकराना० माड़ी लगवाना।

कलभ० ना० पु० हाथी, कलुष, धत्ताव व धाघु।

Digitized by Google

क़लम॰ ना॰ स्त्री लेखनी, यह अरबी शब्द है ।

कलमलाना॰ अ॰ क्रि॰ कुलबुलाना ।

कलरव॰ ना॰ पु॰ कबूतर, कोकिला ।

कलबल॰ ना॰ पु॰ कलकेवल, तोतरी बात ।

कलविङ्क॰ ना॰ पु॰ गरगैया पक्षी ।

कलश॰ ना॰ पु॰ घट, जो विवाह आदि में स्थापित करते हैं, घड़ा, गगरा ।

कलस॰ ना॰ पु॰ शूल, कलश ।

कलसी॰ ना॰ पु॰ छोटा कलश, गगरी ।

कलह॰ ना॰ पु॰ विरोध, लड़ाई, झगड़ा ।

कलहंस॰ ना॰ पु॰ राजहंस, मेलाहंस ।

कलहा॰ } गु॰ लड़ाका,
कलहारा॰ } झगड़ालू ।

कलहो॰ ना॰ स्त्री॰ कर्कशा, लड़ाकी ।

कलत्र॰ ना॰ स्त्री॰ पत्नी, स्त्री बिवाहिता ।

कला॰ ना॰ स्त्री॰ सोलहवां अंश, बाट ।

कलाई॰ ना॰ स्त्री॰ पहुंचा, रंगा सूत ।

कलावंत॰ ना॰ पु॰ गवैया, गायक ।

कलाद॰ ना॰ पु॰ सुनार जाति, यथा नाडीधम: स्वर्णकार: कलादो रुक्मकारक: इत्यमर: ।

कलाधर॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा नृत्यक, बहुरूपी ।

कलाना॰ स॰ क्रि॰ भुनाना ।

कलानिधि॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा ।

कलाप॰ ना॰ पु॰ समूह, व्याकरण विशेष गुण॰ तर्कश आभरण, चन्द्रमा, दुःख, हरि हर भजन, भौंरों का समूह, ग्राम विशेष ।

Digitized by Google

कलापी० ना० पु० मयूर, मोर।

कलापशाक० ना० पु० मटर का साग।

कलार०) ना० पु० कलवार,
कलाल०) सूंडी।

कलि० ना० पु० चौथा युग जो ४६४००० वर्ष का होता है, वेदोक्त समय का नाशक, समय, कलियुग, युद्ध, पाप, क्लेश, सूर्मा, तर्कश।

कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि।

कलिका० ना० स्त्री० मारफोंका, कली, बिना फूला फूल।

कलिकारी० ना० स्त्री० कलिहारी।

कलिङ्ग० ना० पु० इन्द्रयव, तरबूज, कटक रक्ष का पोधा, देश विशेष, राजा विशेष।

कलित० गु० बढ़ताभया, सुन्दर।

कलिद्रुम० ना० पु० बहेरा।

कलिन्द० ना० पु० तरबूज, पर्व्वत विशेष।

कलिमल० ना० पु० पाप, दोष।

कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्म्मनाशा नदी।

कलियाना० अ० क्रि० कली निकलना, फूलना।

कलिल० ना० पु० क्लेश, सङ्कट, दुःख।

कली० ना० स्त्री० कलिका, बरी।

कलुष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।

कलेऊ० ना० पु० बासी रसोई, प्रातःकाल में थोड़ा भोजन।

कलेजा० ना० पु० अङ्ग विशेष, सूर्म्मापन, साहस।

कलेवर० ना० पु० देह, तन।

कलेवा० ना० पु० कलेऊ, वह जो बिवाह में दूलह को खिलाते हैं।

Digitized by Google

कलेस० ना० पु० क्लेश ।

कलोर० ना० पु० पोसर, नई गाय ।

कलोल० ना० स्त्री० खेल, मगनता ।

कल्की० ना० पु० दशवां अवतार, म्लेच्छान्तक जो कलिके अन्त में सम्भल में होगा ।

कल्प० ना० पु० ब्रह्मा का दिन रात, प्रलय, कल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदलना, शास्त्र विशेष ।

कल्पतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष ।

कल्पना० अ० क्रि० खेदित होना, मान लेना, फ़र्ज़ करना, तर्क, लालसा, कष्ट ।

कल्पान्त० ना० पु० कल्प का अन्त, क़यामत ।

कल्पित० गु० रचित, विचारित, माना हुआ ।

कलमलाना० अ० क्रि० कुलबुलाना ।

कल्याण० ना० पु० कुशल, मङ्गल, बढ़ती ।

कल्मष० गु० असर ।

कल्लाना० अ० क्रि० जलनि पड़ना, पिराना ।

कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरङ्ग युत ।

कवच० ना० पु० झिलम, बखतर, रक्षक, ग्रन्थ विशेष ।

कव्य० ना० पु० छन्द विशेष ।

कवर्ग० ना० पु० ककारादि पञ्च अक्षर ।

कवरी० ना० स्त्री० केश पाशी, बेणी, बार्बरी ।

कवल० ना० पु० ग्रास, लुक़मा ।

कवि० ना० पु० भाट, श्लोक वा छन्द कर्त्ता, शायर ।

कवित० ना० पु० छन्द, पद्य ।

कविता०, कविताई० } ना० स्त्री० पद्य, श्लोक, छन्द ।

Digitized by Google

कविमाता॰ ना॰ स्त्री॰ शुक्राचार्य्य की माता।

कविपुङ्गव॰ ना॰ पु॰ बड़ाकवि, श्रेष्ठकवि।

कविराज॰ } ना॰ पु॰ बड़ाकवि,
कवीश्वर॰ } उत्तम कवि।

कश्वर॰ ना॰ पु॰ कचनार।

कशेरु॰ } ना॰ पु॰ कसेरू।
कशेरुक॰ }

कश्मीर॰ ना॰ पु॰ काश्मीर।

कश्यप॰ ना॰ पु॰ मुनि, मरीचि, प्रजापति का पुत्र।

कश्यपी॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती, ज़मीन जो कश्यप से सम्बन्ध रक्खे।

कषाय॰ गु॰ कसेला रस।

कष्ट॰ ना॰ पु॰ दुःख, पीड़ा, दर्द।

काष्टनाश॰ ना॰ पु॰ नीलकण्ठ पक्षी, जिसको कटवाश कहते हैं।

कष्टित॰ } गु॰ दुःखित, पीड़ित,
कष्टी॰ } रञ्जीदः।

कस॰ अव्य॰ कैसा, किसप्रकार।

कसक॰ ना॰ पु॰ पीड़ा, दुःख।

कसकना॰ अ॰ क्रि॰ दुःखभोगना, दुःख होना।

कसकसा॰ गु॰ बालू मिला हुआ पदार्थ।

कसन॰ ना॰ पु॰ ढक्की, यन्त्रणा।

कसना॰ स॰ क्रि॰ खेंचना, जांचना, घी से भूनना, तलना, आज़मूदकरना।

कसा॰ गु॰ खींचाहुआ।

कसाई॰ ना॰ स्त्री॰ खिंचावट।

कसाना॰ स॰ क्रि॰ खिंचाना, जंचाना, घीमें भुनवाना, तलना।

कसान॰ ना॰ पु॰ वह पदार्थ जिससे कसा जावे।

कसुभिक॰ ना॰ पु॰ नीब वृक्ष।

कसेरू॰ ना॰ पु॰ जलका कन्द विशेष ।

कसेरुक॰ ना॰ पु॰ कसेरू ।

कसेरुका॰ ना॰ स्त्री॰ पीठ की हड्डी ।

कसेरा॰ ना॰ पु॰ कांस्य कारक, कांसगर, जाति विशेष, वर्त्तनबनाने वाला ।

कसैला॰ } गु॰ कषाय, कसैला ।
कसेला॰ }

कसैया॰ गु॰ कसने वाला ।

कसौटी॰ ना॰ स्त्री॰ स्वर्णादि परीक्षक पाषाण ।

कस्तूरी॰ ना॰ स्त्री॰ मृगमद, मिश्क ।

कश्मल॰ ना॰ पु॰ पाप, मूर्च्छा ।

कश्मर्यी॰ ना॰ स्त्री॰ कम्भार ।

कस्मिन्॰ सर्व्व॰ कौन ।

कस्य॰ सर्व्व॰ किसको ।

कस्यप॰ ना॰ पु॰ कश्यप मुनि विशेष ।

कहतूति॰ ना॰ स्त्री॰ कहावत, मसल ।

कहना॰ स॰ क्रि॰ बोलना, जताना, आज्ञा करना, वर्णनकरना ।

कक्ष॰ ना॰ स्त्री॰ कांख, बग़ल ।

कक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ ग्रहों की चालकामण्डलाकार पन्थ ।

कहलाना॰ स॰ क्रि॰ बुलवाना, जतलाना, भुनाना ।

कहा॰ सर्व्व॰ क्या॰ ना॰ पु॰ आज्ञा ।

कहानी॰ ना॰ स्त्री॰ कथा, क्रिस्सा, दृष्टान्त ।

कहार॰ ना॰ पु॰ जाति विशेष, धीमर ।

कहावत॰ ना॰ स्त्री॰ बात, दृष्टान्त, मसल ।

का॰ सर्व्व॰ किसी॰ क्या॰ सम्बन्धार्थी ।

कांकर॰ ना॰ पु॰ कङ्कर।

कांख॰ ना॰ स्त्री॰ कक्ष, बग़ल, कराङ्ग।

कांखना॰ अ॰ क्रि॰ कलाहना, घुरनाना, स॰ क्रि॰ छूटना, दबाना।

कांगनी॰ ना॰ स्त्री॰ पौधा विशेष, बीज उसका।

कांच॰ गु॰ कच्चा, ना॰ पु॰ गुदा में रोग विशेष ना॰ स्त्री॰ शीशा।

कांजी॰ ना॰ पु॰ जल विशेष, भातको सड़ायके बनता है।

कांटा॰ ना॰ पु॰ कण्टक, स्वर्णादिकतौलने का यन्त्र, तुला, जलमें गिरी हुई वस्तु निकालने कायन्त्र।

कांठा॰ गु॰ किनारा, अन्त, छोर, समीप।

कांड़॰ ना॰ पु॰ खण्ड, तीर विशेष।

कांड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ी, धरन।

कांदू॰ ना॰ पु॰ चीनी पकाने का कड़ाह, भूजा, जाति विशेष, भुञ्जी।

कांदो॰ ना॰ स्त्री॰ कीच, कीचड़, कादो।

कांधना॰ अ॰ क्रि॰ मानना, स्वीकार करना।

कांधा॰ ना॰ पु॰ कन्धा।

कांपना॰ अ॰ क्रि॰ दलदलाना, थरथराना।

कांस॰ ना॰ पु॰ तृणविशेष।

कांसा॰ } ना॰ पु॰ धातु विशेष।
कांस्य॰ }

कांचा॰ ना॰ स्त्री॰ इच्छा, मनोरथ।

काई॰ ना॰ स्त्री॰ हरी वस्तु, जो तालादि में लगती है।

काऊ॰ सर्व॰ किसको, किसीको।

काक॰ ना॰ पु॰ कौआ, पक्षी विशेष।

काकजङ्घा॰ ना॰ स्त्री॰ पौधा विशेष।

Digitized by Google

काकटक्षपुष्पी० ना० स्त्री० महासुपडी।

काकतिक्ता० } ना० स्त्री०
काकपदी० } कागजङ्घा।

काकपक्ष० ना० पु० जुल्फ़, बावरी, काकुल, कौआकेपङ्ख।

काकभुसुण्ड० ना० पु० प्रसिद्ध पक्षी श्रीरामायणवक्ता।

काकस्य० सर्व० किसका।

काका० ना० पु० पिता का भाई, चचा।

काकिणी० ना० स्त्री० २० कौड़ी को कहते हैं, लीलावत्यां यथा,, वराटिकानांदश-कद्वयं यत्साका किणीता श्चपणश्चतस्रः तेषोडश द्रम्मइहाभिगम्योद्रम्मैस्त-थापोडशभिश्चनिष्कः।

काकी० ना० स्त्री० काका की पत्नी, चाची।

काकु० ना० पु० व्यङ्ग्यवचन, कटीबात।

काकोदर० ना० पु० सर्प, कौआ का पेट।

काकोल० ना० पु० विष, हलाहल।

काख० ना० स्त्री० कांख, कक्ष।

काखअलाई० ना० स्त्री० कखौरी।

काग० ना० पु० काक, कौआ।

कागासुर० ना० पु० कागरूपी दैत्य जिसकी जीभ श्री-कृष्णचन्द्र जीने तोड़ दीथी।

काच० ना० पु० कांच, गु० कच्चा।

काचक० ना० पु० बांस।

काचा० गु० कच्चा, अज्ञानी।

काछ० ना० स्त्री० धोती का दूसरा सिरा, जो पीछे को खोंचते हैं, कमर, जङ्घाकाऊपरिभाग।

Digitized by Google

काछना॰ स॰ क्रि॰ काछ मारना, चढ़ाना, पोछना, बटोरना।

काछनी॰ ना॰ स्त्री॰ काछ विशेष।

काछी॰ ना॰ पु॰ मुराऊ, जाति विशेष।

काज॰ ना॰ पु॰ कार्य्य, काम।

काजल॰ ना॰ पु॰ कज्जल, अञ्जन, सुरमा।

काजी॰ गु॰ कार्य्य कर्त्ता, कामी।

काञ्चन॰ ना॰ पु॰ सुवर्ण, सोना धातु।

काञ्चनपुष्पिका॰ ना॰ स्त्री॰ मूसली।

काञ्चनार॰ ना॰ पु॰ कचनार वृक्ष।

काञ्चनी॰ ना॰ स्त्री॰ हल्दी, सोनेकी पुतलीपर्वती वेश्या।

काञ्ची॰ ना॰ स्त्री॰ पुरीविशेष, जिसके दो भाग हैं एक विष्णु काञ्ची दूसरी शिव काञ्ची।

काट॰ ना॰ स्त्री॰ चीरा मैल, तीक्ष्णता, तेज़ी।

काटना॰ स॰ क्रि॰ कतरना, टुकड़े करना, काटखाना, लवना अर्थात् लौनी, आराकरना, रहना, बिताना, रोकना, लज्जितहोना, छीलना, लज्जितकरना।

काटमाण्डु॰ ना॰ पु॰ नैपाल देशकी राजधानी।

काठ॰ ना॰ पु॰ काष्ठ, सूखी-लकड़ी।

काठिन्य॰ ना॰ पु॰ कठिनता, कठोरपन।

काठियावाड़॰ ना॰ पु॰ देश विशेष।

काठी॰ ना॰ स्त्री॰ घोड़े के ऊपर काकाष्ठ काआसन, मियान, जिसमें तलवार रखते हैं, तन, देह, डौल, लकड़ी।

Digitized by Google

काढ़ना॰ स॰ क्रि॰ निकालना, चमड़ा उधेड़ना, कपड़े में फूल बूटा बनाना, चाल सिखाना।

काढ़ा॰ ना॰ पु॰ क्काथ।

काण॰ } गु॰ एकाक्ष, एक
काणा॰ } नयन।

काणी॰ ना॰ स्त्री॰ एक आंखि वाली।

काराड॰ ना॰ पु॰ खराड, प्रकरण।

काराडकड़ा॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी।

कातना॰ स॰ क्रि॰ सूत रुई से बनाना रछटा के द्वारा।

कातर॰ गु॰ डरपोकना, व्याकुल, ना॰ पु॰ जङ्गल, दुर्भिक्ष, कोल्हू की पाटि।

कातिक॰ ना॰ पु॰ आठवां महीना।

कातिकी॰ ना॰ स्त्री॰ कातिक की वस्तु आदि कातिक की पूर्णमासी।

काती॰ ना॰ स्त्री॰ छोटीतलवार, कत्ती।

कात्यायन॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष, स्मृति विशेष।

कात्यायनी॰ ना॰ स्त्री॰ देवी विशेष, स्मृति विशेष, कात्यायन वंशी।

कादम्बिनी॰ ना॰ स्त्री॰ मेघमाला।

कादर॰ गु॰ डरपोकना, व्याकुल,

कादरता॰ } ना॰ स्त्री॰ भय,
कादराई॰ } डर, डरपोकनापन।

काधना॰ स॰ क्रि॰ कांधना, कांधे धरना।

कान॰ ना॰ पु॰ कर्ण, श्रवण, लाज, अदब।

कानन॰ ना॰ पु॰ बन, जङ्गल, ब्रह्मा का मुख।

कानि॰ ना॰ स्त्री॰ मर्य्याद, सङ्कोच, अदब, लाज।

Digitized by Google

काना॰ ना॰ पु॰ अक्षर की खड़ी लकीर, काणा, कड़ाही आदि का गहाना।

कानी॰ ना॰ स्त्री॰ जो एक आंख की होवे।

कानीन॰ गु॰ नीच, क्षुद्र, स्त्री॰ लड़की, रामचन्द्रिकायां अद्यापि आनीन देवन्ति कानीन।

कान्त॰ ना॰ पु॰ पति, स्वामी सुन्दर।

कान्ता॰ ना॰ स्त्री॰ पत्नी, प्यारी।

कान्ताङ्घ्रा॰ ना॰ स्त्री॰ प्रियङ्गु ओषधि।

कान्ति॰ ना॰ स्त्री॰ शोभा, चमक, और नाम चन्द्रमा की एक कलाका।

कान्तिपाषाण॰ ना॰ पु॰ चुम्बक।

कान्दा॰ ना॰ पु॰ जलकाकन्द, कलकंदरा।

कान्यकुब्ज॰ ना॰ पु॰ देश विशेष, ब्राह्मण विशेष।

कान्ह॰ } ना॰ पु॰ श्रीकृष्ण
कान्हर॰ } जीका एक नाम।

कापट्य॰ गु॰ शठता, कपट।

कापथ॰ ना॰ पु॰ अतिमार्ग, कठिन मार्ग।

कापुरुष॰ गु॰ कुत्सित मनुष्य, बुरा आदमी, कुजन, कुकर्मी नर।

काम॰ ना॰ पु॰ भोग, कार्य्य, अभिलाष, कामदेव, लाज, विषय, बधावा, सुन्दर।

कामक॰ ना॰ पु॰ मेघ।

कामकेलि॰ ना॰ स्त्री॰ दुलार, प्यार, सङ्गम, प्रसङ्ग।

कामचञ्चुका॰ ना॰ स्त्री॰ घुंघची।

कामतरु॰ ना॰ पु॰ कल्पवृक्ष।

कामद॰ गु॰ कामनादाता।

कामदगो॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्र की गाय।

Digitized by Google

कामदूती० ना० स्त्री० बसन्त ऋतु, कुम्भी ।

कामदेव० ना० पु० मदन, मन्मथ ।

कामधेनु० ना० स्त्री० इन्द्र की गौ, देवगौ ।

कामना० ना० स्त्री० इच्छा, कामाभिलाष, मदन ।

कामपाल० ना० पु० बलदेवजी ।

कामवन० ना० पु० जिसवनमें श्रीसदा शिवने कामदेव को जलाया था ।

कामरी० ना० स्त्री० कम्मल ।

कामरूप० ना० पु० इच्छाचारी, सुन्दर, देश विशेष ।

कामरूपी ० गु० बहुरूपिया, सुन्दर, कामरूप वासी ।

कामसखा० ना० पु० इन्द्र, बसन्तऋतु ।

कामाङ्ग० ना० पु० आम्रवृक्ष ।

कामातुर० } गु० मदनमत्त,
कामार्त्त० } कामी, चुलहारा ।

कामिनी० ना० स्त्री० उत्तम सुन्दरी, ना० पुष्प वृक्ष विशेष, कामातुरस्त्री ।

कामी० गु० कामातुर, बहुधन्धी, मतलबी, माधवी वृक्ष ।

कामुक० ना० पु० स्त्रीकेसुखमें आशक्त, कामातुर ।

कामोद० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।

काम्बोज० ना० पु० देश जो बङ्गाले के दक्षिण पूर्ब्ब है ।

काम्य० गु० सुन्दर, अच्छा ।

काम्यकर्म० ना० पु० स्वर्गादि फलों के लिये जो कर्म्म करना ।

काय० ना० स्त्री० देह, तन ।

कायक० गु० देही ।

कायफल० ना० पु० ओषधि विशेष ।

Digitized by Google

कायर० गु० भयमान, डरपोक, छेठा।

कायस्थ० ना० पु० जाति विशेष गु० जो निज काया में स्थित हो अर्थात् सन्तुष्ट।

कायस्था० ना० स्त्री० हर्र, काकोली।

काया० ना० स्त्री० देह, तन।

कायाकल्प० ना० पु० देह का बदलना।

कारक० ना० पु० क्रिया का साक्षात् निमित्त।

कारज० ना० पु० कार्य्य, काम।

कारण० ना० पु० निमित्त, लिये, सबब, प्रकृति।

कारणी० गु० कारण, कर्त्ता।

कारवल्ली० ना० पु० करेला तरकारी।

कारवी० ना० स्त्री० अजमोद, कलौंजी।

कारवेल्ल० ना० पु० करेला तरकारी।

कारागार०, कारागृह० } ना० पु० बन्दी घर, जेहलखाना।

कारु०, कारुकार० } ना० पु० शिल्पकार, थवई।

कारुणिक० गु० दयालु, कृपालु।

कार्त्तस्वर० ना० पु० सुवर्ण, काञ्चन।

कार्त्तिक० ना० पु० कातिक।

कार्त्तिकेय० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

कार्पण्य० ना० पु० दरिद्रता, दीनता।

कार्पास० ना० स्त्री० कपास।

कार्मुक० ना० पु० धनुष, महानीब वृक्ष।

कार्य्य० ना० पु० प्रयोजन, काम।

कार्षापण० ना० पु० कौड़ी के सोलह पण का माप अथवा तोल।

Digitized by Google

कालः॰ना॰ पु॰ मृत्यु, दुर्भिक्ष, समय, कल, काला, धर्म राज, सर्प, सुन्दर, यम-राज ३।

कालक॰ ना॰ पु॰ कणाता, बीज गणित में प्रमाण का बोधक।

कालकूट॰ना॰पु॰ विष, हला-हल।

कालपीलुक॰ना॰पु॰तेंदुआ-वृक्ष।

कालपर्णी॰ ना॰स्त्री॰ काला निसोत।

कालमेषिका॰ ना॰ स्त्री॰ मजीठ,बाकुची।

कालमेषी॰ना॰ स्त्री॰ काला निसोत।

कालयवन॰ना॰पु॰ नाम एक म्लेच्छकाजिसकोश्रीकृष्ण चन्द्रने भस्म किया था।

कालराति॰) ना॰स्त्री॰ प्रलय
कालरात्रि॰) काल की राति, अंधेरी राति, देवी विशेष।

कालवाहन॰ना॰ पु॰ भैंसा।

कालवृत्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ कुम्भी जो पानीमें होती है।

कालशाक॰ना॰ पु॰ सरफों-का।

कालसार॰ना॰ पु॰ तेंदुआ वृक्ष।

कालसूत्र॰ना॰पु॰ नरकभेद।

कालस्कन्ध॰ना॰ पु॰ तमाल वृक्ष।

कालक्षेप॰ना॰पु॰समय काट-ना,दुःख भोग करना, गुज़रान करना।

कालज्ञ॰गु॰ ज्योतिषी,पण्डित, योगीश्वर, ज्ञाता, मुर्गा पक्षी, शृगाल।

काला॰गु॰कृष्णवर्ण,श्यामरङ्ग।

कालिका॰ना॰स्त्री॰ धनियां, मसाला, काला ज़ीरा, देवी विशेष।

Digitized by Google

कालिख्यात० ना० स्त्री० किंद-वाली।

कालिन्दी० (ना० स्त्री० यमुना
कालिन्द्री० (नदी विशेष।

कालियङ्क० ना० पु० मलय चन्दन।

कालिया० ना० पु० काली नाग गु० काला।

काली० ना० स्त्री० मसी, देवी विशेष, मिसर देश की नदी. ना० पु० कालीनाग जो यमुना मे रहा करता था।

कालीदह० ना० पु० यमुना जी में विशेष स्थान।

काल्पनिक० गु० आरोपित, कल्पना किया गया, ना० स्त्री० नदी विशेष जो दक्षिण में है।

कावेरी० ना० स्त्री० नदी विशेष।

काव्य० ना० पु० पद, श्लोक, छन्द, पुस्तक, जिसमें कविताई हो, शुक्र।

काश० ना० पु० कांसी, खोखी।

काशघ्नी० ना० स्त्री० भारङ्गी औषधि।

काश्मर्द० ना० पु० कसौंजी का साग।

काश्मीर० ना० पु० देश विशेष जो पञ्जाब के उत्तर है, पुहकर मूल।

काश्मीरी० ना० स्त्री० केसरि, कम्भारी, काश्मीर देशवासी।

काश्यप० ना० पु० कश्यप की सन्तान।

काश्यपी० गु० सूरज का रथवान।

काशी० ना० पु० नगर विशेष।

काष्ठ० ना० पु० काठ, लकड़ी।

काष्ठकर्ता० ना० पु० बढ़ई।

काष्ठपाटला० ना० स्त्री० कुम्भी।

काष्ठान्तर० ना० पु० कांठके भीतर।

Digitized by Google

काश्ठी० ना० स्त्री० फटकरी ।
कासार० ना० पु० तालाब, भैंसा ।
कासु० सर्व्व० किसको ।
काहन० ना० पु० कार्षापन ।
काहे० सर्व्व० क्यों ।
कान्ची० ना० स्त्री० फटकरी ।
कि० अव्य० प्रथम वाक्य का द्वितीय वाक्य से सम्बन्ध कारक ।
किंशुक० ना० पु० पलास, ढाक, टेसू ।
किङ्कर० ना० पु० टहलुआ ।
किङ्करी० ना० स्त्री० दासी, टहलुइन ।
किङ्किणी० ना० स्त्री० कटिबन्ध घण्टी समेत, कांकड़ हृत ।
किङ्कान० ना० पु० घोड़ा ।
किचकिचाना० अ० क्रि० दांत पीसना ।
किचड़ाना० अ० क्रि० आंखों में कीचड़ आना ।
किचपिचाना० अ० क्रि० गड़बड़ाना ।
किञ्चित्० अव्य० थोड़ा, अल्प, कुछ ।
किञ्चिन्मात्र० गु० कुछ, अतिअल्प ।
किञ्जुक० ना० पु० संज्ञा विशेष ।
किञ्चुकी० ना० स्त्री० चोली, अंगिया ।
किञ्जल्क० ना० पु० सिंघाकन्द ।
किटि० ना० पु० सुअर, शूकर, यथा वराहः शूकरो घृष्टिः कालपोचो किरिः किटि, इत्यमरः ।
किडकिडाना० अ० क्रि० क्रोध से दांतपीसना ।
किडहा० ना० पु० ऊंगा, गु० घुना ।
कित० अव्य० कहां, किधर ।

Digitized by Google

कितना०
कितनी०
किती०
} गु० प्रमाण का प्रश्न कारक।

कितेक० गु० बहुत।

कितै० अव्य० किधर।

कित्ति० ना० स्त्री० कीर्त्ति, यश, रामचन्द्रिका यां यथा, अखण्डकीर्त्ति लेय भूमिदेयमानलेखिये।

किधर० अव्य० कहां।

किनारा० ना० पु० तट, कूल।

किनारी० ना० स्त्री० गोटा, मग़ज़ी।

किन्० ना० पु० घाव, अव्य० क्यों नहीं।

किन्तव० ना० पु० धतूरा।

किन्तु० अव्य० परन्तु, तिसपर भी।

किन्नर० ना० पु० यक्षदेवता।

किन्नरी० ना० स्त्री० सारङ्गी, यक्षिणी।

किपत्थतरु० ना० पु० कैथा का वृक्ष।

किम० सर्व० क्यों, किसप्रकार।

किमपि० सर्व० क्योंभी, किस-प्रकार।

किमर्थ० सर्व० किसलिये।

किमाञ्च० ना० पु० खजुहा, कौंच।

किमि० सर्व० क्यों, किसप्रकार।

किम्पुरुष० ना० पु० नवखण्ड धरातलमें सेएक, नामर्द, कुछेक पौरुषी।

किंवा० अव्य० अथवा।

किरकिटी० ना० स्त्री० छोटी लकड़ी।

किरकिरा० गु० रेतीला, बालुआ।

किरकिराना० अ० क्रि० किच किचाना, बखड़ाना।

किरण० ना० स्त्री० रश्मि, शुआ।

किरात० ना० पु० भील, जाति विशेष, चिरायता।

Digitized by Google

किरातक० ना० पु० चिरायता ।

किराना० स० क्रि० साफ़ करना, ना० पु० मसाला, औषधि वग़ैरह ।

किरि० ना० पु० किटि, शूकर ।

किरिच० ना० स्त्री० तलवार, टुकड़ा ।

किरिया० ना० स्त्री० शपथ, सौगन्द, सोंह, क्रिया ।

किरीट० ना० पु० मुकुट, ताज ।

किरीटी० ना० पु० अर्जुन, ना० स्त्री० शंखा होली औषधि, गु० मुकुटधारी ।

किल० अव्य० निश्चित ।

किलनी० ना० स्त्री० कीट विशेष ।

किलाकिल० ना० पु० बानरों का शब्द ।

किलिम० ना० स्त्री० देवदारु ।

किल्कारी० ना० स्त्री० प्रसन्नता से हंसना ।

किल्कारीमारना० अ० क्रि० प्रसन्न हो के जय जयकार करना, खूब हंसना ।

किलकिलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ा होना ।

किल्ली० ना० स्त्री० कुञ्जी, कीली ।

किल्बिष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह ।

किशलय० ना० पु० नवीन पत्ता ।

किशोर० ना० पु० तरुणावस्था अर्थात् १६ वर्ष तक लड़का ।

किसनई० ना० स्त्री० खेती, का काम ।

किसान० ना० पु० जोतार, खेतकरने हारा, जाति विशेष ।

कीकड़० ना० पु० बबूल ।

Digitized by Google

कीच० }
कीचड़० } ना० पु० कांदो, चहला।

कीट० ना० पु० कीड़ा।

कीटनारी० }
कीटसारी० } ना० स्त्री० हंस पादी पौधा।

कीड़ा० ना० पु० कीट, कृमि, किरम।

कीतनक० ना० पु० मुलहठी।

कीना० स० क्रि० करना।

कीर० ना० पु० तोता पक्षी यथा कीर शुकौ समौ इत्यमरः।

कीरत० }
कीरति० } ना० स्त्री० कीर्त्ति, बड़ाई, तारीफ।

कीर्तन० ना० पु० गाना, कीर्त्तन, कहना।

कीर्त्ति० ना० स्त्री० यश, स्तुति, नेकनामी।

कील० ना० स्त्री० लोहे का कांटा।

कीलना० स० क्रि० मन्त्र फूक कर रोकना।

कीला० ना० पु० लोहे का कांटा।

कीलाल० ना० पु० जल, पानी।

कीस० ना० पु० वानर, बन्दर।

कु० अव्य० यह अक्षर जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी बुरा, कभी निन्दित, कभी न्यून होता है, पृथ्वी, धरती।

कुंवर० }
कुंवारा० } ना० पु० कुमार।

कुंवारी० ना० स्त्री० कुमारी।

कुआरा० ना० पु० बिना व्याहा लड़का।

कुआरी० ना० स्त्री० कन्या बिना बिवाही।

Digitized by Google

कुकन्या० ना० स्त्री० पृथ्वी की कन्या विशेष श्रीसीताजू, गु० दुष्ट कन्या।

कुकर्म० ना० पु० बुराकाम।

कुकर्मी० गु० कुकर्मकरनेहारा।

कुक्कुट० ना० पु० मुरगा।

कुक्कुटाण्ड० ना० पु० सफ़ेद-भांटा, कुक्कुट का अण्डा।

कुक्कुटी० ना० स्त्री० मुरगियां, मुरगी।

कुकुरन्द० ना० पु० जङ्गली करौंदा।

कुक्रिया० ना० स्त्री० निन्दिताचरण, तुच्छकर्म।

कुग्रह० ना० पु० लटाघर, बुराघर।

कुघाट० ना० पु० बेडौल, बद सूरत, कुत्सित घाट, जहां घाटन हो।

कुघात० ना० स्त्री० कुसमय मारना, बुरीघात।

कुङ्कुम० ना० पु० केसर, ज़ाफ़-रान।

कुङ्कुमा० ना० पु० गुलालभरने के लिये जो लाख का बनता है।

कुच० ना० पु० स्तन, चूंची, उरोज।

कुचन्दन० ना० पु० पतङ्ग जिसमें कपड़ा रंगते हैं।

कुचलना० स० क्रि० चूरकरना, मसलना।

कुचला० ना० पु० औषधि विशेष।

कुचिया० ना० स्त्री० लोलकी, कान का अधोभाग।

कुचैला० गु० मैला।

कुचैन० गु० दुःख, अप्रसन्नता।

कुछ० सर्व० थोड़ा, रञ्चक।

कुज० ना० पु० मङ्गल, वृक्षादि, भौमासुर।

कुजाति० गु० नीचजाति वा नीच।

Digitized by Google

कुञ्चित० गु० छल्लेदारवाल, गभुआर बाल।

कुञ्चिका। ० ना० स्त्री० कुञ्जी, ताली।

कुञ्ची० ना० स्त्री० कलौंजी।

कुञ्ज० ना० पु० वृक्षलतादि रचित रमणीय स्थान, तङ्गगली, पक्षीविशेष।

कुञ्जर० ना० पु० हाथी, मुख्य प्रधान, रामायणे यथा, कपिकुञ्जरहि बोलि लैआये।

कुञ्जिका० } ना० स्त्री० ताली,
कुञ्जी० } चाबी।

कुटकी० ना० स्त्री० ओषधि विशेष, कीट विशेष।

कुटज० ना० पु० इन्द्रयव।

कुटना। ० ना० पु० भड़ुआ, अ० क्रि० पिटना।

कुटना। ना। ० स० क्रि० फुसलाना

कुटनी० ना० स्त्री० दूती, नायिका।

कुटाना। ० स० क्रि० पिटवाना।

कुटिल० गु० टेढ़ा, क्रूर।

कुटिलता० } ना० स्त्री० टेढ़ा-
कुटिलाई० } पन, क्रूरता।

कुटी० } ना० स्त्री० मढ़ी,
कुटीर० } झोंपड़ी, एकान्त
कुटीरा। ० } स्थान, सूनिया।

कुटुम० ना० पु० कुटुम्ब।

कुटुमी० ना० पु० कुटुम्बी।

कुटुम्ब० ना० पु० कुणबा, घराना।

कुटुम्बी० ना० पु० गृहस्थ, घर वाला।

कुटेव० ना० स्त्री० कुभाव, कुचालि, बुरी खो।

कुट्टनी० ना० स्त्री० कुटनी।

कुठार० ना० पु० फरसा, कुल्हारा, तबर।

कुठारी० ना० स्त्री० कुल्हाड़ी, टांकी।

कुठाहर० ना० पु० कुसमय, बेमौक़ा।

Digitized by Google

कुड़कना० } अ० क्रि० क्रोध-
कुड़कुड़ाना० } युक्त होकर कहना, रिसाय के बोलना।

कुढ़ना० अ० क्रि० विलाप करना कलपना, डाहकरना, हसद करना।

कुढ़ाना० स० क्रि० सताना, छेड़ना।

कुण्टन० ना० पु० खोनाहन।

कुण्ठित० गु० लज्जित, गुठला, अतीव।

कुण्ड० ना० पु० आगिरखने के लियेकांचस कुण्ड, जलका विशेष स्थान, पतिविद्यमान होते जारजपुच, गड़हा, तालाब।

कुण्डल० ना० पु० कर्ण भूषण, घेरा, मण्डला, मोती।

कुण्डलिया० ना० स्त्री० गोसाईं, छन्द विशेष।

कुण्डलित० गु० गोलाकार। कुण्डलयुत।

कुण्डली० ना० पु० कचनार, गुरच।

कुण्डी० ना० स्त्री० कोढ़ी।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठवां मुहूर्त्त।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार, बुरी दलील।

कुतर्की० गु० कुतर्क करनेहारा।

कुतनी० स० क्रि० दांतों से काटना।

कुत्तल० ना० पु० धरातल, रूयज़मीन।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्ता की स्त्री, गु० कूतनेहारा।

कुतुक० ना० पु० कौतुक।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक, चोप, उतावली, खेल, हंसी।

कुत्ता० ना० पु० कूकुर।

Digitized by Google

कुत्सा० ना० स्त्री० निन्दा, अवज्ञा ।

कुत्सित० गु० निन्दित, नीच, बुरा, खराब, निषेधित ।

कुदकना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदरा० ना० पु० अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी चीरते हैं ।

कुदराना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदाना० स० क्रि० उछलाना, फंदाना ।

कुदारि० } ना० स्त्री० मिट्टी,
कुदला० } खोदने का अस्त्र विशेष ।

कुदृष्टि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बद नज़र ।

कुद्दाल० ना० पु० कचनार ।

कुधात० ना० पु० लोहा, रामायणे यथा, प रस परसि कुधात सोहाई ।

कुधि० } गु० निर्बुद्धि, बुरीमति,
कुधी० } बे तमीज़ ।

कुनटी० ना० पु० मनसिल ।

कुनबा० ना० पु० कुणबा, घराना ख़ानदान ।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचालि, कुरीति, अन्याय ।

कुन्त० ना० पु० पानी, पवन, कमल, माला, कराल, राजा, विशेष ।

कुन्तल० ना० पु० बाल, केश, मूत धार, बर्छी, हल, खेत जोतने का, राजा विशेष, वानर, विशेष, कपटी ।

कुन्तली० ना० पु० चिरपोटा ।

कुन्तिज० ना० पु० युधिष्ठिरादि, पाण्डव ।

कुन्ती० ना० स्त्री० पाण्डवों की माता ।

कुन्द० ना० पु० श्वेत वर्ण, पुष्प विशेष, उज्वल।
कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अच्छा सोना।
कुमति० गु० दुष्टमति, दुष्टस्वामी, बुरा मालिक।
कुपथ० ना० पु० कुमार्ग, कुराह, बुरी राह।
कुपथ्य० गु० जो पदार्थ पाचकन होवा रोगी को उपकारी न होवे, बद हज़म।
कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्त्रणा।
कुपात्र० गु० अयोग्य, नालायक़।
कुपुरुष० गु० पुरुषार्थ रहित, बुरा।
कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक़, लड़का।
कुप्य० ना० पु० चांदी, रूपा।
कुप्पा० ना० पु० चमका बड़ापात्र चमड़े का जिसमें घी आदि रखते हैं।
कुप्पी० ना० स्त्री० छोटाकुप्पा।
कुब्ज० ना० कुबड़ा।
कुब्जा० ना० पु० कुज।
कुबड़० ना० पु० टेढ़ा।
कुबड़ा० गु० कुब्जा।
कुब्जा० गु० कुबड़ा, वक्रपृष्ठ।
कुब्जा० ना० स्त्री० कुबड़ी, टेढ़ी, कूबरी प्रसिद्ध।
कुवत० ना० स्त्री० निकृष्ट वार्त्ता, बुरीबात।
कुमण्डल० ना० पु० धरामण्डल, राज्य।
कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, अहमक़ी, गु० उन्मत्त, मूर्ख।
कुमद० ना० पु० कुमुद।
कुमदिन० ना० पु० कफूल।
कुमार० ना० पु० बालक, राजपुत्र, स्वामि कार्त्तिक, कामरहित।

कुमारिका० } ना० स्त्री० कन्या
कुमारी० } जिसको रजो धर्म नहीं भया, साधारण सुता, घीकुआरि पौधा।

कुमार्ग० ना० पु० कुपथ, बुरी राह।

कुमुद० ना० पु० फफूल जो रात्रि को खिलता है और दिनको सम्पुटित होता है उसको श्वेत कमल भी कहते हैं और राम दलमें वानर विशेष था, चांदनी, मुद रहित।

कुमुदबन्धु० ना० पु० चन्द्रमा।

कुमुदिनी० ना० स्त्री० कमलिनी।

कुम्भ० ना० पु० घड़ा, कलश, कलसा।

कुम्भक० ना० पु० कुम्हार, योग क्रिया में पवन पेट वा ब्रह्माण्ड में रोकने को कहते हैं॥

कुम्भकर्ण० ना० पु० रावणका छोटा भाई।

कुम्भकार० ना० पु० कुम्हार, कुलाल।

कुम्भज० } ना० पु० अगस्ति
कुम्भजात० } मुनि।

कुम्भयोनिका० ना० स्त्री० गोमापौधा।

कुम्भवीर्य्य० ना० पु० रीठा।

कुम्भा० ना० पु० छोटाकुम्भ।

कुम्भिका० ना० स्त्री० कुम्भी।

कुम्भिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी।

कुम्भी० ना० स्त्री० पौधा जो तालावों में पानीपर जमता है, ना० पु० हाथी, कायफल, अगस्तिमुनि।

Digitized by Google

कुम्भीनस० ना० पु० सांप ।

कुम्भीपाक० ना० पु० नरक विशेष ।

कुम्भीर० ना० पु० मगरमच्छ ।

कुम्भीरुणा० ना० स्त्री० निसोत ।

कुम्हलाना० अ० क्रि० मुरझाना, सूखना ।

कुम्हार० ना० पु० जो मिट्टीके वर्त्तन बनाता है ।

कुम्हारी० ना० स्त्री० जन्तु विशेष जो अपना घर माटी से बनाता है ।

कुयोग० ना० पु० दुष्टयोग, दुख दायक ग्रह पड़जाना, बुरा संयोग, बुराउपाय ।

कुयोगी० गु० विषय भोगी, रामायणे यथा पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी, मोहविटप नहिं सकत उखारी ।

कुरङ्ग० ना० पु० हरिण, मृग ।

कुरण्टक०
कुरवक० } ना० पु० पियाबासा ।

कुरमा० ना० पु० कुनवा, घराना ।

कुरारि० ना० स्त्री० सारस पक्षी ।

कुरी० ना० स्त्री० समूह, घराना

कुरीति० ना० स्त्री० कुचालि ।

कुरीर० ना० स्त्री० कुटी, मढ़ी

कुरु० ना० पु० राजा विशेष जिसकी सन्तान में कौरव और पाण्डव थे, नव खण्ड पृथ्वी में से एक ।

कुरुकेतु० ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर, राजापरीक्षित ।

कुरुचि० ना० स्त्री० नीच बासना, बदहज़मी ।

कुरुपति०
कुरुराय० } ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर, परीक्षित ।

Digitized by Google

कुरुचक० ना० पु० फूलबिशेष।
कुरुवंश० ना० पु० राजाकुरु की सन्तान।
कुरुक्षेत्र० ना० पु० पुण्यक्षेत्र जहां भारत भयाथा।
कुरूप० गु० भोंड़ा, बदसूरत।
कुर्कुटी० ना० पु० सेमर वृक्ष।
कुर्बा० ना० पु० कुब्ज।
कुर्याल० ना० स्त्री० पक्षी जब आनन्द में आकर पंख भाड़ता है।
कुल० ना० पु० वंश, वर्ण, घराना।
कुलटा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, जो स्त्री परपति रमण करे अर्थात् पतिव्रता न हो।
कुलचा० ना० पु० वह सम्पदा जो कोई घर वालों से चुराय के इकट्ठा करे, पूंजी, धन।
कुलतारण० ना० पु० पुत्र जो कुल की लाज रक्खे, वा सुकृत करके पुरुषों को तारे।
कुलतिय० ना० स्त्री० पतिव्रता, सती, यथा बिहारीलाल सप्तशतिकायां, दोहा, कहत नदेवर की कुवत कुलतिय कुलहिडराय, पिञ्जर ढिग मञ्जार गति शुक लोसूखतिजाय।
कुलद्रोही० गु० जो मनुष्य कुकर्म करके वंश को लज्जितकरे वा जोनिजकुलको बैरी होवे।
कुलधर्म० ना० पु० वंशव्यवहार, कुल का धर्म।
कुलपूज० } ना० पु० कुलका
कुलपूज्य० } देवता वा मान्य वा पुरोहित।
कुलवधू० ना० स्त्री० कुलवन्ती, कुतिय।

Digitized by Google

कुलबुलाना० अ० क्रि० कलमलाना, चुलबुलाना, खुजलाना।

कुलवती० ना० स्त्री० कुलीन स्त्री० पतिव्रता।

कुलवन्त० } गु० जो अच्छे वंश
कुलवान० } में उत्पन्न भया।

कुलच्छण० ना० पु० बुरे चिन्ह, बुरास्वभाव।

कुलच्छना० स्त्री० } जिसके लच्छण
कुलच्छणी० गु० } बुरे होवा हैं।

कुला० ना० स्त्री० मनसिल।

कुलांच० ना० स्त्री० कूद, फांदनि, जस्त।

कुलाङ्गना० ना० स्त्री० कुलवान स्त्री अथवा कुलटा।

कुलाचार० ना० पु० वंश का धर्म्म, अपने घरानेकी रीति।

कुलाल० ना० पु० कुम्हार।

कुलाहल० ना० पु० कोलाहल।

कुलिश० ना० पु० वज्र, हीरा।

कुली० ना० स्त्री० बडीकटाई।

कुलीन० ना० पु० अच्छे घर वा वंश में जो उत्पन्न भया।

कुलीनता० } ना० स्त्री० भले
कुलीनाई० } वंश का आचार वा बड़प्पन वा उत्पत्ति, धर्म्म।

कुलीरशृङ्गी० ना० स्त्री० ककरासिङ्गी।

कुल्ला० ना० पु० } मुखमेंजल
कुल्ली० ना० स्त्री० } को फिराय के फेंकना।

कुल्हाड़ी० ना० स्त्री० कुठारी जिससे लकड़ी आदि काटते हैं।

कुल्हिया० ना० स्त्री० माटी का छोटा पात्र, भुरकी।

Digitized by Google

कुवलय० ना० पु० कमल।

कुवादी० गु० दुष्ट, कुवचन वक्ता।

कुविन्दु० ना० पु० नीचवीर्य, बदसुतफ़ा।

कुविहङ्ग० ना० पु० जुर्रा, श्येन, बाज़।

कुवेर० ना० पु० यक्ष राज, कुसमय।

कुश० ना० पु० तृण विशेष जो अति पवित्र गिना जाता है, सीता जी का पुत्र.दैत्य विशेष, पानी, पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक।

कुशमुद्रिका० ना० स्त्री० कुशकी मुंदरी, अर्थात् पैंती जो यज्ञादि में पहिनते हैं।

कुशल० ना० पु० भलाई, कल्याण, चतुर।

कुशलता० ना० स्त्री० भलाई।

कुशलत्व० पु० कल्याण।

कुशलक्षेम० स्त्री० } ख़ैरआ-
कुशलात० } फ़ियत।

कुशली० गु० सुखी, प्रसन्न, निपुण।

कुशासन० ना० पु० कुश का आसन।

कुशील० गु० शील रहित, बे मुरव्वत।

कुशेशय० ना० पु० कमल।

कुष्ट० ना० पु० कोढ़, लोहा।

कुष्टकन्तन० ना० पु० पंवार, बूटी।

कुषेय० ना० पु० खड्ग, तलवार।

कुष्टसूदन० ना० पु० किरवाली।

कुष्टी० गु० कोढ़ी।

कुसङ्ग० ना० पु० बुरे लोगों का साथ।

Digitized by Google

कुसमय॰ ना॰ पु॰ कठिन समय, बुरे दिन, आफ़त।

कुसरात॰ ना॰ स्त्री॰ कुशलात।

कुसीद॰ ना॰ पु॰ लाभ के लिये ऋण देना।

कुसुदा॰ ना॰ पु॰ काय फल।

कुसुम॰ ना॰ पु॰ कुशुम, फूल, कुसुम्भ।

कुसुमशर॰ ना॰ पु॰ कामदेव।

कुसुमाकर॰ ना॰ पु॰ वसन्त ऋतु।

कुसुमित॰ गु॰ फूले हुये, प्रफुल्लित।

कुसुम्भ॰ ना॰ पु॰ पुष्प विशेष, जिसका बहुत लाल रङ्ग कपड़े पर आता है।

कुहर॰ } ना॰ पु॰ कुहासा,
कुहरा॰ } कुहर।

कुहराम॰ ना॰ पु॰ विलाप।

कुहुक॰ ना॰ स्त्री॰ कोकिला का शब्द वा स्वर।

कुहुकना॰ अ॰ क्रि॰ कोकिला की रीति से बोलना।

कुहू॰ ना॰ स्त्री॰ पक्ष की अमावस।

कुक्षा॰ } ना॰ स्त्री॰ कोख।
कुक्षि॰ }

कूआं॰ ना॰ पु॰ कूप, चाह।

कुआंर॰ ना॰ पु॰ आश्विन, सातवां महीना।

कूक॰ ना॰ स्त्री॰ आवाज़, शब्द, शोर।

कूकना॰ अ॰ क्रि॰ आह मारना, विलाप करना, स॰ क्रि॰ घड़ी को कुञ्जी से फेरना।

कूकर॰ ना॰ पु॰ कुत्ता।

कूकू॰ ना॰ पु॰ कपोत का शब्द,

कूचना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, घुसेड़ना, खूंदना कुचिलना।

Digitized by Google

कूची० ना० स्त्री० त्रण विशेष की वस्तु जिससे भीत में चूना फेरते हैं वा बालों को वा और किसी वस्तु को।

कूजना० अ० क्रि० बोलना।

कूट० ना० पु० कपट, पर्व्वत, गोप्य, काग़ज़, जिसका अर्थ गुप्त बनता है, जो निज अर्थ से पूरण होवे यथा, निहाई, ना० स्त्री० भांडेती, गु० मिथ्या, विरुद्ध।

कूटना० स० क्रि० कुचलना, पीसना, पीटना, दबाना।

कूटरवाहिनी० ना० स्त्री० निझोत।

कूटार्थ० ना० पु० विरुद्धार्थ।

कूटि० गु० व्यङ्ग्य वचन।

कूटी० गु० दूती कुटनी, पीटी हुई।

कूडा० ना० पु० झाड़न, कर्कट।

कूढ़० गु० मूर्ख, उन्मत्त।

कूत० ना० पु० अटकल, अन्दाज़।

कूतना० स० क्रि० मोल ठहराना, अटकलना, अन्दाज़ना, ठीक करना।

कूदना० अ० क्रि० फांदना, उछलना।

कूपार० ना० पु० समुद्र।

कूबरी० ना० स्त्री० कंस की दासी जिस को कृष्णचन्द्र ने शुद्ध तन किया था वा काठकी टेकनी जो साधुओं के पास होती है गु० टेढ़ी।

कूर० गु० कपटी, कठोर, टेढ़ा।

कूर्द्दन० ना० पु० कूदना, खेलना।

कूल० ना० पु० तीर, किनारा, तट।

कूलद्रुम० ना० पु० किनारे का वृक्ष विशेष्यार्थ-मृत्यु, सान्निध्य।

Digitized by Google

कूबा॰ ना॰ पु॰ एक ओर का कूतड़।

कूली॰ ना॰ स्त्री॰ एकओर का पुट्ठा।

कूष्माण्ड॰ ना॰ पु॰ कुम्हड़ा, लौका।

कूष्माण्डकी॰ ना॰ स्त्री॰ कुम्हड़ा, खभड़ा।

कूष्माण्डा॰ ना॰ स्त्री॰ देवी विशेष।

कृकवाक॰ ना॰ पु॰ मुर्गा।

कृच्छ्रोपवास॰ ना॰ पु॰ चान्द्रायणादि व्रत।

कृत॰ गु॰ किया गया, बना, करतूति, ना॰ पु॰ यज्ञ, भाग्य, उपकार।

कृतघ्न॰ गु॰ जो मनुष्य उपकार को नहीं माने, गुण न माने, यज्ञध्वंसी, पातकी।

कृतघ्नता॰ } ना॰ स्त्री॰ हित
कृतघ्नताई॰ } करने से उलटा करे।

कृतघ्नी॰ गु॰ कृतघ्न, किये को मेटे।

कृतनिन्दक॰ गु॰ कृतघ्न।

कृतयुग॰ ना॰ पु॰ प्रथम युग सत्ययुग जो १७२८००० वर्ष का होता है।

कृतवर्मा॰ ना॰ पु॰ यादव विशेष।

कृतज्ञ॰ गु॰ जो उपकार मानता है, गुणग्राही ना॰ पु॰ कुत्ता।

कृतज्ञता॰ ना॰ स्त्री॰ गुणवाद, उपकार मानना, यहसान मानना।

कृतान्त॰ ना॰ पु॰ यमराज सिद्धान्त।

कृतार्थ॰ गु॰ कृतकार्य्य, निष्काम अर्थधारी, मुक्त।

कृति॰ ना॰ स्त्री॰ काम करना।

कृतिका॰ ना॰ स्त्री॰ तीसरा नक्षत्र।

कृतिमरक्त॰ना॰ पु॰ कांच।

कृतिमतार्क्ष॰ना॰पु॰ रसौत।

कृतिवासा॰ } ना॰ पु॰ श्रीम-
कृत्तिवासा॰ } हादेवजी।

कृत्या॰ना॰ स्त्री॰ देवी, विशेष राक्षसी।

कृत्स्न॰ गु॰ अशेष।

कृदन्त॰ना॰ पु॰ जो शब्द धातु से बना है।

कृपण॰गु॰ सूम, कञ्जूस, अदाता।

कृपणता॰ ना॰ स्त्री॰ सूमी, कञ्जूसी, अदातृत्व।

कृपा॰ना॰ स्त्री॰ दया, मेहरबानी, रहम।

कृपाण॰ना॰पु॰ खड्ग, तलवार।

कृपालु॰गु॰ दयाशील, दयावन्त, रहीम।

कृमि॰ना॰ पु॰ कीड़ा।

कृमिघ्न॰ना॰पु॰ विडङ्ग औषधि।

कृमिगन्धा॰ ना॰ पु॰ काला अगर।

कृश॰ गु॰ दुर्बल, क्षीण, लटा।

कृशता॰ना॰ स्त्री॰ दुर्बलता, क्षीणता।

कृशाङ्गी॰ गु॰ जिसके अङ्ग खिंचे हुये हैं।

कृशानु॰ना॰पु॰ अग्नि, आगि,

कृषाण॰ } ना॰ पु॰ किसान,
कृषिक॰ } खेतीवाला।

कृषिकर्म॰ना॰ पु॰ हलजोतना, खेतीकरना।

कृषि॰ना॰ स्त्री॰ खेती, किसनई।

कृषीवल॰ ना॰ पु॰ किसान, कृषाण।

कृष्ण॰ना॰पु॰ श्रीकृष्ण, श्याम सुन्दरजी, कालाजीरा, कालातीतर, कालाहरिण, गु॰ श्याम, कालारङ्ग।

कृष्णगन्धा॰ना॰पु॰ सहिजन वृक्ष।

Digitized by Google

कृष्णता० ना० स्त्री० घुंघुची, श्यामता।

कृष्णपक्ष० ना० पु० बदी, अन्धेरापाख।

कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बड़ा करौंदा।

कृष्णभद्रा० ना० स्त्री० कुटकी।

कृष्णवीर्य्य० ना० पु० तरबूज।

कृष्णवृत्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी।

कृष्णसार० ना० पु० काला-हरिण।

कृष्णा० ना० स्त्री० नदीविशेष, जो दक्षिण भरतखण्डमें है, पीपरी, यमुनाजी।

कृष्णाग्रज० ना० पु० श्रीबल-देवजी।

कृष्णागरु० ना० पु० काला-अगर।

कृष्णाफल० ना० पु० स्याह मिरच।

कृष्णार्पण० गु० भगवान्हेत।

कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी।

कश्मरी० ना० स्त्री० कम्भारी।

कृत्रिम० गु० बनाया हुआ, रचित।

के० अव्य० सम्बन्ध बोधक।

कैकयी० ना० स्त्री० भरतजी की माता।

केकड़ा० ना० पु० कर्कट, गेंगटा।

केकय० ना० पु० राजा वा देश विशेष।

केकरा० ना० पु० केकड़ा।

केका० ना० स्त्री० मोरध्वनि, मोरों का शब्द।

केकी० ना० पु० मोर, मयूर।

केतकी० ना० स्त्री० केवड़ा, वृक्ष वा पुष्प विशेष।

केतिक० गु० थोड़े, दोचार, कितना।

केतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छ-लतारा, पताका, झण्डा वा झण्डी।

Digitized by Google

केतु॰ नाο पुο आकाश, पुष्प विशेष, सूर्य्य, चन्द्रमा, कामदेव, छन्द।

केतुमाल॰ नाο पुο पृथ्वी के नव खण्डों में से एक का नाम।

केन्द्र॰ नाο पुο मरकज़, गोलाकार वा वृत्तक्षेत्र का वह मध्यस्थान जहां से परिधि तक जितनी रेखा खींचीजावें वह सब परस्पर तुल्य हों।

केयूर॰ नाο पु॰ आभूषण, ज़ेवर।

केरि॰ नाο पुο केलावृक्ष, नाο स्त्रीο केलि।

केलि॰ } नाο स्त्रीο क्रीड़ा,
केली॰ } विहार, ऐश, आराम।

केवट॰ नाο पुο मल्लाह, खेवक।

केवड़ा॰ नाο पुο पुष्प वा वृक्ष विशेष।

केवल॰ अव्यο मात्र, फ़क़त्, गुο एकही।

केवली॰ नाο स्त्रीο जन्मपत्री।

केवा॰ सर्व्वο कोई।

केश॰ नाο स्त्रीο बाल।

केशफला॰ नाο स्त्रीο बेरी वृक्ष वा इसकाफल यथा स्निग्धछदा केशफला सौवीरिका। इतिनिघण्ट:।

केशर॰ नाο पुο केसर, नागकेसर।

केशरञ्जन॰ नाο पु॰ भंगरा पौधा।

केशरी॰ नाο पुο हनुमानजी के पिता, सिंह।

केशव॰ नाο पुο श्रीकृष्णचन्द्र का एकनाम।

केशवेशी॰ नाο स्त्रीο बालों की लट।

केशाकेशि॰ ना॰ पु॰ परस्पर बालोंको पकड़के लड़ना वा लड़ाना।

केशी॰ ना॰ पु॰ दैत्य विशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्रने बधकिया था, गु॰ बालों वाला।

केशरिया॰ गु॰ केशर से रंगा भया, पीला।

केहरि॰ } ना॰ पु॰ सिंह,
केहरी॰ } शेर, व्याघ्र।

कै॰ सर्व्व॰ कितना, अनेक।

कैंचली॰ ना॰ स्त्री॰ सांप का खोल।

कैटभ॰ ना॰ पु॰ दैत्यविशेष।

कैत॰ ना॰ पु॰ कैथाका वृक्ष।

कैतय॰ ना॰ पु॰ चिरायता, छल।

कैथ॰ }
कैथा॰ } ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।

कैथी॰ ना॰ स्त्री॰ नागरी का एक प्रकार का लेख जो कायस्थों ने कल्पना किया है।

कैरव॰ ना॰ पु॰ फफूल, श्वेत-कमल।

कैला॰ ना॰ स्त्री॰ अङ्कुर, गाभा।

कैलाश॰ } ना॰ पु॰ पर्व्वत
कैलास॰ } विशेष जहां शिव-जी और कुवेर इ॰ रि यक्षगण रहते हैं।

कैव॰ ना॰ पु॰ कदम वृक्ष।

कैवर्त्त॰ ना॰ पु॰ मल्लाह, कहार, धीमर, केवट।

कैवल्य॰ ना॰ पु॰ मोक्ष, मुक्ति।

कैशिका॰ ना॰ स्त्री॰ बालों की लट।

कैसा॰ सर्व्व॰ किस प्रकार।

कैहौं॰ भ॰ व॰ क्रि॰ कहूंगा वा कहूंगा।

को॰ अव्य॰ कर्म्मका सूचक द्वितीया का, सर्व्व॰ कौन।

Digitized by Google

कोई० सर्व० अनिश्चय, एक, ना० पु० कमल विशेष।

कोऊ० सर्व० कोई, जोहि।

कोचना० स० क्रि० छेदना, चुभाना।

कोपल० ना० पु० नयेपत्ते, गुच्छा।

कोक० ना० पु० ग्रन्थ विशेष, जिसमें स्त्री प्रसङ्ग की प्रति पादकता का वर्णन है, फफूल।

कोकनद० ना० पु० लाल कमल।

कोकर्ण० ना० पु० असगन्ध।

कोका० ना० पु० चकईचकवा, दूधभाई, फफूल, पिंड खजूर।

कोकिल०, कोकिला० ना० स्त्री० पक्षी विशेष, कोयल।

कोकी० ना० स्त्री० चकई।

कोख०, कोखा० ना० स्त्री० कुक्षि।

कोखबन्ध० गु० बांझ बन्ध्या।

कोखि० ना० स्त्री० कोख, कुक्षि।

कोछा०, कोछी० ना० स्त्री० गोदी, ओढ़नीकी झोली।

कोट० ना० पु० गढ़, क़िलअ, नगर।

कोटर० ना० पु० वृक्ष को खोह।

कोटवी० गु० नङ्गी स्त्री, ना० स्त्री० बाणासुर की महतारी।

कोटा० ना० पु० राज पूताने का नगर विशेष।

कोटि० ना० स्त्री० एक ओर की भुज, पहिला पक्ष, क्रिरोड़, सौ लाख।

कोठरी० ना० स्त्री० छोटा कोठा।

Digitized by Google

कोठा० ना० पु० पटा हुआ एक बड़ा घर।

कोठि० ना० स्त्री० कोख ।

कोठी० ना० स्त्री० महाजनों वा राजाओं वा ठाकुरों की बैठक का स्थान ।

कोडना० स० क्रि० खोदना ।

कोड़ा० ना० पु० चाबुक ।

कोढ़० ना० पु० कुष्ट रोग विशेष ।

कोढ़ना० अ० क्रि० दुखी होना ।

कोढ़ी० ना० पु० कुष्टी ।

कोण० ना० पु० कोना, दिन, पृथ्वी ।

कोद० ना० स्त्री० ओर, पक्ष, तरफ़ ।

कोदण्ड० ना० पु० शिवजी का धनुष, धनुष ।

कोद्रव० ना० पु० कोदो अन्न विशेष ।

कोना० ना० पु० जोदो सूधी रेखाओं के मिलान से बनताहै परन्तु वे रेखा एक सूध में न हों ।

कोप० ना० पु० क्रोध गुस्सा ।

कोपना० अ० क्रि० क्रोधित होना, गुस्सा करना, ना० स्त्री० स्त्री० ।

कोपर०
कोपल० } ना० पु० पत्रविशेष ।

कोपान्वित० गु० क्रोध युत, गुस्से से भरा ।

कोपी० गु० कोपान्वित, कोई ।

कोपीन० ना० स्त्री० लंगोट, लंगोटी ।

कोमल० गु० नम्र, मया, भोला, नरम ।

कोमलता० ना० स्त्री० नरमी भोलापन ।

कोयल० ना० स्त्री० पक्षी विशेष, पुष्प विशेष ।

Digitized by Google

कोयला० ना० पु० अङ्गार, बुझा भया।
कोर० ना० स्त्री० कगर, छोर धार।
कोरक० ना० पु० कली।
कोरपाडी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।
कोरा० गु० बिना धोयाकपड़ा, बिना लिखा कागज़, मिट्टी का नया पात्र जो काममें न आया हो।
कोरि० ना० स्त्री० कोटि, किरोड़।
कोरी० ना० स्त्री० नई, ना० पु० जाति विशेष।
कोर्थ० सर्व० किस हेत, किस लिये।
कोल० ना० पु० शूकर, नीच जाति विशेष, खाल, गली जो लम्बी सङ्केत हो।
कोलवल्लिका० ना० स्त्री० कैया का दृक्ष।
कोला० ना० स्त्री० पीपरि।
कोलाफल० ना० पु० मकुआ दृक्ष।
कोलाहल० ना० पु० कलकल, रौला, शोर।
कोलिका० ना० स्त्री० कालीमिरच।
कोलियाना० स० क्रि० गोदी में लेना।
कोल्हू० ना० पु० जिससे तेल निकालते हैं व ऊख पेरते हैं।
कोविद० गु० पण्डित, गुणी।
कोश० ना० पु० कमल, मध्य भाग।
कोशल० ना० पु० कुशल, देश विशेष।
कोशलपति० ना० पु० दशरथ, श्री रामचन्द्र, अवध भूप।
कोशलपुर० ना० पु० } अयोध्या को।
कोशलपुरी० ना. स्त्री. }

कोशलाधीश० } ना० पु०
कोशलेश० } कोशलपति, श्रीरामचन्द्रजी।

कोष० ना० पु० अभिधान, भण्डार, खड्ग, खड्गादि की गांठी लुगत का खज़ाना, खज़ाना।

कोष्ठ० ना० पु० खात, कोटा, भीत।

कोष्ठक० ना० पु० तखता।

कोस० ना० पु० २ मील का वा २००० दण्ड का।

कोसना० स० क्रि० शापदेना, बुरामानना।

कोह० ना० पु० क्रोध, दुख, डाह, पेट में आग लगना, हियजलना।

कोहनी० ना० स्त्री० बाहु के बीच की गांठि।

कोहाव० ना० पु० डाकखाना।

कोही० गु० क्रोधी, रामायणे यथा, कर कुठार मैं अकरण कोही। आगे अपराधी गुरु द्रोही।

कौ० अव्य० का।

कौं० अव्य० को।

कौआ० ना० पु० काग।

कौंध० ना० पु० प्रकाश, प्रताप।

कौंधना० अ० क्रि० प्रकाश होना, चमकना।

कौंधा० ना० पु० बिजली।

कौडियाला० ना० पु० सर्प, विशेष घनी, नदी विशेष जिसको सरयू कहते हैं।

कौडी० ना० स्त्री० छोटा शङ्ख धन, कमाई।

कौणप० ना० पु० दैत्य राक्षस

कौतुक० ना० पु० कौतूहल, परिहास, तमाशा।

कौतुकिया० } गु० परिहासी
कौतुकी० } तमाशबीन।

कौतूहल० ना० पु० कुतूहल।

कौन० सर्व्व० प्रश्न बोधक।

कौन्ता० ना० स्त्री० कुन्ती।

कौन्ती० ना० स्त्री० रेणुका औषधि।

कौन्तेय० ना० स्त्री० पाण्डव विशेष।

कौपीन० ना० पु० कौपीन लंगोटी

कौमारी० ना० स्त्री० देवी विशेष।

कौमुदी० ना० स्त्री० चन्द्रिका ज्योति, पुस्तक विशेष।

कौर० ना० पु० कवल, लुकमा,

कौरवपाण्डु० ना० पु० कौरव और पाण्डव।

कौरव० ना० पु० कुरु राजा की सन्तान।

कौरव्य० ना० पु० मुनिविशेष।

कौल० ना० पु० लुकमा, ग्रास, नवाला, धर्म विशेष, गु० कुलीन।

कौला० ना० पु० कोठरी आदि के पांजर का कोना, अंकवारा।

कौली० ना० स्त्री० गोदी।

कौलेय० ना० पु० कुत्ता, यथा कौलेय श्वार मेयश्च कुक्कुरो मृगदंशकः इत्य-मरः।

कौलेली० ना० पु० गन्धर्व।

कौवेर० ना० पु० कूटद्वार।

कौवेर्य्य० गु० जो कुवेर सम्बन्धी हो।

कौशल्या० ना० स्त्री० क्षेम कुशल, श्री रामचन्द्र की माता।

कौशिक० ना० पु० विश्वामित्र मुनि, इन्द्रगुग्गुल, उलूक पक्षी, दण्ड।

कौशिकी० ना० स्त्री० नदी विशेष।

कौषेय० गु० पाटी वस्त्र।

कौसीस० ना० पु० कमल।

Digitized by Google

कौस्तुभमणि० ना० स्त्री० मणि विशेष जिसको विष्णुजी ने उरपरधारण किया है।

क्या० सर्व० प्रश्न बोधक।

क्यारी० ना० स्त्री० बागों वा खेतों में बनती है।

क्यों० } अव्य० किसलिये,
क्योंकर० } किस प्रकार।
क्योंकि० }

क्रकच० ना० पु० करील वृक्ष।

क्रतुध्वंसी० ना० पु० महादेवजी।

क्रतुभुग० } ना० पु० देवता
क्रतुभुज० } जो यज्ञमें खाते हैं।

क्रतिमालक० ना० पु० कि दवाली।

क्रम० ना० पु० परिपाटी, रीति, सिलसिला, मिलान, धीरे।

क्रमक्रम० ना० पु० धीरे धीरे, दर्जे दर्जे।

क्रमुक० ना० स्त्री० सुपारी।

क्रमिकुम्भ० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

क्रमेलक० ना० पु० ऊंट यथा उष्ट्रे क्रमेलकमय महाङ्गाः करभः शिशुः इत्यमरः।

क्रव्याद० } ना० पु० राक्षस,
क्रव्यात्० } कच्चामांसभक्षी।

क्रान्ति० ना० स्त्री० चमक, शोभा, दीप्ति, प्रकाश।

क्रिया० ना० स्त्री० व्यवहार, काम, धातु, नित्यकर्म्म, यत्न, उपाय, मरने के पीछे शास्त्रोक्त कर्म्म।

क्रियाद्योत० गु० कर्त्ताकीदशा की सूचक।

क्रियान्वयित्व० ना० पु० क्रिया पदको और सम्बन्ध रखना।

Digitized by Google

क्रीड़ा॰ना॰ स्त्री॰ खेल, कौलि, लीला।

क्रीत॰ गु॰ मोललिया।

क्रीयमान॰ गु॰ कियेहुये वा अबकेकिये।

क्रुद्ध॰ गु॰ रिसवश, क्रोधित, खफा।

क्रूर॰ गु॰ कठोर, निठुर, कपटी टेढ़ा।

क्रूरकर्मा॰ ना॰ स्त्री॰ जंधा छोली।

क्रूरवार॰ ना॰ पु॰ शनिश्चर, मङ्गल, आदित्यवार।

क्रोध॰ ना॰ पु॰ कोप, गुस्सह, भैरव विशेष।

क्रोधातुर॰ } गु॰ कोपी, क्रोध
क्रोधान्ध॰ } में अन्ध, क्रोधमें मस्त।

क्रोधी॰ गु॰ कोपी, गुस्सा भरा भया।

क्रोश॰ ना॰ पु॰ कोस, दोमील, दो हज़ार दण्ड की माप।

क्रोष्टा॰ ना॰ पु॰ गीदड़, शृगाल।

क्लिशित॰ } गु॰ दुःखित, पीड़ि-
क्लिष्ट॰ } त, रञ्जीदः।

क्लीव॰ ना॰ पु॰ नपुंसक, हींजड़ा।

क्लेद॰ ना॰ पु॰ गीलापन।

क्लेदित॰ गु॰ भीगाभया, तर।

क्लेश॰ ना॰ पु॰ दुःख, पीड़ा, रञ्ज।

क्लेशित॰ गु॰ दुखित, पीड़ित।

क्वचित्॰ अव्य॰ कहीं।

क्वटि॰ ना॰ स्त्री॰ पिण्डखजूर।

क्वाण॰ ना॰ पु॰ कोआ।

क्वाथ॰ ना॰ पुं॰ काढ़ाजोरोगी-को पिलाया जाता है।

[ख]

खं॰ } ना॰ पु॰ आकाश, स्वर्ग,
ख॰ } घर, शून्य, रन्ध्र, इन्द्रिय।

खंखारना॰ अ॰ क्रि॰ खखारना।

Digitized by Google

खंगना ० अ० क्रि० कमहोना, घटना ।

खंगालना ० } स० क्रि० धोना,
खंघारना ० } धनवासना ।

खग ० ना० पु० पक्षी, गरुड़, सूर्य्यादि, मेघ, पवन, देवता और तारागण ।

खगकेतु ०
खगनाथ ०
खगनायक ० } ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा, गरुड़ ।
खगनाह ०
खगपति ०

खगमाला ० ना० पु० पक्षियों का समूह, तारागण ।

खगहा ० ना० पु० गैंडा, बाज़ जुर्रा ।

खगेन्द्र ० } ना० पु० गरुड़,
खगेश ० } चन्द्रमा ।

खगोल ० ना० पु० आकाश मण्डल ।

खग्ग ० ना० पु० वीर, बहादुर ।

खचना ० स० क्रि० रेखा, करना जड़ना ।

खपर ० ना० पु० खच्चरपशु, विशेष, मेघ, ग्रहादि ।

खचा ० } गु० जड़ाऊ, खिचा
खचित ० } हुआ ।

खजुरिया ०
खजूर ० } ना० स्त्री० वृक्ष, विशेष ।
खजूरि ०

खञ्ज ० गु० लंगड़ा, ना० पु० खञ्जन ।

खञ्जन ० ना० पु० पक्षी विशेष जिसे खडैचा वा खिरखिन्दा भी कहते हैं ।

खञ्जनक ० ना० पु० ममोला, खञ्जन ।

खञ्जरिट ० } ना० पु० खञ्जन ।
खञ्जरीट ० }

खट्ट ० ना० स्त्री० खाट ।

खटक ० ना० पु० खटका ।

Digitized by Google

खटकना० अ० क्रि० शब्द होना, झगड़ना, लगना, शङ्का करना।

खटका० ना० पु० सन्देह, शङ्का, पांवकी आहट।

खटकाना० स० क्रि० आहट देना, शब्दकरना।

खटखटाना० अ० क्रि० ठकठकाना।

खटछप्पर० ना० पु० छप्पर खट।

खटपट० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई।

खटमल० ना० पु० खाटमें का कीड़ा।

खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खट्टापन, अचार।

खटाका० ना० पु० शब्द, चटाका

खटास० ना० पु० खट्टापन, जन्तु विशेष।

खटिका० ना० स्त्री० सेलखड़ी।

खटिया० ना० स्त्री० छोटीखाट।

खटीक० ना० पु० जाति विशेष।

खट्टा० गु० अम्ल, अम्लत्।

खट्टिक० ना० पु० खटीक, आखेटकी।

खट्टु० ना० पु० बनिहार।

खट्वा० ना० स्त्री० खाट।

खड़का० ना० स्त्री० गोशाला।

खड़कना० अ० क्रि० झन झनाना।

खड़खड़ाना० स० क्रि० ठक, ठकाना, खटाटामारना झनझनाना।

खड़खड़ाहट० ना० पु० शब्द होना, आहट।

खड़सान० ना० स्त्री० फ़िसान जिसपर बाढ़बनातेहैं।

खड़ा० गु० उठा, सीधा, अड़ा, ऊंचा, ठाढ़ा।

खड़ाऊं० ना० पु० पादुका, काठनई।

खड़िया० ना० स्त्री० कूही मट्टी, दूधिया मट्टी।

खड्ग॰ना॰ पु॰ तलवार, गैंडा,
अमरे यथा गण्डकेखड्ग
खड्गिनौ ।

खण्ड॰ना॰ पु॰ टुकड़ा, खांड़,
अध्याय, दिशा ।

खण्डन॰ना॰ पु॰ दूषण, मिटा-
ना, काटना ।

खण्डना॰स॰ क्रि॰ दूषणदेना,
तोड़ना, काटना ।

खण्डनार्थ॰गु॰ काटनेकेलिये ।

खण्डिनी॰ना॰ स्त्री॰ काटने
वाली ।

खण्डपरशु॰ना॰पु॰ श्रीमहा-
देव ।

खण्डर॰ ना॰ पु॰ ऊजड़,
वैराना ।

खण्डरना॰स॰ क्रि॰ काटना,
टुकड़ेकरना ।

खण्डहल॰ ना॰ पु॰ ऊजड़
मकान, वैरानह ।

खण्डित॰ गु॰ काटागया, कमी,
अपूर्ण ।

खण्डितकरना॰स॰क्रि॰ बात
काटना, खण्डना ।

खतिल॰ना॰ पु॰ पोस्त वा उस
का बिरवा ।

खत्ता॰ ना॰ पु॰ } गड़हा, जि-
खत्ती॰ स्त्री॰ } समें अन्न
भरते हैं ।

खदिर॰ ना॰ पु॰ खैर, कत्था ।

खदेड़॰ना॰स्त्री॰ रगेद, अहेर ।

खदेड़ना॰ स॰ क्रि॰ रगेदना,
भगाना ।

खद्योत॰ ना॰ पु॰ सूर्य, तारा
गण और जुगनू, कीट
विशेष ।

खन॰ ना॰ पु॰ खण्ड ।

खनक॰ ना॰ पु॰ मूस, चूहा ।

खनकना॰ अ॰ क्रि॰ बजना,
शब्द होना ।

खनन॰ ना॰ पु॰ खोदना ।

खनना॰ स॰ क्रि॰ खोदना ।

खपत॰ गु॰ ओबिकगया, स्त्री॰
बिकाव ।

Digitized by Google

खपना॰ अ० क्रि० बिकना, खूखना, ठहरना, पैठना, समाना।

खपरा॰ ना० पु० घर छावने के लिये जो मिट्टी के बनते हैं।

खपरी॰ ना० स्त्री० शिर का ऊपरी भाग।

खपरैल॰ ना० स्त्री० घर जो खपरों से छाया हो।

खपाच॰ ना० स्त्री० काठ का टुकड़ा।

खपाना॰ स० क्रि० बिकवाना, पैठाना, भराना।

खपित॰ गु० जो बिक गया, स्त्री० बिकाव।

खपुर॰ ना० पु० स्वर्ग, आकाश।

खप्पर॰ ना० पु० खोपड़ी, माटी का पात्र जिसमें जोगी जलादि पीते हैं, अंगेठी।

खब्बा॰ ना० पु० बायां हाथ।

खभारू॰ ना० पु० पेट में आगि पड़ना, घबराहट।

खम्बा॰
खम्भ॰ } ना० पु० खम्भ, थूनी।

खम्भा॰ ना० पु० खम्भ, थूनी।

खर॰ ना० पु० खरासुर, गदहा, घास, कुत्ता, अच्छा, तीक्ष्ण।

खरक॰ ना० पु० खड़क, गौशाला।

खरखरा॰ ना० पु० खरहरा।

खरपत्र॰ ना० पु० मरुवा, सुगन्धित, पौधा।

खरबर॰
खरभर॰ } ना० स्त्री० घोड़े के दौड़ने का शब्द, खलबली, शोरगुल, ऊधम, क्षोभ।

खरमञ्जरी॰ ना० स्त्री० ऊंग।

खरयष्टिका॰ ना० स्त्री० खिरहटी।

खरल॰ ना० पु० औषधि घिसने का पात्र।

Digitized by Google

खरहरा॰ ना॰ पु॰ घोड़ाआदि मलने की वस्तु विशेष ।

खरहारना॰ स॰क्रि॰झारना, बुहारना ।

खरा॰ गु॰ चोखा, श्रेष्ठ, अच्छा ।

खराई॰ ना॰ स्त्री॰ सचाई, उत्तमता, सूख ।

खरारि॰ ना॰ पु॰ श्रीरामचन्द्रजी ।

खरिक॰ ना॰ स्त्री॰ खड़क, गोशाला ।

खरी॰ ना॰ स्त्री॰ सरसों का पीना, गड्ढी, अच्छी खड़ी ।

खरे॰ गु॰ खड़े, ठाढे, अच्छे ।

खरोंट॰ ना॰ स्त्री॰ बकोट, खसोट ।

खरोचना॰ } स॰क्रि॰नोचना
खरोटना॰ } खसोटना ।

खर्ज॰ ना॰ पु॰ रागोच्चारण, का विशेष स्थान ।

खर्जूर॰ ना॰ स्त्री॰ चांदी, खजूर वृक्ष ।

खर्जूरिका॰ ना॰स्त्री॰ पिण्ड, खजूर ।

खर्जूरी॰ ना॰ स्त्री मूसली ।

खर्पर॰ ना॰ पु॰ पीठ, शिर ।

खर्ब्ब॰ ना॰ पु॰ तुच्छ, छोटा, वामन, भाषामें सौ अर्ब्ब को कहतेहैं १००००००००००

खर्रा॰ ना॰ पु॰ मसौदः, टट्टर, खरखरा, चिट्ठा, खसरा ।

खर्राटा॰ ना॰ पु॰ सोते में घुर्राना ।

खल॰ गु॰ दुष्ट नीच, तुच्छ ।

खलता॰ ना॰ स्त्री॰ दुष्टता ।

खलबल॰ ना॰ स्त्री हलबल ।

खलबलाना॰ अ॰ क्रि॰ उबलना ।

खलबली॰ ना॰ स्त्री॰ खरभर, हल्लड़ ।

Digitized by Google

खला० ना० स्त्री० पतुरिया, दुष्टिनि।

खलान् गु० खलका बहुवचन।

खलारि० ना० पु० श्री नारायण।

खलारू० ना० पु० निचान, पस्ती।

खलियान० ना० पु० खलिहान, खत्ता।

खलियाना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।

खलिहान० ना० पु० अनाज माड़ने वा खूंदने का स्थान विशेष, पैरू।

खली० ना० स्त्री० तिलादि की खूंद।

ख़लीता० ना० पु० जेब, फ़ारसी शब्द है।

खवा० ना० पु० कन्धा।

खस० ना० पु० जाति विशेष।

खसकना० अ० क्रि० गिरपड़ना, सरकना, हटना।

खसकाना० स० क्रि० सरकना, हटाना।

खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित तृण विशेष।

खसना० अ० क्रि० धसना, गिरपड़ना, निकलपड़ना।

खसरा० ना० पु० बड़ी, खर्रा, खुजली।

खसाना० स० क्रि० गिराना, बिगाड़ना।

खसीमाल० ना० पु० पत्थर विशेष, गिरीमाला।

खांचा० ना० पु० टोकड़ा, पिंजरा, विशेष।

खांड़० ना० स्त्री० शर्करा, शक्कर।

खाड़ना० स० क्रि० छांटना, कूटना।

Digitized by Google

खांडा॰ ना॰ पु॰ खड्ग विशेष ।

खांसना॰ अ॰ क्रि॰ खोंखना, ठोंठों करना ।

खांसी॰ ना॰ स्त्री॰ खोंखी ।

खाग॰ ना॰ पु॰ गैंड़े का सींग ।

खाज॰ ना॰ स्त्री॰ खुजली ।

खाजा॰ ना॰ पु॰ मिठाई वि-शेष ।

खाट॰ ना॰ स्त्री॰ चारपाई ।

खात॰ ना॰ पु॰ गर्त्त, गड़हा, घूरा, गोबर ।

खाता॰ ना॰ पु॰ रोज़ नामा, लेखे बही, ग़ल्ला रखने का खत्ता ।

खाती॰ ना॰ पु॰ बढ़ई, खरादी ।

खाद॰ ना॰ पु॰ गोबरादि, घूरा ।

खाद्य॰ गु॰ खाने के योग्य जो वस्तु ।

खाना॰ स॰ क्रि॰ भोजन करना, अ॰ क्रि॰ समा-ना, उपार्जन वा भोग करना, ना॰ पु॰ भोजन ।

खानि॰ ना॰ स्त्री॰ आकर अहीरा, उत्पत्तिस्थान ।

खानिक॰ गु॰ खाने को जो वस्तु ।

खारका॰ ना॰ पु॰ छुहारा ।

खारा॰ गु॰ लोना ।

खारी॰ गु॰ कड़ुआ नमक, लोनीला ।

खाल॰ ना॰ स्त्री॰ चमड़ा, धौंकनी ।

खिचड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ दाल-चावल मिलित ।

खिचना॰ अ॰ क्रि॰ तनना, खिचा रहना ।

खिचाव॰ ना॰ पु॰ तनाव, बिगाड़ ।

खिजलाना॰ स॰ क्रि॰ } सता-
खिजाना॰ अ॰ क्रि॰ }
ना, चिड़ाना, क्रोधित-
होना।

खिझ॰ ना॰ स्त्री॰ खिसियाहट।

खिझना॰ } अ॰ क्रि॰ खि-
खिझलाना॰ }
जलाना।

खिड़की॰ ना॰ स्त्री॰ झरोखा।

खिलखिलाना॰ अ॰ क्रि॰
हसना।

खिलजाना॰ } अ॰ क्रि॰ फूल-
खिलना॰ } ना, हर्षित,
होना।

खिलाड़॰ गु॰ चञ्चल, खेलने-
वाला चालाक।

खिलाना॰ स॰ क्रि॰ भोजन
कराना, भोगकरवाना,
खेलकराना।

खिलौना॰ ना॰ पु॰ खेलने की
वस्तु।

खिल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ हसी,
मज़ाक़।

खिसलना॰ अ॰ क्रि॰ फिसलना,
छटना।

खिसलाहट॰ ना॰ स्त्री॰ फि-
सलाहट।

खिसियाना॰ अ॰ क्रि॰ खीस-
निकालना, शरमाना,
लजाना, गु॰ चिड़-
चिड़ा।

खिसियाहट॰ ना॰ स्त्री॰
खिसियानपन।

खीच॰ ना॰ पु॰ अप्रसन्नता,
चितहट।

खीज॰ ना॰ स्त्री॰ क्रोध, खिसि-
याहट।

खीजना॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधित
होना, दुखपाना।

खीरा॰ ना॰ पु॰ फलविशेष।

Digitized by Google

खीरि॰ना॰ स्त्री॰ चावल जो दूध और खांड में पकाये जाते हैं।

खीरी॰ना॰ पु॰ पिस्ता मेवा, नगर विशेष।

खील॰ } ना॰ पु॰ धानों
खीला॰ } के लावा।

खीस॰ना॰ पु॰ टोटा, खराब, दांतका दिखलाहट, पीयूष।

खीसना॰ अ॰ क्रि॰ दांतकाढ़ना।

खीसा॰ना॰ पु॰ ख़ज़ीता, जेब, थैली।

खुजलना॰ } अ॰ क्रि॰ खुज-
खुजलाना॰ } ली करना।

खुजलाहट॰ना॰ स्त्री॰ खुजलापन, चुल।

खुजली॰ना॰ स्त्री॰ खाज।

खुजाना॰ स॰क्रि॰ खुजलाना।

खुटकना॰ स॰ क्रि॰ चबना, कुतरना, सन्देहकरना।

खुटका॰ना॰ पु॰ सन्देह शङ्का, खटका।

खुगड्ला॰ना॰ पु॰ दृक्षकाछिद्र, खोखि।

खुद्वाना॰ स॰ क्रि॰ गढ़ाना, मटी निकलाना, चिन्हित कराना, अङ्कित कराना।

खुनस॰ना॰ स्त्री॰ रिस, डाह।

खुनसाना॰ अ॰ क्रि॰ रिसाना, डाहखाना।

खुनसी॰ गु॰ क्रोधी।

खुन्दलना॰ स॰ क्रि॰ पांवसे दबाना।

खुभी॰ना॰ स्त्री॰ कान का भूषण, बीरैं।

खुर॰ना॰ पु॰ पशुओं के पद का नख।

खुरचन॰ना॰ स्त्री॰ छीलन।

खुरचना॰ स॰ क्रि॰ छीलना।

खुरगड्॰ना॰ पु॰ खूटीदेवली

Digitized by Google

खुर्पा० ना० पु०) घास छीलने
खुर्पी० ना. स्त्री.) का अस्त्र।

खुलना० अ० क्रि० प्रकट होना, बिथरना।

खूंच० ना० पु० नाड़ीविशेष।

खूंट० ना० पु० कोना, कानका मैल।

खूंटला० ना० स्त्री० औषधि विशेष।

खूंटा० ना० पु० काठका ठेकाना, मेख।

खूंटी० ना० स्त्री० छोटाखूंटा।

खूंदना० स० क्रि० पांवसेखोद-ना, टाप मारना।

खूंटी० ना० स्त्री० देवली, खुराड।

खूंद० ना० पु० खली, तरछुट, गु० घोड़ेकानाचना।

खेकसा० ना० पु० चिन्हविशेष।

खेचर०) ना० पु० पक्षी, ग्रह,
खेचारी०) तारागण देवता, विद्याधरादि।

खेटक० ना० पु० अहेर, शिकार और अस्त्र विशेष।

खेटकी० ना० पु० वधिक, शिकारी।

खेत० ना० पु० क्षेत्र समरभूमि, पुण्यक्षेत्र, वह भूमिजहां अन्नादि उपजता है।

खेतल० ना० पु० आकाश मण्डल।

खेती० ना० स्त्री० किसनई, गु० जोताऊ।

खेद० ना० पु० शोक, दुःख, पश्चात्ताप।

खेदना० स० क्रि० खदेड़ना, सताना, और पीछा करना।

खेदित० गु० दुखित, पीड़ित, सतायागया।

खेरा० ना० पु० जनड़पुर, डीह

खेरी० ना० स्त्री० लोहाविशेष, हल।

खेल० ना० पु० क्रीड़ा, जीव-हलाव।

खेलना० स० क्रि० क्रीडाकरना, जीबहलाना ।

खेवक० } ना० पु० नाविक, खेवट० } डांडी और मल्लाह ।

खेवना० स० क्रि० डांडमारना, नावचलाना ।

खेवा० ना० पु० उतराई, भाड़ा, पाढीदेना, उतारा ।

खेह० ना० स्त्री० राख, धूलि, खाक ।

खैंच० ना० स्त्री० उखाड़, ऐंच ।

खैंचना० स० क्रि० ऐंचना, कसना, तानना ।

खैंचाखैंच० } ना० स्त्री० ऐंचा खैंचाखैंची० } ऐंची, ऐंचाखैंची

खैर० ना० पु० कत्था ।

खैला० ना० पु० दोहान, नया बैल वा बछड़ा ।

खोआ० ना० पु० लेट, सुरखी, दूध जो उबालके गाढ़ा कियाजाता है ।

खोंखना० अ० क्रि० खांसना ।

खोंखी० ना० स्त्री० खांसी ।

खोंच० ना० स्त्री० चीर ।

खोंचना० स० क्रि० घुसेड़ना ।

खोंचा० ना० पु० भराव, भोंक ।

खोंड़कल० ना० पु० गड्हा ।

खोंता० ना० पु० घोसला ।

खोंसना० स० क्रि० ठांसना, घुसेड़ना ।

खोखला० गु० चोंगला, खाली ।

खोखली० ना० स्त्री० ऊपरका मढ़ाव, जोठोसनहीं है ।

खोज० ना० पु० ढूंढ़, खुत, चिन्ह, पहिचान ।

खोजना० स० क्रि० ढूंढना ।

खोट० ना० स्त्री० दोष, अवगुन ।

खोटा० गु० भगली, दोषी, झूठा, अधर्मी ।

खोटाई० ना० स्त्री० भगलपन, दोष ।

Digitized by Google

खोदना० स० क्रि० गोड़ना, करकोलना।
खोना० स० क्रि० गवांना, उड़ना।
खोपड़ा० ना० पु० ललाट के ऊपर का अङ्ग, नारियल की गूदी।
खोपड़ी० ना० स्त्री० मस्तक के ऊपरका भाग, छिलका।
खोपर० ना० पु० सिर।
खोपरा० ना० पु० खोपड़ा।
खोपरी० ना० स्त्री० खोपड़ी।
खोपा० ना० पु० नारियलका गोला, जुड़ा।
खोरि० ना० स्त्री० दोष, ग्लानि।
खोरी० ना० स्त्री० गली, मार्ग, दोष, ग्लानि।
खोल० ना० स्त्री० कांठी, ढकना, खोहर, गढ़ा।
खोलना० स० क्रि० प्रकटकरना, बिछाना, उघेड़ना, लङ्गर उठाना।
खोह० ना० पु० गुफा, गड्हा, कन्दरा।
खौंड़० } ना० स्त्री० तिलक,
खौरि० }
खौलना० अ० क्रि० उबलना।
ख्यात० गु० प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मशहूर।
ख्याति० ना० स्त्री० यश, धाक, शुहरत।
ख्यात्यापन्न० गु० कीर्त्तिमान्, नामी।
ख्याल० ना० पु० क्रीडा, खेल।

[ग]

गंवाना० स० क्रि० खोना, उड़ाना, बहाना।
गंवार० ना० पु० गांवकावासी, कुपढ़ा।
गगन० ना० पु० आकाश, आसमान।
गगनचर० ना० पु० पक्षी, देवता, ग्रहादि।

Digitized by Google

गगरी० ना० स्त्री० कलसी, घड़ा।
गङ्गा० ना० स्त्री० भागीरथी, नदी प्रसिद्ध।

गङ्गायमुनी० ना० स्त्री० कर्ण भूषण विशेष।
गङ्गाद्वार० ना० पु० गङ्गोत्तरी, हरद्वार।
गङ्गाधर० ना० पु० श्रीमहादेव जी।
गङ्गासागर० ना० पु० गङ्गा और समुद्र का सङ्गम जहां कपिलदेव का स्थान है।

गङ्गेरुकी० ना० स्त्री० गंगेरुआ।
गङ्गोत्तरी० ना० स्त्री० गङ्गाजी के प्रकाश का स्थान जो बद्री नाथ के पास है।
गङ्गोदक० ना० पु० गङ्गाजल।
गच० ना० स्त्री० चूना, लेट।

गचपच० ना० स्त्री० उलट पलट।
गच्छ० ना० पु० मुकाम, चाल।
गज० ना० पु० हाथी, दो हाथ की माप।
गजकेसर० ना० स्त्री० नाग केसर।
गजकृष्णा० ना० स्त्री० गज पीपरि।

गजगामिनी० गु० स्त्री० जिसकी हाथी कीसी चाल हो।
गजगाह० ना० पु० झूलसहित हाथी का भूषण।
गजगौनी० गु० गजगमनी।
गजचिर्भटी० ना० स्त्री० इन्द्र-वारुणी।

गज्जहै० म० क्रि० गरजता है।
गजदन्त० ना० पु० हाथी का दांत।

Digitized by Google

गजपति॰ ना० पु० हाथियों का स्वामी अर्थात् राजा वा जिसके हाथी हों।

गजपाटल॰ ना० पु० कज्जल।

गजपाल॰ ना० पु० महावत, फ़ीलवान।

गजपिप्पली॰ ना० स्त्री० गज-पीपरि।

गजभिषक्॰ ना० पु० सोंठि।

गजमुख॰ ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुंह।

गजमोती॰ ना० पु० मोती जो हाथी के मस्तक में होता है।

गजरा॰ ना० पु० गाजर का पत्ता, फूलों की माला।

गजवदन॰ ना० पु० गणेशजी।

गजवुसा॰ ना० पु० केलावृक्ष।

गजानन॰ ना॰ पु॰ गणेशजी, हाथी का मुख।

गजासन॰ ना० पु० पीपल, पीपरि।

गञ्ज॰ ना० पु० रोग विशेष जो सिर में होता है।

गञ्जा॰ गु॰ जिसके सिर में गञ्ज रोग होवे, ना० पु० गांजा, भांग, रोग विशेष।

गञ्जित॰ गु॰ नशाया गया।

गटपट॰ ना० स्त्री० उलट पुलट मिलित।

गटी॰ ना० स्त्री० समूह, रामचन्द्रिका यां यथा सब जात फटी दुख कोदुपटी कपटी न रहे जहं एक घड़ी, निघटी रुचि मीच घटी हुघटी जगजीवजतीन की छूटी चटी, अघ ओघ किवेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुण ज्ञान गटी, चहुं ओरन नाचत मुक्ति नटी गुण धूर जटी जटि पञ्चवटी।

गट्टा॰ ना० पु० कलाई, मिठाई, प्रसिद्ध।

Digitized by Google

गट्ठा॰ ना॰ पु॰ बड़ी गठरी ।
गठना॰ अ॰ क्रि॰ जुड़ना, मिलना ।
गठरी॰ ना॰ स्त्री॰ मोट, मोटरी, भुगड ।
गठाना॰ स॰ क्रि॰ सिलवाना, पैवन्द लगवाना ।
गठिया॰ ना॰ पु॰ गोन, गु गाठों वाला ।
गठीला॰ } गु॰ गांठो वाला,
गठिहा॰ } गठाऊआ ।
गडका॰ } ना॰ स्त्री॰ मछली
गडका॰ } वा मछली विशेष ।
गडगडाना॰ स॰ क्रि॰ गरजना ।
गड़रिया॰ ना॰ पु॰ जाति विशेष जो भेड़ें पालते हैं।
गडन॰ ना॰ स्त्री॰ धसन, दलदल ।
गडना॰ अ॰ क्रि॰ धसना, पैठना, छिदना ।
गड़मड़॰ ना॰ पु॰ गटपट, उलट, पलट, हलचल ।
गड़बड़ा॰ ना॰ पु॰ खलबली, मरोड़ा, गु॰ खड़बड़ा, घबराया, भया ।
गड़बड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ घबराना, खलबलाना ।
गड़बड़ाहट॰ ना॰ स्त्री॰ हड़बड़ाहट, भय ।
गडहा॰ ना॰ पु॰ गर्त्त, गड्ढा, ताल ।
गड़िया॰ ना॰ स्त्री॰ खलारवाली खेत, गांडू ।
गडुआ॰ ना॰ पु॰ टोंटी वाला लोटा ।
गड़ोना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, खोंसना ।
गढ़॰ ना॰ पु॰ कोट, क़िलआ ।
गढ़ना॰ स॰ क्रि॰ ठोंकना, बनाना ।

गढ़नि॰ ना॰ स्त्री॰ बनावट।

गढ़वार॰ गु॰ मोटा गाढ़ा, गढ़वाल।

गढ़वाल॰ गु॰ क़िलेदार, गढ़ का रक्षक।

गढ़ा॰ ना॰ पु॰ गड़हा, गार।

गढ़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ गहने आदि की बनवाई, वा बनवने का काम।

गढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा गढ़।

गढ़ेला॰ ना॰ पु॰ पृथ्वी में खोदा भया गड़हा।

गढ़ैया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा, पोखरा, गु॰ गढ़ने हारा।

गण॰ ना॰ पु॰ समूह, महादेव के गणों का झुण्ड।

गणक॰ ना॰ पु॰ दैवज्ञ, ज्योतिषी, हिसाबी।

गणना॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षपात, गिनती, शुमार।

गणनाथ॰ ना॰ पु॰ गणनायक।

गणनायक॰, गणपति॰, गणराउ॰, गणराज॰, गणाधिप॰ } ना॰ पु॰ गणेश जी, यूथनाथ।

गणिका॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, पतुरिया, जूही।

गणित॰ ना॰ पु॰ अङ्क विद्या, हिसाब।

गणितकार॰ ना॰ पु॰ गणक।

गणेश॰ ना॰ पु॰ पार्वती के पुत्र, आदि देवता।

गण्ड॰ ना॰ पु॰ नेत्रों के नीचे का भाग, गाल।

गण्डक॰ ना॰ पु॰ गैंड़ा, पशु, नद विशेष।

गण्डदूर्व्वा॰ ना॰ स्त्री॰ गण्ड, दूब।

गण्डमाला॰ ना॰ पु॰ कान के नीचे फोड़ों का रोग विशेष।

गराडा० ना० पु० घेरा, चारि कौड़ी, वा पैसा, वा रुपया, बालकादि के गलेमें बांधने के लिये अभिमन्त्रितसूत।

गराडासा० ना० पु० अस्त्र, विशेष।

गराडासी० ना० स्त्री० छोटा, गाड़ासा।

गरिडका० ना० स्त्री० नदी विशेष।

गराडी० ना० स्त्री० घेरा जिसमें, श्री रामचन्द्र जी सीता जी को बैठाल गये थे।

गराडीर० ना० पु० सेंकड़हन।

गराडीरि० ना० स्त्री० ऊख, गन्ना, यथा, तया राज मधु तणो गाडी मधुप्र पचक इति निघण्ट:।

गराडुल० गु० प्रफुला।

गराडूष० ना० स्त्री० पानी का कुल्ला।

गराय० गु० जो गिना जाय।

गत० गु० प्राप्त, अतीत, व्यतीत, निकृष्ट।

गतागत० ना० पु० उलटफेर।

गतार्थ० गु० एक के जानने से अन्य को जानना।

गति० ना० स्त्री० चाल मुक्ति, दशा, ज्ञान, गमन दिशा, क्रियाकर्म।

गते० अव्य० होले, धीमें।

गत्ते० अव्य० गते।

गत्यर्थ० गु० जिसका अर्थगति है वा जिससे गति का अर्थ पाया जावे।

गथ० ना० पु० माल, दाम।

गद० ना० पु० रोग, आरज:।

गदका० ना० पु० पटा, दगडा विशेष।

गदकारी० ना० स्त्री० गुदगुदी, रोगकारक वस्तु।

गदला॰गु॰ ढबरा, मैला।

गदलाई॰ना॰स्त्री॰मैलापन।

गदप्रचु॰ना॰ पु॰वैद्य,हकीम।

गदा॰ना॰स्त्री॰ सोंटा, लाठी, गुर्ज।

गद॰धर॰गु॰ लाठीवाला, गदा बांधनेहारा, ना॰ पु॰ विशेष श्रीक्षणचन्द्रजी का नाम।

गदायुद्ध॰ना॰ पु॰ लाठी की लड़ाई, गद कीलड़ाई।

गदारि॰ना॰ पु॰ वैद्य,तबीब।

गदेला॰ना॰ पु॰मोटाबिछौना, वा जिसमें बहुत रुई भरकर पहिनते हैं।

गद्गद॰गु॰ हर्षमान, शोक वा आनन्द में मग्न।

गद्दर॰गु॰ अधपका।

गद्दी॰ना॰ स्त्री॰ तकिया वा बिछौना वा आसन वा राजाका सिंहासन, जाति विशेष।

गद्य॰ना॰ पु॰ छन्दबिनाकाव्य, वार्त्तिक।

गधा॰ना॰ पु॰ गदहा।

गन॰ना॰ पु॰ गण।

गनना॰स॰ क्रि॰ गिनना, अ‍ुमार करना।

गन्ध॰ना॰ पु॰ कदमवृक्ष,स्त्री॰ बास, बूय।

गन्धक॰ना॰ पु॰ औषधि विशेष।

गन्धगर्भ॰ना॰ बेलवृक्ष।

गन्धमादन॰ना॰ पु॰ पर्व्वत विशेष।

गन्धमूलक॰ना॰ पु॰ कचूर।

गन्धमूलिनी॰ना॰स्त्री॰ कचूरभेद।

गन्धमूली ना॰ स्त्री॰रासना।

गन्धराज॰ना॰ पु॰ चन्दन, सुगन्धितविशिष्टपुष्प।

गन्धर्व्व॰ना॰ पु॰ देवता, स्वर्ग के गायक।

Digitized by Google

गन्धर्वनगर० ना० पु० सामान्य गन्धर्व लोक, विशेष मुख्य आकाश में जो चित्र विचित्र की मूर्त्तें दृष्टि आती हैं जब देरतक देखने से आंखतिर- मिराजाती है।

गन्धर्वहस्तक० ना० पु० वेल- वृक्ष।

गन्धवह० ना० पु० वायु, पवन, हवा।

गन्धसार० ना० पु० चन्दन।

गन्धा० ना० पु० नागदौन, कदम वृक्ष।

गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सोना।

गन्धायुद्धा० ना० पु० गन्धक।

गन्धार० ना० पु० रागकास्वर विशेष।

गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्योधन की माता, खास जो वा मावमें प्रकाशित होती है, मान तरङ्ग यथा, गन्धारी वा म च्छ न वासी, हस्त जिह्वा, द लगा दृगवासी।

गन्धि० ना० स्त्री० बास, बूय, गन्धक।

गन्धिका० ना० स्त्री० आड्बर।

गन्धिकारिणी० ना० स्त्री० लजालू।

गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो।

गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुग- न्धित तेलबेचनेवारा।

गन्ना० ना० पु० ऊख, गांडा, खूंड।

गप० ना० स्त्री० बक, बकबक।

गपशप० ना० स्त्री० बक, बकबक।

गप्पी० गु० बकवादी।

गभस्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति।

गभीर० गु० गम्भीर।

गभुआर० गु० छल्लेदारबाल, प्रेदायशी बाल

Digitized by Google

गमन० ना० पु० चलन ।

गमनागमन० ना० पु० जाना आना ।

गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली ।

गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला ।

गम्भीर० गु० गहिरा, औगाह ।

गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई ।

गम्य० गु० जाने के योग्य मिलनहार ।

गय०, गयन्द० } ना० पु० हाथी ।

गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थ विशेष जहां हिन्दू लोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं ।

गयाली० ना० पु० गयावाल, गयाके ब्राह्मण ।

ग्यारस० ना० स्त्री० एकादशी ।

ग्यारह० गु० दश और एक ११ ।

गर० ना० पु० रोग, विष, गला ।

गरगरा० ना० अ० क्रि० कुल्ली करना, गरजना ।

गरजना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, शब्द करना ।

गरल० ना० पु० विष, हलाहल ।

गरह० ना० पु० गठियावायु ।

गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली ।

गरारी० ना० स्त्री० रस्सी वा सूतबटने का यन्त्र, कूप से जल निकालने की गोलकाठकी वस्तु ।

गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता गरुवई, अहङ्कार आठ सिद्धि में से एक का नाम ।

गरी० ना० स्त्री० नारियल का गूदा, गुठली ।

गरु० ना० पु० गला ।

गरुड़० ना० पु० पक्षी जो श्री विष्णु का वाहन है ।

Digitized by Google

गरुड़ाग्रज० ना० पु० सूरज का रथवान।

गरुता० ना० स्त्री० गुरुता, बड़प्पन।

गरुत्मान्० ना० पु० गरुड़, सफेदहंस।

गरुव० गु० भारी, बोझिल।

गर्ग० ना० पु० मुनि विशेष जो यदुवंशियों के पुरोहितथे।

गर्गज० ना० पु० टीला, घढ़।

गर्ज० } ना० पु० उत्कटशब्द,
गर्जन० } गड़गड़ाहट।

गर्त्त० ना० पु० गढ़ा।

गर्द्दभ० ना० पु० गदहा।

गर्भ० ना० पु० पेट, आधान, अन्तरापत्य, मध्य।

गर्भकण्टक० ना० पु० कटहल।

गर्भकर० ना० पु० पतिजिया यथापुत्रजीवः गर्भकरः इतिनिघण्टः गु० गर्भकारक।

गर्भदास० ना० पु० मोलकी दासी का बेटा।

गर्भपात० गु० पेटका गिरना, हमल गिरना।

गर्भपाता० ना० पु० रीठा।

गर्भवती० ना० स्त्री० पेटसे गर्भिणी, गाभिन।

गर्भस्राव० ना० पु० गर्भपात

गर्भित० गु० गर्भ अर्थात् पेटमें रहनेवाला।

गर्व० ना० पु० अहङ्कार दम्भ ग़रूर।

गर्ववती० गु० स्त्री० अहङ्कारिन।

गर्वित० गु० अहङ्कारी, मग़रूर।

गर्हित० गु० निन्दित।

गल० ना० पु० गला, फांसी।

गलकना० अ० क्रि० गलना।

गलका० ना० स्त्री० फोड़ा विशेष, खटाई विशेष।

गलगण्ड० ना० पु० गण्डमाला।

गलगल० ना० पु० चकोतरा, पक्षी विशेष।

गलना० अ० क्रि० पिघलना, घुलना।

गलफटाकी० ना० स्त्री० बड़ाई घमण्ड।

गलफड़० } ना० पु० गाल वा
गलफड़ा० } गालों का मांस।

गलवाहु० ना० स्त्री० गोदी।

गलसुई० ना० स्त्री० तकिया, सिराहना।

गलस्तनी० ना० स्त्री० बकरी।

गला० ना० पु० कण्ठ, शब्द।

गलाघोटना० स० क्रि० नट्टी-दाबना, कण्ठतोड़ना।

गलाना० स० क्रि० पिघलाना।

गलाव० ना० पु० पिघलाव।

गलित० गु० पतित, द्रवीभूत, मग्न।

गलियाना० स० क्रि० बुराकहना, गालीदेना, बरबश भोजन कराना, वा औषधि घूंसना।

गली० ना० स्त्री० छोटामार्ग।

गंव० ना० स्त्री० दाव, घात, मौक़ा, लाभ।

गवन० ना० पु० गमन।

गवरि० } ना० स्त्री० पार्वती।
गवरी० }

गवलद० ना० पु० भैंसा।

गवादिनी० ना० स्त्री० इन्द्र-वारुणी।

गवास० ना० पु० कसाई, म्लेच्छ।

गवाच्छ० ना० पु० झरोखा, मुखवासर।

गवेधुका० ना० स्त्री० गंगेरुआ।

गवैया० ना० पु० गायक, गानेवाला।

Digitized by Google

गव्य० पु० जो गायसे सम्बन्ध रखता हो यथा, दुग्ध आदि।

गसना० अ० क्रि० बन्धना, घिरना, रुकना।

गहगह० पु० घना, ज़ोर से।

गहन० ना० पु० भारी, ग्रहण, पकड़ना, दुःख, निष्फल, बन।

गहना० स० क्रि० पकड़ना, ग्रहण करना, ना० पु० ज़ेवर, गिरवीं, भूषण।

गहनी० ना० स्त्री० सनदरास, कालापत्ती।

गहरा० ना० पु० गम्भीर।

गहरू० ना० पु० ढील, देर।

गह्वर० } गु० अबरा, रोआसा,
गह्वर० } घना, कठिन।

गा० अव्य० गया।

गांजा० } ना० पु० वृक्ष विशेष
गांझा० } कोपत्तीवा रसआदि।

गांठना० स० क्रि० बांधना, वशमें लाना, सीवना।

गांठि० ना० स्त्री० ग्रन्थि, गिरह।

गांड़० ना० स्त्री० गद्दा, कून, गुड्डी मिट्टी की जो कूप में लगाते हैं।

गांडर० ना० स्त्री० तृणविशेष।

गांडा० ना० पु० इक्षु, गन्ना, ऊख।

गांडू० ना० पु० भवंसिया, लतिया, चुल्ली।

गांव० ना० पु० ग्राम, पुर।

गांवना० स० क्रि० गाना।

गांसना० स० क्रि० बिरमाना, घेरना, बरमाना, पिरोना।

गांसी० ना० पु० तीरकाफल, लोहा जो तीरमें लगाते हैं।

गागर० ना० स्त्री० गगरी, कलसी, घड़ा।

Digitized by Google

गाङ्गेय० ना० पु० भीष्म, सुवर्ण।

गाछ० ना० पु० वृक्ष।

गाज० ना० स्त्री० झाग, फेना, बिजुली, वज्र।

गाजना० अ० क्रि० हर्षित होना, गरजना।

गाजर० ना० स्त्री० मूलविशेष।

गाजाबाजा० ना० पु० नाना प्रकार से बाजा का शब्द।

गाड़० ना० पु० गड़हा, गढ़ा, गर्त्त।

गाड़ना० स० क्रि० तोपना, समाधि देना, मिट्टी देना, लगाना।

गाड़ा० ना० पु० घात, गड़हा, गाड़ी।

गाड़ी० ना० स्त्री० छकड़ा, लढ़ी, रथ।

गाढ़० ना० स्त्री० जञ्जाल, विपत्ति।

गाढ़ा० गु० मोटा, चतुर, कठिन, ना० पु० कपड़ा विशेष।

गाण्डीव० ना० पु० नाम उस धनुष का है जो अग्निदेवने अर्जुनको दिया है।

गाण्डीवधर० ना० पु० अर्जुन, पाण्डु पुत्र।

गात० ना० पु० शरीर, तन, देह।

गाता० ना० पु० काग़ज़ जिससे पुस्तक की जिल्द बनाते हैं।

गाती० ना० स्त्री० एक प्रकार की चादर का बांधना, पट्टू, ऊर्णावस्त्र।

गात्र० ना० पु० शरीर, देह।

गायक० ना० पु० गायक।

गाथना० स० क्रि० गूंधना, गाना।

गाथा० ना० स्त्री० कथा, समाचार।

गाद० ना० स्त्री० तरछट, गोंद।

गादी० ना० स्त्री० गद्दी।

Digitized by Google

गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता।

गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्र मुनि।

गाधिसुत० } ना० पु० विश्वामित्रमुनि।
गाधेय० }

गान० ना० पु० गीत, राग, भजन।

गाना० स० क्रि० अलापना, तानभरना।

गान्धार० ना० पु० राजा विशेष, रागका स्वर विशेष।

गाभ० ना० पु० गर्भ।

गाभा० ना० पु० केले के वृक्ष का नयापचा, नयापत्ता।

गाभिन० ना० स्त्री० गर्भिणी।

गाम० ना० पु० गांव।

गामी० गु० चलनेवाला, रमने वाला।

गाम्भीर्य्य० ना० पु० गम्भीरता।

गाय० ना० स्त्री० गौ।

गायक० ना० पु० गवैया, गानेवाला।

गायत्री० ना० स्त्री० मन्त्र विशेष, छन्द, कत्था, महासिद्धि।

गायन० ना० पु० गवैया, गानेवाला।

गार० ना० स्त्री० गाली।

गारना० स० क्रि० निचोड़ना, धोना।

गार्हपत्य० ना० पु० अग्नि-भेद।

गारा० ना० पु० भीति बनाने के लिये बनाई हुई मिट्टी।

गारी० ना० स्त्री० गाली।

गारुड़ि० सांपु, सांप का विष झारनेवाला, सूर काव्येयथा, हावभाव गारुड़ीपुकारतआवत अ-छरिन जात कहीरी।

Digitized by Google

गारुत्मत॰ ना॰ पु॰ पन्ना।

गाल॰ ना॰ पु॰ कपोल, रूख़ बात।

गालव॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष।

गाला॰ ना॰ पु॰ रुई की फली, धुनीरुई रुईकागोला।

गाली॰ ना॰ स्त्री॰ अपमानका बोधक वाक्य, उखली।

गाह॰ ना॰ पु॰ ग्राह।

गाहक॰ ना॰ पु॰ ख़रीददार,

गाहना॰ स॰ क्रि॰ ढूंढना, दाबना, थाह लगाना, मांडना।

गाहा॰ गु॰ गाथा, अवगाह, कथा, ना॰ पु॰ छन्द विशेष।

गाहिगाहि॰ गु॰ ढूंढिढूंढिके।

गाही॰ ना॰ स्त्री॰ पांच, मांडी, याही ऊई।

गिंजाई॰ ना॰ स्त्री॰ कीट विशेष।

गिचपिचिया॰ ना॰ पु॰ कच-पिचिया।

गिडगिडाना॰ स॰ क्रि॰ घिघिआना, खुशामदकरना।

गिद्ध॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष, किरगिस।

गिनती॰ } ना॰ स्त्री॰ गणित,
गिन्ती॰ } गिन्ती, शुमार।

गिन्दुक॰ ना॰ पु॰ गेंद।

गिन्ना॰ स॰ क्रि॰ गणन, गिन्ती करना।

गिरगिट॰ ना॰ पु॰ सरट, ककलास।

गिरना॰ अ॰ क्रि॰ पड़ना।

गिरपड़ना॰ अ॰ क्रि॰ कूदपड़ना, झुकपड़ना।

गिरा॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती, वा देवता वाणी।

गिराना॰ स॰ क्रि॰ औंधाना, पटकना, छलकाना।

गिरि॰ ना॰ पु॰ अद्रि, पर्वत, पहाड़।

Digitized by Google

गिरिकद्रक॰ना॰ पु॰ मद्दा, नींब ।

गिरिज॰ना॰ पु॰ शिलाजित ।

गिरिजा॰ना॰ स्त्री॰ पार्वती ।

गिरिजानन्द॰ना॰ पु॰ गणेशजी ।

गिरिधर॰ } गु॰ पर्व्वतउठाने
गिरिधारी॰ } वाला, ना॰ पु॰ श्रीकृष्ण चन्द्रजी, श्री हनुमान ।

गिरिनाथ॰ना॰ पु॰ श्रीशिवजी, सुमेरु, हिमाचल, हिमालय ।

गिरिर॰ना॰ पु॰ लड़का ।

गिरिराज॰ना॰ पु॰ श्रीशिवजी, हिमालय, गोवर्द्धन, सुमेरु, श्रीकृष्णजी ।

गिरिवर॰ना॰ पु॰ पर्वत, पहाड़ ।

गरिहृष्ट॰ना॰ स्त्री॰ गेहू ।

गिरिसाह्वय॰ना॰ पु॰ शिलाजीत ।

गिरीश॰ना॰ पु॰ श्रीसदाशिव, सुमेरु, हिमालय ।

गिलट॰ना॰ स्त्री॰ नसों की गांठि ।

गिलहरी॰ना॰ स्त्री॰ जीव विशेष जो वृक्षोंपर रहता है ।

गिलोय॰ना॰ स्त्री॰ गुरच ।

गीजना॰स॰ क्रि॰ मलना ।

गीत॰ना॰ पु॰ राग, गान ।

गीता॰ना॰ पु॰ कथा, अध्यात्मज्ञान, वा जिसपुस्तक में अध्यात्मज्ञान होवे, यथा भगवद्गीता, रामगीता।

गीदड़॰ ना॰ पु॰ शृगाल, सियार ।

गीर्वाण॰ना॰पु॰ अमर, देवता।

गीला॰गु॰ ओदा ।

गीष्पति॰ना॰ पु॰ वृहस्पति ।

Digitized by Google

गुग्गुल० ना० पु० गूगुल।

गुङ्ग०
गुङ्गा० } गु० गूंगा, बावला।

गुच्छा० ना० पु० घौर, घोंचा, बाल, पोट।

गुजरात० ना० पु० देशविशेष।

गुह्य० गु० छुपा, पोशीद:।

गुह्यक० ना० पु० यक्ष, कुबेर के दूत।

गुह्यकपति० ना० पु० कुबेर।

गुह्यस्थल० ना० पु० एकान्त स्थान, वा छुपा अङ्ग, यथा, भग।

गुञ्ज० ना० स्त्री० गुञ्जा, घुंघची।

गुञ्जरना० अ० क्रि० दहाड़ना, गूंजना।

गुञ्जान० गु० गाढ़ा, मोटा, घना, फारसी का शब्द है।

गुञ्जार० ना० पु० शब्द, दहाड़, गूंज।

गुञ्जारना० अ० क्रि० झंकना, गूंजना, शब्दकरना।

गुटकना० अ० क्रि० कुकुकरना, कपोत का बोलना, निगलना।

गुटका० ना० पु० पुस्तकविशेष, वस्तुविशेष जिसको योगी मुखमें रखकर लोप होजाते हैं मिठाई विशेष, चांदी की वस्तु विशेष जो मृतक की क्रिया में लगता है, छोटी पोथी।

गुटकाना० स० क्रि० कपोत को बुलाना।

गुटको० ना० स्त्री० हाथ पांव समेटना।

गुटिका० ना० स्त्री० गोला।

गुठली० ना० स्त्री० फल का बीज।

Digitized by Google

गुड० ना० पु० ईख का जमा हुआ रस, मिष्टान्न।

गुड़गुड़ाना० स० क्रि० गड़गड़ाना।

गुड़गुड़ी० ना० स्त्री० छोटा हुक्का।

गुड़पुष्पक० ना० पु० ऊख, गन्ना।

गुडपुष्प० } ना० पु० महुआ।
गुडफूल० }

गुडा० ना० पु० अङ्कुर, दाख।

गुडाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदा शिवजी।

गुडाना० स० क्रि० खुदाना, खुदवाना।

गुड़िया० ना० स्त्री० खिलौना, कपड़ों की पुतली।

गुडूची० ना० स्त्री० गुरच।

गुड्डी० ना० स्त्री० कनकौआ।

गुढी० ना० पु० छुपने का स्थान।

गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता, विद्या, डोल, कृपा, रस्सी, धनुष की पञ्च, चरित्र, यहसान।

गुणक० ना० पु० जिस अङ्क से गुणन करें।

गुणद० गु० गुणदाता, लाभकारी।

गुणन० ना० पु० गुणाकरना, ज़रब।

गुणना० स० क्रि० विचारना, गुणन करना।

गुणवती० गु० माला, गुणवान।

गुणवाचक० गु० गुणबतानेवाला।

गुणवान० गु० प्रवीण, पुण्यवान्।

गुणज्ञ० गु० गुणी, ज्ञाता, चतुर।

गुणी० गु० प्रवीण, पुण्यवान, विद्वान्, विचारी, ना० पु० सपेरा।

Digitized by Google

गुण्य० ना० पु० जिसअङ्क को गुणाकरे।

गुथना० अ० क्रि० पिरोना।

गुथवां० गुथाहुआ।

गुद० ना० स्त्री० मूलस्थान, गांड़, गुदा।

गुदगुदाना० अ० क्रि० सहलाना, चुलचुलाना।

गुदगुदाई० ना० स्त्री० सहलाहट, सुरसरी।
गुदगुदाहट०
गुदगुदी०

गुदड़ी० ना० स्त्री० तागाहुआ वस्त्र, गुज़री, चौक बाज़ार।

गुदा० ना० स्त्री० मूलस्थान, गांड़।

गुदाभञ्जन० ना० पु० गांड़मारना, इगलाम।
गुदमर्दन०

गुन० ना० पु० गुण।

गुनगाहक० ना० पु० गुण का चाहने वा जाननेवाला, विद्या का प्रतिपालक।

गुनगुनाना० अ० क्रि० थोड़ा गरमहोना, औरनाकसे बोलना।

गुनवन्त० गु० गुणवान।
गुनवान्०

गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कसूर, रामायणेयथा, गुनह लषन करहम पररोषू, कतहु सुधाईं ते बड़दोषू।

गुनानि० ना० स्त्री० मनमें कल्पना करना।

गुनी० गु० गुणी।

गुन्थनि० ना० स्त्री० गूंधनी, पोहावट।

गुप्त० गु० लुका, छुपा।

गुप्तार० ना० पु० छुपना, लुकना, लुकाव।

Digitized by Google

गुप्तारघाट० ना० पु० अयोध्याजीमें स्थान विशेष।

गुप्ती० ना० स्त्री० खङ्गविशेषजो सेोटे में रखते हैं।

गुफा० ना० स्त्री० खोह, कन्दरा।

गुभाना० स० क्रि० चुभाना, गाड़ना।

गुमटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, कलसी।

गुराई० ना० स्त्री० बड़प्पन, गोरापन।

गुरु० ना० पु० आचार्य, शिक्षक, वृहस्पति, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, गु० भारी बड़ा, गरुआ।

गुरुतर० गु० अत्यन्त भारी, अत्यन्त मान्य।

गुरुता० ना० स्त्री० बड़प्पन, आचार्य्यता।

गुरुपाक० ना० पु० जो वस्तु बहुतदेरमें पचे।

गुरुमुख० ना० पु० जिसने गुरु किया हो, शिक्षा वा इष्टदेव का मन्त्र गुरु से लिया, चेला।

गुरुमुखहो० ना० अ० क्रि० चेलाहोना, गुरु से इष्टदेवता का मन्त्र पाना।

गुरुवाइन० ना० स्त्री० गुरु को पत्नी।

गुरुवार० ना० पु० वृहस्पतिवार, जुमअरात।

गुर्जर० ना० पु० गुजराती वा गुजरात देशविशेष।

गुर्वादित्य० ना० पु० जब सूर्य और वृहस्पति एक राशि के होजाते हैं वह समय।

गुर्विणी० गु० स्त्री० गर्भवती, हामिलः।

गुल० गु० बुझना, दीपक का ठण्ढा होजाना।

गुलगुला० ना० पु० पकवान विशेष।

गुलाई०ना० स्त्री० गोलता, गोलाई।
गुलाब०ना० पु० वृत्त वा उसके फूलों का रस तत्व।
गुलाल०ना० पु० अबीर, बूका जो प्रियतम के ऊपर डालते हैं।
गुलिक०ना० पु० मोती।
गुलिया०ना० स्त्री० सिरके पोके का गड्ढा।
गुलेल०ना० स्त्री० धनुष जिसमें गुल्ला चलाते हैं।

गुल्पाल०ना० पु० गुलेल।
गुल्फ०ना० स्त्री० फीली, एड़ी के ऊपर का भाग।
गुल्म०ना० पु० रोग विशेष, गुलाब, झाड़।
गुल्ला०ना० पु० गुलेला, माटी का छोटा गोला।
गुल्लाला०ना० पु० फूल विशेष यह शब्द फ़ारसीका है।
गुवाक०ना० पु० सुपारी का वृक्ष।
गुआलियर०ना० पु० देश वा नगर विशेष।
गुष्टि०ना० स्त्री० सम्मति, सलाह, मित्रता।
गुह०ना० पु० स्वामि कार्त्तिक, निषाद, मल।
गुहना०स० क्रि० गूथना।
गुहा०ना० स्त्री० गुफा, कन्दरा।
गुहाना०स० क्रि० गुथवाना।
गुहारि०ना० पु० ताड़कासुर, ना० स्त्री० सहायता, सहाय, मदद।
गू०ना० पु० गूह, विष्टा।
गूंगा०गु० मूक, जो बात न कर सके, ना० पु० दृषादिया डाट, मिठाई विशेष।
गूंज०ना० स्त्री० शब्द, भिन भिनाहट।
गूंजना०अ० क्रि० गुंजरना, भिन भिनाना।

गूंथना० } स० क्रि० पिरोना,
गूंदना० } लड़ियाना ।

गूंदनी० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष काफल जो पश्चिम में ग्रीष्म कालमें होता है ।

गूंधना० स० क्रि० सानना, गूंथना, बिनना ।

गूजर० ना० पु० नीचजाति विशेष ।

गूजरी० ना० स्त्री० गूजर की स्त्री, गहना विशेष जो पांवमेंपहिनाजाताहै ।

गूढ़० गु० सूक्ष्म, कठिन, गुप्त, भीतर ।

गूढ़गिरा० ना० स्त्री० गुप्तवाणी, गोलबात, कठिनवचन ।

गूढ़ता० ना० स्त्री० सूक्ष्मता, कठिनता, छिपाव ।

गूढ़पत्र० ना० पु० करील, नागफली ।

गूढ़पा० } ना० पु० सांप, यथा
गूढ़पात्० } कुण्डलीगूढपाच्चक्षुः श्रवाः काकोदरः फणी इत्यमरः ।

गूढ़ार्थ० गु० गुप्तअर्थ, कठिनअर्थ ।

गूद ड़० ना० पु० पुरानाकपड़ा ।

गूदा० ना० पु० भेजा, फल का सारांश ।

गूप्त० गु० गुप्त, छिपा ।

गूमड़ी० ना० स्त्री० } गांठि ।
गूमड़ा० ना० पु० }

गृञ्जन० ना० पु० प्याज़, लहसुन, गांजा, गाजर वा गाजर का साग यथा, लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्द रसोनकः इत्यमर पलाण्डु विड्वराहश्च छत्राकग्राम कुक्कुटं लशुनं गृञ्जनं चैवभुक्त्वा चान्द्रायणंचरेत्, इतिमनोज सुन्दरे ।

गृध्र॰ ना॰ पु॰ गिद्ध।

गृष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ बाराही कन्द।

गृह॰ ना॰ पु॰ घर।

गृहकन्या॰ ना॰ स्त्री॰ घीकुवारि।

गृहगोधिका॰ ना॰ स्त्री॰ बिस्तुइया, छपकली।

गृहस्थ॰ ना॰ पु॰ दूसराआश्रम, घरवाला।

गृहस्थाश्रम॰ ना॰ पु॰ गृहस्थ का व्यवहार।

गृहस्थी॰ ना॰ स्त्री॰ गृहस्थका धर्म्म।

गृहिणी॰ ना॰ स्त्री॰ घरनी, भार्य्या, जोरू, चोखट।

गृही॰ ना॰ पु॰ गृहस्थ।

गृह्य॰ गु॰ जो ग्रहण करने के योग्य है।

गेंडका॰ ना॰ पु॰ गेंदा।

गेंद॰ ना॰ स्त्री॰ खेलने के लिये कपड़े वा सूतआदि का गोला।

गेंगटा॰ ना॰ पु॰ केकड़ा, सरतान।

गेगली॰ ना॰ स्त्री॰ बोदली।

गेडुआ॰ ना॰ पु॰ तकिया, सिरहाना, और टोंटीदार लोटा।

गेरू॰ ना॰ स्त्री॰ गैरिक, लालमिट्टी।

गेरुआ॰ गु॰ गेरूकारंगा भया।

गेरुई॰ ना॰ स्त्री॰ जोगेंहुओं में सरदी के कारण गेरुरङ्गका रोगहोजाता है गु॰ गेरूका रङ्ग।

गेह॰ ना॰ पु॰ घर, तलाश, चाह।

गेहूं॰ ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

Digitized by Google

गेरुआ० गु० गेरू के रङ्ग, ना० पु० घासविशेष।

गैंडा० ना० पु० जन्तु विशेष जिसकी हड्डी अतिपवित्र होती है उसके अंगूठी छल्ले और तर्पण करने के पवित्र अर्घेका पात्र बनता है।

गैया० ना० स्त्री० गाय।

गैरिक० ना० स्त्री० गेरू, पर्वत कीलाल मिट्टी।

गैरेय० ना० पु० शिलाजीत।

गैल० ना० स्त्री० बाट, मार्ग।

गो० ना० पु० पद, कूप, जल, वज्र, स्वर्ग, खग, छन्द, ना० स्त्री० गाय, किरण, इन्द्रियां, दशा।

गोंडली० ना० स्त्री० वृक्षविशेष।

गोंद० ना० पु० लासा, चेप।

गोंदनी० ना० स्त्री० नरकट विशेष।

गोंदा० ना० पु० मिट्टी का गिलावा, चिडियाके बनाने के लिये लोई वा पेड़ा।

गोई० स० क्रि० भू०, छुपाई, छुपी, ना० स्त्री० दो बैलादि के जोडको कहते हैं।

गोकण्टक० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष वा फल।

गोकर्ण० ना० पु० वितस्ति, मृगविशेष, खच्चर, गौका कान, सांप, और शिव जी का स्थानप्रसिद्ध।

गोकर्णनाथ० ना० पु० श्री शिवजी वा तीर्थवि०।

गोकुल० ना० पु० नगरीविशेष, गौका कुल।

गोकुलेश० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र।

गोखुरु० ना० पु० गोखुर, भूषण विशेष।

गोचना० स० क्रि० पकड़लेना, गेहूं चना।

गोचर० ना० पु० समझ, इन्द्रिय ज्ञान, गु० समझा।

गोचरी० ना० स्त्री० दर्शी, प्रकट।

गोजर० ना० पु० कनखजूरा।

Digitized by Google

गोजिका० } नाο स्त्रीο
गोजिह्वा० } गोभी ।

गोट० नाο स्त्रीο चौपड़आदि खेलने की गुटिका, अमलपत्ती, किनारी ।

गोटा० नाο पुο किनारी ।

गोटी० नाο स्त्रीο शीतला, माता, चेचक ।

गोड़० नाο पुο पांव, पिंडली, गुο खुदाव ।

गोड़ना० सο क्रिο खोदना, खुरचना ।

गोड़िया० नाο पुο कहार, जाति विशेष ।

गोड़ी० नाο स्त्रीο चोरी ।

गोण० नाο पुο तोरया, आखा, बोरा ।

गोत० } नाο पुο गोत्र ।
गोता० }

गोती० नाο पुο गोबर, गोमल, गुο गोत्रवाला ।

गोद० नाο स्त्रीο कनियां, गोदी, राशि ।

गोदना० सο क्रिο चोंकना, चिह्न देना ।

गोदा० नाο पुο निशान, चिह्न, दबका ।

गोदावरी० नाο स्त्रीο नदी विशेष जो दक्षिण में है ।

गोदी० नाο स्त्रीο अंकवार, कोला, कनियां ।

गोदोहनी० नाο स्त्रीο दोहनी ।

गोधन० नाο पुο गोबर, गायका धन, गोमलकी प्रतिमा जो दीवाली को बनाते हैं ।

गोधूम० नाο पुο गेहूं, गोहूं ।

गोधूलि० } नाοस्त्रीο सायङ्काल, सन्ध्या ।
गोधेरा० }

गोन० } नाο स्त्रीο गोण ।
गोनी० }

Digitized by Google

गोप० ना० पु० ग्वाला, कण्ठ का भूषण, छुपा ।

गोपग्वाल० ना० पु० अहीर ।

गोपद० ना० पु० गायकाखुर ।

गोपन० ना० पु० छुपाव, लुकाव ।

गोपनीय०, गोप्य० गु० छुपाने के योग्य ।

गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर ।

गोपाल०, गोपाल० ना० पु० ग्वाल, अहीर, श्रीकृष्णचन्द्र ।

गोपालपुर० ना० पु० मथुरा जीवा जहांगङ्गाजीऔर गोमती का सङ्गम भया है ।

गोपिका०, गोपी० ना० स्त्री० ग्वालों की स्त्रियां ।

गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।

गोबर० ना० पु० गायकीविष्टा, गोमल ।

गोबरगनेश० गु० मोटा, भद्द, भोंडा ।

गोबरी० ना० स्त्री० मिट्टीऔर गोबर मिलाकेश्रालोपन के लिये बनाते हैं ।

गोभा० ना० पु० कल्ली, नईशाखा ।

गोभी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, तरकारी विशेष ।

गोमका० ना० पु० कुम्हडा, यथा पुष्पफलामहाफला गोमका राज कर्कटी, इतिनिघण्टे ।

गोमती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।

गोमय०, गोमल० ना० पु० गोबर ।

गोरटी० ना० स्त्री० गोरीस्त्री, सुन्दरी ।

Digitized by Google

गोरमदायन० ना० पु० इन्द्र-धनुष जो वर्षा में निकला करता है और सूर्य के सम्मुख होता है, रामचन्द्रिकायां, धनु है यह गोरमदायन नाहीं। शर-धारव है जलधार इथा हीं।

गोरस० ना० पु० इन्द्रियों का स्वाद, दूध, दही, मट्ठा, छाछ आदि।

गोरसदायन० ना० पु० गोर-मदायन।

गोरसी० ना० स्त्री० दोहनी।

गोरख० ना० पु० नारङ्गी।

गोरा० गु० गौर, उज्ज्वल।

गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी।

गोरू० ना० पु० गाय बैल।

गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न पीतवस्तु, वा गाय के शिर में से उत्पन्न औषधि विशेष।

गोल० गु० गोल, चक्करीला, ना० पु० मटका।

गोलक० ना० पु० पति के मरने के उपरान्त जार जात पुत्र, आंख का घर।

गोलकुण्डा० ना० पु० नगर विशेष दक्षिण में है।

गोलता० ना० स्त्री० गोलाई।

गोलरूप० गु० गोलाकार।

गोला० ना० पु० गोल वस्तु, खाता, धरन, लोहे का पिण्डा, जङ्गली कबूतर और नारियल का गूदा।

गोलाई० ना० स्त्री० परिधि, घेरा, गोलपन।

गोलाकार० गु० गोलरूप।

गोलाध्याय० ना० पु० सिद्धान्त शिरोमणि का एक प्रकरण।

गोलिका० ना० स्त्री० पति के मरने के उपरान्त जार-जात कन्यका, गोली।

Digitized by Google

गोली० ना० स्त्री० छोटा गोला।

गोलोक० ना० पु० श्री कृष्णचन्द्र का विशेष स्थान।

गोलोमा० ना० स्त्री० बच औषधि।

गोवना० स० क्रि० छुपाना, भूत क्रिया, गोई।

गोवर्द्धन० ना० पु० पर्वत विशेष जो ब्रज में है।

गोविन्द० ना० पु० कृष्णचन्द्र, वेद लभ्य।

गोविन्दचन्द्रिका० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष।

गोशाला० ना० स्त्री० गाय बैल रहने का घर।

गोष्ठ० } ना० स्त्री० बांधनू,
गोष्ठी० } मेल, सम्मत, सलाह।

गोष्पद० ना० पु० गायकाखुर।

गोसांई० ना० पु० ईश्वर, तपी, सन्तों का मार्ग।

गोसैयां० ना० पु० ईश्वर, परमात्मा।

गोस्तनी० ना० स्त्री० दाख, अङ्गूर।

गोह० ना० स्त्री० बिसखपरा के डौल का जीव।

गोहरा० ना० पु० उपला।

गोहार० ना० स्त्री० कुलाहल रौला, सहायता, मदद।

गोहूं० ना० पु० गेहूं, गोधूम, अन्न विशेष।

गोहुअन० ना० पु० सर्प विशेष।

गोत्तुर० ना० पु० गोखुरू, पौधा विशेष।

गोत्र० ना० पु० वंश, घराना, संज्ञा, पर्व्वत।

गोत्रघात० } ना० पु० निज कुल
गोत्रबध० } का मनुष्य मारना।

गोत्रज० ना० पु० गोती, सम्बन्धी, अपने घराने का।

गोत्रा० ना० स्त्री० धरती।

गोत्री० ना० स्त्री० गोतज।

गौ० ना० स्त्री० गाय।

Digitized by Google

गौं० ना० स्त्री० दाव, घात, औसर, लाभ।

गौंगीर० गु० घाती, दाव खेलने हारा।

गौगोड़० ना० पु० जब गाय ब्यानी दूध नहीं देती है तब ग्वाल उसको योनि में हाथ डालकर खड़ी करते हैं।

गौड़० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण विशेष, कायस्थ जाति विशेष।

गौड़िया० ना० पु० गौड़ देश वासी, चैतन्य का शिष्य।

गौडी० ना० स्त्री० गुड़ की मदिरा, जहां गाइयां खड़ी होती हों।

गौण० गु० जो मुख्य नहीं, अर्थात्, अप्रधान।

गौतम० ना० पु० मुनि विशेष, पर्व्वत विशेष।

गौधन० ना० पु० गाय का स्तन।

गौदन्ती० ना० पु० हरताल वा, औषधि विशेष।

गौदान० ना० पु० गाय का दान।

गौना० ना० पु० विवाह कर-के थोड़े दिनों में स्त्री को अपने घर लाना।

गौनहा० } ना० पु० गौने में
गौनहार० } दूलह के साथी।

गौमली० ना० पु० गोरोचन।

गौर० ना० पु० धवहत्त, जाति विशेष, चिट्टा शुक्ल वर्ण।

गौरक० ना० पु० तीतर पची, गेहू।

गौरगड० ना० पु० गोरा।

गौरी० ना० स्त्री० भवानी, पार्व्वती।

गौरव० ना० पु० बड़प्पन गुरुताई।

गौरा० ना० पु० चटक, चिड़ा, स्त्री० पार्व्वती।

Digitized by Google

गौरिया॰ ना॰ स्त्री॰ चिड़िया।

गौरिला ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।

गौरी॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष, हल्दी, रात, पार्वती, तुलसी, गोरोचन।

गौशाला॰ ना॰ स्त्री॰ गाइयों का स्थान।

ग्रथित॰ गु॰ बंधा हुआ, पिरोया हुआ।

ग्रन्थ॰ ना॰ पु॰ पुस्तक, पोथी, शास्त्र।

ग्रन्थकार॰ ना॰ पु॰ ग्रन्थकर्त्ता, कवि।

ग्रन्थि॰ ना॰ पु॰ महामुगडी, केला वृत्त।

ग्रन्थि॰ ना॰ स्त्री॰ गांठि।

ग्रन्थिक॰ ना॰ पु॰ पीपरामल।

ग्रन्थिमान्॰ ना॰ पु॰ हरसिंघाड़।

ग्रन्थिल॰ ना॰ पु॰ कांकड़ वृत्त, करील।

ग्रस्त॰ गु॰ शब्द जो चबाय के कहा गया, खाया गया, घिरा हुआ।

ग्रह॰ ना॰ पु॰ सूर्य्यादि नव ग्रह, घर।

ग्रहण॰ ना॰ पु॰ हाथ मेंलेना, अङ्गीकार, चन्द्रमा सूर्य का गहन।

ग्रहस्थापन॰ ना॰ पु॰ नवग्रहों को बैठाय के उनको आवाहन करना।

ग्रहीता॰ गु॰ ग्रहण करनेहारा,

ग्राम॰ ना॰ पु॰ गांव, पुर, रूखी बात, समूह, रामचन्द्रिका यां गिरि ग्राम ले ले हरि ग्राम मारैं, मनो पद्मिनी पथ दन्ती बिदारैं।

ग्रामनर॰ ना॰ पु॰ गवांर, गांववासी।

Digitized by Google

ग्राम्य० गु० गांव में जो उत्पन्न भया।

ग्रामीण० ना० पु० गांव में बसने हारा, गवांर।

ग्राव० ना० पु० पत्थर, पर्व्वत।

ग्रास० ना० पु० कौर, लुक़मा।

ग्रासक० गु० घेरने वाला, रोकने हारा।

ग्रासना० स० क्रि० घेरना, रोकना।

ग्रासित० गु० घेरा गया।

ग्राह० ना० पु० मगर, नाका।

ग्राहक० गु० ग्रहण करने हार, अङ्गीकार कर्त्ता।

ग्राही० गु० गाहक, लेने वाला, स्त्री० मालिन।

ग्राह्य० गु० जो ग्रहण करने के योग्य है।

ग्रीवा० ना० स्त्री० गला, गर्द्दन, गले का पृष्ठ भाग।

ग्रीष्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी।

ग्रैवेय० ना० पु० गले का गहना, हसली, माला आदि।

ग्लानि० ना० स्त्री० घृणा, लाज सकाई।

ग्वाल० } ना० पु० पशुपालक
ग्वाला० } अहीर।

ग्वालिन्० ना० स्त्री० अहीरन्।

ग्वैंड० अव्य० समीप, पास।

ग्वैंडा० ना० पु० नगर, वा गांव का आस पास।

[घ]

घंघोरना० } स० क्रि० मथना
घंघोलना० } मिलाना, धोना।

घंघरी० ना० स्त्री० लहंगा।

घट० ना० पु० देह, मन।

घटक० ना० पु० मध्यस्थ, बिचवैया, सन्देसी।

घटज० ना० पु० अगस्त्यमुनि।

घटना० अ० क्रि० मन्दा होना, कम होना, योग्य होना।

Digitized by Google

घटनीय० गु० जो घटने के योग्य है।

घटयोनि० ना० पु० अगस्त्यमुनि।

घटा० ना० स्त्री० मेघों का उमड़ना, मेघ, भीड़, टोटा, मधु का कढ़ी।

घटाटोप० ना० पु० पालकी, वा रथका आच्छादन, गिलाफ़, चारों ओर से घिरना।

घटाना० स० क्रि० कम करना।

घटाव० ना० पु० कमती।

घटावना० स० क्रि० घटाना।

घटिका० ना० स्त्री० घड़ी, मुहूर्त्त, एड़ी के ऊपर का भाग।

घटित० गु० योग्य, गम्य।

घटिया० गु० थोड़े मोल का, सस्ता, घाटि देने हारा, धोखादेने हारा, कपटी।

घटी० ना० स्त्री० च्ति, हानि, कमी, घड़ी।

घट्यादि० ना० स्त्री० घड़ी आदि।

घड़घड़ाना० अ० क्रि० गरजना।

घड़ा० ना० पु० कुम्भ, घट, कलश मिट्टी का।

घड़िया० ना० स्त्री० कुल्हिया, मधुमक्खी का छत्ता, कोख, पियाली।

घड़ियाल० ना० पु० मगर, ग्राह, घण्टा।

घड़ियाली० गु० घण्टाबजाने हारा।

घड़ी० ना० स्त्री० साठि पल, समय मापने का यन्त्र विशेष।

घड़ौंच० ना० पु० }
घड़ौंची० स्त्री० } तिकठी, तिपाई, पानी का घड़ा रखने के लिये काष्ठ रचितवस्तु।

घणा० गु० घना।

घण्टा० ना० स्त्री० बाजा विशेष। घड़ारी दण्ड।

Digitized by Google

घण्टालिका० ना० स्त्री० मधुककड़ी, घण्टी।

घण्टाली० ना० स्त्री० छोटा घण्टा।

घन० ना० पु० घटा, मेघ, गु० घना, दृढ़, विस्तार, मूर्त्ति, ना० पु० लोहारका बड़ा हथौड़ा।

घनक० ना० पु० सभालू पौधा।

घनगरज० ना० पु० गर्जन, गु० ऊंचा शब्द।

घनघनाना० अ० क्रि० झन झनाना, झहराना।

घनघोर० ना० पु० घटा घेरा, घन गरज।

घनतनवर्ण० गु० जिस का वर्ण मेघ के समान हो, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

घनरस० ना० पु० जल, पानी।

घनश्याम० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी, गु० कालीघटा।

घनस० ना० पु० पक्षी विशेष।

घनसार० ना० पु० कपूर, जल, चन्दन।

घना० गु० पिचपिच बहुत।

घनासन० ना० पु० भैंसा।

घनाङ्ग० ना० पु० नागरमोथा।

घनेरा० गु० बहुत, अधिक।

घबराना० अ० क्रि० व्याकुल होना, हड़बड़ाना।

घबराहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, हड़बड़ी।

घमण्ड० ना० पु० गर्व्व, अहङ्कार, ग़रूर।

घमण्डी० गु० अहङ्कारी, मग़रूर।

घमरौल० ना० स्त्री० रौला भीड़।

घमसान० ना० पु० युद्ध, लड़ाई।

घमाघम० गु० कचाकच।

घमाना० स० क्रि० धूपदिखाना धूपमें खड़ा होना।

घमासान० ना० पु० घमसान।

Digitized by Google

घमोई॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।

घर॰ ना॰ पु॰ गृह, मकान।

घरनई॰ ना॰ स्त्री॰ चोघड़ा, बेड़ा।

घरना॰ स॰ क्रि॰ गढ़ना।

घरनी॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री।

घरबार॰ ना॰ पु॰ घराना।

घरदारी॰ ना॰ स्त्री॰ गृहस्थ।

घराना॰ ना॰ पु॰ कुटुम्ब, घर-के लोग।

घरामी॰ ना॰ पु॰ छवैया।

घरी॰ ना॰ स्त्री॰ लपेटे हुये कपड़ों की गठरी, तह लगे हुये कपड़े, घड़ी।

घरैला॰ गु॰ घरका पालतू।

घरौंदा॰ } ना॰ पु॰ छोटाघर
घरौर॰ } जो लड़के खेलने
घरौआरा } के लिये बनाते हैं
वा जिसमें खिलौना रखते हैं।

घर्घर॰ ना॰ पु॰ चक्की आदि का शब्द।

घर्घरा॰ ना॰ स्त्री॰ घाघरा।

घर्म॰ ना॰ पु॰ प्रस्वेद, जलन, धूप, घाम, काल।

घर्षण॰ ना॰ पु॰ घिसना, रगड़ना।

घलुआ॰ ना॰ पु॰ हूंक वा घाता जो तोल से अधिक लिया जाता है।

घवरि॰ ना॰ स्त्री॰ गुच्छ, गुच्छा।

घसन॰ ना॰ पु॰ घर्षण।

घसना॰ स॰ क्रि॰ घिसना, रगड़ना।

घसियारा॰ ना॰ पु॰ घास काटने हारा।

घसियारिन॰ ना॰ स्त्री॰ घसियारे की बीबी।

घसीटना॰ स॰ क्रि॰ खींचना, कढ़ेलना।

घसीटा॰ स॰ क्रि॰ जो कढ़ेला गया।

घसीला॰गु॰ तृणस्थान, जहां घासहो।

घहराना॰अ॰ क्रि॰गरजना।

घाई॰ना॰ स्त्री॰ घात, अंगुली का मध्यस्थान, लठ वा खड्ग का चीरा।

घाईं॰ना॰ स्त्री॰ ओर,पक्ष।

घाघ॰ना॰ पु॰ प्राचीन, चतुर, गु॰ बाज़ीगर, इन्द्रजालिक।

घाघरा॰ना॰पु॰ लहंगा,पोधा विशेष, नद विशेष।

घाट॰ना॰ पु॰ नदी वा तालाव में उतरने वा स्नानकरने का स्थान,कर्णाटकदेशका पर्व्वत, डौल, घटी, गु॰ न्यून।

घाटा॰ना॰ पु॰ चढ़ाव, घटी।

घाटिया॰ना॰ पु॰ घाटपर का ब्राह्मण, जो स्नानकरनेवालेके कपड़े बचाते हैं।

घाटी॰ना॰ स्त्री॰ पर्व्वतों में सङ्कुत मार्ग।

घात॰ना॰ स्त्री॰ दवा, मार, दाव, हत्या, ओट।

घातक॰गु॰ हत्यारा, शत्रु, मारनेवाला।

घाता॰ना॰ पु॰ झूंक, मोल वा तौलसे अधिकलेना।

घातिनी॰ना॰स्त्री॰हत्यारिन्, मारनेवाली।

घाती॰गु॰ दावलेनेवाला, मारनेवाला।

घातुक॰गु॰ अपकारी, निठुर, हत्यारा।

घान॰ना॰पु॰ उखली वा चक्की आदि में जितना एक वार डालते हैं विवाह में कर्म विशेष।

घानी॰ना॰ स्त्री॰ तिलआदि, कोल्हू, चक्की।

घावड़ा॰ } गु॰व्याकुल, हैरान्।
घावरा॰ }

Digitized by Google

घाम॰ना॰ पु॰ धूप ।

घामड़॰गु॰ भोला, उल्लू, अहमक़ ।

घायल॰गु॰ हथियार लगने से जिसके घाव भया ।

घाल॰ना॰स्त्री॰बुराई, बिगाड़ ।

घालक॰गु॰ वधिक, हन्तक, मारनेवाला ।

घालन॰ना॰ पु॰ हनन, वधन, मारन ।

घालना॰स॰ क्रि॰ बिगाड़ना, उजाड़ना, घुसेड़ना, मारना, पटकना ।

घालित॰गु॰ माराहुआ, उजाड़ाहुआ ।

घाव॰ना॰ पु॰ चीरा, ज़ख़्म ।

घास॰ना॰ स्त्री॰ तृण, खर ।

घासी॰ }
घासू॰ } गु॰ घासवाला ।

घिघिआना॰ अ॰ क्रि॰ आधीनी करना, लड़खड़ाना, जिगजिगी करना ।

घिचपिच॰ गु॰ घना, आसपास ।

घिन॰ना॰ स्त्री॰ घृणा, असह, तअफ़्फ़ुन ।

घिनाना॰ अ॰ क्रि॰ कुढ़ना, असहदेखके ऊबना ।

घिनौना॰ गु॰ जिसको देख कर घिन आवे ।

घिया॰ ना॰ स्त्री॰ तुरई, तरकारी विशेष ।

घिरना॰ अ॰ क्रि॰ घेरे में पड़ना, उमगड़ना ।

घिरनी॰ }
घिरणी॰ } ना॰ स्त्री॰गरारी, गिर्री, कपोत विशेष, चरखी ।

घिराना॰ स॰क्रि॰ घेरा करवाना ।

Digitized by Google

घिसना॰ अ० क्रि० रगड़ना, खियाना, स० क्रि० मलना ।

घिसाना॰ स० क्रि॰ रगड़ाना, मलाना ।

घिसाव॰ ना० पु० } रगड़,
घिसावट॰ स्त्री० } रगड़ावट ।

घिसियाना॰ स० क्रि० खसोटना ।

घीकुवार॰ ना० स्त्री० ओषधि-पौधा विशेष ।

घुंघुची॰ ना० स्त्री० बेलि विशेष का फल वा बीज ।

घुंघुरू॰ ना० पु० चौरासी, पौटा ।

घुटुआ॰ ना० पु० जानु, गांठि पावकी ।

घुगड़ी॰ ना० स्त्री० वस्त्र आदि की गोल वस्तु यथा अंगरखे में होती है ।

घुटना॰ ना० पु॰ टेवना, जानु, अ० क्रि० घिसना, सांस रुक जाना ।

घुटाना॰ स० क्रि० मुंड़ाना, चिकना कराना ।

घुड॰ ना० पु० घोड़ा ।

घुड़कना॰ स० क्रि० दबकाना, धमकाना, भिड़कना ।

घुड़की॰ ना० स्त्री० धमकी, भिड़की ।

घुड़चढ़ा॰ ना० पु० असवार, सवार ।

घुड़बहल॰ ना० स्त्री० चौपहिया गाड़ी जिसमें घोड़े मचते हैं ।

घुन॰ ना० पु० कीट-विशेष, ढोला ।

घुना॰ गु० जिस में घुन लग गया ।

घुनाक्षर॰ ना० पु० घुनकृत अक्षर ।

Digitized by Google

घुनिया० गु० घना, कपटी।

घुमरी० ना० स्त्री० तिमिरी।

घुमाना० स० क्रि० फिराना, फेरना, बहकाना।

घुरकना० स० क्रि० घुड़कना।

घुरूका० ना० पु० भीमसेन का पुत्र जो हिडम्बी से उत्पन्न था जिसको घटोत्कचभी कहते हैं।

घुलना० अ० क्रि० मलना, पिघलना, भस्म होजाना, दुर्बल होना।

घुलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।

घुलावट० ना० स्त्री० पिघलावट।

घुसना० अ० क्रि० पैठना।

घुसपैठ० ना० स्त्री० पहुँच।

घुसाना० स० क्रि० पिलाना, पैठाना।

घुसेड़ना० स० क्रि० ठाँसना, खोंसना।

घूंगनी० ना० स्त्री० उसना, चना, गेहूँ।

घूंगर० ना० पु० लहराये हुये बाल।

घूंगी० ना० स्त्री० घोंघी, छोटा घोंघा।

घूंघट० ना० पु० ओढ़ना, नक़ाब।

घूंघर० ना० पु० घूँगर।

घूंघरू० ना० पु० नूपुर।

घूंटना० स० क्रि० निगलना, लीलना।

घूंस० ना० स्त्री० बड़ा चूहा।

घूंसा० ना० पु० घूसा, थप्पड़, मूका।

घूघू० ना० पु० पक्षी विशेष, घुग्घू।

Digitized by Google

घुट० ना० पु० पानी की लिलावट ।

घुटना० स० क्रि० घूंटना ।

घुन० ना० पु० द्वेष, कपट, द्रोह, लाग ।

घुना० गु० कपटी, द्रोही ।

घुमना० अ० क्रि० फिरना, चक्कर देना, लौटना ।

घुर० ना० पु० खाद, कूड़ा, ताक ।

घुरचो० ना० स्त्री० उलझेड़ा ।

घुरना० स० क्रि० ताकना, क्रोध से देखना ।

घुस० ना० स्त्री० घूंस, अंकोर, रिशवत ।

घुसत० ना० पु० उल्लू का बच्चा ।

घुसा० ना० पु० थप्पड़, मुक्का, मुक्की ।

घृणा० ना० स्त्री० घिन, ग्लानि ।

घृणि० ना० स्त्री० किरण ।

घृत० ना० पु० घी ।

घृताची० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा ।

घृताक्त० गु० चिकना ।

घृष्टि० ना० पु० शूकर, वाराह ।

घेंटा० ना० पु०
घेंटी० स्त्री० } शूकर का बच्चा ।

घेगा०
घेघा० } ना० पु० गले में रोग विशेष ।

घेतला० ना० पु० जूती विशेष ।

घेर० गु० रूंधा, घूम घुमाव, गोलाकार ना० पु० फेर ।

घेरना० स० क्रि० रूंधना, गांसना ।

घेरा० गु० जो रोका गया, ना० पु० कुण्डल, मण्डल, ढाबा ।

घेवर० ना० पु० मिठाई, विशेष ।

Digitized by Google

घोगा० ना० पु० शङ्ख वा घोंघा जन्तु वि० जन्तु का घर विशेष।

घोंसला० ना० पु० पक्षी का घर, खोंता।

घोकना० } स० क्रि० रटना,
घोखना० } याद करना।

घोघी० ना० स्त्री० वस्त्र विशेष जो कम्बल आदि से बनाते हैं।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा क्लीवे घ्राणंगन्धवहा घोणा नासाच नासिका इत्यमरः।

घोट० ना० स्त्री० चिकनाहट, ओप।

घोटक० ना० पु० घोड़ा यथा घोटके वीति तुरग तुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः इत्यमरः।

घोटना० स० क्रि० मलके चिकना करना, मुण्डना, ना० पु० पाषाण आदि की वस्तु जिस से चिकनाते हैं।

घोटा० ना० पु० काष्ठादि की वस्तु जिससे घोटते हैं ना० स्त्री० सुपारी।

घोड़ा० ना० पु० अश्व, तुरङ्ग।

घोर० ना० पु० शब्द, भय, धड़का, गु० भयानक, कठिन, कड़ा।

घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुखनींद, बड़ीनींद।

घोरफटा० ना० स्त्री० गोह।

घोल० ना० पु० मट्ठा, छाछ।

घोलना० स० क्रि० मिलाना।

घोष० ना० पु० अहीरोंकागांव, गोप, ग्वाल।

घोषणा० स० क्रि० अभ्यासकरना, यादकरना, प्रसिद्धरूपसेजनाना।

Digitized by Google

घोषा०ना०स्त्री० सोंफ,विडङ्ग।

घोस०ना० पु० घोष।

घोसी०ना० पु० ग्वाल,अहीर।

घौंहि०
घौरि० ना० स्त्री० गुच्छा, घवरि।

घ्राण०ना० पु० नाक, गन्धिका ग्रहण।

घ्राणेन्द्रिय०ना० स्त्री० नासिका, नाक।

[च]

चँवर०ना० पु० चमर।

चक०ना० पु० चकवा पक्षी, जिसभूमि पर अपना अधिकार हो।

चकचका०गु० स्वच्छ, निर्मल, तेजोमय।

चकडवा०ना० पु० चकल्लस, आनन्द।

चकता०ना०पु० चिह्न,निशान।

चकती०ना० स्त्री० फांक, थेगली, पैवन्द।

चकनाचूर०ना० पु० कतरन, छीलन,चूर,चूरण।

चकल्लस०ना० स्त्री० चकडवा, मगनता, तमाशा।

चकल्लसी०गु० चकडवा वाला, मग्न।

चकला०ना० पु० वेश्याकाघर, वस्त्रविशेष जो पाटऔर सूतसे बनता है, देशका खण्ड जिसमें कई परगना होतेहैं,गु०चौड़ा।

चकलाई०ना०स्त्री०चौड़ाई।

चकवा०ना०पु० राजहंस जाति के पक्षी विशेष।

चकवी०ना० स्त्री० चकवा की स्त्री।

चका०ना० पु० पहिया, चक्र, कुलाल जिसपर वर्त्तन बनाता है।

चकाचौंध०ना० स्त्री० दृष्टिका तिर मिराना।

Digitized by Google

चक्राबू० } नाο पुο चक्रव्यूह ।
चक्राव्यूह }

चकित० } गुο अचम्भित, भूलाभया, तअज्जुबमें ।
चक्रत० }

चकोतरा० नाο पुο गलगल, फल विशेष ।

चकोर० नाο पुο पक्षी विशेष ।

चक्कवै० नाο पुο राजाचक्रवर्त्ती ।

चक्का० नाο पुο दही, गाड़ीका पहिया ।

चक्कान० गुο गाढ़ा, जमाहुआ ।

चक्कास० नाο पुο मुरगियोंका घर ।

चक्की० नाο स्त्रीο दलेती, जिस से आटा पीसते हैं ।

चक्कू० नाο पुο छुरी, चाक़ ।

चक्र० नाο पुο अस्त्र विशेष, पहिया, गोल, भ्रमण, सुदर्शन, कुम्हारकाचाक ।

चक्राङ्ग० नाο पुο तगरऔषधि ।

चक्रधर० } नाο पुο श्रीकृष्णचन्द्रजी, गुο जो चक्रबांधताहो ।
चक्रपाणि० }

चक्रवर्त्ती० नाο पुο चारोंमण्डल का राजा, सार्वभौम राजा ।

चक्रवाक० नाο पुο चकवा ।

चक्रमर्द्दन० नाο पुο पवांर, कों चबोज ।

चक्रव्यूह० नाο पुο चक्राकार सैन्यका गढ़ बनाकर समर करना ।

चक्रलक्षणा० नाο स्त्रीο गुरच ।

चक्रा० नाο स्त्रीο समूह, गिरोह, टोली ।

चक्राकार० गुο पहिया के डौल ।

चक्रित० गुο चकित, भ्रमित ।

चक्री० नाο स्त्रीο चकला, गाथकों की मण्डली, नाο पुο सांप, कुम्हार ।

Digitized by Google

चख०ना० पु० चस, मेच।
चखना०स० क्रि० जांचना, स्वादलेना, खाना।
चखाचखी०ना० स्त्री० बिगाड़, लड़ाई, फूट।
चङ्ग०ना० स्त्री० गुड्डी, बाजा, पतङ्ग।
चङ्गा० गु० भला, अच्छा, सुखी।
चङ्गेर०ना० स्त्री० फूलरखने का पात्र, कठरी।
चङ्गेरा०ना० पु० } खांचा, खांची, कठरा, कठरी।
चङ्गेरी० स्त्री० }
चचा०ना० पु० पिताकाभाई। चाचा
चची०ना० स्त्री० चचा की स्त्री।
चचुलाई०ना० पु० चचेंड़ा तरकारी।
चचोरना०स० क्रि० सूखीवस्तु का चूसना।
चञ्चनाना०स० क्रि० टीसना, क्रोधित होना, झुंझलाना।
चञ्चनाहट०ना० स्त्री० टीस, झुंझलाहट।
चञ्चरीक०ना० पु० भौंरा।
चञ्चल० गु० अथिर, चपल, कम्पाहा, खिलाड़, नाशी।
चञ्चलता०ना० स्त्री० अस्थिरता, चपलता।
चञ्चला०ना० स्त्री० बिजली, कौंधा, लक्ष्मी।
चञ्चलाई०ना० स्त्री० ढिठाई।
चञ्चलाहट०ना० स्त्री० अस्थिरता, ढिठाई।
चञ्चु०ना० पु० चोंच, शुकपक्षी।
चट० अव्य० तुरन्त, उसीसमय।
चटक०ना० स्त्री० चमक, धड़ाका, चिड़ा, गु० बुद्धिमान्, चालाक, वेगी।
चटकना०ना० पु० धप्पा अ० क्रि० फटना, धड़कना तड़कना।

Digitized by Google

चटका॰ना॰ पु॰ भौंरा, गरगैया पक्षी, पक्षी टोटा, चटी, हरका।

चटकाना॰ स॰ क्रि॰ चुटकी बजाना, फटकारना, फोड़ना, चीरना।

चटकारना॰ स॰ क्रि॰ पशु-आदि के चलाने में मुख से टिक टिक करना।

चटकाहट॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, भड़क, ना॰ पु॰ चिड़ियों का शब्द।

चटकीला॰ ना॰ पु॰ } चमकीला, भड़कीला, नमकीन।
चटकीली॰ स्त्री॰ }

चटगांव॰ ना॰ पु॰ नगर जो बङ्गाले के पूर्व है।

चटनी॰ ना॰ स्त्री॰ खाने के लिये खट्टी बनाई हुई वस्तु, चाटने कीवस्तु।

चटपट॰ अव्य॰ तुरन्त, उसी-समय।

चटपटाना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुल-होना, फड़फड़ाना, किसी वस्तु के लिये जी ललाना।

चटपटाहट॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकुलता।

चटपटिया॰ गु॰ फुर्तीला, चालाक।

चटपटी॰ ना॰ स्त्री॰ उतावली हड़बड़ी।

चटवाना॰ स॰ क्रि॰ चटाके खिलाना।

चटसार॰ } ना॰ स्त्री॰ पाठशाला, मदरसा।
चटसाल॰ }

चटाई॰ ना॰ स्त्री॰ बिछौना विशेष।

चटाक॰ ना॰ पु॰ धड़ाक, भड़ाका, एका एक।

चटाका॰ ना॰ पु॰ धड़ाका, चुमालेने का शब्द।

चटाचट॰ गु॰ इहराय तिहराय के जो शब्द।

Digitized by Google

चटाना॰ स॰ क्रि॰ चटवाना।

चटिया॰ ना॰ पु॰ शिष्य, चेला, गु॰ चाटनेवाला।

चटो॰ ना॰ स्त्री॰ ध्यान, थिरता, ताड़ी, रामचन्द्रिका यों यथा, सब जात फटी दुखकी दुपटी कपटी नर है जहं एकघटी। निघटी रुचिमीचु घटीहू घटी जगजीवजतीन कि छूटी चटी।

चटोरा॰ गु॰ रसिया, पेटू, अधीरज।

चट्टा॰ ना॰ पु॰ चटसालीबालक।

चट्टान्॰ ना॰ पु॰ पत्थरका छोटा भाग वा टुकड़ा।

चट्टाबट्टा॰ ना॰ पु॰ खिलौना विशेष।

चड॰ ना॰ पु॰ वृक्षकी डाली तोड़ने का शब्द।

चड़चड़॰ गु॰ चटाचट, विक्री।

चड़चड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ फटना तड़कना।

चड़बड़िया॰ ना॰ पु॰ बकी।

चड़ई॰ ना॰ स्त्री॰ पश्चिम में तैयारी को कहते हैं और अवध में कूप गहिराने को।

चढ़ता॰ ना॰ पु॰ लाभ, बढ़ती

चढ़ताहोना॰ अ॰ क्रि॰ निकलता होना, सरस होना।

चढ़ना॰ स॰ क्रि॰ आरोहण करना, बिलंगना, उठना, धावा करना, सवार होना।

चढ़वैया॰ गु॰ चढ़नेवाला, यथा घुड़चढ़ा।

चढ़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ चढ़ाव, धावा।

चढ़ाना॰ स॰ क्रि॰ आरोहण कराना, बलिदानकरना, उठाना, ढोल वा धनुष का तानना वा कसना।

चढ़ाव॰ ना॰ पु॰ चढ़ाई, भाटा।

Digitized by Google

चढ़ैत०। } ना० पु० चढ़वैया।
चढ़ैता०। }

चढ़ौवा० ना० पु० जूता जो एड़ी से चढ़ारहता है।

चणक० } ना० पु० चना, अन्न विशेष।
चणा० }

चण्ड० गु० प्रबल, प्रचण्ड, भैरव विशेष।

चण्डांशु० ना० पु० सूर्य्य।

चण्डागुप्त० ना० स्त्री० कौंच-बीज।

चण्डाल० ना० पु० चाण्डाल, अतिनीच, कुकर्मी।

चण्डालिन० } ना० स्त्री० चा-
चण्डाली० } ण्डालकी स्त्री।

चण्डिका० } ना० स्त्री० दुर्गा-
चण्डी० } देवी।

चण्डोल० ना० पु० पालकी विशेष, पक्षी विशेष, खिलौना विशेष।

चतु० गु० चारि।

चतुर० गु० निपुण, सुनारी, प्रवीण, स्याना, धूर्त्त, ना० पु०, कौआ।

चतुरई० } ना० स्त्री० बुद्धि-
चतुरता० } मानी, स्यानपन, धूर्त्तता।

चतुरङ्ग० ना० पु० चारिअङ्गकी।

चतुरङ्गसैन्य० ना० स्त्री० चारि-प्रकारकी फ़ौज अर्थात्, हाथी१ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४।

चतुरङ्गुल० गु० चारिअङ्गुल, स्त्री० किरवाली।

चतुरस्र० गु० चौखूंटा।

चतुरा० गु० चतुर।

चतुराई० ना० स्त्री० चतुरता।

चतुरानन० ना० पु० ब्रह्मा।

Digitized by Google

चतुरावस्था० ना० स्त्री० चारि अवस्था, अर्थात्, जाग्रत् स्वप्न,सुषुप्ति,तुरीय,अथवा बाल्य,प्रौढ़,युवा,वृद्ध।

चतुराश्रम० ना० पु० चारि-आश्रम, अर्थात्, ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी।

चतुरास० ना० स्त्री० चारों ओर।

चतुरासी० गु० अस्सी और चार ८४।

चतुरासीयोनि० गु० चौरासीयोनि अर्थात् दोहा नव ९ जलचर दश १० व्योमचरकृमिग्यारह११ वन बीस २० ये चौरासी ८४.जानिले मनुज चारि ४ पशु तीस ३०।

चतुरुपवेद० ना० पु० चारि उपवेद, अर्थात् धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, आयुर्वेद, और धर्म शास्त्र।

चतुर्थ० गु० चौथा।

चतुर्थावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा मृत्युकाल।

चतुर्थी० ना० स्त्री० चौथ, चौथी तिथि।

चतुर्दश० गु० चौदह १४

चतुर्दशविद्या० ना० स्त्री० चौदह विद्या अर्थात्, ब्रह्मज्ञान १ रसायन २ वैद्यक ज्योतिष ३ व्याकरण ४ धनुर्विद्या, कोक, जलतरण, नाडीज्ञान, वाहनफेरनृबटनृत्य, जप, तस्करी, स्वरज्ञान।

चतुर्दशरत्न० ना० पु० चौदह रत्न, अर्थात् अमृत १ चन्द्रमा२ लक्ष्मी ३ धनुष ४ धन्वन्तरि ५ ऐरावत ६ कौस्तुभमणि७ उच्चैःश्रवा ८ शंख ९ अप्सरा १० कामधेनु ११ कल्पद्रुम १२ मदिरा १३ विष १४।

Digitized by Google

चतुर्दशमनु० ना० पु० चोदह-
मनु, अर्थात् स्वायम्भुव १
स्वारोचिष २ उत्तम ३
तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६
वैवस्वत ७ सावर्णि ८
दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसा-
वर्णि १० धर्मसावर्णि ११
रुद्रसावर्णि १२ देवसाव-
र्णि १३ इन्द्रसावर्णि १४ ।

चतुर्दशलोक० ना० पु० चोद-
हलोक, अर्थात् सप्तस्वर्ग,
और सप्तपाताल, भू १
भुव: २ स्व: ३ मह: ४
जन ५ तप ६ सत्य ७
अतल ८ वितल ९
सुतल १० रसातल ११
तलातल १२ महात-
ल १३ पाताल १४ ।

चतुर्दशी० ना० स्त्री० चोदहवीं
तिथि, चौदस ।

चतुर्भुज० ना० पु० विष्णुनारा-
यण, गु० चारिभुजावाला,
वा चारिमेंडों का खेत ।

चतुर्भुजक्षेत्र० ना० पु० चोमें-
ड़ा खेत ।

चतुर्भुजी० ना० स्त्री० देवी
विशेष ।

चतुर्भोजन० ना० पु० चारि-
प्रकार का भोजन अर्थात्
भोज्य १ भक्ष्य २ लेह्य ३
चोष्य ४ ।

चतुर्मुख० ना० पु० ब्रह्मा ।

चतुर्मुक्ति० ना० स्त्री० चारिमुक्ति
अर्थात् सालोक्य १ सामीप्य २
सारूप्य ३ सायुज्य ४ ।

चतुर्योनि० ना० स्त्री० चारि-
योनि अर्थात् स्वेदज १
अण्डज २ उद्भिज ३ जरा-
युज ४ ।

चतुर्वेद० ना० पु० चारिवेद,
अर्थात् ऋक् १ यजु: २ साम, ३
अथर्वण ।

चतुर्वेदी० ना० पु० चौबे, चारि
वेदवक्ता ४ ।

Digitized by Google

चतुर्वर्ग॰ना॰ पु॰ चारिवर्ग अर्थात् चारिफल।

चतुर्वर्ण॰ना॰ पु॰ चारिवर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चतुर्वाद्य॰ना॰पु॰ चारिप्रकार का बाजा अर्थात् तत १ बितत २ घन ३ शिखर ४।

चतुर्बाहु॰ना॰ पु॰ चतुर्भुज।

चतुर्विंश॰गु॰ चौबीसवां।

चतुर्विंशति॰गु॰ चौबीस २४।

चतुर्विवाह॰ना॰ पु॰ चारि प्रकार के विवाह अर्थात् प्राजापत्य १ आर्ष २ गान्धर्व्व ३ राक्षसी ४।

चतुष्कोण॰ गु॰ चौकोन, चौकोना।

चतुष्पादधर्म्म॰ना॰पु॰ चारि-पद धर्म्म के अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दान ४।

चतुष्फल॰ना॰ पु॰ चारिफल, अर्थात् अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४।

चतुष्पाद॰ना॰ पु॰ पशु, चारि पदवाला।

चतुस्सहस्र॰गु॰ चारिहजार, ४०००।

चतुस्संहिता॰ ना॰ स्त्री॰ चारिसंहिता अर्थात् ब्राह्मी १ भागवती २ वैष्णवी ३ सौरि ४।

चना॰ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

चन्द॰ना॰ पु॰ चन्द्रमा।

चन्दन॰ना॰ पु॰ मलयसार, गन्धराज, सन्दल।

चन्दवा॰ना॰ पु॰ मेघडम्बर।

चन्दा॰ना॰ पु॰ चन्द्रमा, ब्रज-विलासे यथा। देखति रहो खिलोना चन्दा। आरिन कीजिय बाल गोविन्दा।

चान्दिया॰ना॰ स्त्री॰ टटरी, चांदि, खोपरी।

चन्द्र॰ना॰ पु॰ चन्द्रमा, चांद।

Digitized by Google

चन्द्रक० ना० पु० कपूर, मयूर। नथमें लगे वस्तु।

चन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा का सोलहवां भाग. स्त्रियों की धोती विशेष।

चन्द्रकान्त० ना० स्त्री० मणि विशेष।

चन्द्रग्रहण० ना० पु० चन्द्रमा का गहन।

चन्द्रघण्टा० ना० स्त्री० देवी विशेष।

चन्द्रचूड़० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिनावनदी जो पञ्जाब में है।

चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी।

चन्द्रभक्षिका० ना० स्त्री० इलायची।

चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मुनिविशेष।

चन्द्रमुखी० गु० जिसका मुख चन्द्रमा सरीखा है अर्थात् अतिसुन्दरी।

चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी।

चन्द्रवधू० } ना० स्त्री० वीर
चन्द्रवधूटी० } बहूटी कीड़ा जो लालमकरीसा होता है, रोहिणी।

चन्द्रवंशी० गु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये क्षत्रिय की जाति विशेष अर्थात् सोमवंशी।

चन्द्रवाला० ना० स्त्री० छोटी कटाई, बड़ी इलायची।

चन्द्रशिता० ना० स्त्री० कपूर।

चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत।

चन्द्रहार० ना० पु० गलेका गहना विशेष।

Digitized by Google

चन्द्रहास॰ना॰ पु॰ खड्ग,तल-
वार, राजा विशेष।

चन्द्रहासा॰ना॰ स्त्री॰ गुरच।

चन्द्रहासी॰ना॰ स्त्री॰ छोटी-
कटाई।

चन्द्रा॰गु॰- मुण्डला, गुञ्जा,
बुद्धिमान्।

चन्द्रातप॰ना॰ पु॰ चांदनी,
चन्द्रिका।

चन्द्राना॰अ॰ क्रि॰ सूखना,
मुरझाना।

चन्द्रायण॰ना॰पु॰ व्रतचन्द्रा-
यण, जो एक महीने ।
एक ग्रास भोजन में
शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष में
बढ़ाने घटाने की रीति
से होता है।

चन्द्रिका॰ना॰ स्त्री॰ चांदनी,
बाकुची औषधि, पुस्तक
विशेष, चकोर।

चन्द्रोदय॰ना॰पु॰चन्द्रमा का
उदय, औषधि विशेष।

चपकन॰ना॰ स्त्री॰ अंगरखा
विशेष, फ़ारसी शब्द।

चपकना॰अ॰ क्रि॰मिलजाना,
बैठिजाना, सटना, चि-
पटजाना, लगिजाना।

चपकाना॰स॰ क्रि॰ मिलाना,
बैठाना, चिपटाना।

चपठना॰अ॰क्रि॰चपटाहोना,
लपटना।

चपटा॰गु॰ बैठवां, लपटा।

चपटाना॰स॰ क्रि॰ बैठाना,
मिलाना।

चपटी॰ना॰ स्त्री॰ दो स्त्रियां
परस्पर प्रसक्ति, मिली
हुई वस्तु।

चप चपड़॰ना॰ पु॰ खाते
समय मुखमें जो शब्द।

चपड़ा॰ना॰ पु॰ लाखविशेष।

चपड़ाऊ॰गु॰ निर्लज्ज, ढीठ,
ना॰पु॰जूतेपीछेदबे।

चपड़ाना॰ स॰ क्रि॰ खोटा
करना, ढीठकरना।

चपना० अ० क्रि० लज्जित होना, आधीन होना, मसल-जाना, दबजाना।
चपनी० ना० स्त्री० ढकना, ढपना, छोटा।
चपरास० ना० स्त्री० पैदल के लिये स्वामी का चिह्न।
चपरासी० ना० पु० चपरास बांधने हारा, दूत।
चपल० गु० चञ्चल, उज्ज्वल, सुन्दर, ना० पु० पारा।
चपला० ना० स्त्री० कौंधा, बिजली।
चपाती० ना० स्त्री० फुलका, यह शब्द फ़ारसी है।
चपाना० अ० क्रि० थोपना, लज्जित करना।
चपेट० ना० स्त्री०
चपेटा० पु० } धप्पा, थप्पड़, धोखे से जो बिपत्ति आ जावे।
चप्पा० गु० चारि अङ्गुली का प्रमाण।
चप्पी० ना० स्त्री० देह का दाबना वा मलना।
चबाई० ना० स्त्री० कुचलाई, चर्वण, गु० निन्दक, दूषक, द्वेषिक, नक़ली।
चबाउ० ना० पु० बतकहाउ, कहासुनी।
चबाना० स० क्रि० कुचिलना, चाबना।
चबायिन० ना० स्त्री० निन्दा-युत, निन्दक।
चविका० ना० स्त्री० चाव-औषधि।
चवेना० ना० स्त्री०
चवेनी० स्त्री० } भूना अन्न-चाबन
चव्य० ना० स्त्री०
चव्यम० } चाव, औषधि।
चमक० ना० पु० डङ्क।
चमक० ना० स्त्री० चटक, झ-लक, भड़क।

Digitized by Google

चमकता० गु० उजागर, उजला।

चमकना० अ० क्रि० झलकना, चौंकना, भाग्य उदय होना, क्रोधित होना।

चमकाना० स० क्रि० झलकाना, लुकाना, घुमाना नचाना, फैलाना।

चमकाव० ना० पु० } चमक,
चमकाहट० स्त्री० } भड़क।

चमकीला० गु० चमकनेहारा, चमकदार।

चमकौना० ना० पु० चमकानेवाला।

चमगादड़० ना० पु० }
चमगीदर० ना० पु० }
चमगुदड़ी० स्त्री० }
चमगुदरी० स्त्री० }
चमगोदड़० पु० }
चमगोदरी० स्त्री० } रातिकाउड़नेवाला पक्षी, दिवान्ध जो वृक्षों में उलटा टंगता है।

चमचमात० ना० पु० चमकित।

चमचमाना० अ० क्रि० चमकना, झुनझुनाना।

चमचमाहट० ना० स्त्री० चमकाहट।

चमड़ा० ना० पु० चर्म, खाल।

चमत्कार० ना० पु० अचम्भा, भड़क, बढ़ती, ऐश्वर्य।

चमत्कारी० गु० भड़कीला, भाग्यशाली।

चमर० ना० पु० चवर, सुरभि गाय की पूंछ।

चमरई० ना० स्त्री० चमारपन, चमार का काम।

चमरी० ना० स्त्री० सुरभि।

चमार० ना० पु० चर्मकार, नीचजाति विशेष।

चमारिन० } ना० स्त्री० चमा-
चमारी० } र की स्त्री।

चमू० ना० स्त्री० सैन्य, फौज।

Digitized by Google

चमूप० } ना० पु० सेनापति,
चमूपति० }
चमूपाल० } सिपहदार।

चमेटा० ना० पु० चपटा।

चमोटा० ना० पु० } चमड़ा जि-
चमोटी० स्त्री० } सपर नाई छुरा फिराते हैं।

चम्पई० गु० नारङ्गी रङ्ग।

चम्पक० ना० पु० वृक्ष विशेष जिसका फूल पीला सुगन्धित होता है।

चम्पत० ना० पु० भागना।

चम्पत होना० अ० क्रि० भाग-जाना १ छुपना।

चम्पा० ना० पु० चम्पक।

चम्पाकली० ना० स्त्री० चम्पा-की कली के समान गहना विशेष गलेमें पहिनते हैं।

चम्बु० ना० पु० जलपात्र विशेष जिससे देवता को जल चढ़ाते हैं।

चम्बेली० ना० स्त्री० वृक्ष वा, उसका फूल।

चय० ना० पु० समूह, ढेर, वंश।

चयन० ना० पु० आनन्द, कुशल क्षेम।

चर० ना० पु० चारा, थाह, दूत, गु० जिसको चलने की शक्ति हो, वा जो चलने वा उठने के योग्य हो यथा नरनारि पशु पक्षी आदि, चारा।

चरक० ना० पु० वैद्य विद्या का ग्रन्थ विशेष, कोढ़।

चरकटा० ना० पु० चारा काटने वाला।

चरका० ना० पु० श्वेत कुष्ट विशेष, सफ़ेद कोढ़।

चरकी० गु० कोढ़ी।

चरचना० स० क्रि० देह में चन्दन लगाना, चर्चना।

चरचर ना० पु० गप, बक।

Digitized by Google

चरचराना० अ० क्रि० चटकना, मरमराना।

चरचेला० गु० बकी, बकवादी।

चरण० ना० पु० पांव, श्लोकादि का एक पद।

चरणपीठ० ना० पु० खड़ाऊं।

चरणामृत० } ना० पु० जल
चरणोदक० } जिससे देवता वा गुरु वा ब्राह्मणादि के पांव धोये गये हों।

चरती० गु० जो व्रत नहीं करता, व्रती नहीं।

चरन० ना० पु० चरण।

चरना० अ० क्रि० चुगना, फिरना।

चरनी० ना० स्त्री० थान वा कठरा जिसमें बैल भूसा खाते हैं।

चरम्मी० ना० स्त्री० चौअन्नी।

चरपरा० गु० तीता, कडुवा, तीखा, फुर्तीला।

चरपराना० अ० क्रि० परपराना।

चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट।

चरपरिया० गु० मन चला, सुघड़।

चरमर० गु० पिछला।

चरवाई० ना० स्त्री० चराई।

चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चराने हारा।

चरस० ना० पु० मादक वस्तु मोठ, पुरवट।

चरसा० ना० पु० अधौड़ी। खाल।

चराई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चरने का काम

चराक० गु० चरने हारा, पशु।

चराचर० ना० पु० चल अचल सजीव निर्जीव जन्तु

चरान० ना० पु० तराई।

चराना० स० क्रि० चुगाना।

Digitized by Google

चरावः नाः पुः खेत वा धरती जो चरने के योग्य।

चरावनाः सः क्रिः चराना।

चरितः नाः पुः चरित्र।

चरितार्थः नाः पुः कृतार्थ।

चरित्रः नाः पुः स्वभाव, शील, वृत्तान्त।

चरुआः नाः पुः भांड़ा।

चर्चकः गुः चर्चाकरने हारा, बादी।

चर्चनाः सः क्रिः विचारना, समझना, पूजना, पहिचानना।

चर्चरीः नाः स्त्रीः छन्द विशेष कोटी, विक्री।

चर्चाः नाः स्त्रीः प्रस्ताव, बतकहाव।

चर्चितः गुः लगाया हुआ, कहा हुआ।

चर्मः नाः पुः चमड़ा।

चर्मकारः नाः पुः चमार।

चर्मपात्रः नाः पुः चमड़ा का ढोल, मशक।

चर्मवस्त्रः नाः पुः चमड़ा का वस्त्र अर्थात् ओढ़न।

चर्य्याः नाः स्त्रीः तपस्याकरने में धुनि अथवा रहनि।

चर्वणः नाः पुः दांतों से पीसना, चबेना।

चर्सः नाः पुः चरसा।

चलः गुः जो थिर न हो।

चलतः गुः चलति।

चलदलः नाः पुः पीपल।

चलनः नाः पुः चालि, व्यवहार।

चलनताः नाः स्त्रीः बिकनहार, खपती।

चलनाः अः क्रिः जाना, बिदाहोना, बहना।

चलनीः नाः स्त्रीः झांगी, गुः चलता।

चलविचल० नाο पुο चूक, भूल, भ्रम ।

चलविचरा० गुο अड़ियल, मचला ।

चलयौवन० नाο पुο चलायमान यौवन ।

चलसुगन्धा० नाο स्त्रीο शोचरलोन ।

चलाचल० नाο पुο } दौड़
चलाचली० नाο स्त्रीο } धूप।

चलान० नाο स्त्रीο भेजाव ।

चलाना० सο क्रिο दौड़ाना, भगाना, छोड़ना, बढ़ाना, अभ्यास डालना, सिखलाना ।

चलायमान० गुο जोथिरनहो, लोल ।

चलाव० नाο पुο चलन ।

चलित० गुο जोचलता है ।

चलिची० गुο खिलाड़ी, चपल ।

चलू० नाο पुο आचमन ।

चष० नाο पुο नेत्र, आंखि ।

चषक० नाο पुο पियाला जिसमें जलादि पीतेहैं ।

चसक० नाο स्त्रीο पीड़ा, टीस ।

चसकना० अο क्रिο टीसना गड़ना ।

चसका० नाο पुο लालसा, प्रेम, चाट ।

चसना० अο क्रिο मसकना, फसकना, गड़ना ।

चहकना० अο क्रिο चहचहाना ।

चहकार० नाο स्त्रीο चहचहाहट ।

चहकारना० अο क्रिο चहचहाना ।

चहचहाना० अο क्रिο पक्षियों का बोलना ।

चहचहाहट नाο स्त्रीο पक्षियों का शब्द ।

Digitized by Google

चहटी० ना० स्त्री० दोनखों से दबाना अर्थात् चुटकी काटना ।

चहला० ना० पु० कीचड़ ।

चहिये० अव्य० चाहिये ।

चऊ० गु० चारि, ४ अव्य० चाहो ।

चऊधा० ना० पु० चारोंओर ।

चऊचक० } गु० चारोंओर,
चऊदिस० } लगभग ।

चऊयुग० ना० पु० चारोंयुग ।

चक्षु० ना० पु० नेत्र आंखि ।

चक्षुःश्रवा० ना० पु० सांप, नाग ।

चक्षुष० ना० पु० भैरव विशेष ।

चा० ना० स्त्री० पौधाविशेष ।

चाउ० ना० पु० आनन्द, मङ्गल, खुशी ।

चाऊ० गु० आनन्दमें, लाभयुत ।

चांड० ना० स्त्री० टेक, खम्भ ।

चांद० ना० पु० चन्द्रमा ।

चांदना० ना० पु० उजाला, ज्योति ।

चांदनी० ना० स्त्री० चांदकी ज्योति, सफेद बिछोना ।

चांदनीचौक० ना० पु० चौड़ा मार्ग ।

चांदा० ना० पु० बिहरी, पन्ती, चन्दा ।

चांदी० ना० स्त्री० रूपा, रजत ।

चांप० ना० स्त्री० बन्दूककी कल, काठ ।

चांपना० स० क्रि० ठांसना खोंड़ना ।

चाक० } ना० पु० चक्र जिस
चाका० } पर कुम्हार बासन बनाता है, पहिया ।

चाकी० ना० स्त्री० चक्की ।

चाखना० स० क्रि० स्वादलेना, मज़ालेना ।

Digitized by Google

चाचा॰ना॰ पु॰ पिताकाभाई, चाचा ।

चाची॰ना॰स्त्री॰चाचाकीस्त्री ।

चाञ्चल्य॰ना॰पु॰अस्थिरता ।

चाट॰ना॰ स्त्री॰ चसका, लालच, पदार्थ ।

चाटक॰ना॰ पु॰ भंगरविद्या, तिलस्म, इन्द्रजाली ।

चाटकी॰गु॰ चाटक जानने वारा ।

चाटना॰स॰ क्रि॰ जीभसे रस खींचना, चभड़ चभड़ करना ।

चाटी॰ना॰ स्त्री॰ मथनियां ।

चाणक॰ना॰ पु॰ करखा, भड़काव,क्रोधकारकवार्त्ता ।

चाणक्य॰ना॰पु॰ राजाविशेष का मन्त्री न्यायग्रन्थ ।

चाणूड़॰ } ना॰ पु॰ राजा-
चाणूर॰ } कंसका मल्ल ।

चाण्डाल॰गु॰ निर्दयी, अति नीचजाति ।

चाण्डूल॰ } ना॰ पु॰ पक्षी
चाण्डोल॰ } विशेष ।

चातक॰ना॰ पु॰पपीहापक्षी ।

चातर॰ना॰ पु॰ महाजाल ।

चातुर॰गु॰ चतुर, चारि, बुद्धिमान् ।

चातुरी॰ना॰स्त्री॰ धूर्त्तता, चालाकी, बुद्धिमानी ।

चातुर्य्य॰ना॰ पु॰ चतुराई ।

चातुर्व्वर्ण्यदेश॰ना॰ पु॰देश, जहांचारोवर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, रहते हैं ।

चातक॰ना॰ पु॰ पपीहा ।

चान्द्रमास॰ ना॰ पु॰ कृष्णपक्ष प्रतिपदा से पूर्णिमापर्य्यन्त ।

चान्द्रायण॰ना॰पु॰ व्रतजिस में भोजन प्रतिदिनएक ग्रास घटाते हैं यथा चन्द्रमा प्रतिदिन घटता है ।

चाप० ना० पु० धनुष, कमान्, आकीसेव ।

चापकर्ण० ना० पुं० रोदःपच्च-कमान् की ।

चापन० ना० पु० दावन, रामायणे यथा, मुनिवर सैन कीन्हलबजाई, लगेचरण चापन दोउ भाई ।

चापक्षेच० ना० पु० धनुषा कार क्षेत्र ।

चाप्य० ना० पु० कूट ।

चाबना० स० क्रि० दांतसे कुचलना, कुचलना ।

चाबी० ना० स्त्री० कुञ्जी ।

चाम० ना० पु० चर्म ।

चामर० ना० पु० चमर, छन्द विशेष ।

चामीकर० ना० पु० सुवर्ण, सोना ।

चामुण्डा० ना० स्त्री० योगिनी भेद, देवी विशेष ।

चाम्पेय० ना० पु० चम्पा वृक्ष ।

चाय० ना० पु० चोप, हर्ष, स्वाद

चार० गु० गिन्ती ४ ना० पु० दूत, पदाति ।

चारिखानि० ना० स्त्री० स्वेद जादि ।

चारण० } ना० पु० नचवैया,
चारन० } भांड़, भाट, प्रेष्य ।

चारा० ना० पु० वनस्पति, पशु भोजन, फ़ारसी शब्द है ।

चारी० गु० चलनेवाला, ना० स्त्री० चुग़ली, चराई चारि ।

चारु० गु० सुन्दर, अच्छा, ना० पु० पदमाक ।

चारुपर्णी० ना० स्त्री० गन्ध-पसारन ।

चारुफल० ना० पु० अङ्गूर, दाख ।

चार्वाक० गु० वेदवाह्य, नास्तिक विशेष ।

Digitized by Google

चाल॰ना॰ स्त्री॰ गति, चलन, रीति।

चालना॰स॰ क्रि॰ भाड़ना, आखाकरना।

चालनी॰ना॰ स्त्री॰ आटा-छानने का पात्र।

चाला॰ना॰ पु॰ गोना, सफर, सायत।

चाली॰ना॰ पु॰ मिसकारी, हीलाबाज़।

चाव॰ ना॰ पु॰ चाय, चारि-अङ्गुल की माप, बांस विशेष।

चावल॰ना॰पु॰तण्डुल,विरञ्ज।

चाष॰ना॰ पु॰ नीलकण्ठपक्षी, लहटोरवा,यथा लोहपृ-ष्ठस्तुकङ्कः स्यादथचाषःकि कीदिविःइत्यमरः रामा यणेयथा, चारा चाष वामदिशिलेई, मनोसक-ल मङ्गल कहिदेई।

चास॰ना॰स्त्री॰ हलचलाना।

चासना॰स॰क्रि॰हलचलाना।

चासा॰ना॰ स्त्री॰ हलवाहा।

चाह॰ना॰ स्त्री॰ इच्छा, प्रेम, रीझ, छोह।

चाहक॰ना॰ पु॰ छोही, हितकारी।

चाहत॰ना॰ स्त्री॰ चाह।

चाहना॰स॰ क्रि॰ प्रेमकरना, इच्छा करना, प्रार्थना करना, मांगना।

चाहिये॰अव्य॰ अवश्य।

चाहिता॰गु॰ प्यारा, मन-भावित।

चाहिती॰ना॰ स्त्री॰ प्यारी।

चाहो॰अव्य॰अथवा।

चिक॰ना॰ स्त्री॰ पीड़ा विशेष, परदह।

चिकटा॰ना॰ पु॰ टसर का कपड़ा विशेष।

चिकठा॰गु॰ चिकट।

Digitized by Google

चिकना० ना० पु० तेल वा घृत, गु० उजला, सुन्दर, तिलड़ा, अजितेन्द्रिय, चञ्चला, और चिकनियां।

चिकनाई० ना० स्त्री० चर्बी, भा० वा० चञ्चलाहट, ओप, झलक।

चिकनाना० स० क्रि० उज्ज्वल करना, ओपना।

चिकनाहट० ना० स्त्री० उज्ज्वलता, ओप, सुन्दरता।

चिकवा० ना० पु० जाति विशेष जो मांस बेचता है।

चिकार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट, चेंचें।

चिकारना० अ० क्रि० चेंचें करना, नाकोंदेना, शोरकरना, चिल्लाना।

चिकारा० ना० पु० मृगविशेष, छोटी सारङ्गी।

चिकित्सक० ना० पु० वैद्य, तबीब।

चिकित्सा० ना० स्त्री० वैदई, तिबाबत।

चिकुर० ना० पु० बाल, केश।

चिकोरना० स० क्रि० चिरहोरना, चोंचियाना।

चिकोरा० गु० तरल, चञ्चल

चिक्क० ना० स्त्री० बकरी, अजा, काव्ये यथा, माछी खेती चिक्कधन अरुबिटियन बढवारि एतेपर जो नहिंनशे जाइकरै अधवारि।

चिक्कट० गु० चिकटा, मलीन

चिक्कण० गु० चिकना।

चिक्कहा० ना० पु० चिकवा, बुजक़स्साब।

चिक्कार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट।

चिङ्गड़ा० ना० पु०
चिङ्गड़ी० ना० स्त्री० } झींगा।

Digitized by Google

चिङ्गनी॰ ना॰ स्त्री॰ } मुरग़ीका
चिङ्गा॰ ना॰ पु॰ } बच्चा।

चिङ्घाड़॰ ना॰ स्त्री॰ किलकार, कूक।

चिङ्घाड़ना॰ अ॰ क्रि॰ किलकारना।

चिङ्घाड़ा॰ ना॰ पु॰ चिङ्घाड़।

चिचड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ किलनी।

चिचिआना॰ अ॰ क्रि॰ चिल्लाना, मिमियाना।

चिञ्चा॰ ना॰ स्त्री॰ अमिली वृक्ष।

चिट॰ ना॰ स्त्री॰ लीर, धज्जी।

चिटकारा॰ ना॰ पु॰ कीटा, चिङ्क।

चिट्टा॰ गु॰ गोरा, सफ़ेद, ना॰ पु॰ एक रुपया।

चिट्ठा॰ ना॰ पु॰ दिन दिन का लेखा वा कमाई वा रोज़नामा।

चिट्ठी॰ ना॰ स्त्री॰ पत्र, पाती।

चिड़॰ ना॰ स्त्री॰ ग्लानि खिजलाहट।

चिड़चिड़ा॰ गु॰ खुन्साहा, झनझना, ना॰ पु॰ पौधा विशेष।

चिड़ना॰ अ॰ क्रि॰ झुंझलाना खिजना, खिसियाना।

चिड़पड़ा॰ गु॰ चरपरा, तीता तीक्ष्ण, कड़ुआ।

चिड़ा॰ ना॰ पु॰ कटुक।

चिड़ाना॰ स॰ क्रि॰ खिजाना सताना, छेड़ना।

चिड़िया॰ ना॰ स्त्री॰ गौरिया, पक्षी।

चिड़ीमार॰ ना॰ पु॰ नलिया, वधिक।

चिविड़॰ ना॰ स्त्री॰ नृत्यविशेष

चित॰ ना॰ पु॰ चित्त, चैतन्य, गु॰ सूधा लेटना।

चितकबरा॰ गु॰ चितला, कबरा, अबलक़।

Digitized by Google

चितना॰ अ॰ क्रि॰ रंगाजाना।

चितला॰ गु॰ कबरा, चित-कबरा।

चितवन॰ ना॰ स्त्री॰ दृष्टि, दीठि।

चितवना॰ अ॰ क्रि॰ देखना।

चितहट॰ ना॰ स्त्री॰ खींच, चितहटजाना।

चिता॰ } ना॰ स्त्री॰ सरा,
चिताखा॰ } मृतकके दाहदेने का स्थान।

चिताना॰ स॰ क्रि॰ जताना, सुचेत करना।

चिताभस्म॰ ना॰ स्त्री॰ चिता की राख।

चितावना॰ स॰ क्रि॰ जताना, सुचेत करना।

चितावनी॰ ना॰ स्त्री॰ जतावनी, चिह्न।

चितेरा॰ ना॰ पु॰ चित्रकार, मुसव्विर।

चितौना॰ स॰ क्रि॰ देखना बिलोकना।

चित्त॰ ना॰ पु॰ मन, हृदय, सुधि।

चित्ता॰ ना॰ पु॰ औषधि, पौधा विशेष।

चित्ती॰ ना॰ स्त्री॰ चिह्न, लह, सन, सर्प विशेष कौड़ी जो रगड़ के चिकनी होगई।

चित्र॰ ना॰ पु॰ मूर्त्ति, रूप, अग्नि, मित्र, द्रोनोंअरगड, गुरु, बटेरपची।

चित्रक॰ ना॰ पु॰ चीतापशु, चितसारी।

चित्रकन्दक॰ ना॰ पु॰ ज़िमी-कन्द।

चित्रकार॰ ना॰ पु॰ मुसव्विर, चितेरा।

चित्रकारी॰ ना॰ स्त्री॰ चित्र कार का काम, मुसव्विरी।

Digitized by Google

चित्रकाय० ना० पु० बाघ, शेर, गुलबघा।

चित्रकूट० ना० पु० पर्व्वत, विशेष।

चित्रकेतु० ना० पु० राजा विशेष।

चित्रगुप्त० ना० पु० यमराज भेद, यमके यहां बुरे भले का लेखक।

चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्र वारुणी।

चित्रपक्ष० ना० पु० तीतरपक्षी।

चित्रभानु० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि।

चित्रभेषज० ना० पु० कठूमरि।

चित्रविचित्र० गु० अनेकरङ्ग का है।

चित्रशाला० } ना० स्त्री०
चित्रसारी० } जिस स्थान में बहुत चित्र होवें, नगाड़खाना, नक्कारखाना।

चित्रा० ना० स्त्री० चौदहवां नक्षत्र, इन्द्रवारुणी।

चित्राङ्गद० ना० पु० राजा विशेष।

चित्राफल० ना० पु० इन्द्र वारुणी।

चित्रित० गु० चित्रयुक्त, चित्र कियागया।

चित्रिणी० ना० स्त्री० चित्र विचित्र, भगवती का नाम है।

चित्री० ना० स्त्री० चित्रसारी ना० पु० चीतापशु।

चिथड़ा० ना० पु० गुदड़ा, लत्ता।

चिथड़िया० गु० गुदड़िया।

चिथाड़० ना० पु० फाड चीर, लथाड़।

चिथाड़ना० स० क्रि० फाड़ना चीरना, लथाड़ना।

Digitized by Google

चिदाकाश० ना० पु० परमात्मा चैतन्य आकाश में।

चिनग० ना० स्त्री० मूतने में जलन पड़ना।

चिनगाना० अ० क्रि० टीसना, चिल्लाना।

चिनगारी० } ना० स्त्री० लूका, आगिका फोटा-साफूल।
चिनगी० }

चिनचिनाना० अ० क्रि० चिल्लाना, शोरकरना।

चिन्त० ना० स्त्री० चिन्ता।

चिन्तन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तमन।

चिन्तना० अ० क्रि० अभ्यास करना।

चिन्ता० ना० स्त्री० शोच, डर, जोखिम, सन्देह, भावना।

चिन्ताना० स० क्रि० अभ्यास कराना।

चिन्तामणि० ना० स्त्री० मणि विशेष।

चिन्तित० गु० शोचो, भावित, विचारित।

चिन्ह० ना० पु० लक्षण, पहिचाना।

चिन्हार० ना० पु० } चीन्हा, पहिचान।
चिन्हारी० स्त्री० }

चिन्हित० गु० जोपहिचानगया, चिन्ह युक्त।

चिपकना० अ० क्रि० लगना, सटना।

चिपकाना० स० क्रि० लगाना, सटाना, चिपटाना।

चिपचिपा० गु० लसलसा, लिज लिजा।

चिपचिपाना० अ० क्रि० लसलसाना।

चिपटना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।

Digitized by Google

चिपटा ०गु० लगाहुआ, चिप-चिपा।

चिपटाना०स०क्रि० चपटाना, चिप्पीलगाना,लपटाना।

चिपड़ी०ना०स्त्री० गोहरी।

चिप्पक०गु० छिछलाना, ना० पु० पक्षी विशेष।

चिप्पा०ना०पु० चीप।

चिप्पी०ना०स्त्री० जहां कागज़ आदि फटा होता है वहां लगाई जाती है, छोटी चीप।

चिबुक०ना०स्त्री० ठोढ़ी।

चिमटना०अ०क्रि० चिपकना, लपटना।

चिमटा०ना०पु० खूंठा, लोहे की वस्तु जो सुनार और लोहार आदि रखते हैं।

चिमटाना०स०क्रि०लिपटाना

चिमठा०
चिमड़ा० } गु०लचीला, कड़ा।

चिमड़ाई०ना०स्त्री०कड़ापन, ऐंठ।

चिमड़ाना० स० क्रि० कड़ा करना, अ० क्रि० कड़ा होना, ऐंठिजाना।

चिमड़ाहट०ना०स्त्री० चिमड़ाई, ऐंठाई।

चिमड़ी०ना० स्त्री० चिमड़ा।

चिमसा०ना०पु० सरेश पानी का।

चिर०अव्य,बहुत: बहुत काल

चिरञ्जी०
चिरञ्जीव० } ना०पु०आशीर्वाद विशेष अर्थात् बहुत जीवन होवे।

चिरञ्जीवी०गु० बहुत दिनों, ना० पु० कौआ।

चिरकाल०अव्य, नित्य, सदा।

चिरकुट०ना० पु० चिट।

चिरकुटिया०गु० गुदड़िया।

Digitized by Google

चिरचिरा॰ना॰ पु॰ ओषधि वा पौधा विशेष।

चिरचिराना॰ अ॰ क्रि॰ चर चराना।

चिरचिराहट॰ ना॰ स्त्री॰ झनझनाहट।

चिरना॰ अ॰ क्रि॰ फटना।

चिरन्तन॰ गु॰ पुराना, प्राचीन।

चिरवाना॰ स॰ क्रि॰ फड़वाना, चिराना।

चिरांद॰ ना॰ स्त्री॰ जलते ऊये चमड़े की कुवासना।

चिराना॰ स॰ क्रि॰ फड़वाना।

चिरायु॰ गु॰ बऊत जीवन।

चिरु॰ गु॰ बऊत।

चिरुकाल॰ गु॰ बऊत दिन, चिरकाल।

चिरुकालीन॰ गु॰ बऊत दिनो।

चिरौंजी॰ ना॰ स्त्री॰ शुष्कफल विशेष।

चिरौरी॰ ना॰ स्त्री॰ विनती खुशामद।

चिलक॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, भड़क; दर्द।

चिलकना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना, झलकना, और फोड़ा आदि का पिराना।

चिलचिम॰ ना॰ पु॰ मछली।

चिलचिलाना॰ अ॰ क्रि॰ चीखना, चिंघाड़ना।

चिलम॰ ना॰ स्त्री॰ तमाकू आगि भरनेका पात्र।

चिलमची॰ ना॰ स्त्री॰ पात्र विशेष जिसमें मुंहहाथ धोनेका पानीरहता है, चिलम के नीचे रखने की वस्तु।

चिलवन॰ ना॰ स्त्री॰ चिक, झंझरी।

चिलवल॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।

चिल्लड़॰ ना॰ पु॰ चीलड़ चिलुआ।

Digitized by Google

चिल्लाना॰ अ॰ क्रि॰ पुकारना, चिङ्घाड़ना।

चिल्लाहट॰ ना॰ स्त्री॰ पुकार, चिङ्घार।

चिल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ भोजनविशेष जो अण्डे से बनाते हैं, उल्लू।

चिहटना॰ अ॰ क्रि॰ चिपटना, लगना।

चिहुर॰ ना॰ पु॰ बाल, केश।

चींटी॰ ना॰ स्त्री॰ चींवटी, कीट विशेष।

चीक॰ ना॰ स्त्री॰ कीच।

चीखुर॰ ना॰ पु॰ गिलहरी।

चीतना॰ स॰ क्रि॰ चाहना।

चीतल॰ ना॰ पु॰ जङ्गलीजन्तु विशेष गु॰ चित्तना।

चीता॰ ना॰ पु॰ तेंदुआ, व्याघ्र, चाह, बुद्धि।

चीथना॰ स॰ क्रि॰ चिथाड़ना, फाड़ना।

चीन॰ ना॰ पु॰ देश विशेष जो उत्तर पूर्व्व में है।

चीनी॰ ना॰ स्त्री॰ खांड़ विशेष गु॰ चीन देशी।

चीनीय॰ गु॰ चीनकेमनुष्यादि।

चीन्ह॰ ना॰ स्त्री॰ पहिचान, चिह्न।

चीन्हना॰ स॰ क्रि॰ पहिचानना।

चीन्हा॰ ना॰ पु॰ पहिचान चिन्हार।

चीर॰ ना॰ स्त्री॰ वस्त्रकाटुकड़ा सारी, खींच, ओढ़नी।

चीरना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना।

चीरम॰ ना॰ स्त्री॰ चिरौंजी।

चीरा॰ ना॰ पु॰ फाड़, घाव, मुग्धापन पगड़ी।

चीरी॰ ना॰ स्त्री॰ झींगुर।

चील॰ ना॰ स्त्री॰ चीलह, पक्षी जिसका मकान पर बैठ केचिल्लाना, अशुभ है।

Digitized by Google

चोलड़॰ | नाम॰ पु॰ ढोल, बड़ाजुआं, चोलह ।
चोलर॰
चोल्हड़॰

चुआंन॰ ना॰ स्त्री॰ जलके निकलने की भूमि ।

चुआना॰ स॰ क्रि॰ टपकाना, कूप में जलनिकालना ।

चुकती॰ ना॰ स्त्री॰ निपटारा ।

चुकना॰ अ॰ क्रि॰ समाप्रहोना, निपटना, ठहरना ।

चुकाई॰ ना॰ स्त्री॰ चुकौता ।

चुकाना॰ स॰ क्रि॰ निपटाना, ठहराना ।

चुकौता॰ ना॰ पु॰ निपटारा, ठहराव ।

चुक्रिका॰ ना॰ स्त्री अमिलीवृक्ष ।

चुगना॰ अ॰ क्रि॰ टूंगना, चुगना ।

चुङ्गी॰ ना॰ स्त्री॰ अन्नका कर, महसूल ।

चुचकारना॰ स॰ क्रि॰ चोंचलाकरना, और चुमकारना ।

चुचकारी॰ ना॰ स्त्री॰ चुमकारी ।

चुञ्चु॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष ।

चुञ्चुका॰ ना॰ स्त्री॰ भेंड़ी, चुञ्चुक, अर्थाय्, इति निघण्टः ।

चुञ्चुड़॰ ना॰ पु॰ चूंचा, बड़ीचूंची ।

चुटकी॰ ना॰ स्त्री॰ नोच, चुमटी, मुट्ठीभर अन्न, पांच की अङ्गुली का मड़ना ।

चुटकुला॰ ना॰ पु॰ ठठोली, मज़ाक़ ।

चुटला॰ ना॰ स्त्री॰ चोटी ।

चुटाना॰ | स॰ क्रि॰ बावकरना, दूधपिलाना गाय इत्यादि का ।
चुटालना॰
चुटावना॰

चुड़॰ ना॰ स्त्री॰ चूत ।

Digitized by Google

चुड़ुआ० ना० पु० चूड़ा जो धान कूटिके बनाते हैं।

चुड़ैल० } ना० स्त्री० प्रेतिनी, फूहड़।
चुड़ैलिया० }

चुदक्कड़० ना० पु० चोदनेवाला, चुदवैया, कामी।

चुदना० अ० क्रि० जुड़ना, प्रसङ्ग होना, भगमें लिङ्ग जाना।

चुदवाई० ना० स्त्री० चुदानेका पैसा, दाम वा काम।

चुदवाना० स० क्रि० प्रसङ्ग करवाना।

चुदवैया० ना० पु० लम्पट, स्त्री प्रसङ्गी।

चुदाई० ना० स्त्री० केलि स्त्री प्रसङ्ग, मैथुन।

चुदाना० स० क्रि० चुदवाना।

चुदास० ना० स्त्री० कामव्यथा, स्त्री प्रसङ्गकी इच्छा।

चुदासा० ना० पु० } कामातुर
चुदासी० स्त्री० } मैथुनेच्छा, स्त्री पुरुष को प्रसङ्ग की इच्छा।

चुंनचुना० ना० पु० } गुदा के
चुनचुनी० ना० स्त्री० } भीतर का कीड़ा, गुदा-खुजलाना।

चुनत० } ना० स्त्री० परत, तह, तोड़।
चुनन० }

चुनना० स० क्रि० कपड़ों का तोड़ना वा इकट्ठा करना, छांटना, टूंगना, बीनना।

चुनरी० ना० स्त्री० लालरंगी रूई ओढ़नी।

चुनवाना० } स० क्रि० टुंगाना,
चुनाना० } बिनवाना, छट-वाना, कपड़े की तह लगवाना।

Digitized by Google

चुनावट० ना० स्त्री० चुनत ।

चुनी० ना० स्त्री० चूनी ।

चुनौटा० ना० पु० } पान जिसमें पान
चुनौटी० ना० स्त्री० } तम्बाकू खाने के लिये चूना रखते हैं॥ युद्ध में सैन्य को धारस देना, फ़ौज में से बलवानों को धावा के लिये छांटना, जेठ सुदी एकादशी को पैरके पार जाना जो काशीजी में प्रचलित रीति है ।

चुनौटिया० गु० पश्चिम में बैगनी रङ्ग को कहते है ।

चुनौती० ना० स्त्री० तलाक़, शर्त्त बदने की बात, निशानी, चिन्हारी, स्मारक वस्तु ।

चुन्धला० गु० त्योंधा, नयनरोगी ।

चुन्धलाना० अ० क्रि० त्योंधा होना ।

चुन्धा० गु० त्योंधा, चिमधा ।

चुन्ना० स० क्रि० चुनना ।

चुन्नी० ना० स्त्री० छोटा माणिक

चुप० }
चुपका० } गु० मौनी, अबोल
चुपचाप० }

चुपचुपाना० अ० क्रि० चुप चाप रहना ।

चुपड़ना० स० क्रि० चिकनाना, मलना ।

चुपड़ी० गु० चिकनी, चिकना ।

चुप्प० ना० पु० } मौनता, खामोशी ।
चुप्पी० स्त्री० }

चुप्पा० गु० मौन, चुपका, अबोल ।

चुभकी० ना० स्त्री० डुबकी, गोता मारना ।

चुभना० अ० क्रि० गड़ना, घुसना बिधना, छिदना, पैठना ।

Digitized by Google

चुभाना॰स॰ क्रि॰ घुसेड़ना, छेदना, पैठाना ।

चुमाना॰स॰ क्रि॰ चूमादेना, वा दिलवाना ।

चुकार॰ना॰ पु॰ } चुचकारी ।
चुकारी॰ स्त्री॰ }

चुकारना॰स॰ क्रि॰ चुचकारना ।

चुम्बक॰ना॰ पु॰ लोहे का आकर्षक पत्थर ।

चुम्बन॰ना॰ पु॰ चूमा, स्नेह, वश होकर अङ्गमें ओष्ठ स्पर्शकरना ।

चुरकुट॰ना॰पु॰ बुकनी, चूर्ण ।

चुरगना॰अ॰क्रि॰ चेंचेंकरना ।

चुराना॰स॰क्रि॰ चोरीकरना ।

चुरुगना॰अ॰ क्रि॰ बकना, बड़बड़ाना ।

चुल॰ना॰ स्त्री॰ खुजलाने की इच्छा ।

चुलचुल॰ना॰पु॰ चञ्चलाहट ।

चुलचुलाना॰स॰ क्रि॰ खुजलाना, गुदगुदाना ।

चुलचुली॰ना॰ स्त्री॰ चञ्चलाहट ।

चुलबुला॰गु॰चञ्चल, रङ्गीला ।

चुलबुलाना॰अ॰ क्रि॰ चञ्चलहोना ।

चुलबुलाहट॰ना॰ स्त्री॰चुलबुलापन ।

चुलबुलिया॰गु॰चुलबुला ।

चुलहाई॰ना॰स्त्री॰कामातुरी, चुदासी ।

चुलहारा॰ गु॰ कामातुर, चुदासा ।

चुल्लू॰ना॰ पु॰ एकहाथ का सम्पुट, मुट्ठीभर ।

चुसक्कर॰ना॰ पु॰ पिवक्कर ।

चुसनी॰ना॰ स्त्री॰ चूसनी

चुहचुहा० गु० जोगहिरा रङ्गागया।

चुहचुहाना० अ० क्रि० गहिरा रङ्गाजाना, पक्षियों का शब्द जो प्रातःकाल होता है।

चुहल० ना० स्त्री० चर्चा चहलबहल।

चुहला० गु० ठठोल, हंसोडा।

चूंगी० ना० स्त्री० चुङ्गी।

चूंची० ना० स्त्री० कुच, मिठनी, थन।

चूंटा० ना० पु० पृथ्वी में रहनेहारा जन्तु विशेष।

चूंटी० ना० स्त्री० छोटा चूंटा वा उसकी स्त्री।

चूक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पोधा विशेष गु० खट्टा, विशेष ना० पु० औषधि विशेष।

चूकना० अ० क्रि० भूलना, धोखा देना।

चूका० ना० पु० खट्टासाग।

चूची० ना० स्त्री० चूंची।

चूड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो विधवा पहिनती हैं, ना० पु० कड़ा विशेष जो हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खाटकी पट्टी का सिरा वानोक।

चूड़ा० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम मुण्डन, लाख की चूंडी, ललाट के ऊपर बंधे हुये केश, चबैणा विशेष।

चूड़ाकरण०
चूड़ाकर्म० } ना० पु० मुण्डन

चूड़ामणि० ना० स्त्री० कङ्कण की मणि।

चूड़ी० ना० स्त्री० स्त्रियोंकेहाथ में पहिरने के लिये जो चांदी वा लाख वा कांच की बनती है।

Digitized by Google

चूत० ना० स्त्री० योनि, भग।

चूतड़० ना० पु० नितम्ब, जङ्घा का ऊपरि भाग, पुट्ठा।

चूतिया० ना० पु० उल्लू, अह-मक़।

चून० ना० पु० आटा, पिसान।

चूना० ना० पु० चूर्ण, वा जो पान में लगाते हैं, मिट्टी वा पत्थर वा कङ्कर वा सीप जली हुई अ० क्रि० टपकना, रसियाना, झरना।

चूनी० ना० स्त्री० दलाहुआ उड़द आदि, खुद्दी।

चूमकपत्थर० ना० पु० चुम्बक।

चूमना० स० क्रि० चूमालेना, मच्छीलेना।

चूमा० ना० पु० मीठी, मच्छी।

चूर० ना० स्त्री० बुकनी, चूर्ण।

चूरन० ना० पु० चूर्ण।

चूरना० स० क्रि० चूर्ण करना।

चूरा० ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा।

चूरी० ना० स्त्री० बहुत घी पेड़ी हुई रोटी, चूड़ी।

चूर्ण० ना० पु० रेणु, बुकनी।

चूल० ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी लकड़ी में डालते हैं, किवाड़ के खूंटे नीचे ऊपर के।

चूल्हा० ना० पु० } आग रखने वा रोटी पकाने की वस्तु।
चूल्ही० ना० स्त्री० }

चूसना० स० क्रि० पीलेना, सुड़ुकना।

चूहड़ा० ना० पु० मेहतर, भङ्गी।

चूहड़ी० ना० स्त्री० भङ्ग[illegible]

चूहा० ना० पु० मूश, मूष,

चूही० ना० स्त्री० [illegible]री।

[illegible] वस्तु जिसमें

चेंची० ना० [illegible] रखते हैं।

Digitized by Google

चुहचुहा॰ गु॰ जोगहिरा रङ्गागया।

चुहचुहाना॰ अ॰ क्रि॰गहिरा रङ्गाजाना, पक्षियों का शब्द जो प्रातःकाल होता है।

चुहल॰ना॰ स्त्री॰ चर्चा चहलबहल।

चुहला॰गु॰ ठठोल, हंसोडा।

चूंगी॰ना॰ स्त्री॰ चुङ्गी।

चूंची॰ना॰ स्त्री॰कुच, मिठनी, थन।

चूंटा॰ना॰ पु॰ पृथ्वी में रहनेहारा जन्तु विशेष।

चूंटी॰ना॰ स्त्री॰ छोटा चूटा वा उसकी स्त्री।

चूक॰ना॰ स्त्री॰ भूल, भ्रम, धोखा विशेष गु॰ खट्टा, विशेष ना॰ पु॰ औषधि विशेष।

चूकना॰अ॰ क्रि॰ भूलना, धोखा देना।

चूका॰ना॰ पु॰ खट्टासाग।

चूची॰ना॰ स्त्री॰ चूंची।

चूड़॰ना॰ स्त्री॰ सोने वा चांदी की वस्तु जो विधवा पहिनती हैं, ना॰ पु॰ कड़ा विशेष जो हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खाटकी पट्टी का सिरा वानोक।

चूड़ा॰ना॰ पु॰ संस्कार की रीति से प्रथम मुण्डन, लाख की चूंडी, ललाट के ऊपर बंधे हुये केश, चबेणा विशेष।

चूड़ाकरण॰ } ना॰पु॰मुण्डन
चूड़ाकर्म॰ }

चूड़ामणि॰ना॰ स्त्री॰ कङ्कण की मणि।

चूड़ी॰ना॰ स्त्री॰ स्त्रियोंकेहाथ में पहिरने के लिये जो चांदी वा लाख वा कांच की बनती हैं।

Digitized by Google

चूत०ना० स्त्री० योनि, आम्र।

चूतड़०ना० पु० नितम्ब, जङ्घा का ऊपरि भाग, पुट्ठा।

चूतिया०ना० पु० उल्लू, अङ्ग-मक्र।

चून०ना० पु० आटा, पिसान।

चूना०ना० पु० चूर्ण, वा जो पान में लगाते हैं, मिट्टी वा पत्थर वा कङ्कर वा सीप जली हुई अ० क्रि० टपकना, रसियाना, ढलना।

चूनी०ना० स्त्री० दलाहुआ उड़द आदि, खुद्दी।

चूमकपत्थर०ना० पु० चुम्बक।

चूमना०स० क्रि० चूमालेना, मच्छीलेना।

चूमा०ना० पु० सीठी, मच्छी।

चूर०ना० स्त्री० बुकनी, चूर्ण।

चूरन०ना० पु० चूर्ण।

चूरना०स० क्रि० चूर्ण करना।

चूरा०ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा।

चूरी०ना० स्त्री० बहुत घी पेड़ी हुई रोटी, चूड़ी।

चूर्ण०ना० पु० रेणु, बुकनी।

चूल०ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी लकड़ी में डालते हैं, किवाड़ के खूंटे नीचे ऊपर के।

चूल्हा०ना० पु० } आग रखने

चूल्ही०ना० स्त्री० } वा रोटी पकाने की वस्तु।

चूसना०स० क्रि० पीलेना, सुड़ुकना।

चूहड़ा०ना० पु० मेहतर, भङ्गी।

चूहड़ी०ना० स्त्री० भङ्गन।

चूहा०ना० पु० मूश, मूषक।

चूही०ना० स्त्री० छोटा मूश, उसकी स्त्री।

चेंची०ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सूई रखते हैं।

Digitized by Google

चेंचेंकरना॰ अ॰ क्रि॰ चुड़काना।

चेंड़ा॰ ना॰ पु॰ योवन, छोटा।

चेंप॰ ना॰ पु॰ वृक्ष का फल वा लासा।

चेटक॰ ना॰ पु॰ सेवक, नोकर, भगर विद्या।

चेटकी॰ ना॰ गु॰ इन्द्रजाल, ख्यालदिखानेहारा, ना॰ स्त्री॰ दासी, सेवकिन।

चेटी॰ ना॰ स्त्री॰ दासी, लोंडी।

चेत॰ ना॰ पु॰ स्मरण, होश, याद, शुद्धि।

चेतक॰ गु॰ चेतकरनेहारा, चेतमें हो।

चेतका॰ ना॰ स्त्री॰ सरा, चिता, रामचन्द्रिका यां, मनो चेतका में सती सत्त धारी।

चेतकी॰ ना॰ स्त्री॰ हर्र।

चेतना॰ स॰ क्रि॰ स्मरणकरना, ध्यानलगाना, विचारना, सुधिमें आना, ना॰ स्त्री॰ बुद्धि।

चेता॰ गु॰ चेतकरनेहारा।

चेरा॰ ना॰ पु॰ चेला, चाकर, सेवक।

चेराई॰ ना॰ स्त्री॰ दासत्व, सेवकाई।

चेरी॰ ना॰ स्त्री॰ चेली, दासी।

चेरू॰ ना॰ पु॰ चेरा का बहुवाक्य।

चेला॰ ना॰ पु॰ लौंडा, दास, शिष्य।

चेली॰ ना॰ स्त्री॰ लौंडी, दासी, शिष्य।

चेवली॰ ना॰ स्त्री॰ रेशमीवस्त्र-विशेष।

चेष्टा॰ ना॰ स्त्री॰ शरीरकाव्यापार, उद्योग, अभ्यास।

चैत॰ ना॰ पु॰ चैतमास।

Digitized by Google

चैतन्य० गु० चौकस, सुचेत, प्राणी, जीवत, ना० पु० आत्मा, परमात्मा।

चैतन्यता० ना० स्त्री० चौकसी, सुचेतता, ईश्वरता।

चैन० ना० पु० सुख, कल, को-तनाबोना।

चैनो० गु० जोतीबोई धरती, सुखकरनेहारा।

चैला० ना० पु० ईंधन के लिये चीरीलकड़ी का टुकड़ा।

चैत्र० ना० पु० प्रथम मास, चैत।

चोंकना० स० क्रि० चुभाना, गड़ाना।

चोंगा० ना० पु० नली, नलूआ, चल्लू, निधन।

चोंच० ना० स्त्री० टोंट, चञ्चु।

चोंचला० ना० पु० चोचला।

चोंटला० ना० पु० जिससे चोटीगुंधते हैं, चोटी।

चोंथना० स० क्रि० बकोटना, नोचना।

चोंप० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, उलास।

चोआ० ना० पु० सुगन्धि द्रव्य विशेष, फली, टपका।

चोआड़० ना० पु० पहाड़िया, जाति विशेष।

चोकर० ना० पु० आटेकीभसी, रई, रवा।

चोखा० गु० खरा, शुद्ध, सच्चा, तीक्ष्ण, सूक्ष्म।

चोखाई० ना० स्त्री० खराई, शुद्धता, सचाई।

चोखी० ना० स्त्री० खरी, गाने बजाने में शुद्धस्वर।

चोगा० ना० पु० खाना जो छोटी चिड़िया को खिलाते हैं।

चोचला० ना० पु० चुचकारी, गांवली, फुसलाहट।

Digitized by Google

चोट॰ना॰ स्त्री॰ घाव, चपेट, पछाड़, पटकन, डाह, धोखा।

चोटा॰ना॰ पु॰ बट्टा, जूसी।

चोटियाना॰स॰ क्रि॰ चुटालना, लंगड़ाकरना।

चोटी॰ना॰स्त्री॰ शिखा, शिखर, झोंटी।

चोट्टा॰ना॰ पु॰ चोर।

चोट्टी॰ना॰ स्त्री॰ चोर स्त्री, चोरकी स्त्री।

चोंथ॰ना॰ पु॰ कोथ, गोबर।

चोथना॰स॰ क्रि॰ फाड़ना, नोचना।

चोदना॰स॰ क्रि॰ मैथुनकरना, स्त्री प्रसङ्ग।

चोदू॰ना॰ पु॰ चुदवैया।

चोन्धला॰गु॰ चुन्धला।

चोन्धलाना॰अ॰ क्रि॰ चुन्धलाना।

चोन्धी॰ना॰ स्त्री॰ धुन्ध, धुन्धलाई।

चोप॰ना॰ स्त्री॰ चोंप, मग्नता, चाह।

चोपना॰अ॰ क्रि॰ चाहना, इच्छाकरना।

चोभा॰ना॰ पु॰ कील, कीला।

चोभी॰ना॰स्त्री॰ छोंटा, चोभा।

चोया॰ना॰ पु॰ छिलका, देवली, सुगन्धि वस्तु विशेष।

चोर॰ना॰ पु॰ चोट्टा, ठग, तस्कर, डाकू।

चोरटी॰ना॰स्त्री॰ चोरनारि।

चोरमहोंचिनि॰ना॰ स्त्री॰ आंखिमुदौनाखेल, लुकालुकोरी।

चोराना॰स॰ क्रि॰ चोरीकरना।

चोरी॰ना॰स्त्री॰ ठगई, डकैती, तस्करता।

चोल॰ना॰ पु॰ मजीठ।

Digitized by Google

चोलना॰ना॰ पु॰ बड़ाकुर्त्ता, अंगरखा।

चोला॰ना॰पु॰ शरीर, जामा, अंगरखा, वस्त्रविशेष।

चोली॰ना॰ स्त्री॰ अंगिया।

चोवा॰ना॰ पु॰ चोआ।

चोष्य॰ गु॰ चूसने के योग्यवस्तु, आम्रादि।

चौ॰ना॰पु॰ पिछलेदांत, लोहा जो नांगल के मुनि पर लगारहता है, गु॰ चार।

चौअन्नी॰ना॰ स्त्री॰ रुपये का चौथाभाग।

चौक॰ना॰स्त्री॰ झिझक, भटक, औरएका.एक जागना।

चौंकना॰अ॰ क्रि॰ झिझकना, जागना।

चौंकिल॰ना॰ पु॰ झिझकारा, बनैला।

चौंगा॰ना॰ पु॰ फुसलाहट, छल।

चौंगी॰ना॰ स्त्री॰ फुसलाहट।

चौंतरा॰ना॰ पु॰ चौतरा, चबूतरा।

चौंतीस॰ गु॰ तीस और चार ३४।

चौंध॰ना॰ स्त्री॰ आंखतिरमिराना।

चौंधियाना॰अ॰क्रि॰ घबराना, व्याकुल होना।

चौंरी॰ना॰ स्त्री॰ चमर, लाल घोड़ी।

चौक॰ना॰ पु॰ गुदड़ी का बाज़ार, हाट, कटरा, आंगन, चारिका समूह, बेदी पूरना।

चौकड़ा॰ना॰ पु॰ दो मोती का बाला, चारि का समूह।

चौकड़ी॰ना॰स्त्री॰कूद, उछाल मोतीका बाला जोपुरुष पहिनते हैं।

Digitized by Google

चौकन्ना० गु० चौकस, चैतन्य ।

चौकभरना० स० क्रि० चौक पूरना ।

चौकल० ना० पु० चारिकला, चारि टुकड़ा ।

चौकला० ना० पु० मियाना, पालकी ।

चौकस० गु० सावधान, सुचेत, सुर्त्ता, निपुण, पूरातोल ।

चौकसाई० ना० स्त्री० सुचेती, सुर्त्त ।

चौकसी० ना० स्त्री० धुन, रक्षा ।

चौका० ना० पु० लीपा हुआ स्थान, चारि कोने का स्थान, आगे के चारि दांत, चारि पूरी आदि का एक चौका ।

चौकी० ना० स्त्री० काष्ठ का चौकोना आसन कुर्सी, पहरा, पहराका स्थान, फ़ारसी शब्द है ।

चौकोना० }
चौकोर० } गु० चौखूंटा ।

चौखट० ना० पु० द्वारकेचारों ओर का काठ ।

चौखूंटा० गु० जिसके चारो ओर समान है ।

चौगड़ा० ना० पु० लम्बा, खरगोश, ससा ।

चौगान० ना० पु० जनहीन, निर्जन स्थान, खेलविशेष फ़ारसी शब्द में ।

चौगानी० ना० स्त्री० हुक्के की सीधी न ली ।

चौगुण० }
चौगुना० } गु० चारि बेरका ।

चौघड़ा० ना० पु० चारि घड़े का पात्र ।

चौपा० ना० पु० चारों ओर, चारों तरफ़ ।

चौंच० ना० पु० चोंच, ठोंट ।

चौड़ा० गु० चकला ।

Digitized by Google

चौड़ाई० ना० स्त्री०
चौड़ान० ना० पु०
फाट, चकलाई, बड़ाई।

चौड़ाना० स० क्रि० चकलाना, फैलाना।

चौडोला० ना० पु० पालकी विशेष।

चौतरा० ना० पु० चबूतरा, फ़ारसी शब्द है।

चौतारा० ना० पु० चारि तारका बाजाविशेष।

चौताल० ना० पु० रागिनी विशेष, बाजा विशेष, ताल विशेष।

चौतुक० ना० पु० चौबोला छन्द।

चौथ० ना० स्त्री० चतुर्थांश, चौथियाई।

चौथा० गु० चतुर्थ।

चौथाई० ना० स्त्री० चौथा भाग, चतुर्थांश।

चौथि० ना० स्त्री० ४ तिथि।

चौथिया० ना० पु० चौथलेन हारा।

चौथियाई० ना० स्त्री० चौथाई।

चौथी० ना० स्त्री० चतुर्थी।

चौदन्त० गु० बलवन्त, चारि दांत का।

चौदन्ती० ना० स्त्री० बहादुरी, सूरमापन।

चौदस० ना० स्त्री० चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी।

चौदह० गु० चतुर्दश १४।

चौदानियां० ना० पु०
चौदानी० ना० स्त्री०
चारि मोती का बाला।

चौधर० गु० बलवन्त।

चौधराई० ना० स्त्री० चौधरी का काम।

चौधरी० ना० पु० जातिका प्रधान, मुखिया, प्रधान, बाज़ार का मुखिया।

चौपट० गु० उजाड़, सरपट।

चौपड़॰ना॰ स्त्री॰ खेल जो पांसे से खेला जाता है।

चौपतिया॰ } ना॰ स्त्री॰ छोटी पथी, पौधा विशेष।
चौपत्ती॰ }

चौपहला॰ना॰ पु॰ चारिपटका।

चौपाई॰ना॰ स्त्री॰ चारिपद का छन्द।

चौपाड़॰ } ना॰ पु॰ बैठक, घरविशेष।
चौपार॰ }

चौपाला॰ना॰ स्त्री॰ पालकी विशेष।

चौपाय॰ना॰ पु॰ चौवा।

चौवार॰ना॰ पु॰ चौपाड़।

चौबारा॰ना॰ पु॰ उसारा, अङ्गन।

चौबीस॰गु॰बीसऔरचार२४।

चौबे॰ना॰ पु॰ चतुर्व्वेदी, जाति विशेष, मथुरा तीर्थ के पुरोहित।

चौमासा॰ना॰ पु॰ बरसात, परहिल।

चौमुख॰ना॰ पु॰ ब्रह्मा, चौमुखी डीवट, चारोंओर।

चौमुखा॰ना॰ पु॰ पट विशेष, चारमुख की डीवट।

चौमुखी॰ना॰ स्त्री॰ रुद्राक्षका फल।

चौर॰ना॰ पु॰ चोर।

चौरकर्म॰ना॰ पु॰ चोरी।

चौरङ्ग॰ना॰ पु॰ दांव विशेष, बैलआदि के चारोंपांव एकचपेट में काटना।

चौरभय॰ना॰ पु॰ चोरों का डर।

चौरस॰गु॰ समान,एकसा।

चौरसाना॰स॰ क्रि॰ समान करना।

चौरसाई॰ना॰ स्त्री॰ साधाई, समानता।

चौरा॰ना॰ पु॰ चबूतरा, चौतरा।

चौरानवे० गु० नब्बे और चार ९४।
चौरासी० गु० अस्सी और चार ८४।
चौराहा० ना० पु० मार्ग चारों ओर जाने का।
चौरी० ना० पु० चौवार, घोड़े के बाल।
चौलड़ा० ना० पु० } चारिलड़ी माला वा कोई वस्तु।
चौलड़ी० ना० स्त्री० }
चौला० ना० पु० अन्नविशेष।
चौलाई० ना० स्त्री० साग विशेष।
चौवा० ना० पु० पशु, चतुष्पाद।
चौवाई० ना० स्त्री० आंधी, झक्कड़।
चौसठ० गु० साठि और चार ६४।
चौसर० ना० पु० चार लड़का हार, चौपड़।
चौहट० } ना० पु० चौराहा, चौहट्टा० } चौगरका बाज़ार।
चौहत्तर० गु० सत्तर और चार ७४।
चौहान० ना० पु० राजपूत जाति विशेष।
च्युत० गु० पतित, झटित, बदला।
च्युतता० ना० स्त्री० पतन, बदल।
च्युति० ना० स्त्री० योनि, गुदा।

[छ]

छः० गु० षट्, ६।
छकड़ा० ना० पु० गाड़ी, शकट।
छकड़ाना० स० क्रि० चौंधियाना, चकराना।
छकना० अ० क्रि० सन्तुष्ट होना, भरना, तृप्त होना, दुखित, व्याकुल।
छकाई० ना० स्त्री० तृप्ति, सन्तुष्टता।
छकाना० स० क्रि० सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, पेटभर भोजन कराना।

Digitized by Google

छकाड़० ना० स्त्री० थप्पड़, गुछ:दांतकापशुआदि ।

छक्का० ना० पु० छ:कासमूह, खेल विशेष, जालसहित पिंजरा ।

छगरी० ना० स्त्री० बकरी ।

छगल० ना० पु० बकरी ।

छगुली० ना० स्त्री० कनिष्ठिका, पांचवीं अंगुली ।

छछुन्दर० } ना० स्त्री० मूष
छछूंदर० } जो राति को निकलता है और कुवासित होता है ।

छज० पु० भाड़खाड़ ।

छज्जा० ना० पु० बरामदह ।

छज्जी० ना० स्त्री० सज्जी ।

छज्जन० ना० पु० दारुविशेष ।

छछनाना० अ० क्रि० छनछनाना, चर्राटा देना, चरपराना ।

छटना० ना० पु० घटना, विशेष, अ० क्रि० घटना, बिछुड़ना, भिनभिन होना ।

छटा० ना० स्त्री० उजाला, चमचमाहट, बिजली, कौंधा, पु० चुनाहुआ, छांटा हुआ ।

छटांक० ना० स्त्री० सेर का सोलहवां भाग ।

छटाना० अ० क्रि० चुनवाना ।

छटे० ना० पु० अकेले का बहुवाक्य, गु० अलगहुये, चुनेहुये, अलगभये ।

छट्ठ० ना० स्त्री० षष्ठी, छठ ।

छट्ठी० ना० स्त्री० छठवीं, षष्ठी, जन्मने के पीछे छठे दिन का व्यवहार ।

छठ० ना० स्त्री० षष्ठी, छट्ठी ।

छठी० ना० स्त्री० छट्ठी ।

छड़० ना० पु० भालेकी लकड़ी, डंडा, सोंटी और छर, आंखमें सफेद दाग़ ।

Digitized by Google

छड़ना० स० क्रि० चावलों का छांटना।

छड़ा० गु० अकेला, ना० पु० कान वा पांव में पहिरने का भूषण।

छड़ाना० स० क्रि० चावल साफ़ कराना।

छड़िया० ना० पु० चोढ़ीवान्, आसाबरदार, ना० स्त्री० छोटीगली, कोलिया।

छड़ियाना० स० क्रि० छड़ी से मारना।

छड़ी० ना० स्त्री० बेत, बांसकी सूखी लकड़ी, छिकुनी।

छड़ीला० ना० स्त्री० जटामासी।

छण० ना० पु० क्षण।

छणटना० अ० क्रि० दुर्बल होना, घटना, निकलना।

छणटवाना० स० क्रि० छिलका उतरवाना।

छणटाई० ना० स्त्री० छांटने का काम।

छणटाव० ना० पु० कांडी, धानों का कूटना।

छणडना० स० क्रि० छोड़ना, तजना, चलाना।

छणडाना० स० क्रि० छुड़ाना।

छणडित० गु० छोड़ागया।

छणडुआ० ना० पु० छूट, छोड़।

छणडौती० ना० स्त्री० छुट्टी, छोड़ना।

छत० ना० स्त्री० घरके ऊपरकी गच वा पाटन।

छतकुम्भक० ना० स्त्री० कनेर, कन्देल, यथा करवी राघवेत पुष्पा, अथच छत कुम्भकः इति निघण्टुः।

छतना० ना० पु० छत्ता।

छति० ना० स्त्री० हानि, घटी, छय।

छत्तर० ना० पु० चत्र।

Digitized by Google

छत्ता० ना० पु० मधु माखी का घर, बर्रे का घर।

छत्तीस० गु० तीस और छः ३६।

छत्तीसी० ना० स्त्री० छिनाल-घूंघटी, चालाकी।

छद० ना० पु० पत्ता, पुनर्नवा औषधि।

छदन० ना० पु० पत्ता।

छदाम० ना० स्त्री० टकड़ा, पैसे की चौथाई।

छद्म० ना० पु० कपट, छल, फ़रेब।

छद्मिका० ना० स्त्री० मजीठ, गु० छलिनी।

छनना० अ० क्रि० टपकना, निचुरना, साफ़ होना।

छनाक० ना० पु० छन, माटी का भांडा टूटने का शब्द।

छनाका० ना० पु० तुरन्त जल जाना पानी का आग में।

छनिक० ना० पु० वणिक।

छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि।

छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल।

छन्दना० स० क्रि० गठना, बन्धना।

छन्दबन्द० ना० पु० छलबल, छल।

छन्दी० गु० छली० कपटी।

छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि छानने का।

छन्नी० ना० स्त्री० छोटा छन्ना, भूषण विशेष।

छन्न० गु० छान ने द्वारा।

छप० ना० पु० जल में कुछ वस्तु गिरने का शब्द।

छपई० ना० स्त्री० छः पद का छन्द।

छपकली० ना० स्त्री० जन्तु विशेष।

छपकाना० स० क्रि० पानी डालना।

छपकी० ना० स्त्री० जन्तु विशेष।

Digitized by Google

छपना॰ अ॰ क्रि॰ छापा होना, लुकना।

छपरा॰ ना॰ पु॰ छप्पर।

छपरिया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा छप्पर।

छपरी॰ ना॰ स्त्री॰ डबरा।

छपाई॰ ना॰ स्त्री॰ छापने का काम वा पैसा।

छपाका॰ ना॰ पु॰ जलमें मारनेसे जो शब्द।

छपाना॰ स॰ क्रि॰ छपवाना, छिपाना।

छप्पन॰ गु॰ पचास और छः ५६।

छप्पर॰ ना॰ पु॰ तृण का छत।

छप्परखट॰ ना॰ पु॰ बड़ा पलङ्ग जिसके ऊपर कपड़ा की पोशिश होती है।

छपड़ा॰ ना॰ पु॰ टोकरा विशेष।

छबीला॰ गु॰ रूपवान्, सुन्दर।

छबीस॰ } गु॰ बीस और
छब्बीस॰ } छः २६।

छम॰ गु॰ समर्थ।

छमकाट॰ गु॰ कपटी, छिनला, और व्यभिचारी।

छमछमाना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना, झलकना, बजना।

छय॰ ना॰ पु॰ क्षय।

छयरोग॰ ना॰ पु॰ क्षयरोग।

छर॰ ना॰ स्त्री॰ जटामासी, फड, दगड, जल्दी, शिताबी।

छरछोबी॰ ना॰ स्त्री॰ भाफिरने का स्थान।

छरस॰ ना॰ पु॰ षट्रस।

छरी॰ ना॰ स्त्री॰ छड़ी।

छर्दीयन॰ ना॰ पु॰ खीरा।

छर्दि॰ ना॰ स्त्री॰ वमन, ओकना।

छत्ता॰ना॰पु॰ मधु माखी का घर, बर्रों का घर।

छत्तीस॰पु॰ तीसऔरछः ३६।

छत्तीसी॰ना॰स्त्री॰ छिनाल-घूंघटी, चालाकी।

छद॰ना॰पु॰ पत्ता, पुनर्नवा औषधि।

छदन॰ना॰पु॰ पत्ता।

छदाम॰ना॰ स्त्री॰ टुकड़ा, पैसे की चौथाई।

छद्म॰ना॰पु॰ कपट, छल, फ़रेब।

छद्मिका॰ना॰ स्त्री॰ मजीठ, गु॰ छलिनी।

छनना॰अ॰ क्रि॰ टपकना, नि-चुरना, साफ़ होना।

छनाक॰ना॰पु॰ छन, माटी का भांडा टूटने का शब्द।

छनाका॰ना॰पु॰ तुरन्त जल जाना पानी का आग में।

छनिक॰ना॰पु॰ क्षणिक।

छन्द॰ना॰पु॰ पद्य, रचना, गायत्र्यादि।

छन्दगति॰ना॰स्त्री॰ छन्दों की चाल।

छन्दना॰ अ॰ क्रि॰ गठना, बन्धना।

छन्दबन्द॰ना॰पु॰ छलबल, छल।

छन्दी॰ गु॰ छली॰ कपटी।

छन्ना॰ ना॰ पु॰ कपड़ा दूध आदि छानने का।

छन्नी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा छन्ना, भूषण विशेष।

छन्न॰ गु॰ छान ने द्वारा।

छप॰ ना॰ पु॰ जल में कुछ वस्तु गिरने का शब्द।

छपई॰ ना॰ स्त्री॰ छः पद का छन्द।

छपकली॰ ना॰ स्त्री॰ जन्तु विशेष।

छपकाना॰ अ॰ क्रि॰ पानी डालना।

छपकी॰ ना॰ स्त्री॰ जन्तु विशेष।

Digitized by Google

छपना० अ०क्रि० छापा होना, लुकना।

छपरा० ना० पु० छप्पर।

छपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर।

छपरी० ना० स्त्री० डबरा।

छपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पेसा।

छपाका० ना० पु० जलमें मारनेसे जो शब्द।

छपाना० स० क्रि० छपवाना, छिपाना।

छप्पन० गु० पचासऔर छः ५६।

छप्पर० ना० पु० तृणका छत।

छप्परखट० ना० पु० बड़ा पलङ्ग जिसके ऊपर कपड़ाकीपोशिशहोतीहै।

छपड़ा० ना० पु० टोकरा विशेष।

छबीला० गु० रूपवान्, सुन्दर।

छबीस० } गु० बीस और छः २६।
छब्बीस० }

छम० गु० समर्थ।

छमकाट० गु० कपटी, छिनला, और व्यभिचारी।

छमछमाना० अ० क्रि० चमकना, झलकना, बजना।

छय० ना० पु० क्षय।

छयरोग० ना० पु० क्षयरोग।

छर० ना० स्त्री० जटामासी, फड, दराड, जल्दी, शिताबी।

छरछोबी० ना० स्त्री० भाफिरने का स्थान।

छरस० ना० पु० षट्रस।

छरी० ना० स्त्री० छड़ी।

छर्दीयन० ना० पु० खीरा।

छर्दि० ना० स्त्री० बमन, ओकना।

Digitized by Google

छानबीन॰ ना० स्त्री० विचार, जांच।

छानबे॰ गु० मल्हे और छः ९६।

छानस॰ ना० पु० चोकर, भूसी, बूरा।

छाना॰ स० क्रि० छाजना, छाया करना, पाटना, छप्परबनाना, ठहरना।

छानी॰ ना० स्त्री० छप्पर।

छाप॰ ना० स्त्री० मुद्रा, मुहर, अपना चिङ्क।

छापना॰ स० क्रि० छापाकरना, चिङ्क देना।

छापा॰ ना० पु० वैष्णवियों का तिलक, मुद्रा।

छापाविद्या॰ ना० स्त्री० जिसके द्वारा अनेक पुस्तक छापी जाती हैं, सब वस्तुजानी जातीहैं।

छाम॰ गु० दुबला, हलका।

छाया॰ ना० स्त्री० परछाईं, छांह, पिशाच, भूत।

छायानट॰ ना० पु० रागिनी विशेष।

छायाधर॰ ना० पु० इत्यादि।

छायाप्राद॰ ना० पु० छायाके परिमाण से समय का स्थिरकरना।

छार॰ ना० स्त्री० खार, ढेला ओबड़ाहै।

छारछबीला॰ ना० पु० सुगन्धि वस्तु विशेष।

छारी॰ ना० पु० खारी, श्रीमहादेवजी।

छारू॰ ना० पु० निनावां।

छाल॰ ना० स्त्री० बकला, छिलका।

छाला॰ ना० पु० फफोला, चमड़ा, खाल, फुल्का।

छालियां॰ ना० स्त्री० सुपारी विशेष।

छावना॰ स० क्रि० छाना।

Digitized by Google

छावनी॰ ना॰ स्त्री॰ पलटन के रहने का स्थान, लेन, छाने का काम।

छाहं॰ ना॰ स्त्री॰ छांह।

छिकुनी॰ ना॰ स्त्री॰ छड़ी, कमची।

छिक्का॰ ना॰ स्त्री॰ छींक।

छिक्किका॰ ना॰ स्त्री॰ नकछिकनी पौधा।

छिगुनी॰ } ना॰ स्त्री॰ कनिष्ठिका, कनगुरिया।
छिङ्गुली॰ }

छिचड़ा॰ ना॰ पु॰ घावका नया चमड़ा।

छिचड़ेला॰ ना॰ पु॰ दुबला, चमचिचड़।

छिछड़ा॰ ना॰ पु॰ खलड़ी, छेवर।

छिछला॰ गु॰ उथला।

छिछलाई॰ ना॰ स्त्री॰ उथलाई।

छिछली॰ ना॰ स्त्री॰ खेलविशेष, थोड़ीगहरी।

छिछोड़ा॰ गु॰ ओछा, हलका, नोच।

छिटकना॰ अ॰ क्रि॰ फेलना, बिथरना।

छिटकनी॰ ना॰ स्त्री॰ बिल्ली, जो किवाड़ों में लगती है।

छिटकाना॰ स॰ क्रि॰ फैलाना, बिथराना।

छिटकी॰ ना॰ स्त्री॰ छर्रा, छींट।

छिड़कना॰ स॰ क्रि॰ छींटना, बिथराना।

छिड़काना॰ स॰ क्रि॰ छिटवाना, सिंचाना।

छिड़काव॰ ना॰ पु॰ सींच-सिंचाव।

छिड़ना॰ अ॰ क्रि॰ चिढ़ना। दुखी होना।

छिड़ाना॰ स॰ क्रि॰ चिढ़ाना, चढ़वाना, दुखाना।

Digitized by Google

छितनिया० } नां० स्त्री०
छितनी० } डलिया ।

छितरना० अ० क्रि० बिथरना, फैलना ।

छितराना० स० क्रि० बिथराना, फैलाना ।

छिति० } नां० स्त्री० क्षिति
छिती० } धरती, जमीन ।

छिदना० अ० क्रि० बिंधना, गड़ना; स० क्रि० रोकना, रोकनेका कामकरना ।

छिदनी० नां० स्त्री० छेदने की वस्तु ।

छिदाना० स० क्रि० छेद कराना, रोकाना ।

छिद्र० नां० पु० छेद ।

छिन० नां० पु० क्षण लमहा ।

छिनकना० स० क्रि० नाक स्वच्छ करना ।

छिनला० नां० पु० व्यभिचारी, पर स्त्री गामी ।

छिनवाना० स० क्रि० और किसी से खिंचवाना ।

छिनाल० नां० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा ।

छिनाला० नां० पु० व्यभिचार, कुलटापन् ।

छिनेक० नां० पु० क्षणेक ।

छिन्न० गु० खण्डित, क्षीण, दुर्बल

छिन्नभिन्न० गु० अलग २, तित्तर बित्तर ।

छिन्ना० नां० स्त्री० गुरच, मछा मुरही ।

छिपकली० नां० स्त्री० गृहगोधिका, टिकटिकी ।

छिपका० नां० पु० छिड़काव ।

छिपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्त होना ।

छिपा० गु० लुका, गुप्त, अप्रकट ।

छिपाना० स० क्रि० गुप्तकरना, लुकाना ।

छिपाव० नां० पु० लुकावट, लुकाव, गोपन ।

Digitized by Google

छिप्र० ना० स्त्री० शीघ्र, शिताबी।

छिभोङ्गवा० ना० स्त्री० गुरच।

छिमा० ना० स्त्री० क्षमा।

छिमाजोग० गु० क्षमायोग्य।

छियालीस० गु० चालीस और छः ४६।

छियासठ० गु० साठ और छः ६६।

छियासी० गु० अस्सी और छः ८६।

छिलका० ना० पु० बकला, फलादि के ऊपर की त्वचा विशेष।

छिलना० अ० क्रि० रगड़जाना, उधड़ जाना।

छिलाना० स० क्रि० कटवाना, रगड़ाना।

छिलैया० ना० पु० छीलने हारा।

छिलौरी० ना० स्त्री० अङ्गुली की कोर पर फुड़िया, घिनही।

छी० अव्य० तुच्छ करने का वाक्य।

छींक० ना० स्त्री० चिनक, प्रसिद्ध, क्षवथः।

छींकना० अ० क्रि० ब्रह्माण्डसे पवन उतरना।

छींका० ना० पु० रस्सी का जाल जिसमें वस्तु रखके लटका देते हैं।

छीछड़ा० ना० पु० चमड़े के समान अभक्ष्यमांस।

छीजना० अ० क्रि० घटना, गिरना।

छींट० ना० स्त्री० छिटकी, छींट।

छींटना० स० क्रि० बियराना, पानी छिड़कना।

छीनना० स० क्रि० झटकलेना, खींचना।

छीप० ना० स्त्री० छांई, लहसुन, जिस लकड़ी में डकिस का सूत बांधते हैं, सोंग से ढकेलना।

छीपना॰ स॰ क्रि॰ पानी छिड़क देना, छीप निकालना, वस्त्र छापना।

छीपी॰ ना॰ पु॰ वस्त्र छापने हारा।

छीमी॰ ना॰ स्त्री॰ फली, छिलका।

छीलन॰ ना॰ पु॰ काटना, कतरन।

छीलना॰ स॰ क्रि॰ काटना, कतरना, छिलका उतारना, छोलना।

छुङ्ग्लिया॰ ना॰ स्त्री॰ छगुनी।

छुछकारना॰ स॰ क्रि॰ तुच्छ करके निकालना, झलकारना।

छुछवाना॰ स॰ क्रि॰ गाड़ना, फूकना।

छुटकारा॰ ना॰ पु॰ छुड़ाव, उद्धार।

छुटखेलना॰ अ॰ क्रि॰ लुच्चापन करना।

छुटखेला॰ गु॰ लुच्चा, बदमाश।

छुटना॰ अ॰ क्रि॰ उद्धार होना, निकलना,

छुटान॰ } ना॰ स्त्री॰ सुबीता,
छुटानी॰ } छुट्टी।

छुटापा॰ ना॰ पु॰ छुटाई, छोटापन।

छुट्टी॰ ना॰ स्त्री॰ छुटकारा, उद्धार, रुखसत।

छुड़वाना॰ स॰ क्रि॰ छुटकारा कराना।

छुतहरा॰ गु॰ जो अपवित्र हो गया, नापाक।

छुद्र॰ गु॰ क्षुद्र, नीच, हलका, नकछिकनी।

छुद्रघण्टिका॰ } ना॰ स्त्री॰
छुद्रमेखला॰ } क्षुद्रघण्टिका, तागड़ी, करधनी।

छुद्रा॰ ना॰ स्त्री॰ पतुरिया, छोहारा, अङ्गूर, कटाई पौधा, नीच, स्त्री॰ नदी।

Digitized by Google

छुधा॰ ना॰ स्त्री॰ भूख।

छुपना॰ अ॰ क्रि॰ लुकना, गुप्त होना।

छुपाना॰ स॰ क्रि॰ लुकाना, छिपाना।

छुपा॰ गु॰ लुका, गुप्त, छिपा, अप्रकट।

छुरा॰ ना॰ पु॰ बड़ी छुरी, बाल मूंड़ने का अस्त्र।

छुरिका॰ ना॰ स्त्री॰ पालक का साग, छुरी।

छुरी॰ ना॰ स्त्री॰ चाकू, लम्बा चाकू।

छुलकना॰ } अ॰ क्रि॰ थोड़ा
छुलछुलाना॰ } थोड़ा मूतना।

छुलाना॰ स॰ क्रि॰ छुवाना, छिलाना।

छुहाना॰ स॰ क्रि॰ उजलाना।

छुहारा॰ ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फल विशेष।

छुहावट॰ ना॰ स्त्री॰ लगावट।

छूआना॰ स॰ क्रि॰ स्पर्श कराना, छुलाना।

छूई॰ ना॰ स्त्री॰ दूधिया मट्टी, खड़िया मट्टी।

छूकी॰ ना॰ स्त्री॰ मच्छड़।

छूछला॰ गु॰ बोदला, बावला।

छूछा॰ गु॰ शून्य, खोखला, खाली।

छूछी॰ ना॰ स्त्री॰ कुत्सित, अपमानी, नीच, खाली।

छूट॰ ना॰ स्त्री॰ बट्टा, कुड़ाव, भूषण की चमक।

छूटना॰ अ॰ क्रि॰ छुटना, निकलना।

छूत॰ ना॰ स्त्री॰ अपवित्रता, नापाकी।

छूना॰ स॰ क्रि॰ स्पर्श करना।

छेंक॰ ना॰ स्त्री॰ रोक।

छेंकना॰ स॰ क्रि॰ रोकना।

छेंकवैया॰ ना॰ पु॰ रोकवैया।

Digitized by Google

छेकाव० ना० पु० रुकाव।

छेड़० ना० स्त्री० खिजावट, दुखाव।

छेड़ना० स० क्रि० खिजाना, दुखाना।

छेद० ना० पु० छिद्र, मुख, सूराख।

छेदक० ना० पु० छेदकर्त्ता, बेधक।

छेदन० ना० पु० छेद, बेधन।

छेदना० स० क्रि० बेधना, बरमाना।

छेना० ना० पु० खिरसा, छेमना।

छेनी० ना० स्त्री० छेवनी, छेदनी।

छेम० ना० स्त्री० क्षेम, कुशल।

छेमङ्करी० ना० स्त्री० क्षेमङ्करी, भला चाहनेवाली।

छेरी० ना० स्त्री० बकरी।

छेल०
छेलक० } ना० पु० बकरी।

छेव० ना० पु० घाव, फटाव, चिराव।

छेवना० स० क्रि० छेटना, काटना, फाड़ना।

छेवनी० ना० स्त्री० कटनी, टांकी।

छेवा० ना० पु० पुस्तकोंमें ठहरावकेस्थानकाचिह्न।

छेच० ना० पु० क्षेत्र, खेत।

छेचफल० ना० पु० क्षेत्रफल।

छैया० ना० पु० छोकरा।

छैल०
छैलचिकनिया०
छैला० } गु० बांका, चिकनियां अकड़ैत।

छोआ० ना० पु० जूसी।

छोकड़ा०
छोकरा० } ना० पु० लड़का।

छोछो० ना० स्त्री० धन्नी, गोदी।

छोटा० गु० कनिष्ठ, लघु, अल्प।

Digitized by Google

छोटाई॰ना॰ स्त्री॰ थोड़ाई, छोटापा।

छोड़ना॰स॰ क्रि॰ त्यागना, क्षमाकरना।

छोड़ा॰ | छोड़ाव॰ | छोड़ावा॰ } ना॰पु॰ छुटकारा, छुट्टी, उद्धार।

छोड़ावना॰स॰ क्रि॰ छुटकारा कराना, उद्धार-कराना।

छोड़ौती॰ना॰ स्त्री॰ छुट्टी, छूट।

छोनी॰ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती, चोणि।

छोप॰ना॰ पु॰ एकबार रङ्ग भरना, भरन।

छोपन॰स॰ क्रि॰ भरदेना, रंगदेना।

छोर॰ना॰ पु॰ किनारा, कगर, सिरा।

छोरना॰स॰ क्रि॰ छोड़ना।

छोरा॰ना॰ पु॰ लड़का।

छोराछोरी॰ना॰ पु॰ लड़का लड़की।

छोरी॰ना॰ स्त्री॰ लड़की, पुत्री।

छोलना॰स॰ क्रि॰ छीलना।

छोलनी॰ना॰ स्त्री॰ छीलनेका अस्त्र, खुर्पी।

छोह॰ना॰ पु॰ स्नेह, प्रेम, दया।

छोहरा॰ना॰ पु॰ लड़का।

छोही॰गु॰ स्नेही, प्रेमी, चाहक।

छौंकन॰ना॰ पु॰ बघार।

छौंकना॰स॰ क्रि॰ बघारना।

छौकन॰ना॰ पु॰ झपटा झपटी करनेहारा।

छौकना॰स॰ क्रि॰ झपटाझपटी करना।

छौना॰ना॰ पु॰ जन्तुकाबच्चा, बच्चा।

छौनी॰ना॰ स्त्री॰ छावनी, छपरबन्दी करना।

Digitized by Google

क्षौर॰ना॰ पु॰ मुण्डन।

क्षौरक॰ना॰ पु॰ नाई, नाऊ।

क्षौरकर्म्म॰ना॰ पु॰ मुण्डना, बालमुण्डाना, हजामत बनवाना।

[ज]

ज॰अव्य॰ शब्द के अन्त में संयुक्त होकर उत्पत्ति का बोधक होता है।

जकड़ना॰स॰ क्रि॰ कसना, बांधना।

जकड़बन्द॰ना॰पु॰अकड़वाई।

जग॰ना॰ पु॰ जगत, संसार, यज्ञ, और जहांजासके।

जगच्चक्षु॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

जगजगा॰ना॰ पु॰ पीतल की पन्नी।

जगजगाहट॰ना॰ स्त्री॰ चमचमाहट।

जगजीवन॰ना॰ पु॰ पानी, ईश्वर।

जगण॰ना॰ पु॰ गणविशेष।

जगत॰ना॰ पु॰संसार, दुनिया, टेक।

जगता॰गु॰ जो सोता नहीं, अनींदा।

जगती॰ना॰ स्त्री॰ धरती, पृथ्वी, लोग।

जगत्प्राण॰ना॰ पु॰ पवन, ईश्वर।

जगदम्बा॰ना॰ स्त्री॰ आदिशक्ति, देवी, भवानी, जगतकी माता।

जगदादि॰ना॰ पु॰ पृथ्वी का आरम्भ।

जगदाधार॰ना॰ पु॰ शेष, दिग्गज, गौआदि, ईश्वर।

जगदीश॰ना॰ पु॰ परमात्मा, विष्णु, शिव, राजा धिराज।

जगधर॰ना॰ पु॰ शेषजी।

जगना॰अ॰ क्रि॰ नींदसेउठना. चेतना।

Digitized by Google

जगन्नाथ० ना० पु० पुरुषोत्तम, उड़ेसा देश में श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जगन्मित्र० गु० सब का दोस्त, सबका मित्र।
जगन्मित्रता० ना० स्त्री० सब की मित्रता रखना।
जगमगा० गु० चमकीला।
जगमगाना० अ० क्रि० चमकना, झमकना।
जगयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।
जगवल्लभा० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।
जगह० ना० स्त्री० ठौर, धरती, समाई, गुञ्जायश।
जगाजोति० ना० स्त्री० चटक, भड़क।
जगाना० स० क्रि० सोते से उठाना।
जगेसर० ना० पु० यज्ञेश्वर।
जघन० ना० पु० उरस्थल।
जघन्य० गु० नीच।
जङ्गम० ना० पु० चलनेवाला, भेषधारी, गु० जो चलने की सामर्थ्य रखता है, वैरागी।
जङ्गल० ना० पु० बन, अरण्य।
जङ्गला० ना० पु० रागिनीविशेष।
जङ्गली० ना० पु० बनैला, बनवासी।
जङ्घ० ना० पु० जांघ, रान।
जङ्घा० ना० स्त्री० जांघ, जानु।
जचना० अ० क्रि० अटकला जाना, परीक्षा होजाना।
जचाना० स० क्रि० अटकलकराना, कसवाना, परीक्षा कराना।
जचावट० ना० स्त्री० परीक्षा, जांच।
जञ्जाल० ना० पु० उलझेड़ा, दुख, क्लेश।
जञ्जाली० गु० क्लेशी, दुःखदाता।

Digitized by Google

जट० ना० स्त्री० जटा।

जटना० स० क्रि० चिपटजाना, मूंड़ना।

जटा० ना० स्त्री० बिगड़े हुये बाल, भूओरा।

जटाधारी० गु० जटारखनेवाला।

जटामासी० ना० स्त्री० कुछ औषधि।

जटायु० ना० पु० गिद्धविशेष।

जटित० गु० जड़ाहुआ, जड़ाऊ।

जटिल० गु० पुराना, जटाधारी।

जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी।

जठर० ना० पु० पेट, उदर।

जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि।

जठेरा० गु० बड़ा, जेठा।

जठेरी० ना० स्त्री० बड़ी, बूढ़ी।

जड़० ना० स्त्री० मूल, गु० मूर्ख, स्थावर, निर्जीव, दुष्ट, निशाचर।

जड़न० ना० स्त्री० जड़ने का काम।

जड़ना० स० क्रि० लगाना, जोड़ना।

जड़पेड़० ना० स्त्री० समूचा पेड़, अर्थात् सब।

जड़वट० ना० स्त्री० स्तम्भ।

जड़हन० ना० पु० धान जो कातिक अगहन में काटा जाता है।

जड़ाई० ना० स्त्री० जड़ने का काम, वा जड़ने का पैसा।

जड़ाऊ० गु० मणि मुक्तादि से जड़ा भया, जड़ा हुआ।

जड़ाना० स० क्रि० जड़वाना, जाड़ा खाना।

जड़ाव० ना० पु० जड़ने का काम।

Digitized by Google

जड़ावर० ना० स्त्री० जड़े के कपड़े ।

जड़ित० गु० जटित, जड़ा-ऊआ ।

जड़िनी० गु० स्त्री० जड़ स्त्री, दुष्टिनी ।

जड़िया० ना० पु० जड़ने वाला, जौहरी, सुनार ।

जड़ी० ना० स्त्री० औषधि, पौधे की जड़ ।

जत० ना० स्त्री० रीति, डौल ।

जतन० ना० स्त्री० यत्न, तदबीर ।

जतनी० ना० स्त्री० यत्नी, तद-बीर करने वाला ।

जताना० स० क्रि० बुझाना, चिताना, बताना ।

जतारा० ना० पु० वंश, घराना, पीढ़ी ।

जती० ना० गु० यती, संन्यासी, शान्त ।

जतु० ना० स्त्री० लाख ।

जतुआ० ना० पु० काढ़ी का खूंटा ।

जथा० अव्य० यथा, ना० पु० समूह ।

जथार्थ० अव्य० यथार्थ, सच, ठीक ।

जद० अव्य० यदा, जब ।

जदु० ना० पु० यदु ।

जदुनाथ०, जदुनायक०, जदुपति० } ना० पु० श्री कृष्णचन्द्रजी ।

जदुवंशी० गु० यदुवंशी ।

जद्यपि० अव्य० यद्यपि ।

जन० ना० पु० मनुष्य लोग, नौकर ।

जनक० ना० पु० पिता, श्री सीताजी के पिता ।

जनकपुर० ना० पु० पिता का गांव, वा नगर, तिर-हुत नगर ।

Digitized by Google

जनता० ना० स्त्री० लोग, वा लोगों का समूह, मनुष्यता, आदमियत ।

जनन० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति ।

जनना० अ० क्रि० जन्महोना ।

जननी० ना० स्त्री० माता, महतारी ।

जनरव० ना० पु० लोगों का शब्द ।

जनलोक० ना० पु० लोक विशेष, जिसमें साधु लोग मरने के पीछे वास करते हैं ।

जनयित्री० ना० स्त्री० माता, जननी ।

जनवासा० ना० पु० जहां बरात ठहरती है ।

जनश्रुति० ना० स्त्री० सन्देशा, समाचार ।

जनहाई० } अव्य० मनुष्य,
जनहार० } मनुष्य सहित, प्रत्येक, हरएक ।

जना० ना० पु० लोग, मनुष्य, गु० पुत्र उत्पन्न हुआ, भया ।

जनाई० ना० स्त्री० जो स्त्री लड़का जन्माती है, दिखाई ।

जनाजात० अव्य० जनहाई ।

जनाती० गु० कन्या के ओर के बराती, बरातीलोग ।

जनाना० स० क्रि० उत्पन्न कराना, जनाना, चिताना, दिखाना ।

जनार्द्दन० ना० पु० श्रीकृष्णजी ।

जनाव० ना० पु० जताव, लखाव ।

जनिका० ना० पु० द्व्यर्थ जिसका दो प्रकार अर्थ होवे ।

जनित० गु० उत्पन्न भया, उपजा ।

जनी० ना० स्त्री० दासी, बहू, ब्याही ।

Digitized by Google

जनु० ना० पु० जन्म उत्पत्ति, अव्य० मानो।

जनुक० अव्य० जानो।

जनेऊ० ना० पु० यज्ञोपवीत।

जनेत० ना० पु० बरात।

जनेवा० ना० स्त्री० तृणविशेष, कांधा खोटी।

जनेश० ना० पु० राजा।

जनो० ना० पु० जनेऊ।

जन्ता० ना० पु० तार खींचने का यन्त्र।

जन्ताना० स० क्रि० दबाना, निचोड़ना।

जन्तार० ना० पु० यन्त्र।

जन्तु० ना० पु० जीव धारी, क्षुद्र जीव।

जन्तुक० ना० पु० हींग।

जन्तुहनन० ना० पु० विडङ्ग औषधि।

जन्म० ना० पु० उत्पत्ति, पैदायश।

जन्मदाता० ना० पु० पिता।

जन्मदिन० ना० पु० वर्षबन्धन, वर्ष गांठ।

जन्मना० अ० क्रि० उपजना, पैदाहोना।

जन्मपत्री० ना० स्त्री० जन्मकुण्डली, लग्न कुण्डली, ज़ायचह।

जन्मभूमि० ना० स्त्री० } उत्पत्ति का घर वा स्थान।
जन्मस्थान० ना० पु० }

जन्माना० स० क्रि० उपजाना, पैदाकराना।

जन्मान्तर० ना० पु० और जन्म।

जन्मान्तरीय० गु० अगले जन्म का उपार्जित।

जन्मान्ध० गु० जन्म का अन्धा।

Digitized by Google

जन्मोत्सव० ना० पु० जन्म होने का आनन्द, तथा जन्मोत्सव।

जन्यजनकभाव० ना० पु० उत्पन्न किया हुआ और उत्पन्न की हुई वस्तु इन का सम्बन्ध।

जप० ना० पु० पाठ, मन्त्रादिका उच्चारण।

जपन० ना० पु० मन्त्र उच्चारण, पाठ।

जपना० स० क्रि० मन्त्रादि का उच्चारण।

जपन्ता० गु० जापक।

जपमाला० ना० स्त्री० जपने की माला।

जपा० ना० पु० ऊड़ऊड़ का फूल।

जपी० गु० जापक।

जपीतपी० ना० पु० अर्चक, भजनीक।

जब० अव्य० यदा।

जबड़ा० ना० पु० जभा।

जबड्डा० गु० अकड़ा, अनाड़ी।

जबड्डिया० गु० कुरूप।

जभा० ना० पु० जबड़ा।

जम० ना० पु० यम, मृत्युगण।

जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुनाजी।

जमक० ना० पु० यमक, पहिला अष्ट छन्द का।

जमकना० अ० क्रि० बनना, निभना, ठहरना।

जमकाना० स० क्रि० बनाना, ठहराना, बैठाना।

जमघट० ना० पु० मण्डली, भीड़।

जमजम० अव्य० निरन्तर, सदा।

जमदग्नि० ना० पु० परशुराम के पिता।

जमदूत० ना० पु० यमदूत।

जमधर० ना० पु० कटार।

Digitized by Google

जमना॰ अ॰ क्रि॰ उगना, उह-
रना, जमनाका।

जमराज॰ ना॰ पु॰ यमराज।

जमल॰ गु॰ दो, २।

जमहाई॰ ना॰ स्त्री॰ आलस्य
वश होकर मुख का
पसारना।

जमहाना॰ अ॰ क्रि॰ जमहाई
लेना।

जमाई॰ ना॰ स्त्री॰ जामात,
दामाद।

जमाना॰ स॰ क्रि॰ उगाना,
बांधना, एकट्ठा करना,
बटोरना, बैठाना।

जमालगोटा॰ ना॰ पु॰ औषधि
विशेष।

जमाव॰ ना॰ पु॰ भीड़, बहु-
तात।

जमावट॰ ना॰ स्त्री॰ बंधावट।

जमी॰ ना॰ स्त्री॰ रात, यमी,
यमुनाजी।

जमोगना॰ स॰ क्रि॰ सहजाना।

जमोघ॰ } ना॰ पु॰ ज्वरविशेष
जमोघा॰ } जो लड़कों को
लगता है।

जमना॰ अ॰ क्रि॰ बढ़ना, पन-
पना।

जम्बाल॰ ना॰ पु॰ सिवाल,
बालू।

जम्बीर॰ }
जम्बीरक॰ } ना॰ पु॰ नींबू।

जम्बु॰ ना॰ पु॰ गीदड़, शृगाल,
जमुनावृक्ष।

जम्बुक॰ ना॰ पु॰ गीदड़, शृगाल।

जम्बुमाली॰ ना॰ पु॰ प्रहस्त का
पुत्र, राक्षस विशेष।

जम्बूद्वीप॰ ना॰ पु॰ पृथ्वी के
सातद्वीपों में से एक का
नाम।

जम्भभेदी॰ ना॰ पु॰ इन्द्र।

जम्भल॰ } ना॰ पु॰ जम्भीरी
जम्भीर॰ } नींबू।

Digitized by Google

जय० ना० स्त्री० पराभवकरना, उन्नति, गु० जित्ता, जयति आशिष।

जयजयकार० ना० पु० पराभवहोना, शत्रुका बड़ाई काया जीतिकाबोधक।

जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

जयढाक० ना० पु० ढोलविशेष।

जयत० ना० पु० वृक्षविशेष।

जयति० क्रि० जीति हो।

जयनगर० ना० पु० राजपूताने की राजधानी।

जयन्त० ना० पु० इन्द्रकापुत्र।

जयन्ती० ना० स्त्री० दुर्गादेवी, वृक्ष विशेष।

जयन्तीपुर० ना० पु० शिलहट खेदशकोसपरका देशजिसको जयन्ता कहते हैं।

जयबेर० गु० जितनेवार।

जयमान०
जयवन्त०
जयवान्० } गु० जयकरनेहारा, जीतनेवाला।

जयवती० ना० स्त्री० अग्निकी जिह्वा विशेष, गु० जीतनेहारी।

जया० ना० स्त्री० हर्र, विष्णुक्रान्ता, भांग, देवी वि०।

जयी० गु० जय करने हारा।

जर० ना० पु० जड़, ज्वरविशेष।

जरण० ना० पु० जीरा सुफ़ेद, जलन।

जरन० अ० क्रि० जलन।

जरना० अ० क्रि० जलना।

जरा० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

जरांस० ना० पु० ज्वरांश।

जराना० स० क्रि० जलाना।

जरायजरी० गु० स्त्री० जड़ाऊ।

जरायु० ना० स्त्री० कोष, पेटकुक्षि

Digitized by Google

जरायुज० ना० पु० जो कोष से उत्पन्न हो, जो झिल्ली से उत्पन्न हो, अर्थात् मनुष्यादि।

जरासन्ध० ना० पु० मगधका राजा, जरानाम राक्षसी से जोड़ागया।

जर्जर० गु० निर्बल, जांजर, जीर्ण।

जर्जरी० ना० पु० लहसुन।

जल० ना० पु० पानी।

जलअलि० ना० पु० पानी का भंवर।

जलकन्द० ना० पु० सिंघाड़ा।

जलकामा० ना० स्त्री० अंधा होली।

जलक्रीड़ा० ना० स्त्री० पानीमें का खेल।

जलकुक्कुड़०, जलकुक्कुट० ना० पु० पनडुब्बी, मुर्गाबी।

जलखानि० ना० पु० मेघ, समुद्र, नदी।

जलगोलक० ना० पु० चिलगोज़ा।

जलचर० गु० जलजन्तु, पक्षिका, जलके चरनेहारे जन्तु।

जलचरेश० ना० पु० मगरमच्छ, ग्राह।

जलज० ना० पु० कमल, गु० जो कुछ जलमें उपजे।

जलजन्तु० ना० पु० जलमें रहने हारे जीव।

जलजन्त्र० ना० पु० चक्का, फुव्वारह जलयन्त्र।

जलजला० गु० महाक्रोधी।

जलजलाना० अ० क्रि० आगहोजाना, झुंझलाना।

जलजलाहट० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, झुंझलाहट।

जलजात० ना० पु० कमलादि।

जलजान० ना० पु० नाव, जहाज़।

जलमधु० ना० स्त्री० मुलहटी

जलतरङ्ग॰ना॰ पु॰ बाजा विशेष, जलकी लहरि।

जलतरङ्गी॰ना॰ स्त्री॰ बाजा विशेष बजानेवाला।

जलतरण॰ना॰ पु॰ तैरना, नाव वा जहाज़ चलाने की विद्या।

जलथल॰ना॰ पु॰ जल और स्थल।

जलद॰ना॰ पु॰ मेघ।

जलधर॰ना॰ पु॰ मेघ, समुद्र।

जलधार॰ } ना॰ स्त्री॰ पानी
जलधारा॰ } की धारा।

जलधि॰ना॰ पु॰ समुद्र।

जलन॰ना॰ पु॰ ज्वलन, तप, क्रोध।

जलना॰अ॰ क्रि॰ बरना, दह-कना।

जलनिधि॰ना॰ पु॰ समुद्र।

जलनीम॰ना॰ पु॰ औषधि, विशेष।

जलन्धर॰ना॰ पु॰ रोगविशेष जिसमें रोगी पानीबहुत पीता है, राजाविशेष।

जलपाई॰ना॰स्त्री॰वृक्षविशेष।

जलपान॰ना॰ पु॰ पानीपीना, कलेवा।

जलपुट॰ना॰ पु॰ पानी का बर्त्तन।

जलबल॰गु॰ जो जलने से नाशगया, ना॰ पु॰ पान केवल।

जलमय॰ना॰ पु॰ जलार्णव, प्रलय।

जलमानुष॰ ना॰ पु॰ मनुष्य रूपी जलजन्तु।

जलमार॰ ना॰ पु॰ विष, ज़हर।

जलमाल॰ना॰ स्त्री॰ नदी।

जलराशि॰ना॰ पु॰ समुद्र।

जलरुह॰ना॰ पु॰ कमल।

जलवैया॰ ना॰ पु॰ जलानेवाला।

जलशायी॰ना॰ पु॰ विष्णु, नारायण।

जलसैनी॰ना॰ स्त्री॰ जलमें सोना, जलमें रहना, तपस्या विशेष, मत्स्य।

जलसूत॰ना॰ पु॰ नहरुवा।

जला॰ना॰ स्त्री॰ झील।

जलाकार॰ना॰ पु॰ जल का आकार।

जलाना॰स॰ क्रि॰ बालना, दाहना।

जलबला॰ } गु॰ चिड़चिड़ा,
जलाभुना॰ } क्रोधी।

जलार्णव॰ना॰ पु॰ जलप्रलय, जलका समुद्र।

जलावन॰ना॰ पु॰ ईंधन।

जलाशय॰ } ना॰ पु॰ तालाब,
जलाश्रम॰ } पोखर।

जलाश्रय॰ना॰ पु॰ जलके भरोसे।

जलिया॰ना॰ पु॰ कहार, धीमर, मछुआ।

जलेबी॰ना॰ स्त्री॰ मिठाई, विशेष।

जलेश॰ना॰ पु॰ वरुणदेव, समुद्र।

जलोद॰ना॰ पु॰ क्षीरोद, मेघ।

जलोदर॰ना॰ पु॰ जलन्धर।

जलौका॰ना॰ स्त्री॰ जोंक।

जल्पना॰अ॰ क्रि॰ बकना, निजबड़ाईकरना, अस्वार्थ बात कहना।

जल्पाक॰गु॰ बकवादी, निजबड़ाई करनेहारा।

जव॰ना॰ पु॰ यव, जौ, जल्दी

जवन॰ना॰ पु॰ यवन, घोड़ा

जवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ रूई।

जवनेष्ट॰ना॰ पु॰ लहसुन।

Digitized by Google

जवा० ना० पु० अंगुलीकी गांठि में चिह्न, पुष्पविशेष ।

जवाह्ना० ना० स्त्री० अजवाइन् ।

जवाद० ना० स्त्री० केसर ।

जवाधिक० ना० पु० घोड़ा ।

जवानी० ना० स्त्री० अजवाइन् खुरासानी ।

जवानिका० } ना० पु० अजवाइन् ।
जवासाह्ना० }

जवाखार० ना० पु० ओषधि द्रव्यविशेष ।

जवासा० ना० पु० कांटीला विशेष ।

जस० ना० पु० यश ।

जसत० } ना० पु० धातुविशेष ।
जसता० }

जसवत० } गु० कीर्त्तिमान्, प्रतिष्ठित, यशी, यशस्वी ।
जसयति० }
जसवन्त० }
जसखी० }
जसी० }

जसुमति० } ना० स्त्री० नन्दरानी, यशोदा ।
जसोदा० }
जसोमति० }

जहर्षभी० ना० स्त्री० कौंचबीज ।

जच० अव्य० जहां, यत्र ।

जह्नु० ना० पु० मुनिविशेष ।

जह्नुसुता० ना० स्त्री० गङ्गाजी ।

जहां० अव्य० जच, यच, जिसस्थान में, जिधर ।

जहीं० अव्य० जिसकिसीजगह ।

जा० सर्व्व० जिस ।

जाई० गु० जनी, ना० स्त्री० बेटी ।

जांगर० ना० पु० पिण्डलीसमेत जांघ, घुटना ।

जांघ० ना० स्त्री० जङ्घा, जानु ।

जांघिया० ना० पु० काछना ।

जांच० ना० स्त्री० अटकल, परख, कस ।

Digitized by Google

जांचना॰स॰ क्रि॰ जांचना, परखना, देखना, ठहराना, ठीककरना, परीक्षा करना।

जांता॰ना॰ पु॰ पाषाण का यन्त्रजिसमें गेहूं पीसते हैं, चक्की।

जाकड़॰ना॰ पु॰ जाकट, बन्धक, शर्त्तना।

जाकर॰ना॰ पु॰ जिसहाथ में, सर्व॰ जिसका।

जाग॰ना॰ पु॰ निद्राका त्याग, यज्ञ।

जागत॰ना॰ स्त्री॰ चौकसाई।

जागतीज्योति॰ गु॰ अद्भुत पराक्रमी।

जागना॰स॰क्रि॰ नींदसेउठना, चेतना।

जागरण॰ना॰पु॰नींदकात्याग, रातिको उत्सवादि में जागना।

जागल॰ना॰पु॰ श्यामअगरु।

जागा॰ना॰ पु॰ जातिविशेष।

जागू॰ना॰ पु॰ जागनेहारा।

जाग्रत्॰ना॰ स्त्री॰ स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न अवस्था।

जाङ्गली॰ना॰ पु॰विषधारा।

जाचक॰ना॰ पु॰ याचक, मांगनेहारा।

जाचना॰स॰ क्रि॰ मांगना, चाहना।

जाचा॰गु॰ मांगा, चाहा।

जाच्यमान॰गु॰ मांगी वा चाहा भया, प्रथमदान।

जाजक॰ना॰ पु॰ झांझ वा ढोलक बजानेहारा।

जाजा॰ना॰ स्त्री॰ कलौंजी।

जाजामन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ जय अथवन्ती।

जाट॰ना॰ पु॰ राजपूतों में जातिविशेष।

जाठ॰ना॰ स्त्री॰ कोल्हू की धुरी।

Digitized by Google

जाड़०ना० स्त्री० मसूड़ा।

जाड़ा०ना० पु० शीत, ठंड, शीतकाल।

जाड़ी०ना० स्त्री० दांतों की पांति।

जाड्य०ना० पु० जड़ता, शीतलता, मूढ़ता।

जात०ना० स्त्री० जाति, यात्रा, मेला, गु० जना।

जातक०गु० पुत्र, बच्चा।

जातकर्म०ना० पु० जन्मसंस्कार विशेष यथा छठीआदि।

जातना०ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दण्ड, वेदन।

जातपांत०ना० स्त्री० पीढ़ी, वंशावली।

जातरूप०ना० पु० सुवर्ण, कांचन।

जातवेद०ना० पु० अग्निदेव।

जाति०ना० स्त्री० वर्ण, क़ौम एकरूपसे बहुतसे पिण्डों मेंसमानधर्म, यथापशुत्व, मनुष्यत्व, उत्पन्न।

जातिकोश०ना० स्त्री० जाविची।

जातिपत्री०ना० स्त्री० जाविची, बिरादरी की चिट्ठी।

जातिभ्रष्ट०गु० पापादि के कारण जो जाति से निकालागया वा निकल गया।

जातिवाचक०गु० जिससंज्ञा से जातिमात्र का बोध होवे यथा पशु, पक्षी।

जातिफल०ना० पु० जायफल।

जाती०ना० स्त्री० मालती, जावित्री, पुष्पविशेष।

जात्यायत०गु० जिसक्षेत्र की सामने सामने की भुजा तुल्य और चारों कोण सम हैं।

Digitized by Google

जात्यत्रिभुज० ना० पु० त्रिकोण जिसका एक कोण सम कोण हो ।

जात्रा० ना० स्त्री० यात्रा, चलना।

जात्री० ना० पु० यात्री, जानेवाला ।

जान० ना० पु० विमान, सवारी, वाहनादि डीठ, वृन्द, ज्ञान, सब, गु० ज्ञानी ।

जानकी० ना० स्त्री० श्रीसीताजी ।

जानपहिचान० ना० पु० चिन्हार, मुलाकात ।

जाना० अ० क्रि० चलना ।

जानु० ना० पु० घुटना, गांठि ।

जानो० अव्य० समझो, अ० क्रि० जाना ।

जानना० स० क्रि० पहिचानना, समझना ।

जाप० ना० पु० जप, पाठ ।

जापक० }
जापी० } गु० जपकरनेहारा ।

जाब० ना० पु० दाढी ।

जाबी० ना० स्त्री० छोटी दाढी ।

जाम० ना० पु० पहर ।

जामदग्न्य० ना० पु० परशुराम, जमदग्निके पुत्र ।

जामन० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष जाउन, जमावन ।

जामवन्त० ना० पु० ऋक्षोंका प्रधान विशेष ।

जामवन्ती० ना० स्त्री० कृष्ण चन्द्र की स्त्री ।

जामा० ना० पु० एडीतक पहिरने का वस्त्र विशेष ।

जामाता० }
जामातृ० } ना० पु० बेटी का पति ।

जामिनी० ना० स्त्री० राति, यामिनी, जमन देशकी भाषा वा वस्तु ।

जायपत्री० ना० स्त्री० जाविची

जायफल० ना० पु० फलविशेष ।

जाया० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्य्या, गु० जनी ।

जार० ना० पु० उपपति, यार, दूसरापति ।

जारज० } ना० पु० विजन्मा,
जारजात० } शंकरवर्णी, उपपति जाता, यार का जन्माया ।

जारन० ना० पु० जलावन ।

जारना० स० क्रि० जलाना, फूकना, दाहना ।

जारल० ना० पु० काष्ठविशेष ।

जाल० ना० पु० जिससे मछली आदिपकड़ते हैं झंझरी, माया, पाखण्ड, भंवर, फांसी ।

जालगि० अव्य० जिसलिये, सर्व० जिसकेलिये ।

जालरन्ध्र० ना० पु० झरोखा, जालीका ।

जाला० ना० पु० जिसको मकड़ी बनाती है, घटा, मोतियाबिन्दु ।

जालिका० ना० स्त्री० झंझरी ।

जालिनी० ना० स्त्री० मुरहरी देवदाली ।

जालिया० ना० पु० छलिया, जालवाला ।

जाली० ना० स्त्री० बहुतछिद्रों की खिड़की वा कपड़ा आदि ।

जालौन० ना० पु० बुन्देलखण्ड का नगर विशेष ।

जावक० ना० पु० आलता, महावर, सेंधुर ।

जावका० ना० स्त्री० लौंग ।

जावनी० ना० स्त्री० अजवाइन ।

जावा० ना० पु० उपद्वीपविशेष ।

जावां० ना० पु० दो पुत्र जो एकहीसाथ उत्पन्न हों ।

जावालि० ना० पु० मुनिविशेष ।

Digitized by Google

जाविची॰ना॰ स्त्री॰ वृक्षविशेष की छाल।

जासु॰ सर्व्व॰ जिससे जिसको।

जान्हवी॰ ना॰ स्त्री॰ गङ्गाजी।

जाहि॰ सर्व्व॰ जिसको।

जाही॰ ना॰ स्त्री॰ जूही, जाती।

जिगजिगिया॰ गु॰ चापलूसी करनेवाला।

जिगजिगी॰ ना॰ स्त्री॰ लपट सपट, चापलूसी।

जिगना॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।

जिगीषा॰ ना॰ स्त्री॰ जिगसा, जयकी इच्छा।

जिङ्गण॰ ना॰ पु॰ जिगना।

जिजिया॰ ना॰ स्त्री॰ बडीप-स्तन, चूची।

जिठनिया॰ } ना॰ स्त्री॰ जेठ
जिठानी॰ } की स्त्री।

जितना॰ ना॰ पु॰ } परिमाण
जितनी॰ स्त्री॰ } वा अवधि वा संख्या का बोधक।

जितयोनि॰ ना॰ पु॰ हरिण।

जिता॰ } गु॰ परिमाण वा
जितेक॰ } अवधि वा संख्या बोधक।

जितेन्द्रिय॰ } ना॰ पु॰ जिसने
जितेन्द्री॰ } इन्द्रियों को वश किया है।

जिधर॰ अव्य॰ यत्र, जहां।

जिन॰ ना॰ पु॰ ऋषिविशेष।

जिभारा॰ गु॰ गप्पी, जोकठोर बात कहता है।

जिम॰ अव्य॰ जिमि, यथा, जैसे।

जिमाना॰ स॰ क्रि॰ खिलाना

जिमि॰ अव्य॰ यथा, जैसे।

जिय॰ } ना॰ पु॰ आत्मा
जियरा॰ } प्राण, जान।

Digitized by Google

जियाना० स० क्रि० जिलाना प्राण दान देना।
जियावना० स० क्रि० जियाना।
जियौट० गु० स्त्री० सूरता, सूर, योद्धा।
जिलाना० स० क्रि० प्राणदान देना, जीता करना।
जिवाना० स० क्रि० जिमाना, जिलाना।
जिष्णु० ना० पु० अर्जुन, इन्द्र।
जिस० सर्व० सम्बन्ध में आता है।
जिन्हि० सर्व० जिस।
जिह्म० ना० पु० कपट, मूढ़ता।
जिह्मकर० गु० कपटी, छली।
जिह्मग० ना० पु० बाण, तीर।
जिह्वग० ना० पु० सर्प, सांप।
जिह्वता० ना० स्त्री० अधिकवार्त्ता की शक्ति।
जिह्वा० ना० स्त्री० रसना, जीभ।
जिह्वाग्र० ना० पु० मुखाग्र, ज़बानी।
जिज्ञासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा।
जिज्ञासी० } गु० अभिलाषी,
जिज्ञासु० } जानने की इच्छा रखने हारा।
जिज्ञास्य० गु० जानने के योग्य है।
जी० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक।
जीका० ना० स्त्री० जीविका
जीड़ुराना० स० क्रि० सिकोड़ना।
जीत० ना० स्त्री० जय, फ़तह।
जीतना० स० क्रि० जयकरना, हराना।
जीतब० ना० पु० आत्मा, हिया, ज़िन्दगी।
जीतवन्त० } ना० पु० जिस
जीतवैया० } की जय हुई जयमान।

Digitized by Google

जीता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरानहीं।

जीति० ना० स्त्री० जय जीत।

जीतिया० ना० स्त्री० लड़कों के जीने के लिये स्त्रियों का व्रत विशेष।

जीतू० ना० पु० जयवन्त, जीत वैया।

जीना० अ० क्रि० जीतारहना।

जीभ० ना० स्त्री० जिह्वा, रसना, ज़बान्।

जीभारा० गु० गप्पी, बकी।

जीभी० ना० स्त्री० जीभ का मैल उतारनेकीवस्तु।

जीमना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।

जीमार० गु० जो हनने के योग्य हे, निज इच्छा मारने द्वारा।

जीमूत० ना० पु० मेघ, देवदाली।

जीरक० ना० पु० ज़ीरासफेद।

जीरन० गु० जीर्ण, पुराना।

जीरा० ना० पु० ओषधि विशेष का बीज।

जीर्ण० गु० बुड्ढा, पुराना, सड़ा, जाजर।

जील० ना० स्त्री० गाने में अति तीक्ष्ण स्वर।

जीव० ना० पु० प्राण, शरीरादिका धारक, बृहस्पति, चन्द्रमा सदाजियो।

जीवखानि० ना० पु० ईश्वर, अनादिपुरुष।

जीवगर०
जीवट० } गु० सूर्मा, योढ़ा, दृढ़ता।

जीवड़ा० ना० पु० प्राण, प्रियतम।

जीवत० गु० जीते।

जीवदान० ना० पु० रक्षाकरना प्राण बचाना।

जीवधारी० ना० पु० प्राणी, हेवान।

Digitized by Google

जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म से मृत्युतक का काल, जल।

जीवनमूल० ना० स्त्री० जीविकामूल, इयात कीजड़।

जीवना० अ० क्रि० जीता रहना।

जीवनि० ना० स्त्री० } सञ्जीवन बूटी।
जीवनिया० ना० स्त्री० }

जीवन्त० गु० जीता।

जीवन्ती० ना० स्त्री० सञ्जीवन बूटी, गुरच।

जीवभद्रा० } ना० स्त्री० सञ्जीवनबूटी।
जीववर्द्धिनी० }

जीवा० ना० स्त्री० जीवन्ती, जो चापकी एकाग्रसे द्वितीयाग्रतक हो।

जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय।

जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना।

जीहारना० अ० क्रि० निराश होना, डरसे दब रहना।

जुआ० ना० पु० छलकर्म, कीट विशेष, माची।

जुआरि० ना० स्त्री० अन्न विशेष।

जुआरी० ना० पु० द्यूत कर्मी, छलकारी, दुष्ट।

जुग० ना० पु० युग।

जुगति० ना० स्त्री० युक्ति, श्लेष द्व्यर्थ।

जुगती० गु० छली, चतुर, ठठोल, द्व्यर्थ बोलने हारा, उपायी।

जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रात को चमकती है, गले का भूषण विशेष।
जुगनू० ना० पु० }

जुगवना० स० क्रि० रक्षाकरना, बचाना।

Digitized by Google

जुगवैया॰ना॰ पु॰ जुगवने-हारा।

जुगाना॰स॰ क्रि॰ यत्नकरना, किसी के उपकार हेत उपकार करना।

जुगालना॰स॰ क्रि॰ पागुराना, पागुरकरना।

जुगाली॰ना॰ स्त्री॰ पागुर।

जुगुप्सा॰ना॰ स्त्री॰ निन्दा, कुत्सा।

जुगुप्सित॰गु॰ निन्दित, कुत्सित।

जुझावट॰ना॰ पु॰ युद्ध वा समर भाव।

जुझावना॰स॰ क्रि॰ युद्ध में मरवाडालना।

जुटना॰अ॰ क्रि॰ भिड़ना, मिलना, सटना।

जुटाना॰स॰ क्रि॰ भिड़ाना, मिलाना।

जुटैया॰ना॰ पु॰ भिडैया, लड़ाका।

जुठारना॰स॰ क्रि॰ जूठा करना।

जुड़ना॰अ॰ क्रि॰ मिलजाना, सटिजाना।

जुड़ाई॰ना॰ स्त्री॰ जोड़नेका पैसा, जोड़ने का काम, और जुकाम, सर्दी, ठण्ढ।

जुड़ाना॰स॰ क्रि॰ मिलाना, मिलवाना, अ॰ क्रि॰ ठण्डाना, सताना, इ-मलेना।

जुड़िया॰ } ना॰ पु॰ दो लड़के
जुड़िहा॰ } जो एक साथ उपजें।

जुताई॰ना॰ स्त्री॰ खेतजोतने का काम वा जोतने का पैसा।

जुताना॰स॰ क्रि॰ हलचलाके खेत दुरुस्त कर्ना।

जुतियाना॰स॰ क्रि॰ जूतों से मारना।

Digitized by Google

जुद्ध० ना० पु० युद्ध ।

जुधिष्ठिर० ना० पु० युधिष्ठिर ।

जुन्हरी० ना० स्त्री० जुआर ।

जुन्हाई० ना० पु० चन्द्रमा, स्त्री० चांदनी ।

जुन्हार० ना० स्त्री० अन्नविशेष जुआर ।

जुन्हैया० ना० स्त्री० चांदनी, चन्द्रमा ।

जुराइ० ना० स० क्रि० पाना ।

जुराना० अ० क्रि० धीरज-होना, स० क्रि० एकट्ठा होना, पाना ।

जुरावना० गु० जो पाने के योग्य है, मिलनहार ।

जुरुआ० ना० स्त्री० जोरू, पत्नी ।

जुर्नी० अ० क्रि० मिलना, प्राप्त होना, सटना, भिड़ना, एकट्ठा होना ।

जुल० ना० पु० छल ।

जुवती० ना० स्त्री० युवती, जवान औरत ।

जुवराज० ना० पु० युवराज, वलीअहद ।

जुवा० गु० युवा, ना० पु० जूप, जुआ ।

जुवार० ना० पु० अन्न विशेष ।

जुवारी० ना० पु० जुआरी, जूपी ।

जुहार० ना० पु० सलाम, प्रणाम ।

जू० अव्य० जी ।

जूआ० ना० पु० गाड़ी वा हल का काठ जिसमें बैल मचते हैं, माची, द्यूत, जूप ।

जूआट० ना० पु० जूआ ।

जूआरी० ना० पु० जूआ खेलने में चतुर ।

जूं० ना० स्त्री० चीलड़ ।

जूझ० ना० पु० युद्ध, समर ।

Digitized by Google

जूझना॰ अ॰ क्रि॰ लड़ना, लड़ाई में कटना, अर्थात् लड़मरना।

जूट॰ ना॰ पु॰ झगड।

जूठ॰ ना॰ पु॰ खायाभया।

जूठन॰ ना॰ स्त्री॰ भोजन के पीछे शेष रहना।

जूठा॰ गु॰ जूठ, खायाहुआ।

जूड़॰ गु॰ ठण्ढा, शीतल, ना॰ पु॰ शीत।

जूड़ा॰ ना॰ पु॰ ठण्ढा, शीत, सिरके पीछे गांठि दिये हुये बाल।

जूड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ अन्तरिया, जाड़े का रोग।

जूता॰ ना॰ पु॰ } पनही, चमड़े की पादुका।
जूती॰ ना॰ स्त्री॰ }

जून॰ ना॰ पु॰ समय, काल, वक्त।

जूना॰ ना॰ पु॰ तृणकी रस्सी, ढेंढोड़ई घास।

जूप॰ ना॰ पु॰ जूआ।

जूपी॰ गु॰ जुआरी।

जूरा॰ ना॰ पु॰ बालों की गांठि, चोटी।

जूरी॰ ना॰ स्त्री॰ समूह, जुरी

जूस॰ ना॰ पु॰ परेह, रोगी का पथ्य, शोरबा।

जूह॰ ना॰ पु॰ समूह, जूआ।

जूही॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प का वृक्ष विशेष।

जे॰ सर्व्व॰ जो, सब।

जेट॰ ना॰ स्त्री॰ ढेर।

जेठ॰ ना॰ पु॰ पति का बड़ाभाई, ज्येष्ठ।

जेठरा॰ गु॰ पहिलौठा, पति का बड़ाभाई।

जेठा॰ गु॰ पहिलौठा, वड़ा, कुसुम का पहिला रङ्ग।

जेठानी॰ ना॰ स्त्री॰ जेठ की स्त्री।

जेठी॰ गु॰ बड़ी।

Digitized by Google

जेठीमधु० ना० पु० मुलहठी।

जेठौत० ना० पु० जेठका पुत्र।

जेता०
जेतिक० } गु० जितना।

जेब० ना० पु० खलीता, पाकट, फ़ारसी शब्द है।

जेयमान० गु० जीतनेवाला, जयमान।

जेर० ना० पु० खेरी।

जेवड़ा० ना० पु० रस्सा, डोर।

जेवना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।

जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ।

जेवरी० ना० स्त्री० रस्सी, डोरि।

जेहर० ना० पु० स्त्रियों का भूषण विशेष।

जैत० ना० पु० वृक्षविशेष, रागिनी विशेष।

जैन० ना० पु० नास्तिकों का मत विशेष।

जैनी० गु० जैन मत वाला, सरावक, सरौगी।

जैमाला० ना० स्त्री० जयमाला, जीति की माला।

जैमिनि० ना० पु० मुनिविशेष।

जैमिनी० गु० ब्रह्मवादी।

जैसा० अव्य० यथा।

जैहैं० अ० क्रि० जायंगे।

जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है, अव्य० यदा-यदि।

जोआरभाटा० ना० पु० समुद्र के जलका चढ़ाव उतार।

जोइ० ना० स्त्री० जोरू, दुलहन।

जों० अव्य० जो, यदि, जैसा, ज्यों।

जोंक० ना० स्त्री० जलोका, रक्तपा, जल जन्तु।

जोंकर० अव्य० जिस प्रकार।

जोंहीं० अव्य० जिस समय।

Digitized by Google

जोख० ना० स्त्री० तोल।

जोखना० स० क्रि० तोलना।

जोखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शङ्का, घटी।

जोखिमी० ना० पु० जोखिम उठाने हारा।

जोखों० ना० स्त्री० जोखिम।

जोग० ना० पु० योग।

जोगमाया० ना० स्त्री० माया रूपी शक्ति जो जोगियों में है जिस करके वह कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश राखें।

जोगवत० क्रि० परखत, राखत, रखत।

जोगा० गु० योग्य।

जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास।

जोगिन्० ना० स्त्री० जोगन्, जोगी की स्त्री।

जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी।

जोगिया० ना० पु० जोगी, गु० रङ्गविशेष, ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

जोगी० ना० पु० योगी, शान्त।

जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुजारी, विशेष श्री महादेव जी, श्री- विष्णु नारायण।

जोग्य० गु० योग्य, उत्तम, अच्छा।

जोजन० ना० पु० योजन, चार कोस।

जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी, गु० सम।

जोटा० ना० पु० जोड़ा।

जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, येमली, मीज़ान्।

जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती।

Digitized by Google

जोड़न० ना० पु० जोड़ागा, सांठन, जामन्।

जोड़ना० स० क्रि० मिलाना, एकट्ठा करना, लगाना, सङ्कलनकरना, धनबटोरना, बनाना, गांठना।

जोड़ा० ना० पु० युग्म, दूसरा, जूता, धोती, एक बार पहिरने के कपड़े।

जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़नेका काम वा पैसा।

जोड़ी० ना० स्त्री० युग्म, दूसरा।

जोत० ना० स्त्री० उजाला, प्रकाश, ज्योति, हल प्रवाह, किरण, टेम, दृष्टि।

जोतना० स० क्रि० नांधना, जुये में लगाना, हलाई करना, खेत बनाना।

जोतमान्० गु० ज्योतिष् मान्, चमकदार।

जोतार० ना० पु० हलवाहा, किसान्।

जोति० ना० स्त्री० जोत, प्रकाश, तारा, द्युति, आंखिआदि की, ईश्वर।

जोतिष० ना० पु० ज्योतिष, नजूम।

जोतिषी० गु० ज्योतिषी, नजूमी।

जोतिस्वरूप० गु० तेजस्वी, एक नाम श्री भगवान का है।

जोती० ना० स्त्री० तराजू के पल्ले की रस्सी, खड़ाऊं की रस्सी।

जोत्स्ना० ना० स्त्री० चन्द्रिका, चन्द्रकला।

जोत्स्नी० ना० स्त्री० राति, रैन, निशा।

जोधन० ना० पु० लड़ाई, समर।

जोधा० ना० पु० योद्धा।

जोन०
जोनि० } ना० स्त्री० योनि।

Digitized by Google

जोन्ह० ना० पु० चन्द्रमा, चांदनी।

जोबन० ना० पु० यौवन, छाती, स्तन।

जोबनवती० गु० यौवनवती।

जोबनमा० } ना० पु० जोबन,
जोबना० } यौवन।

जोय० ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, जोरू।

जोयसी० गु० ज्योतिषी।

जोरू० ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, बीबी।

जोला० ना० पु० छल, धोखा।

जोवत० क्रि० चाहत, देखत।

जोवना० स० क्रि० देखना, ताकना।

जोसी० ना० पु० ज्योतिषी, जाति विशेष।

जोहना० स० क्रि० बाटदेखना, ढूंढना।

जौ० ना० पु० अन्न विशेष, यव अव्य० जब, यदि।

जौतुक० ना० पु० यौतुक दायजा।

जौन० सर्व० जो।

जौलौ० अव्य० जबतक।

ज्या० ना० स्त्री० माता, पृथ्वी, कमान का रोदा।

ज्याना० स० क्रि० पालना, जिलाना।

ज्येष्ठ० ना० पु० जेठकामहीना, बड़ाभाई, गु० श्रेष्ठ, उत्तम।

ज्येष्ठा० ना० स्त्री० १८ अठारहवां नक्षत्र।

ज्योति० ना० स्त्री० जोति, लालचन्दन।

ज्योतिर्गण० ना० पु० तारागण।

ज्योतिष० ना० पु० विद्याविशेष, शास्त्र विशेष, इल्म नजूम।

Digitized by Google

ज्योतिषी॰ना॰ पु॰ ज्योतिष शास्त्रका ज्ञाता, नजूमी, पण्डित ।

ज्योतिष्मती॰ना॰ स्त्री॰ मालकांगनी ।

ज्योतिष्मान्॰ गु॰ प्रतापी, तेजस्वी ।

ज्योत्स्ना॰ना॰ स्त्री॰ चांदनी ।

ज्यौनार॰ना॰ स्त्री॰ खाना, पाक, भोजन ।

ज्वर॰ना॰ पु॰ तप, ताप, बुखार ।

ज्वरविनाशिनी॰ना॰ स्त्री॰ गुरच, मजीठ ।

ज्वरा॰ना॰ स्त्री॰ मृत्यु, मौत ।

ज्वरान्तक॰ना॰ पु॰ चिरायता ।

ज्वलन॰ ना॰ स्त्री॰ जलन, आगिकी जीभ विशेष ।

ज्वार॰ना॰ पु॰ अन्न विशेष ।

ज्वारी॰ना॰ पु॰ जूआरी ।

ज्वाला॰ना॰ स्त्री॰ आंच, लौ, लपक, आग ।

ज्वालामुखी॰ना॰ स्त्री॰ स्थान विशेष जिसमें अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है ।

[झ]

झंखाड़॰ना॰ पु॰ बिना पत्ते के वृक्ष ।

झंझट॰ना॰ पु॰ झगड़ा, घबराहट ।

झंझटी॰ गु॰ कठिन, झगड़ालू ।

झंझना॰ गु॰ चिड़चिड़ा ।

झंझनाना॰ अ॰ क्रि॰ टुनटुनाना, बजना, और पड़पड़ाना ।

झंझनाहट॰ना॰ स्त्री॰ चिड़चिड़ाहट, झनकार ।

झंझावायु॰ना॰ पु॰ प्रचण्डपवन, आंधी ।

झंवाना॰ अ॰ क्रि॰ धूपसे कृष्णवर्ण होना, स॰ क्रि॰ झामें से पांव धोना, सुखाना ।

झक० ना० पु० क्रोध ।

झकझोरी० ना० स्त्री० छीना-छानी ।

झकना० अ० क्रि० बकना, बक-बक करना, हाय हाय करना ।

झकरी० ना० स्त्री० टोकनी ।

झकाझक० गु० झलाझल ।

झकोर० ना० स्त्री० टोटा, विपत्ति, बोछार ।

झकोरना० स० क्रि० चलाना, जैसे आंधी में झड़ी ।

झकोरा० ना० पु० झपास, वायुसमेत झड़ी, बौछार ।

झकोलना० स० क्रि० डुलाना ।

झक्कड़० ना० पु० आंधी, चोबायी ।

झक्की० ना० पु० विना प्रयोजन बकवादी ।

झखना० अ० क्रि० झंखना ।

झगड़ना० अ० क्रि० लड़ना, भिरना ।

झगड़ा० ना० पु० लड़ाई, रगड़ा ।

झगड़ाना० स० क्रि० झगड़ा कराना, लड़ाना ।

झगड़ालिन० गु० लड़ाकास्त्री ।

झगड़ालू० ना० पु० लड़ाका ।

झगा० ना० पु० झंगा ।

झगुला० ना० पु० कुर्त्ता ।

झझा० ना० पु० लम्बीदाढ़ी ।

झझकारना० स० क्रि० दब-काना, दबाना ।

झझला० ना० पु० मिठाई विशेष ।

झञ्झर० ना० पु० झझर ।

झञ्झरी० ना० स्त्री० झरोखा ।

झञ्झा० ना० स्त्री० झड़ीसमेत आंधी ।

झञ्झावायु० ना० पु० प्रचण्ड-पवन, आंधी ।

झट० गु० उतावली, अव्य० शीघ्र ।

झटक० ना० स्त्री० खचोट, उछाल ।

Digitized by Google

झटकना॰ स॰ क्रि॰ खसोटना, निझोटना, अ॰ क्रि॰ दुबला होजाना।

झटका॰ पु॰ जो झटकेसे मारा-गया, फाड़ागया, ना॰ पु॰ खींच, खसोट।

झटकाना॰ स॰ क्रि॰ झटका, लगाना।

झटपट॰ अव्य॰ तुरन्त, शीघ्र।

झटास॰ ना॰ पु॰ झड़ाका, बौछार।

झटिति॰ अव्य॰ तुरन्त, शीघ्र।

झड़॰ ना॰ स्त्री॰ झड़ी, ताला विशेष, तालेकीकल।

झड़न्॰ ना॰ स्त्री॰ टपकन, जैसे फल पक कर गिरते हैं, बत्ती की टेम का फूल।

झड़ना॰ अ॰ क्रि॰ टपकना, गिरना, पतन होना, निकलना, छनना, नौब-त बजना।

झड़प॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ुआहट, हमला।

झड़पना॰ अ॰ क्रि॰ लड़ना, हमलाकरना।

झड़पाझड़पी॰ ना॰ स्त्री॰ लड़ाई, दपटादपटी।

झड़पाना॰ स॰ क्रि॰ लड़ाना।

झड़बेर॰ ना॰ पु॰ } जङ्गली
झड़बेरी॰ ना॰ स्त्री॰ } बेर।

झड़वाना॰ स॰ क्रि॰ झड़ाना

झड़ाक॰ } ना॰ पु॰ उता-
झड़ाका॰ } वली, फुर्त्ती, हड़-बड़ी।

झड़ाझड़॰ अव्य॰ चटपट।

झड़ाना॰ स॰ क्रि॰ झाड़ूदिल-वाना, झाड़ फूक कराना।

झड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ लगातारवृष्टि, और ऊपरी प्राप्ति।

झड़ौता॰ ना॰ पु॰ फलादिका अन्तसमय।

Digitized by Google

झगड़ा० ना० पु० ध्वजा, पताका।

झगडूला० गु० पत्तों से घना वृक्ष, बालों से घना शिर।

झनक० ना० पु० धातुकी वा वस्तुभिड़ने का शब्द।

झनकाना० अ० क्रि० झनझनाना।

झनकार० ना० स्त्री० झंझकार, ठनकार।

झनकारना० स० क्रि० बजाना।

झनवां० ना० पु० धानविशेष।

झप० अव्य० झट, तुरन्त, शीघ्र।

झपकना० स० क्रि० झलना, पंखाहिलाना, अ० क्रि० लपकना, झपटलेना, पलकमारना।

झपकाना० स० क्रि० पलकमारना, मटकाना।

झपकी० ना० स्त्री० लपक, मटकी, नींद।

झपट० ना० स्त्री० लपक, चढ़ाई डांट।

झपटना० अ० क्रि० लपकना, चढ़िदौड़ना।

झपट्टा० ना० पु० धावा, दौड़, लपक।

झपट्टामारना० स० क्रि० झपटलेना।

झपलाना० स० क्रि० खंगालना, धोना।

झपाझपी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।

झपात० ना० स्त्री० स्फूर्त्ति जल्दी।

झपाना० अ० क्रि० झपकीलेना, ढपाना।

झपास० ना० स्त्री० फूही, झीसी।

झपासिया० गु० छली, अधर्मी

झबकाना० स० क्रि० घाबरा करना।

झबिया० ना० पु० भूषणविशेष

झबुआ ० गु० जिसकुत्ते का बकरे के बाल बड़े बड़े हों, झबाऊआ।
झबा ० ना० पु० लटकना।
झमक ० ना० स्त्री० चमक।
झमकड़ा ० ना० पु० चटकीला, भटक।
झमकना ० अ० क्रि० चमकना, नाचना।
झमका ० ना० पु० प्रताप, शान।
झमकी ० ना० स्त्री० झमक, झलक, चमक।
झमझम ० अव्य० लगातार।
झमझमाना ० अ० क्रि० चमकना।
झमरझमर ० अव्य० बूंदबूंदसे।
झमाका ० ना० पु० झड़ी, बेगआई।
झमाझम ० अव्य० झमझम।
झम्पा ० गु० झपाऊआ, ढकाभया, ना० पु० चकुल।
झर ० ना० पु० सेता, झरना झड़ी, जलन।
झरना ० ना० पु० सोता, झर्ना, झारने वाला।
झरोखा ० ना० पु० झंझरी, खिड़की।
झझर ० ना० पु० झंझर।
झर्ना ० ना० पु० सोता, झाड़ने की कपड़ा, बऊत छेदका सूप विशेष, अ० क्रि० झड़ना, गिरना।
झल ० ना० स्त्री० क्रोध, जल-जलाऊट, आग की उष्णता।
झलक ० ना० स्त्री० चमक, उजाला।
झलकना ० अ० क्रि० चमकना।
झलका ० ना० पु० फफोला, फोला।
झलकाना ० स० क्रि० चमकाना, उज्ज्वल कराना।
झलकी ० ना० स्त्री० दृष्टि।

Digitized by Google

झलझल० ना० पु० चमक, लहक।

झलझलाना० अ० क्रि० चमकना, क्रोधित होना।

झलझलाहट० ना० स्त्री० चमक, परपराहट।

झलना० स० क्रि० झपकना, अ० क्रि० सुधरना।

झलमल० ना० पु० चमक।

झलहाया० गु० बसवासी, ज्वलित।

झलाझल० गु० ज्योतिष्मान, स्त्री० झलक।

झलाबोर० गु० चमकीला, भड़कीला, ना० पु० चमत्कार।

झलाना० स० क्रि० सुधारना, जोड़ना।

झलार० ना० पु० झाड़ी।

झष० ना० पु० मछली, मत्स्य।

झषकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।

झांईं० ना० स्त्री० परछाईं, लहसुन, मुखपरश्यामता होजाना।

झांक० ना० पु० ताक, ना० पु० हिरण वा पक्षियों का झुण्ड।

झांकड़० ना० पु० झाड़ी।

झांकना० स० क्रि० झपके देखना, ताकना।

झांकाझांकी० ना० स्त्री० देखादेखी, ताकाताकी।

झांख० ना० पु० हिरणविशेष।

झांझ० ना० स्त्री० बड़ा मजीरा, झगड़ा।

झांझट० ना० पु० झगड़ा, रगड़ा।

झांझा० ना० पु० कीट विशेष, झगड़ा।

झांझिया० गु० क्रोधी, बखेड़िया।

झांझो० ना० स्त्री० खेलविशेष।

झांपना०स० क्रि० ढांपना, छुपाना।
झांवरा० गु० काला।
झांवली० ना० स्त्री० चोचल, हाव, भाव।
झांवा० ना० पु० अत्यन्त पक्की ईंट।
झांसना० स० क्रि० उभारना।
झांसा० ना० पु० फुसलावा, धोखा।
झांसी० ना० पु० बुन्देलखण्ड में नगर विशेष।
झांसू० ना० पु० फुसलाऊ, धोखाबाज।
झाऊ० ना० पु० छोटा वृक्ष विशेष।
झाग० ना० पु० फेना।
झाझा० ना० पु० मादकवस्तु।
झाड़० ना० पु० छोटावृक्ष, जोपीतलआदिकाबनता है।
झाड़खण्ड० ना० पु० वन, बैजनाथ के पासका वन विशेष, गु० झाड़ूला, छन।
झाड़न० ना० पु० बुहारन, कचरा, कर्कट, कूड़ा, पोंछन।
झाड़ना० स० क्रि० बुहारना, फर्चाकरना, पटकना, निकालना।
झाड़न्त० अव्य० सभी।
झाड़ा० ना० पु० गुह, मलका त्याग, हगना।
झाड़ी० ना० स्त्री० बधना, बन, जङ्गल।
झाड़ू० ना० स्त्री० बढ़नी, बुहारी।
झापा० ना० पु० टोकरीविशेष।
झावा० ना० पु० चमड़े का पात्र तेल घी मापने के लिये।
झामा० ना० पु० झांवा।

झार॰ना॰ पु॰ आगकीलव, ज्वाला, सब, अव्य॰ कडुआहट ।

झारि॰अव्य॰ सब, तमाम, कमाल ।

झारी॰ना॰स्त्री॰थाली,झाड़ी, दे मुख का जलपात्र विशेष ।

झाल॰ना॰ पु॰ कडुआहट, बड़ी टोकरी, धातुका सुधारना ।

झालना॰स॰क्रि॰ चिकनाना, ओपना, जोड़ना ।

झालर॰ना॰ स्त्री॰ आंचल, गुच्छे ।

झालरा॰ना॰ पु॰ सोता, गु॰ बढ़ाऊआ ।

झिझक॰ना॰ स्त्री॰ चौंक, भड़क, डर, भय ।

झिझकना॰अ॰क्रि॰ चौंकना, भड़कना, डरना ।

झिझका॰गु॰ चौंकाऊआ, भयमान ।

झिझकना॰स॰ क्रि॰ भड़काना, डराना, चौंकाना, भबकाना ।

झिझंकी॰ना॰ स्त्री॰ भड़की, चौंक, डर ।

झिञ्झा॰ना॰पु॰ जिगनाइन्च, फूटीकौड़ी ।

झिञ्झाणी॰ना॰स्त्री॰ जिगनाइन्च ।

झिञ्झा॰ना॰स्त्री॰फूटीकौड़ी।

झिड़क॰ना॰ स्त्री॰ धमकी, भबकी, गटकी ।

झिड़कना॰स॰क्रि॰ घुड़कना, दबकाना, धमकाना, झटकादेना ।

झिड़काझिड़की॰ना॰स्त्री॰ झगड़ाझिगड़ी ।

झिड़की॰ना॰ स्त्री॰ घुड़की ।

झिनहट्टा॰ }
झिनहड्डा॰ } गु॰ सुखटा ।

झिरझिर॰गु॰ जोपतलीधार से बहता, पतला ।

Digitized by Google

झिरझिरा० गु० बहुत पतला।

झिरझिराना० अ० क्रि० बहना, तिरतिराना।

झिलगा० ना० पु० खाट की पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु० पुरानी खाट।

झिलड़ा० ना० पु० पक्षजाति विशेष।

झिलम० ना० स्त्री० युद्ध में पहिरने के लिये लोहे की कुर्त्ती, टोप पर लोहे का कटोरा, बकतर।

झिलमिल० ना० पु० द्वार विशेष।

झिलमिलाना० अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना।

झिल्लिका० ना० स्त्री० झींगुर।

झिल्ली० ना० स्त्री० झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी।

झींकना० अ० क्रि० पछिताना, शोकित होना, पीनगमें आना।

झींगट० ना० पु० माझी, पटनी।

झींगा० ना० पु० जल कीट प्रसिद्ध।

झींगुर० ना० पु० कीटविशेष, घुरघुरा।

झीण०, झीन०, झीना० गु० सूक्ष्म, पतला, बारीक।

झीरका० ना० स्त्री० झींगुर, कीट।

झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाशय, बड़ा ताल।

झींसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी २ बूंदें।

झुकना० अ० क्रि० निहुरना, चलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।

Digitized by Google

झुकाना० स० क्रि० निठुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

झुकावट० ना० स्त्री० चला-वट, निठुराई।

झुञ्झलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाना, जलजलाना।

झुठलाना० } स० क्रि० झूंठा-
झुठालना० } करना, मिथ्या-बतलाना, अशुद्ध करना।

झुण्ड० ना० पु० मण्डल, समूह, अखाड़ा।

झुण्डा० ना० पु० पताका, झण्डा।

झुण्डी० ना० स्त्री० झांडी, वृक्षों का समूह।

झुन० ना० पु० थोड़ी समानता।

झुनझुना० ना० पु० खिलोना विशेष।

झुनझुनी० ना० स्त्री० पैंजनी।

झुमका० ना० पु० कान का भूषण विशेष, फूल वा फल का गुच्छा, फूल विशेष।

झुरमुट० ना० पु० झाड, मण्ड-ली, झूमक।

झुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

झुराने० गु० सूखे।

झुरिआना० स० क्रि० सिकाना, खोहना, पोंछना, उज्ज्व-ल करना।

झुरी० ना० स्त्री० शरीर के मांस का सिकोड़।

झुर्नी० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

झुलकाना० स० क्रि० जला-देना, झुलसाना।

झुलना० अ० क्रि० लटकना, डुलना।

झुलझुली० ना० स्त्री० कान के पात।

Digitized by Google

झिरझिरा ० गु० बहुतपतला ।

झिरझिराना ० अ० क्रि० बहना, तिरतिराना ।

झिलगा ० ना० पु० खाट की पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु० पुरानी खाट ।

झिलड़ा ० ना० पु० पदाति विशेष ।

झिलम ० ना० स्त्री० युद्ध में पहिरने के लिये लोहे की कुर्त्ती, टोप परलोहे का कटोरा, बकतर ।

झिलमिल ० ना० पु० द्वार विशेष ।

झिलमिलाना ० अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना ।

झिल्लिका ० ना० स्त्री० झींगुर ।

झिल्ली ० ना० स्त्री० झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी ।

झींकना ० अ० क्रि० पछिताना, शोकित होना, पीनगमें आना ।

झींगट ० ना० पु० माझी, पटनी ।

झींगा ० ना० पु० जल कीट प्रसिद्ध ।

झींगुर ० ना० पु० कीटविशेष, घुरघुरा ।

झीण ०, झीन ०, झीना ० गु० सूक्ष्म, पतला, बारीक ।

झीरुका ० ना० स्त्री० झींगुर, कीट ।

झील ० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाशय, बडाताल ।

झीसी ० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी २ बूंदें ।

झुकना ० अ० क्रि० निहुरना, चलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना ।

Digitized by Google

भुकाना० स० क्रि० निडराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

भुकावट० ना० स्त्री० चलावट, निडराई।

भुझलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाना, जलजलाना।

भुठलाना० } स० क्रि० भूंठा-
भुठालना० } करना, मिथ्या-बतलाना, अशुद्ध करना।

भुण्ड० ना० पु० मण्डल, समूह, अखाड़ा।

भुण्डा० ना० पु० पताका, भाण्डा।

भुण्डी० ना० स्त्री० भांडी, वृक्षों का समूह।

भुन० ना० पु० थोड़ी समानता।

भुनभुना० ना० पु० खिलोना विशेष।

भुनभुनी० ना० स्त्री० पैंजनी।

भुमका० ना० पु० कान का भूषण विशेष, फूल वा फल का गुच्छा, फूल विशेष।

भुरमुट० ना० पु० भाड, मण्डली, भूमक।

भुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

भुराने० गु० सूखे।

भुरिआना० स० क्रि० सिकाना, सोहना, पोंछना, उज्ज्वल करना।

भुरी० ना० स्त्री० शरीर के मांस का सिकोड़।

भुर्नी० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

भुलकाना० स० क्रि० जला-देना, भुलसाना।

भुलना० अ० क्रि० लटकना, डुलना।

भुलभुली० ना० स्त्री० कान के पात।

Digitized by Google

झिरझिरा० गु० बहुतपतला।
झिरझिराना० अ० क्रि० बहना, तिरतिराना।
झिलगा० ना० पु० खाट की पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु० पुरानी खाट।
झिलड़ा० ना० पु० पदाति विशेष।
झिलम० ना० स्त्री० युद्ध में पकड़न के लिये लोहे की कुर्त्ती, टोप परलोहे का कटोरा, बकतर।
झिलमिल० ना० पु० द्वार विशेष।
झिलमिलाना० अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना।
झिल्लिका० ना० स्त्री० झींगुर।
झिल्ली० ना० स्त्री० झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी।
झींकना० अ० क्रि० पछिताना, शोकित होना, पीनगमें आना।
झींगट० ना० पु० माझी, पटनी।
झींगा० ना० पु० जल कीट प्रसिद्ध।
झींगुर० ना० पु० कीटविशेष, घुरघुरा।
झीण० }
झीन० } गु० सूक्ष्म, पतला, बारीक।
झीना० }
झीरुका० ना० स्त्री० झींगुर, कीट।
झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाशय, बड़ाताल।
झीसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी २ बूंदें।
झुकना० अ० क्रि० निहुरना, चलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।

Digitized by Google

झुकाना० स० क्रि० निझराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

झुकावट० ना० स्त्री० चलावट, निझराई।

झुंझलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाना, जलजलाना।

झुठलाना० } स० क्रि० झूंठा-
झुठालना० } करना, मिथ्याबतलाना, अशुद्ध करना।

झुण्ड० ना० पु० मण्डल, समूह, अखाड़ा।

झुण्डा० ना० पु० पताका, झण्डा।

झुण्डी० ना० स्त्री० झांडी, वृक्षों का समूह।

झुन० ना० पु० थोड़ी समानता।

झुनझुना० ना० पु० खिलोना विशेष।

झुनझुनी० ना० स्त्री० पैंजनी।

झुमका० ना० पु० कान का भूषण विशेष, फूल वा फल का गुच्छा, फूल विशेष।

झुरमुट० ना० पु० झाड, मण्डली, झूमक।

झुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

झुराने० गु० सूखे।

झुरिआना० स० क्रि० सिकाना, सोहना, पोंछना, उज्ज्वल करना।

झुरी० ना० स्त्री० शरीर के मांस का सिकोड़।

झुर्ना० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

झुलकाना० स० क्रि० जलादेना, झुलसाना।

झुलना० अ० क्रि० लटकना, डुलना।

झुलझुली० ना० स्त्री० कान के पात।

Digitized by Google

झुलसना॰ अ॰ क्रि॰ भुलसना, जलजाना।

झुलसाना॰ स॰ क्रि॰ भुलसाना, जला देना।

झुल्ला॰ ना॰ पु॰ पहिरने का वस्त्र विशेष।

झूंझल॰ ना॰ पु॰ क्रोध का आवेश।

झूंटर॰ ना॰ स्त्री॰ भूमिजिसमें वर्षा में दो बार अन्न बोते हैं।

झूंठनझांठन॰ ना॰ पु॰ छूटा, बचा।

झूठ॰ गु॰ मिथ्या, अशुद्ध।

झूठा॰ गु॰ मिथ्यावादी, छूत-छुआ, ना॰ पु॰ उच्छिष्ट, खानाखायकेरहगया।

झूना॰ ना॰ पु॰ पक्कानारियल, महीन वस्त्र, चूल्हे में ईंधन और आग-रखना।

झूमक॰ ना॰ स्त्री॰ झुमट।

झूमझूम॰ ना॰ पु॰ घन, लटक लटक।

झूमना॰ अ॰ क्रि॰ लहरना, हिलाना, ऊंघना, उम-गड़ना, घिरना।

झूरना॰ स॰ क्रि॰ कूटना, पेड़ से फल झाड़ना, सूखना।

झूरा॰ गु॰ सूखा, मुरझाया हुआ।

झूल॰ ना॰ स्त्री॰ बैलादि पशु-ओं का ओढ़ना।

झूलना॰ अ॰ क्रि॰ डोलना, हिलना, लटकना, ना॰ पु॰ छन्द विशेष।

झूला॰ ना॰ पु॰ हिंडोला, ढांख वृक्ष।

झोंक॰ ना॰ स्त्री॰ ढकेल, धक्का, झकोड़।

झोंकना॰ स॰ क्रि॰ ढकेलना, फेंकना, ईंधन भाड़ में डालना।

Digitized by Google

झोंटा॰ ना॰ पु॰ } शिरकेपी-
झोंटी॰ ना॰ स्त्री॰ } छे केबाल, झूलेका हिलाना ।

झोंपड़ा॰ ना॰ पु॰ } मढ़ी, छ-
झोंपड़ी॰ स्त्री॰ } प्पर का छोटाघर ।

झोंपा॰ ना॰ पु॰ फलकागुच्छा, बाल, घिराव ।

झोंरा॰ ना॰ पु॰ गुच्छा ।

झोंक॰ ना॰ स्त्री॰ झोंक ।

झोका॰ ना॰ पु॰ झोंका, ठोकर, ठेस, झकोरा ।

झोझ॰ ना॰ पु॰ खोंता, ओझ, बड़ापेट ।

झोझा॰ ना॰ पु॰ ओझा, बड़-पेटा, बड़ापेट ।

झोटिङ्ग॰ ना॰ पु॰ प्रेतभेद ।

झोटी॰ ना॰ स्त्री॰ चोटी ।

झोल॰ ना॰ स्त्री॰ कपड़े की सकोड़ वा चुन्नत, बच्चे ।

झोला॰ ना॰ पु॰ थैला, पर्य्याङ्क ।

झोली॰ ना॰ स्त्री॰ थैली ।

झौंरा॰ गु॰ सांवला, पीला ।

झौंसना॰ अ॰ क्रि॰ बहुतजल-जाना ।

झौंसा॰ गु॰ जोबहुतजलगया ।

झौड़॰ ना॰ स्त्री॰ झगड़ा ।

झौरी॰ ना॰ स्त्री॰ खेत की घास ।

[ट]

टक॰ ना॰ स्त्री॰ स्वभाव, ताक, दृष्टि ।

टकटकी॰ ना॰ स्त्री॰ घूर, ताक ।

टकना॰ अ॰ क्रि॰ सिलना, सिलजाना ।

टकराना॰ स॰ क्रि॰ टक्करखि-लवाना, टक्कर मारना, अ॰ क्रि॰ टटोलना ।

टकवाना॰ स॰ क्रि॰ सिलवाना, सिलाना ।

Digitized by Google

टकसाल० ना० पु० स्थान, जहां रुपया आदि बनाया जाता है ।

टकसालिया०
टकसाली० } ना० पु० टकसालका कामकरने हारा ।

टका० ना० पु० दोपैसे ।

टकाई० ना० स्त्री० सिलाई, कार ।

टकी० ना० स्त्री० ताक, टुकी ।

टकुआ० ना० पु० तकला, तकुआ ।

टकैत०
टकैता० } गु० धनवान्, मालदार ।

टकोर०
टकोरा० } ना० पु० चुचकारी, चुमकारी, अतिछोटा कच्चा आंब, ढोलबजाने की गति वा शब्द ।

टकोरना० स० क्रि० सेंकना, ततारना ।

टकौना० ना० पु० टका ।

टक्कर० ना० स्त्री० ठोकर, ठेला ठेली, सिरसे सिर लड़ाना, जैसे मेढ़े लड़ाते हैं ।

टखना० ना० पु० गुल्फ, घुटना

टघलना० अ० क्रि० पिघलना

टघलाना० स० क्रि० पिघलाना ।

टङ्क० ना० पु० चारमाशे की तौल, खड्ग ।

टङ्कण० ना० पु० सोहागा ।

टङ्कोर० ना० स्त्री० धनुष के रोदे का शब्द ।

टङ्कोरना० स० क्रि० धनुष की पच्च झाड़ना ।

टङ्गना० अ० क्रि० लटकना ।

टङ्गड़ी० ना० स्त्री० टांग, गोड़ा

टच्च० गु० सूम, कृपण ।

टटका० गु० नया, नवीन, ना० पु० चतारापुतारा ।

Digitized by Google

टटकी॰ना॰ स्त्री॰ नई. नवीन, ताज़ी।

टटवानी॰ स॰ (खोज, खोजी, ढूँढ़ी।

टटिया॰ ना॰ स्त्री॰ टट्टी. झांप, द्वारबन्द करने के (कोइ) लत्ता दिकी बनती है।

टटीहरा॰ ना॰ पु॰) पक्षी वि-
टटीहरी॰ स्त्री॰) शेष।

टटुआ॰ ना॰ पु॰ छोटा घोड़ा।

टटुई॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी घोड़ी।

टटोलना॰ स॰ क्रि॰ टोया टोई मारना, अंगुलियों से छूना।

टट्टी॰ ना॰ स्त्री॰ चाँदी, झाप।

टट्टर॰ }
टट्टा॰ } ना॰ पु॰ बड़ी टट्टी।

टट्टी॰ ना॰ स्त्री॰ टटिया, फर-किया।

टट्टू॰ ना॰ पु॰ छोटा घोड़ा।

टसड़ा॰ ना॰ पु॰ बखेड़ा, लड़ाई, खटापटी।

टप॰ ना॰ पु॰ कूद, फांद, बूंद।

टपका॰ ना॰ स्त्री॰ पीड़ित, टप-काने का शब्द।

टपकना॰ अ॰ क्रि॰ टपटपाना, चूना, झरना, रिसना, टोसना।

टपका॰ ना॰ पु॰ पानी की बूंद, फल जो वृक्ष से पककर गिरता है, यथा आंब।

टपकाना॰ स॰ क्रि॰ चुआना, छानना, रसाना।

टपाना॰ स॰ क्रि॰ भुलवाना, कुदवाना।

टपपड़ना॰ स॰ क्रि॰ जोर के काम में आ कूदना।

टपना॰ अ॰ क्रि॰ भूलना, कूदना।

टपाना॰ स॰ क्रि॰ भुलाना, फंदवाना, कुदवाना।

Digitized by Google

टप्पा ० ना० पु० डाकभर, डाक-घर, मैदान, जो तालके गायी जाती है, राग-विशेष ।

टपका ० ना० स्त्री० जो पानीके गिरने से किसी गड्ढे वा बर्तन में होता है ।

टपकना ० अ० क्रि० चूना, टपका होना, चोलना ।

टर ० ना० स्त्री० शेखी, एंठ, गु० मतवाला, अचेत ।

टरटर ० ना० स्त्री० बकबक ।

टरटराना ० अ० क्रि० बकबक करना ।

टरटरी ० ना० स्त्री० बकबकी ।

टरना ० अ० क्रि० डलना, टलना, हटना ।

टराना ० स० क्रि० टलवाना, हटाना ।

टर्रा ० गु० झगरा, दुष्ट, बकी, बकवादी ।

टर्राना ० अ० क्रि० बकबक करना, बर्राना, एंठ की बातें करना ।

टलजाना ०
टलना ० } अ० क्रि० हट-जाना, जाता रहना ।

टांप ० ना० स्त्री० टेकड़ा, छांट ।

टलमलाना ० अ० क्रि० डग-मगाना, ललचाना ।

टलाटली ० ना० स्त्री० मिष, [illegible] ।

टलाना ० स० क्रि० हटाना, छिपाना ।

टवर्ग ० ना० पु० टकारादि पांच अक्षर ।

टसक ० ना० स्त्री० चमक टीस ।

टसकना ० अ० क्रि० हिलना, चसकना, चटना ।

टसकाना ० स० क्रि० हिलाना, चसकाना ।

टसना ० अ० क्रि० मसकना, फटना ।

Digitized by Google

टहका० ना० स्त्री० कांठकी पीड़ा।

टहकना। अ० क्रि० दुखना, पीड़ापाना।

टहटह० ना० पु० सुन्दरता, नवीनता।

टहना। ना० पु० शाखा, डाल।

टहनी० ना० स्त्री० शाखा, डाली।

टहल० ना० स्त्री० टहलुई, सेवा, काम।

टहलना० अ० क्रि० हवा खाना, बाहर फिरना।

टहलनी० ना० स्त्री० टहलुनि, दासी, लौंडी।

टहलाना० स० क्रि० चलाना, फिराना, हवा खिलाना।

टहलुआ० ना० पु० सेवक, दास, मजदूर।

टहलुई० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।

टहे। ना० पु० जन्मते पुत्र का शब्द।

टुडाका० ना० पु० घूँसा, चपेटा।

टांक० ना० पु० टङ्क।

टांकना० स० क्रि० सीवना, लिखना।

टांका० ना० पु० लपकी, जोड़, सांठन, जोड़न।

टांकी० ना० स्त्री० छेद, कसेरा, कुदाल, कुल्हाड़ी।

टांकू० पु० टांकनेहारा।

टांग० ना० स्त्री० एँड़ीसे घुटन तक का भाग, लटकाव।

टांगन० ना० पु० पहाड़ीघोड़ा विशेष।

टांगना० स० क्रि० लटकाना, हिलगाना।

टांगी० ना० स्त्री० टांकी।

टांच० ना० पु० कटीला टेढ़ा।

टांचड़ा० कुजाति, उजड्ड।

Digitized by Google

टांट० ना० स्त्री० चांदी।
टांठ। ०गु० पे ढ़ा, कड़, ठोस, कम।
टांठाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, कडाई।
टांड़० ना० पु० मचान।
टांड़ा० ना० पु० खेप, बनिजारे की वस्तु।
टाट० ना० पु० सनका बिना हुआ बिछौना, फ़र्राश।
टाटक० गु० टटका।
टाटा० ना० पु० टाटा, बत्ती-टट्टी।
टाटी० ना० स्त्री० टट्टी।
टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी।
टानना० स० क्रि० तानना, खेंचना।
टाप० ना० स्त्री० घोड़े के खुर का शब्द, घोड़े की अगले खुरों की मार।
टापना० स० क्रि० टापमारना ढूंढना।
टापा० ना० पु० खांचा।
टापू० ना० पु० द्वीप, जज़ीरह।
टाबर० ना० पु० छोटी झील।
टारना० स० क्रि० टालना।
टाल० ना० स्त्री० टालमटोल, छलकरके काल काटना। अन्न वा, लकड़ी आदि का ढेर, टाल, मल्लयुद्ध करने में छल।
टालटूल० ना० पु० टालमटोल।
टालना० स० क्रि० छल करके बतला देना, वा बदलना वा उड़ाना, हटाना।
टालमटोल० ना० स्त्री० चकर मकर, हीलाबाज़ी।
टाला० ना० पु० टाल।
टिकटिकी० ना० स्त्री० चिपकली।
टिकठी० ना० स्त्री० काठ की तिपाई वा चौपाई, अरथी।

Digitized by Google

टिकना। अ० क्रि० ठहरना।

टिकली। } भा० स्त्री० बिन्दी
टिकुली। } जिसको स्त्रियां माथे पर लगाती हैं।

टिकाऊ। गु० ठहराऊ, पक्का।

टिकाना। स० क्रि० रखना, ठहराना, अटकाना।

टिकाव। भा० पु० ठहराव, अटकाव।

टिकासर। भा० पु० टिकनेकी जगह, टिकाव।

टिकाऊ। गु० टिकने हारा, ठहरनेवाला।

टिकिया। भा० स्त्री० बाटी, अंगाकडी, छोटी रोटी, किसी वस्तु को बांटके गोल वा चपटी वस्तु बनाना।

टिकार। ना० पु० लोमड़ी, लोमड़ी।

टिड्डा। } ना० पु० बंभाखोड़ा, कड़ोगेरू छोटी
टिड्डर। } विशेष।

टिकली। भा० स्त्री० टिकली।

टिकी। भा० स्त्री० टिकिया।

टिघलना। अ० क्रि० पिघलना, गलना।

टिघलाना। स० क्रि० पिघलाना, गलाना।

टिटकारना। स० क्रि० टिक टिक शब्दसे पशु को चलाना वा हांकना।

टिटकारी। भा० स्त्री० टिक टिक करना।

टिटिहरी। } भा० स्त्री० पक्षी
टिट्टिभ। } विशेष।

टिड्डा। ना० पु० } चढ़तीकीड़ा।
टिड्डी। स्त्री० }

टिमका० ना० पु० मुह का चिन्ह जो मुख पी लगा है।

टिप्पन० ना० पु० ठेका [illegible]।

टिप्पस० ना० स्त्री० [illegible]न, दाव।

टिभाना० स० क्रि० [illegible] योड़ासी [illegible]का देना।

टिमाव० ना० पु० [illegible] थोड़ी सी [illegible]।

टिमटिम० ना० पु० शराटा, [illegible]।

टिमटिमाना० स० क्रि० झलझलाना, जगमगाना।

टिकरी० ना० पु० कोठाकोथ, पुरवा।

टिकुली० ना० स्त्री० छोटी सी [illegible] बिंदी।

टींट० ना० स्त्री० करील का फल।

टीक० ना० स्त्री० सिर, का गले का गहना।

टीका० ना० पु० तिलक, टिप्पन माथे का गहना विशेष अर्थ [illegible] ब्याह में कन्या की ओर से लग्नबन्धन के लिये प्रथम भेजा जाता है, राज्याभिषेक।

टीड़ा० ना० स्त्री० औषधि विशेष।

टीड़ी० ना० स्त्री० टिड्डी।

टीप० ना० स्त्री० [illegible], तमस्सुक, तामको खेचना, स्वर [illegible], टवाट।

टीपटाप० ना० स्त्री० बनावट, [illegible]।

टीपना० स० क्रि० दाबना, टटोलना, [illegible] टिको लगाना, लिखना।

टीला० ना० पु० टाल, पहाड़ी।

टीस० ना० स्त्री० पीड़ा, टपक, धड़क।

टीसना० अ० क्रि० टीसमारना, धमकना, धड़कना।

टुक० अ० थोड़ा, अल्प, जरा।

टुकड़ा० ना० पु० एक खण्ड, टूक।

टुकसा० गु० थोड़ासा।

टुड्डी० ना० पु० ठोढ़ी, मूंछ।

टुचा० ना० पु० लुच्चा, गुण्डा,

टुच्चा० गु० लपका, तुच्छ।

टुन्ना० ना० पु० नन्हा।

टुनटुना० ना० पु० खोनाहल।

टुसटुसाना० अ० क्रि० रसके भुनाना, धीरज से सहापना, धीरे धीरे बढ़ना।

टुण्ड० ना० पु० हाथकटा, डाली कटा हत।

टुण्डा० गु० हाथकटी, लूला, पगभांगा।

टुरिकया चढ़ाना० अ० क्रि० हाथ पांव छे बांधना।

टुण्डी० ना० स्त्री० नाभि, गु० जिस स्त्री का हाथ कटा हुआ हो।

टुमकना० अ० क्रि० ठेकना,

टुनकना० ,, कूकना।

टूँ० ना० पु० वायु सड़ने को शब्द अर्थात् पादने का शब्द।

टूंगना० स० क्रि० चोंचियाना, चिचोरना, खुटकना।

टूंडी० ना० स्त्री० नाभि, ठूंट।

टूक० ना० पु० टुकड़ा, टीके टूक भी एक शब्द।

टूट० ना० स्त्री० खण्डन, फूटना टांटी लिखन में जो भूल के ऊपर लिख दिया, त्रुटि।

टूटना० अ० क्रि० छूमकना, टाड़ना, चढ़ाई करके फूटना, फटना, फितने होना, गढ़ का छूटना, पानी का ऊपर से नीचे उतरना।

Digitized by Google

टटा० गु० फूटा, टुकड़े भया, ना० पु० टोटा, न्यूनता।

टसक० ना० स्त्री० थोड़ीबात, भूषणविशेष, छतरी।

टसकाना० ना० पु० कुछ्योड़े बात।

टसर० ना० पु० आंक का फल, [illegible] फल।

टसका० ना० स्त्री० कोंपल, कली।

टगरा० ना० पु० सकली वि-

टगरी० स्त्री० [illegible]

टेंट० ना० पु० करील का कपास का प्रकाफल फुली।

टेंटर० ना० पु० फलविशेष आंखका ढोढ़ा बढ़ाकर भी, अर्थात् आंखका निकाम होजाना।

टटा० ना० पु० करीलका बड़ा

टेंटो० स्त्री० [illegible] व्यर्थ [illegible] विशेष, [illegible] था।

टटुआ० ना० पु० नरी, मांसी नरेटी, गले की पोंगली हड्डी।

टेंटें० ना० पु० चर्चे, किलकिलाट।

टेरु० ना० स्त्री० बाड़, थूनी। क्रि० पेनीकरी।

टेक० ना० स्त्री० थूनी, बाड़, टेकनी, प्रतिबाद।

टेकन० ना० स्त्री० बाड़, थामा।

टेकना० स० क्रि० [illegible] थांभना, सहारा लगाना।

टेकानी० ना० स्त्री० टेकन, थूनी।

टेकर० ना० पु० टीला, ऊंचा।

टेकरी०

टेढ़० ना० स्त्री० वक्रता, कज।

टेढ़ा० गु० [illegible]

टेढ़ाई० ना० स्त्री० वक्रता, बांकपन, कज।

Digitized by Google

टढ़ो॰ना॰ स्त्री॰ गर्व, अहङ्कार, ऐंठ, बांकी।

टनी॰ना॰ स्त्री॰ छोटा डगना, जो धनी रक्खते हैं।

टम॰ना॰ स्त्री॰ दीपककी जलन वा लय वा जोति।

टर॰ना॰ स्त्री॰ स्वर, लय, पुकार।

टरना॰ प॰ क्रि॰ पुकारना, ललकारना, चुमाफना।

टलना॰ प॰ क्रि॰ पेलना, बुझेड़ना।

टेव॰ना॰ स्त्री॰ स्वभाव, टेकटे, स्वभाव।

टेवकिया॰ना॰ स्त्री॰ छोटी टेकी।

टेकी॰ना॰स्त्री॰ थूनी, खम्भा, थम्भा।

टेकना॰ प॰ क्रि॰ बाढ़देना, बाढ़रखना, वा रखाना।

टेवा॰ना॰ पु॰ जन्मपत्री का देखना वा निकालना, चाव।

टहरा॰ना॰ पु॰ छोटागांव, पुरवा।

टहला॰ना॰ पु॰ विधुरकी रीति।

टाँचाई॰ना॰ स्त्री॰ कुचाली।

टांटा॰ना॰ पु॰ पटाका, बुर्की, मोड़. बारूत को पुड़िया, वा सका खीड़ा।

टांटी॰ना॰ स्त्री॰ पनाला, मोरी।

टोक॰ } ना॰ स्त्री॰ घट-
टोकटाक॰ } काव, रुकाव, छेड़छाड़।

टोकना॰ प॰ क्रि॰ पकड़ना, रोकना, डीठलगाना, बुरीदृष्टिसे देखना।

टोकरा॰ना॰ पु॰ खोरा, झाबा, खोंचा।

Digitized by Google

टोकरी० ना० स्त्री० डोरी, डलिया।

टोकाटोकी० ना० स्त्री० रुकाव, पूछपांछ, छेड़छाड़।

टोटका० ना० पु० मोहनी, लटका, वशीकरण।

टोटक० ना० पु० वृत्त विशेष।

टोटा० ना० पु० घटी, हानि, न्यूनता।

टोडी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

टोना० ना० पु० जादू, वशीकरण, स० क्रि० टटोलना।

टोनहा० ना० पु० मंत्रकारी, ओझा, बन्हा, जादूगर।

टोनहाई०
टोनही०
टोनहैया० } ना० स्त्री० टोटकी जादूगरनी।

टोप्य०
टोपी० } ना० पु० ना० स्त्री० सिर ढकने का वस्त्र विशेष।

टोपी० ना० स्त्री० सिर ढकने का वस्त्र विशेष, कुलाह।

टोरी० ना० पु० भीति में पानी के बचाव के लिये आड़ लगाकर छाना अथवा छज्जा निकालने की वस्तु, तोड़ा।

टोली० ना० स्त्री० सभा, संगति।

टोला० ना० पु० बाट, बखरा।

टोह० ना० स्त्री० टोल, समूह।

टोहना० स० क्रि० ढूंढना, टटोलना।

टोना० ना० पु० टोनिहा।

[ठ]

ठई० पु० क्रि० ठहराई, मुकर्रकी।

ठकठक० ना० पु० बहुत परिश्रम का कार्य, गढ़ना, शब्द विशेष।

Digitized by Google

ठकठकाना ० स० क्रि० ठोंकना, खटखटाना।

ठकठकिया ० ना० पु० बखेड़िया, झगड़ालू।

ठकठेला ० ना० पु० धक्कापक्की, झगड़ा, बखेड़ा।

ठकठौआ ० ना० स्त्री० — [illegible]-बोई।

ठकुरसोहाती ० गु० मुखदेखी बात कहनी, श्रोता के मन भावित बात्ती।

ठकुराई ० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रभाकता।

ठकुरायन ० ना० स्त्री० ठाकुर की स्त्री० रानी।

ठग ० ना० पु० गठिकटा, चोर, प्रतारक, धोखा देने हारा।

ठगई ० ना० स्त्री० प्रतारणा, चोरी, ठगाई।

ठगना ० स० क्रि० छलना, चोराना, धोखादेना।

ठगनी ० ना० स्त्री० ठगकी स्त्री, चोट्टी।

ठगाई ० ना० स्त्री० प्रतारणा, चोरी, छल।

ठगाना ० स० क्रि० छलाना, चोरीकरवाना।

ठगिन ० ना० स्त्री० ठगनी।

ठगिया ० ना० पु० ठग, प्रतारक, चोर [illegible]।

ठगौरी ० ना० स्त्री० ठगई।

ठचरा ० ना० पु० बखेड़ा, झगड़ा।

ठठ ० ना० पु० भीड़, समूह।

ठठक ० ना० स्त्री० [illegible]-काव, डर, डिगाव।

ठठकना ० अ० क्रि० रुकना अटकना, आश्चर्य होके थामना, डिगना।

ठठना ० स० क्रि० बनाना, सजाना, दुबला करना, अ० क्रि० पिटना मार खाना।

Digitized by Google

ठठरा० ना० पु० माड़, घेरा।

ठठरी० ना० स्त्री० ठाठ, रथी, दुर्बल शरीर।

ठठाना० मु० क्रि० पीटना, मारना, [illegible] में धपना, शिर पीटना, मलामना।

ठठेरा० ना० पु० कसेरा, जातिविशेष।

ठठेरिन० } ना० स्त्री० ठठेरे
ठठेरी० } का स्त्री।

ठठोर० } गु० हँसोड़, ठट्ठा,
ठठोल० } बाज़।

ठठोली० ना० स्त्री० परिहास, हांसी।

ठट्ठ० ना० पु० ठठ।

ठट्ठा० ना० पु० परिहास, खिल्ली।

ठड्डा० ना० पु० गुड्डी के बीच का काठ, मुड्डा।

ठण्ढ० ना० स्त्री० शीत, जाड़ा, हिम।

ठण्डक० ना० स्त्री० शीतलता, सरदी।

ठण्डा० गु० शीतल, सर्द।

ठण्डाई० ना० स्त्री० शीतलता, ठण्डी औषधि, जुड़ाई, [illegible] भङ्ग।

ठण्डी० ना० स्त्री० शीतल।

ठण्ढा० गु० ठण्डा।

ठनकाना० मु० क्रि० टोसना, ठनकना, भनकना।

ठनठनाना० मु० क्रि० भन-भनाना, [illegible]।

ठनाका० ना० पु० भनक, भनकार।

ठन्ना० मु० क्रि० ठहरना, जचना।

ठपना० मु० क्रि० छपना, छ-पजाना, भुगजाना।

ठप्पा० ना० पु० छापने का यन्त्र, सांचा, चिह्न, ठप्पा।

ठमकना० अ० क्रि० मटकके चलना।

ठमकना० ना० स्त्री० बहुत जाड़ा, बड़ी सर्दी।

ठलिया० ना० पु० माटी का कूजा विशेष।

ठलुआ० ना० पु० मीठा वस्तु विशेष, अ० क्रि० ठहर जाना।

ठवन० ना० स्त्री० चाल, ठहरने की रीति।

ठसक० ना० स्त्री० मक्कर, प्रति, देखाव, सजाव।

ठसकना० अ० क्रि० ठसकना, स० क्रि० पटकना।

ठसका० ना० पु० पटक, ग्रह-काश।

ठसनी० ना० स्त्री० अंगमें की वस्तु।

ठसाठस० गु० कचाकच, मचामच, गचागच।

ठसा० ना० पु० अहङ्कार, सांचा, ढांचा।

ठहरठहर० गु० कलहना।

ठहरना० अ० क्रि० रुकना, रहना, ठीक होना नि-पटना।

ठहराव० ना० पु० ठहराव, निपटाव।

ठहराना० स० क्रि० रखना, गोमना, निपटाना।

ठहाका० ना० पु० धमाका, भदाका, भड़ाका।

ठां० } ना० पु० स्थान,
ठांव० } जगह।

ठांसना० स० क्रि० ठूंसना घुसेड़ना।

ठाईं० ना० स्त्री० ठांव, ठौर।

ठाउ० ना० पु० ठांव, ठौर।

ठाकुर० ना० पु० ईश्वर, देवता, स्वामि ग्राम, भक्ति देश, पति, राजा, नाई।

Digitized by Google

ठाकुरद्वारा॰ ना॰ पु॰ देवालय, शीहरा।

ठाट॰ } ना॰ पु॰ ठठरी, संताव
ठाठ॰ } बुनीता, भड़क, भीड़ भाड़, समूह, रचना।

ठाड़ा॰ गु॰ खड़ा, सीधा जो बेड़ा नहीं।

ठाढ़॰ गु॰ ऊंचा, औघट खड़ा।

ठाढ़ा॰ } गु॰ खड़ी, खड़ी।
ठाढ़॰ }

ठानना॰ स॰ क्रि॰ मन लगाना, ठहराना, निश्चय करना।

ठाला॰ गु॰ खाली, कार्यरहित समय।

ठाहर॰ ना॰ पु॰ ठिकाना, जगह।

ठिकरा॰ ना॰ पु॰ फटे बर्तन का टुकड़ा, ठीकरा।

ठिकाना॰ ना॰ पु॰ स्थान, बाड़, छोर, सिवाना।

ठिकानो॰ पु॰ ठिकाने लगाना, उद्धारा।

ठिङ्गना॰ गु॰ आधा कोता, बावन, बांठा।

ठिटकना॰ ना॰ स्त्री॰ अचंभे में होना, अवश होना।

ठिठकना॰ अ॰ क्रि॰ अचक्का होकर वा आश्चर्यित होकर खड़ा होना।

ठिठरना॰ अ॰ क्रि॰ जमना, छोटे होना, अकड़ जाना।

ठिठवना॰ गु॰ अकड़ा, शून्य, जड़ीभूत।

ठिठुरना॰ } ना॰ स्त्री॰ ठिठुरा } हुआ अकड़ा हुआ।

ठिठुरना॰ अ॰ क्रि॰ ठिठरना।

ठिठुरा॰ गु॰ ठिठुरा।

ठिलिया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी गगरी।

Digitized by Google

ठीक० गु० शुद्ध, खरा, योग्य, सत्य, उचित, अटकता, चौपड़ की ०पूर्ण जोड़ी।

ठीकठाक० गु० शुद्ध, य थ्य, दुरुस्त।

ठीकमठाक० अव्य० गु० द्वितीय।

ठीकरा० ना० पु० ठिकरा।

ठीकरी० ना० स्त्री० छोटा ठिकरा, गिटकी, योनि में स्थान विशेष।

ठीका० ना० पु० भाड़ा, चुकौती, इजारह।

ठुकराना० स० क्रि० ठोकर मारना।

ठुड्डी० ना० स्त्री० ठोढ़ी, मोन्ती वा मखाना जो भने मे खिला नहीं पश्चात् वा चिन्ह भी भये।

ठुकु० ना० स्त्री० सिसक।

ठुकना० अ० क्रि० सिसकना।

ठुमक० ना० स्त्री० सुन्दर चाल से चलन, मटक।

ठुमकना० अ० क्रि० अकेले से चलना, मकड़ से चलना।

ठुमका० गु० छोटा, नाटा, बांठा।

ठुमकी० ना० स्त्री० ठिङ्गनी ना० स्त्री० पतङ्ग को चढ़ा के हिलाना।

ठुमकना० अ० क्रि० हवाछोड़ना, पादना धीमे धीमे रोना।

ठुमरी० ना० स्त्री० राग, पक्ष चितत आयु को आड़ना।

ठुसाना० स० क्रि० ठसाना।

ठूंठ० ना० पु० पत्रहित तोड़ी हुई डाली, वा डाल कतर हुत हाथ टुण्ड।

ठूंठा० गु० टोंडा, वृत्त ठूंठियां० जिसकी डालियां काटी गई।

ठूंठी० ना० स्त्री० थूंठी, मक्का की।

Digitized by Google

ठेकना॰ ना॰ पु॰ ठेकमा।

ठेंगा॰ ना॰ पु॰ लाठी, अङ्गुष्ठ, लिङ्ग।

ठेंगाबाजना॰ स॰ क्रि॰ बिगाड़ना।

ठेठ॰ गु॰ निपट, चोखा, केवल, निरा।

ठेठी॰ ना॰ स्त्री॰ कान का मल, डट्टा, घोंटी।

ठेक॰ ना॰ स्त्री॰ टेकनी, [illegible] अड़ाकोरा [illegible] को अन्त से [illegible] है।

ठेका॰ ना॰ पु॰ ठट्टा, ठीका, [illegible]

ठेकी॰ ना॰ स्त्री॰ सिरसे बोझ उतारके सुस्ताने का स्थान, जगां। सवारी का लकड़ी का यन्त्र है।

ठेपी॰ ना॰ स्त्री॰ ठट्टा।

ठेलना॰ स॰ क्रि॰ ढकेलना, रेलना, झोंकना, हटाना।

ठेला॰ ना॰ पु॰ धक्का।

ठेलाठेली॰ ना॰ स्त्री॰ धक्का धक्की।

ठेवना॰ ना॰ पु॰ घटना, जानु।

ठेस॰ ना॰ स्त्री॰ ठोकर, चपेट, झोंका।

ठेसना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, ठोकर लगाना, ठांसना।

ठेसरा॰ ना॰ पु॰ नाकचढ़ी।

ठोंकना॰ स॰ क्रि॰ मारना गाड़ना, अङ्गुली से बजाना।

ठोंग॰ ना॰ स्त्री॰ चोंच वा अङ्गुली से मारना।

ठोंगना॰ } स॰ क्रि॰ चोंचियाना, चिकोरना
ठोंगियाना॰ }

ठोक॰ ना॰ स्त्री॰ झोंक, ठौर।

ठोका॰ ना॰ स्त्री॰ मार, कूट, ठोंकने का शब्द।

ठोकर॰ ना॰ स्त्री॰ ठेस, ठेसलगने की वस्तु, पांवकी झल

ठोढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ ठुड्डी।

ठोर॰ना॰ स्त्री॰ चोंच।

ठोला॰ना॰ पु॰ शुकादि के निमित्त पात्र जिसमें दानापानी रखते हैं, अंगुलियों की गांठ।

ठोस॰गु॰ टांठा, जो खोखला नहीं है।

ठोसना॰स॰ क्रि॰ ठांसना।

ठोसाई॰ना॰ स्त्री॰ टांठाई, दृढ़ता।

ठौर॰ना॰ स्त्री॰ स्थान, जगह।

[ड]

डकराना॰अ॰क्रि॰ फूकमारके रोना।

डकार॰ना॰ स्त्री॰ उद्गार, आरोग्य।

डकारना॰अ॰क्रि॰ ढिकारना, हुंकारना, और पचाजाना।

डकैत॰ना॰ पु॰ डाकू, चोर, बटमार।

डकैती॰ना॰ स्त्री॰ चोरी, बटमारी, डाका।

डकौत॰ } ना॰ पु॰ वर्णशंकरकी जाति विशेष, जिसका बाप ब्राह्मण और महतारी ग्वालिन थी।
डकौतिया॰ }

डग॰ना॰ पु॰ चलावा, फाल, पद, डेग।

डगडगाना॰अ॰क्रि॰ हिलना, चमचमाहटसे चलना।

डगना॰अ॰ क्रि॰ हिलना, डिगना।

डगमग॰गु॰ चञ्चल, चलायमान।

डगमगाना॰अ॰ क्रि॰ खड़खड़ाना, हिलना।

डगर॰ना॰ स्त्री॰मार्ग, सड़क, पैंडा।

डगरना॰अ॰ क्रि॰ हिलना, फिरना।

डगरा॰ना॰ पु॰ बांसकाबनाया हुआ पात्र विशेष।

Digitized by Google

डग्गा० ना० पु० दुर्बल घोड़ा विशेष।

डङ्क० ना० पु० चमक, बिच्छू आदि का विषयुत कांटा।

डङ्का० ना० पु० ढका, धौंसा, नक्कारह।

डङ्किनी० ना० स्त्री० डाकिनी।

डङ्कियाना० स० क्रि० डङ्क मारना, चमकना।

डङ्कीला० गु० जिसजन्तु के डङ्क हो।

डटना० अ० क्रि० अड़ना, भिड़ना, तकनी, बेमना।

डटैया० ना० पु० डटनेवाला।

डढना० अ० क्रि० जलजाना, भुनजाना।

डढमुण्डा० गु० दाढ़ीरहित।

डढियल० गु० दाढीवाला।

डढ्ञा० गु० जलाकुश्रा, जड़ढोई० बगुया।

डराड० ना० पु० बाजू, भुजा, व्यायामकरना, साधन विशेष, दण्ड।

डराडवत्० ना० स्त्री० दण्डवत्, प्रणाम विशेष, पायलागी।

डराडा० ना० पु० सोंटा, सीढ़ी का पाया, दण्डा।

डरिडया० ना० पु० स्त्रियों के पहिरने का वस्त्र विशेष और बाज़ार का कर उगाहनेहारा।

डराडी० ना० स्त्री० बेंटी, बेंट, तराज़ के पलड़ों में लगानेका काष्ठ, संन्यासी, हरसिंघाड़ आदिकी नली, दण्डी।

डराडीर० ना० स्त्री० धारी, लकीर, लीख।

डपटना० अ० क्रि० पुकारना, डांटना, सरपटदौड़ना।

डफ० ना० पु० बाजाविशेष।

डफारना। ०अ० क्रि० कूकमारना, बिलपना।

डफाली०ना० पु० डफबजाने हारा।

डब०ना० पु० बल, पराक्रम, जेब, चमड़ा जिससे कुप्पा बनाते हैं।

डबका०ना० पु० टटका, कूपका जल, गु० मोटा।

डबडबाना०अ० क्रि० भरना, जैसे आंख आंसू से भर आती है।

डबरा०ना० पु० नीची भूमि, लिवार, छपरी।

डबरिया०गु० खब्बा, बांयांहाथ, वामहस्था।

डबोना०स० क्रि० डुबाना।

डब्बा०ना० पु० बड़ी डिबिया।

डब्बू०ना० पु० लोहेकाकर्छा।

डमरुआ०ना० पु० घुटनाकी गांठि।

डमरू०ना० पु० बाजाविशेष।

डमरुमध्य० ना० पु० डमरू का मध्यभाग, खाकनाय, जोअपने मेंदो बड़ेस्थल के भागोंकोमिलावे।

डर०ना० पु० भय, भीति, शङ्का।

डरना० } अ० क्रि० भय-
डरपना० } खाना।

डरपोक०गु० डरनेवाला, भयमान्।

डरवैया०गु० भयमान्, छेठा, डरपोक।

डराऊ०गु० भयङ्कर।

डराक०गु० भयमान्।

डराना० } स० क्रि० भयदेना,
डरावना० } भयखिलाना।

डरी०ना० स्त्री० मांसकीबोटी, छोटाटुकड़ा, ढेला।

डरीला० गु० मांस बोटियों वाला।

Digitized by Google

डरौना० गु० डराऊ ।

डलवा० ना० पु० टोकरा ।

डलवाना० स० क्रि० झोंकवाना, गिरवाना, घुसड़ाना ।

डला० ना० पु० बड़ा टुकड़ा वा ढेला, टोकरा ।

डलिया० ना० स्त्री० छोटी टोकरी ।

डली० ना० स्त्री० छोटा टुकड़ा वा ढेला, सुपारी ।

डस० ना० स्त्री० तराजू की रस्सी, दशा ।

डसना० स० क्रि० काटना, चमकना, डङ्किआना ।

डसौना० ना० पु० बिछौना ।

डहक० ना० पु० गुफा, खोह, चोरगड़हा, लालच, बिगाड़, डोंक ।

डहकना० अ० क्रि० डोंकना, लालच करना, बिगड़ना ।

डहकाना० स० क्रि० निराश करना, ललचाना, बिगाड़ना ।

डहडहा० गु० प्रफुल्लित, खिला हुआ, चैतन्य ।

डहडहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना ।

डांक० ना० पु० जगजगा, बिच्छू आदि का डंक ।

डांग० ना० स्त्री० लाठी, पहाड़ की चोटी ।

डांगर० गु० दुर्ब्बल, ना० पु० दुर्ब्बलपशु, मूली का फूला हुआ पत्ता ।

डांटना० स० क्रि० ताड़न करना, घुड़कना ।

डांठल० ना० पु० } डण्डी,
डांठी० ना० स्त्री० } बोंट ।

डांड़० ना० पु० बदला, दण्ड, ताड़ना, नाव खेवने का अस्त्र, चप्पू, रीढ़, लकीर ।

Digitized by Google

डांडना० स० क्रि० बदलालेना, दगडलेना ।

डांडा० ना० पु० मेंड,सिवाना, धूरा ।

डांडी० ना० स्त्री० खेवनेहारा, खेवैया ।

डांमाडोल० ना० पु० इधरसे उधर रबड़ना ।

डांवरू० ना० पु० शेरकाबच्चा ।

डांस० ना० पु० डङ्क,मच्छड़ ।

डाक० ना० स्त्री० टप्पा, अन्तररहित वमन, डाकिनी का पति,डाका,डाक ।

डाकना० स० क्रि० वमनकरना, उछालकरना ।

डाका० ना० पु० चोरों का धावा ।

डाकिन्० } ना०स्त्री० डायन्,
डाकिनी० } चुड़ैल, योगिनी भेद ।

डाकिया० ना० पु० डाकू, डाकलेआने वाला ।

डाको० ना० पु० खाऊ, पेटू ।

डाकू० ना० पु० डकैत, चोर, बटमार ।

डाट० ना० स्त्री० घुड़क,धमक, ढढ्ढी ।

डाटना० स० क्रि० डांटना, क्रोधसे देखना ।

डाढ़० ना० स्त्री० पिछलेदांत

डाढ़ी० ना० स्त्री० ठुड्डी पर के बाल ।

डाब० ना० पु० पतला,कच्चा नारियल, टप्पा विशेष ।

डाबर० ना० पु० हाथ धोने का पात्र, गोल तालाब, झाबर ।

डाभ० ना० पु० कुशा, डाब, दर्भ ।

डाभर० ना० पु० धूना, राल

डायन्० ना० स्त्री० डाकिनी ।

डार० ना० स्त्री० डाली, डाल ।

डारना० स० क्रि० डालना ।

Digitized by Google

डारिम० ना० पु० दाड़िम, अनार फल ।

डाल० ना० स्त्री० डाली, शाखा, टहनी ।

डालना० स० क्रि० फेंकना, घुसेड़ना, भोंकना ।

डाला० ना० पु० डोला, बड़ी-डाली ।

डाली० ना० स्त्री० टहनी, शाखा फलादिका भेद, पुष्पादि रखने के लिये बांस का पात्र ।

डासन० ना० पु० बिछौना ।

डासना० स० क्रि० बिछाना ।

डाह० ना० पु० द्रोह, द्वेष, पेटमें आगि पड़ना ।

डाहना० अ० क्रि० बैरीहोना, द्वेषीबनना ।

डाही० ना० स्त्री० द्रोही, द्वेषी, कलेजेपर आगिजलना, मन्दाग्नि ।

डिगना० अ० क्रि० हिलना, लचकना, हटना, टलना, नायमान होना ।

डिगाना० स० क्रि० हिलाना, चलाना ।

डिठना० स० क्रि० देखना, दृष्टिलगाना ।

डिठियारा० गु० देखनेवाला, द्रष्टा ।

डिण्डर० ना० पु० समुद्रफेन ।

डिण्डुभ० ना० पु० सांप ।

डिण्डिम० ना० स्त्री० डमरू ।

डिबिया० ना० स्त्री० ढकनेसमेत काठ का गोल पात्र विशेष ।

डिब्बा० ना० पु० बड़ीडिबिया ।

डिब्बी० ना० स्त्री० डिबिया ।

डिम्भ० ना० पु० दम्भ, पाखण्ड, अहङ्कार ।

डिम्भी० गु० पाखण्डी, दम्भी ।

डींग० ना० पु० बड़ाई, अपनी बड़ाई ।

Digitized by Google

डींगमारना०अ० क्रि० निज बड़ाई करना।

डीठ०
डीठि०
} ना० स्त्री० दृष्टि, नजर।

डील० ना० पु० तन, क़द।

डीला० ना० पु० ढेला, मिट्टी का टुकड़ा।

डीह० ना० पु० खेड़ा, उजाड़ गांव।

डीहा। ०ना० पु० टीला।

डुक्का० ना० पु० मुक्का, घूसा।

डुकरवा० ना० पु० बड्डा, बुड्ढा।

डुकरिया० ना० स्त्री० बुढ़िया।

डुगडुगाना०अ० क्रि० डङ्का बजाना, तिमतिमाना।

डुबकी० ना० स्त्री० बुड़की, गोता

डुबाना० स० क्रि० बोरना, डुबोना।

डुबाव० ना० पु० जलस्थान जो बूड़ने के योग्य है।

डुबोना० स० क्रि० बोरना, डुबाना।

डुरियाना० स० क्रि० फिराना, रस्सीमें बांध के ले चलना।

डुलना० अ० क्रि० हिलना, चलना।

डुलाना० स० क्रि० हिलाना, चलाना।

डूंगर० ना० पु० पहाड़इत्यादि, अबिचारी ढूंढ्या, तापी में सब खोदि बहावे, डूंगर को घरनाम मिटावे।

डूब० ना० पु० डुबकी।

डूबना० अ० क्रि० डुबकीमारना, बूड़ना, उजड़ना, चिन्ता में होना।

डूबा० स० बूड़ा भया।

डेग० ना० पु० डग, फलांग।

डेढ़० गु० एक और आधा १½

डेढ़गति॰ना॰ स्त्री॰ नाच विशेष।

डेरा॰ना॰ पु॰ डेरा, घर, तम्बू, गु॰ भेंगा।

डेल॰ } ना॰ पु॰ ढेला।
डेला॰ }

डेवढ़ा॰गु॰ एक और आधा, डेढ़गुणा।

डेवढ़ाना॰स॰ क्रि॰ डेवढ़ा, करना वा लेना।

डेवढ़ी॰ना॰ स्त्री॰ देहली।

डेऊड़॰ना॰ स्त्री॰ बन्दूकों की बाढ़िदगना।

डेऊड़ी॰ना॰ स्त्री॰ डेवढ़ी।

डैन॰ना॰ पु॰ पंख, पक्ष।

डैना॰ना॰ पु॰ डाल।

डोई॰ना॰ स्त्री॰ काठकी कर्छी।

डोंगा॰ना॰ पु॰ } छोटीएकका-
डोंगी॰ स्त्री॰ } ठकीनाव।

डांडी॰ना॰ स्त्री॰ ढिंढोरा।

डोरा॰ना॰ पु॰ दो मुख का सांप।

डोकर॰ } गु॰ बुड्ढा, बूढ़ा।
डोकरा॰ }

डोकरी॰ना॰ स्त्री॰ बुड्ढी।

डोब॰ना॰ पु॰ डूब।

डोबा॰ना॰ पु॰ ताल, पोखरा, मूर्छा।

डोम॰ } ना॰ पु॰ जाति विशेष।
डोमड़ा॰ }

डोमिनी॰ना॰ स्त्री॰ डोम की स्त्री।

डोर॰ना॰ स्त्री॰ रस्सी।

डोरा॰ना॰ पु॰ सीवनेकासूत रस्सा, धागा, धार, लगाव।

डोरिया॰ना॰ पु॰ सूती, मालदई, कपड़ाविशेष।

डोरी॰ना॰ स्त्री॰ रस्सी।

Digitized by Google

डोल० ना० पु० पानी भरने के लिये लोहे वा चमड़े का पात्रविशेष, जन्माष्टमी में कृष्णजन्म के लिये मण्डप विशेष ।

डोलची० ना० स्त्री० छोटा डोल ।

डोलना० अ० क्रि० हिलना, टलना, फिरना, भूलना ।

डोला० ना० पु० पालकी विशेष ।

डोली० ना० स्त्री० पालकी विशेष जो स्त्रियों के लिये है ।

डौंगा० ना० पु० गर्गज, मचान ।

डौंडी० ना० स्त्री० डौंडी, मनादी ।

डौढी० ना० स्त्री० डेवढ़ी, ड्योढ़ी, गु० ड्योढ़ा ।

डौल० ना० पु० प्रकार, ढब, ब्योंत, स्वरूप, आकार ।

ड्योढ़ा० गु० डेवढ़ा ।

ड्योढ़ी० ना० स्त्री० डेवढ़ी, गु० डेढ़गुणा ।

[ढ]

ढक० ना० पु० तालविशेष ।

ढकना० स० क्रि० ढपना, छुपना, ना० पु० ढापने की वस्तु विशेष ।

ढकनी० ना० स्त्री० चपनी ।

ढकार० ना० स्त्री० ढकार, डकार ।

ढकेल० ना० पु० रेल, धक्का ।

ढकेलना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, झांकना ।

ढकेलू० ना० पु० ढकेलने हारा

ढक्का० ना० पु० बाजा विशेष ।

ढङ्ग० ना० पु० चाल, लक्षण, निशान ।

ढट्टा० ना० पु० ठेपी ।

ढड़कौवा० ना० पु० जङ्गली कौवा, ढालू ।

ढड़वा० ना० पु० पक्षी विशेष ।

ढण्ढोरना० स० क्रि० ढूंढना ।

Digitized by Google

ढढ़ोरा० ना० पु० राजा की घोरसे कोई आज्ञा सुनाने को बाजा बजा के कहाना।

ढढ़ोरिया० ना० पु० ढढ़ोरा बजानेहारा।

ढनमनना० अ० क्रि० गिरपड़ना।

ढनमनी० गु० स्त्री, गिरपड़ी हुई।

ढपढपाना० स० क्रि० ढोलको पीटना।

ढपना० अ० क्रि० छिपना।

ढब० ना० पु० डौल, रूप, चाल, रीति, बनावट, हथौटी।

ढबरा० गु० गदला, मैला।

ढबीला० गु० सजीला, सुडौल।

ढबुआ० ना० पु० पैसा।

ढमलाना० अ० क्रि० डगराना।

ढलकना० अ० क्रि० डगरना, फिरना, बहना।

ढलका० गु० बोंधना, भबका, छलका।

ढलकाना० स० क्रि० औंधाना, बहाना।

ढलना० अ० क्रि० गिरना, फिछलना, बीटना, छलकना, डगरना, झुकना, भहराना।

ढलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना।

ढलाना० स० क्रि० सांचे में डालना, बहाना।

ढलैत० ना० पु० ढाल तलवार बांधनेहारा।

ढआना० स० क्रि० गिरवाना। उजड़वाना।

ढहना० } अ० क्रि० गिरपड़ना, उजड़ना।
ढहपड़ना० }

ढाई० गु० अढाई २ $\frac{1}{2}$।

ढांकना० स० क्रि० ढांपना छुपाना।

Digitized by Google

ढांग०ना० स्त्री० कन्दरा, शिखर।

ढांचा०ना० पु० ठाठ, घर, सांचा, खाटकाघेरा।

ढांपना०स० क्रि० ढांकना, छुपाना।

ढांसना०स० क्रि० दोषदेना।

ढांसा०ना० पु० लिस, दोष।

ढाक०ना० पु० पलाशकावृक्ष, शुकरत, छुपाव, सांपका विष उतारने में एक प्रकार का बाजा।

ढाका०ना० पु० बङ्गाले का नगर विशेष।

ढाटा०ना० पु० डाढ़ीबन्धन, ढट्टा।

ढाटी०ना० स्त्री० कसन, यन्त्रणा, फ़ांदा जो घोड़े के मुखपर बांधते हैं।

ढाढस०ना० स्त्री० धीरज, सूरमापन, दिलासा, शान्ति, भरोसा।

ढाढिन०ना० स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री।

ढाढी०ना० पु० जाति विशेष जो बजाते और गाते हैं।

ढाना०स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।

ढाबर०गु० मैला, मन्दला।

ढाबा०ना० पु० जाल, ओरी, ओलती।

ढार०ना० स्त्री० भांति, कान की गहना, विशेष।

ढारना०स० क्रि० ढालना।

ढारी०गु० भरीहुई।

ढालू०गु० ढालू।

ढाल०ना० पु० उतार, ना० स्त्री० फरी।

ढालना०स० क्रि० सांचेमें उतारना, पीओना, बिगाड़ना।

ढालवां०गु० उतारू, जोसांचे मे उतारागया।

Digitized by Google

ढालु॰ गु॰ उतारू, बेंड़ा, बिगाड़ू, सांचेका उतारना।

ढाहना॰ स॰ क्रि॰ गिराना, उजाड़ना।

ढाहा॰ ना॰ पु॰ नदी का कराड़ा।

ढिग॰ ना॰ स्त्री॰ पास, समीप।

ढिठाई॰ ना॰ स्त्री॰ चञ्चलता, गुस्ताख़ी।

ढिङिम॰ ना॰ पु॰ टटीहरी, पक्षी।

ढिब्का॰ ना॰ पु॰ उभार, गुमड़ा।

ढिमढिमी॰ ना॰ स्त्री॰ खञ्जरी विशेष।

ढिल्लड़॰ } गु॰ आलसी, सुस्त।
ढिल्लर॰ }

ढीठ॰ } गु॰ चञ्चल, निडर, बेअदब, धींताल, मगरा।
ढीठा॰ }

ढीठाँटे॰ गु॰ धींताली वा चञ्चलता से।

ढील॰ ना॰ स्त्री॰ आलकस, बिलम्ब, देर, छूट।

ढीलाई॰ ना॰ स्त्री॰ शिथिलता, आलस्य।

ढीहा॰ ना॰ पु॰ टीला।

ढुकना॰ अ॰ क्रि॰ झुकना, सिरझुकाना।

ढुकी॰ ना॰ स्त्री॰ ताक।

ढुरना॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, लुढ़कना।

ढुलना॰ अ॰ क्रि॰ ढुरना, ढलना, मरना।

ढुलाई॰ ना॰ स्त्री॰ उठवानेका पैसा वा काम।

ढुलवाना॰ } स॰ क्रि॰ उठवाना, लुढ़काना।
ढुलाना॰ }

ढूआ॰ ना॰ पु॰ तूदा, मेंड़, मिट्टीका पिण्ड।

ढूंढ़ढांड़॰ ना॰ पु॰ खोज, झाड़ीझूंडी।

ढूंढन॰ ना॰ पु॰ खोज।

Digitized by Google

ढूंढना।०स० क्रि० खोजना, तलाश करना।

ढूंढार०ना० पु० देशविशेष।

ढूंढिया।०ना० पु० जैनलोगों में भिखारी, गु० ढूंढने वाला, तुंदाव।

ढूका०ना० स्त्री० तुकी, ताक, पैठ।

ढूकना।०अ० क्रि० बन्दकरना, मूचना, छपिके पास आना, पैठना।

ढूसर०ना० पु० जाति विशेष।

ढेंकली०ना० स्त्री० कूपसेजल निकालने का यन्त्र।

ढेंका।०ना० पु० } कूटने का
ढेंकी०ना० स्त्री० } यन्त्र।

ढेंड़स०ना० पु० तरकारी विशेष।

ढेंड़ी०ना०स्त्री० पोस्ताकाफूल।

ढेंढ़ा।०ना० पु० गर्भ, गर्भता, बड़ापेट, दोनो पैरों का बीच, गदरा।

ढेक०ना० पु० पक्षी विशेष।

ढेकुली०ना० स्त्री० रहटी, चरखी।

ढेढ०ना० पु० चमारकी जाति, विशेष, कौआ।

ढेढी०ना० स्त्री०कानका गहना विशेष।

ढेर०ना० पु० राश, टाल, बहुतात।

ढेरा० ना० पु० अंगा, जिससे बाधी एंठते हैं।

ढेरी० ना० स्त्री० छोटा ढेर।

ढेला० ना०पु०माटीकाबोंदा।

ढेलाचौथ० ना०स्त्री० भादों कीचौथ।

ढैया० ना०स्त्री०अढ़ैया।

ढैयाटेकर०गु०जो उजड़गया।

Digitized by Google

ढोया० ना० पु० पर्ववाल्यो हार में फल वा फूल जो छोटे लोग लाते हैं ।

ढोक० ना० स्त्री० दण्डवत्, पियास ।

ढोकना० स० क्रि० पीना, घूंटना ।

ढोका० ना० पु० पत्थर आदि का टुकडा, ढेर ।

ढोटा० ना० पु० लड़का ।

ढोना० स० क्रि० लेजाना, उठाना

ढोर० ना० पु० गायमोहू ।

ढोरा० ना० पु० ताज़िया जो मुसल्मान बनाते हैं ।

ढोरी० ना० स्त्री० ढोरी, चोंप ।

ढोल० ना० पु० बाजा विशेष ।

ढोलक० ना० पु० छोटा ढोल ।

ढोलकिया० ना० पु० ढोल बजानेहारा ।

ढोलकी० ना० स्त्री० छोटा ढोल ।

ढोलन० ना० पु० प्यारा, रसिया ।

ढोलना० ना० पु० ढोल के समान यन्त्र विशेष ।

ढोला० ना० पु० छोकरा, राग विशेष ।

ढोलिया० } ना० पु० ढोल
ढोलैत० } बजानेहारा ।

ढोली० ना० स्त्री० दोसौ पान का परिमाण ।

ढौंचा० गु० साढ़ेचार ४ $\frac{1}{2}$

ढौरी० ना० स्त्री० डोरी, रटक, चोंप ।

[त]

तई० अव्य० तलक, लग, ना० स्त्री० दृष्टि, ताक ।

तऊ० अव्य० तौभी, तथापि, तदपि ।

तक० अव्य, तलक, लग, ना० स्त्री० दृष्टि, ताक, तराज़ू, तखड़ी ।

तकतक० ना० पु० पशु आदि चलाने का शब्द।
तकना० स० क्रि० ताकलगाना, अ० क्रि० दृष्टि देना।
तकला० ना० पु० तकुआ।
तकली० ना० स्त्री० अटेन, परेता।
तकवाहा० ना० पु० रक्षक, चोकीदार, पहरू।
तकाना० स० क्रि० टुकीलगाना, लखाना।
तकिया० ना० स्त्री० पु० सिरहने के वस्तुविशेष।
तकुआ० ना० पु० सूतकातने के लिये लोहेकी शलाका जो चरखे में लगती है।
तक्र० ना० पु० मट्ठा, छाछ।
तखड़ी० } ना० स्त्री० तुला
तखरी० } तराज़ू।
तखान० ना० स्त्री० बढई।
तगण० ना० पु० जिसके अन्त, का अक्षर लघु होता है, गण विशेष।
तगना० स० क्रि० तागडालना।
तगाई० ना० स्त्री० सिलाई, सिलाईका पैसा।
तगाना० स० क्रि० तागाडलाना, सिलाना।
तग्गा० ना० पु० सीनेके लिये बनाया हुआ सूत।
तघड़ी० ना० स्त्री० करधनी।
तङ्का० ना० पु० दो पैसा।
तचना० अ० क्रि० गर्म होना।
तचाना० स० क्रि० गर्म करना वा कराना।
तच्छरीर० ना० पु० उसका शरीर।
तज० ना० पु० औषधि, वृक्षविशेष।
तजन० ना० स्त्री० छोड़न, त्यागन।
तजना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना।
तजिय० अव्य० छोड़िय।
तज्जन० ना० पु० उसका मनुष्य।

Digitized by Google

तट० ना० पु० तीर, पास, किनारा।

तटस्थ० गु० तीरवासी।

तटिनी० ना० स्त्री० नदी।

तट्टोका० ना० पु० उसकाटोका।

तड़० ना० पु० पक्ष।

तड़क० ना० स्त्री० तर्क, टेंड़, आड़।

तड़कना० अ० क्रि० फटना, फूटना।

तड़का० ना० पु० प्रातः काल, भोर।

तड़के० अव्य० सवेरे।

तड़तड़ाना० अ० क्रि० रिसना० भिर भिराना, फटने का शब्द।

तड़प० ना० स्त्री० चटक, झपट, उचक, उतावली।

तड़पना० अ० क्रि० तलफना, धड़कना, कुदकना, फटफटाना, हाथ पांव पटकना।

तड़पाना० स० क्रि० तड़फाना, धड़काना।

तड़पीला० गु० फुर्त्तीला, चटपटिया।

तड़फ० ना० स्त्री० व्याकुलता, धड़क।

तड़फड़ाना० अ० क्रि० धड़कना, घबराना।

तड़फड़ाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, घबराहट।

तड़फना० अ० क्रि० व्याकुल होना, फटफटाना।

तड़फाना० स० क्रि० तड़पाना।

तड़ा० ना० पु० टापू, द्वीप।

तड़ाक० गु० मड़कीला, चमकीला।

तड़ाका० ना० पु० मारने का शब्द, चटाका।

तड़ाग० ना० पु० तालाव, पोखरा।

Digitized by Google

तडाग॰ ना॰ पु॰ जलकी धारा, तरेड़ा।

तड़ाका॰ ना॰ पु॰ चटक, भड़क।

तड़ाबा॰ ना॰ पु॰ छटा, बनाव।

तडित्॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली।

तडित्वान्॰ ना॰ पु॰ मेघ।

तण्डुल॰ ना॰ पु॰ तन्दुल, चावल।

तत्॰ अव्य॰ वह, सो, तौन, समूह, ना॰ पु॰ ईश्वर।

तताना॰ स॰ क्रि॰ गर्म करना।

ततेड़ा॰ ना॰ पु॰ पानी गर्म करने का पात्र विशेष।

तत्कन्द ना॰ पु॰ अदरक, वाराही कन्द।

तत्काल॰ अव्य॰ उसीसमय।

तत्तत्कार्य्य॰ ना॰ पु॰ उसी उसी काममें।

तत्ता॰ गु॰ गर्म, ज्वलित, क्रोधी।

तत्पर॰ गु॰ आशक्त, चतुर, निपुण, सचेत।

तत्फल॰ ना॰ पु॰ पीलूवृक्ष, गजपीपरि, जामुनवृक्ष, उसकाफल।

तत्त्व॰ ना॰ पु॰ सार, प्रकृति, यथार्थ, मूलमत, भाव, जोकिसीसेबनाहो।

तत्त्ववल्का॰ ना॰ स्त्री॰ मुरहरी।

तत्त्वज्ञ॰ गु॰ मनुष्यादि जो बोलसके बातकरे, तत्व वस्तु जाननेहारा यथा, ब्रह्मवेत्ता।

तत्त्वज्ञान॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।

तत्क्षण॰ अव्य॰ उसी समय, तुरन्त, उसीक्षण।

तत्र॰ अव्य॰ तहां।

तथा॰ अव्य॰ तिसीप्रकार, तैसा, वैसाही।

तथाच॰ अव्य॰ जैसे, चुनांचि:।

तथापि॰ अव्य॰ तौभी।

तदा॰ अव्य॰ तब, तिससमय।

Digitized by Google

तदनन्तर० अव्य० तिसकेपीछे ।

तदनु० अव्य० तेहि अनुसार, तिसपीछे ।

तदा० अव्य० तब, तहां ।

तदपि० अव्य० तौभी ।

तद्गत० गु० उसमेंगयाहुआ ।

तद्गति० ना० स्त्री० उसकीदशा, उसकीमाया ।

तद्गुणविशिष्ट० गु० वहगुण जिसमें है ।

तद्धवि० ना० पु० उसकेयज्ञ का हव्य ।

तद्भय० ना० पु० उसकेडर ।

तद्भावबोधक० गु० उसभाव का बोधक ।

तधी० अव्य० तिसीसमय,तभी ।

तन० ना० पु० शरीर, देह, पुत्र, औरविस्तार ।

तनक० गु० थोड़ा, अल्प ।

तनय० ना० पु० पुत्र, लड़का, सुत ।

तनया० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या, सुता ।

तनाया० ना० पु० अवाकी, तनयाकेडे ।

तनी० ना० स्त्री० अंगरखे का बन्धन, तनया ।

तनु० ना० पु० शरीर, देह ।

तनुक० गु० थोड़ा, अल्प ।

तनुजा० ना० स्त्री० तनया, पुत्री ।

तनुत्राण० ना० पु० बकतर, कवच ।

तनूदरी० ना० स्त्री० स्त्री,नारी, अबला ।

तनूरुह० ना० पु० शरीर के बाल ।

तनोति० अ० क्रि० विस्तारकर ।

तन्त० ना० पु० तार,सुख,सिद्धि, तुरन्त, सन्तान, ओषधि, तदबीर ।

तन्तनाना० अ० क्रि० पिनपिनाना, मचाना ।

Digitized by Google

तन्तनाहट० ना० स्त्री० सन्नाहट, जलनके जो पीड़ा ।
तन्तु० ना० पु० सूत, तार ।
तन्तुना० ना० पु० ततुना, तार ।
तन्त्र० ना० पु० टोटका, लटका, शास्त्रोक्तमन्त्र शिवकृत ग्रन्थ विशेष, वीणा ।
तन्त्री० गु० तंत्र का करने वाला, गाने वाला ।
तन्त्रीनाद० ना० पु० वीणा का शब्द ।
तन्द्रा० ना० स्त्री० थकाई, श्रम, मूर्छा ।
तन्द्री० ना० स्त्री० भौंह, भृकुटी ।
तन्दुल० ना० पुं० चावल ।
तन्ना० अ० क्रि० खिचना, फैलना ।
तन्नाना० अ० क्रि० पिनपिनाना, क्रोधित होना ।
तन्नेत्र० ना० पु० उसकी आंखि ।
तन्मय० गु० उससे भरा हुआ ।
तन्मात्र० अव्य० केवल वह ।

तप० ना० स्त्री० ताप, उष्णा, ना० पु० तपस्या, माघ का महीना ।
तपत० ना० स्त्री० उष्ण, गु० गर्म, तत्ता ।
तपन० ना० पु० उष्णा, ज्वलन, सूर्य्य, घोरभिलावाँवृक्ष ।
तपना० अ० क्रि० ऐश्वर्य्य वान् होना, उष्णा होना, अति तेजयुत होना ।
तपनीय० ना० पु० सूर्य्य ।
तपलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष, लोक विशेष ।
तपसी० ना० पु० तपस्वी ।
तपस्य० ना० पु० फागुन मास यथा, मधुस्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यौ, तथेषु ऊर्ज्जश्च सह सहस्योत-पस्तपस्या वितिते क्रमेण ।

तपस्या० ना० स्त्री० तप, योग, ईश्वर भजन ।

तपस्विनी० ना० स्त्री० तपस्या करने हारी स्त्री ।

तपस्वी० ना० पु० तपस्याकरने हारा, योगी ।

तपा० ना० पु० भ्रमक, योगी जोगी ।

तपाना० स० क्रि० गर्मकरना, तताना, अरपना ।

तपास० ना० स्त्री० किरण, धूप, परिश्रम दौड़धूप ।

तपिच्छ० ना० पु० तापिच्छ, तमाल, वृक्ष ।

तपी० ना० पु० तपा, मुनि ।

तपेश्वर० } ना० पु० तपी,
तपेश्वरी० }
तपोधन० } मुनि ।

तपोधना० ना० स्त्री० मुण्डी, और तपोधन की स्त्री, तपेश्वरिन् स्त्री ।

तपोमय० गु० तपस्या युक्त ।

तप्त० गु० तत्ता, गरम, तपत ।

तप्ताङ्ग० ना० पु० ज्वरविशेष, देह, गरम ।

तब० अव्य० तिस समय ।

तबी० } अव्य० तिसी समय ।
तभी० }

तम० } ना० पु० अन्धकार का
तमः० } गुण, अंधेरा तमोगुण, राहुग्रह, क्रोध, अज्ञान, अति, प्रदान्त में बहु तातका बोधक ।

तमक० ना० स्त्री० गर्व, घमण्ड, मुखका लालहोना, झुन्नाहट, टर ।

तमकना० स० क्रि० मुखलाल होना, इड़कना, इगडगाना, निष्कारणक्रोध।

तमका० ना० पु० धूपकीमार, बहुत गर्मी ।

तमचुर० ना० पु० कुक्कुट, मुरगा ।

Digitized by Google

तमतमाना० ना० पु० क्रिआसुखमें वालो होना, दगदगाना।
तमस० ना० पु० तम, मनु विशेष।
तमस्विनी० ना० स्त्री० राति, रैन।
तमारि० ना० पु० सूर्य्य।
तमाल० ना० पु० वृक्ष विशेष, तिलक जो चन्दन से बनाते हैं।
तमालपत्र० ना० पु० तमाकू।
तमिस्र० ना० पु० तम, अन्धकार।
तमी० ना० स्त्री० रात, निशा।
तमीचर० ना० पु० निशाचर, चोर, उल्लू, चमगीदड़।
तमोगुण० ना० पु० मनोवृत्ति विशेष वा दोष जिससे काम क्रोधादि उपजते है।
तमोल० ना० पु० ताम्बूल, पान।
तमोलिन० ना० स्त्री० तमोली की स्त्री।
तमोली० ना० पु० जातिविशेष जो पान बेचते हैं।
तम्बू० ना० पु० रावटी, पाल, कपड़े का कोठा।
तम्बूल० ना० पु० ताम्बूल।
तम्बेरम० ना० पु० स्तम्बेरम, हाथी।
तर० अव्य० तल, पदान्त में अधिकता का चिह्न, बहुतात का सूचक।
तरई० ना० स्त्री० तारा, नक्षत्र।
तरकारी० ना० स्त्री भाजी।
तरङ्ग० ना० पु० लहर, उमङ्ग, ललक।
तरङ्गिनि०
तरङ्गिनी० } ना० स्त्री० नदी।
तरङ्गी० ना० पु० बहुरङ्गी, लहरी।

तरण० ना० पु० मुक्तिमय, पार-होना, उद्धार होना ।

तरणि० ना० पु० सूरज, नाव ।

तरणी० ना० स्त्री० नाव, तरनी ।

तरन० ना० पु० तरण ।

तरफना० अ० क्रि० तड़फड़ाना ।

तरबूज़० ना० पु० हिन्दवाना, फलविशेष ।

तरल० गु० चञ्चल तीक्ष्ण, भोला, ना० पु० धतूरावृक्ष ।

तरलता० ना० स्त्री० चञ्चलता तेज़ी ।

तरला० ना० पु० बांस विशेष, गु० जो सबसे नीचला वा दूसरे से नीचला ।

तरलाई० ना स्त्री० तरलता ।

तरव० ना० पु० वृक्ष ।

तरवर० ना० पु० बड़ा वृक्ष ।

तरस० ना पु० शीघ्र, जल्दी, बालच, दया, क्षमा, कल्क ।

तरसना० अ० क्रि० ओलगाकर रहना, ललचाना, दयालु होना, पसीजना ।

तराई० ना० स्त्री० दलदल, चरागो, नीचान् ।

तरान्० ना० पु० लगाली माप ।

तराना० स० क्रि० पार कराना, पैराना, बचाना ।

तरि०
तरी० } ना० स्त्री० नाव, नौका ।

तरीश० ना० स्त्री० तरी का बहु वचन, नावें ।

तरु० ना० पु० वृक्ष ।

तरुण० गु० युवा, जवान ।

तरुणता०
तरुणाई० } ना० स्त्री० यौवन, किशोर, जवानी ।

तरुणी० ना० स्त्री० युवती, जवान् स्त्री ।

तरेड़ा० ना० पु० टोंटी से पानी का गिरना ।

Digitized by Google

तरैया० ना० पु० तारागण, तारा, कविवाक्य यथा दोहा० यथातरैया प्रात के सब नृप भये उदास, लखि दिन मणिकर राम छविसकुचानि चलप्रास।

तरौस० ना० पु० किनारा, बिहारी लाल सप्तशति कायां, श्यामसुरति करि राधिका तकति तरणि जा तीर, अंसुअन करत तरौस को खिनक खरौहों नीर।

तरौना० ना० पु० कर्ण भूषण विशेष, बिहारी लाल सप्त शतिकायां, लसत सेत सारी ढप्यो तरल तरौना कान, पर्यौमनो सुरसरि सलिल रवि प्रतिबिम्ब बिहान।

तर्क० ना० स्त्री० युक्ति से विवेचना, अनुमानोक्ति, न्याय शास्त्र, दलील।

तर्कणा० ना० पु० कूदन, नई बातबनाना, शङ्का करना।

तर्कित० गु० शङ्कित, लंघित, तर्क कियागया।

तर्की० ना० स्त्री० तरपतिया, ताड़पत्र रचित, कानका भूषण विशेष।

तर्कुल० ना० पु० ताड़ का फल।

तर्खा० गु० धाराजो बड़त शीघ्र बहती है।

तर्जन० ना० पु० कोप।

तर्जना० अ० क्रि० कोपकरना, कूदना।

तर्जनी० ना० स्त्री० अङ्गुष्ठ के पास की अङ्गुली।

तर्तराना० गु० जो बड़तचिकना, गीलाई से टपकताहै, अ० क्रि० घाव कटिभरना, गलफटाकी बाद।

तर्राहट० ना० स्त्री० सन्नाटा, गीदड़ भभकी, गल फटाकी।

तर्पण० ना० पु० पित्रादि के निमित्त जल दान देना, मंगल, हुलास।

तर्राना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, खुनसाना, कुड़कुड़ाना।

तर्रारा० ना० पु० मोसूनी।

तर्वरिया० ना० पु० खड्ग, तलवार० बांधने वारा।

तर्ष० ना० स्त्री० तृषा, इच्छा, रहम्।

तर्सों० अव्य० परसों के आगेका दिन।

तल० ना० पु० अधोभाग, पाताल, विशेष, हथेली।

तलक० अव्य० तक, लग।

तलछट० ना० स्त्री० निचोड़, मैल, खूद।

तलछलाना० स० क्रि० छिलाना।

तलना० स० क्रि० घी वा तेल में भूनना।

तलपट० गु० मलमेट, चौपाट।

तलफना० अ० क्रि० तरफना।

तलमलाना० अ० क्रि० ललचाना।

तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया।

तलवार० ना० पु० खड्ग, तरवार।

तला० ना० पु० पेंदा, थाह, जूती के नीचे का भाग, पद, देवता।

तलातल० ना० पुं० पाताल विशेष।

तली० ना० स्त्री० तला, बकनी, निस्पर्शी।

तलुआ० } ना० पु० पांवके
तलूआ० } नीचे का भाग।

तले० अव्य० नीचे।

तलैया० ना० स्त्री० छोटा तालाब

तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सेज, बिस्तर।

तन्नीला० ना० स्त्री० उसकी लीला।

तवर्ग० ना० पु० तकारादि पांच अक्षर।

तवक्कार० ना० पु० लूकार, तेरा किसा लुका।

तष्टना। ० स० क्रि० भागदेना, बांटना।

तष्टित० गु० भाजित, बांटागया।

तसला। ० ना० पु० खानापकाने का पात्र विशेष।

तस्कर० ना० पु० चोर।

तस्करता० ना० स्त्री०
तस्करत्व० ना० पु० } चोरी।
तस्करी० ना० स्त्री०

तस्मिन्० सर्व्व० तीनमें, उसमें।

तस्य० सर्व्व० उसका।

तसू० ना० पु० माप विशेष, फ़ारसी शब्द है।

तहां। ० अव्य० तिस स्थान, उस जगह।

तहियां० गु० पहिले।

तहीं० अव्य० तिसी वा उस स्थान।

तच्छक० ना० पु० मुख्य सांप।

तक्ष० गु० माता, मानी, स्वरूप साजा।

ता० सर्व्व० उसको।

ताड़त० ना० पु० यन्त्र, गण्डा।

ताई० ना० स्त्री० चाची।

ताऊ० ना० पु० बड़ा चचा।

तांगा० ना० पु० गाड़ी विशेष जो सजी नहीं है।

तांत० ना० स्त्री० चमड़े की रस्सी।

तांतबांधना। ० स० क्रि० बच्चा को छुपाना।

तांता० ना० पु० पांति, पंक्ति, तारका।

तांती० ना० पु० धुनिया, धनि-हना, पटकार।

Digitized by Google

तांबड़ा० ना० पु० तांबेकावर्ण, मानिक्य के समान झूठा पत्थर।

तांबा० ना० पु० धातुविशेष।

ताक० ना० पु० दृष्टि, टुकी।

ताकना० स० क्रि० देखना, झांकना, घूरना।

ताकझांक० ना० स्त्री० ठीक समय, दृष्टिरखना।

ताग० ना० पु० सूत, धागा।

तागना० स० क्रि० सीवना, सूतडालना।

तागा० ना० पु० सूत, धागा।

ताजक० ना० पु० ज्योतिष का ग्रन्थविशेष।

ताजन० ना० पु० कोड़ा।

ताटंक० ना० पु० कर्ण भूषण विशेष।

ताड़० ना० पु० वृक्षविशेष, ना० स्त्री० पहिचान।

ताड़क० ना० पु० ताडक, ताड़नेहारा।

ताड़न० ना० पु० झिड़की, दण्ड, डांट।

ताड़ना० स० क्रि० पहिचानना, बूझना, भटकलना, दण्ड देना, मारना।

ताड़नीय० गु० ताड़नाकरने के योग्य।

ताड़का० ना० स्त्री० सुबाहु की माता, राक्षसी।

ताड़ित० गु० ताड़नदियागया, मारागया।

ताड़ी० ना० स्त्री० ताड़कारस।

ताण्डव० ना० पु० तांडव, नृत्य विशेष।

तात० ना० पु० पिता, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, प्रभु, कृपादिक का बोधक शब्द, तात, गुरुम, दया।

तातनी०, तातनौ० } सर्व० उसकी, उसका।

तातें० } सर्व्व० तिससे, उससे,
तात० } तिसकारण।

तात्कालिक०गु० उसी समय का।

तात्पर्य०ना० पु० अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब, हासिल।

तादात्म्य०ना० स्त्री० तत्स्वरूपता।

तादृश०गु० वैसाही।

तान०ना० स्त्री० राग का जो उच्चारण, स्वर।

तानसेन०ना० पु० रागी विशेष।

ताना०ना० पु० वस्त्र का लम्बा सूत।

तानी०गु० रागी, गवैया, ना० स्त्री० तानी।

तान्त्रिक०ना० पु० सिद्धान्तका जाननेहारा विद्वान्, तन्त्रशास्त्रज्ञ।

ताड़ना०स० क्रि० कसना, खींचना, फैलाना।

ताप०ना० स्त्री० उष्णता, तप, ज्वर, मनकादुख,दण्ड।

तापती०ना०स्त्री०नदीविशेष।

तापना०स० क्रि० आंचलेना, घमाना।

तापस०ना० पु० तपस्वी, शान्त।

तापिच्छ० } ना० पु० तेंदुआ,
तापिञ्ज० } वृक्ष, तमाल।

तापी०ना० स्त्री० नदी विशेष, जो विंध्य के दक्षिण ओर है।

तापीय०ना०पु० सोनामक्खी।

तापूस०ना० पु० तमालपत्र।

ताप्य०ना० पु० सोनामक्खी।

ताफता०ना० पु० रेशमीकपड़ा जिसको धूपछांह कहते हैं।

Digitized by Google

तामचीनी० ना० स्त्री० तांबा जिसमें और धातु भी जड़ा होवे।

तामड़ा० ना० पु० तांबेकेरङ्ग, कोमणि।

तामपुष्प० ना० पु० कुम्भी।

तामरस० ना० पु० कमल।

तामल० ना० पु० देशविशेष।

तामलकी० ना० स्त्री० भूआंरा।

तामस० ना० पु० तमोगुण का कार्य्य, ना० पु० तम, क्रोध।

तामसिक० } गु० तमोगुणयुक्त,
तामसी० } क्रोधी।

तामसी० ना० स्त्री० रात, क्रोधी।

तामहु० सर्व्व० उसमें।

तामा० ना० पु० तांबा।

तामिली० ना० स्त्री० भाषा विशेष।

तामेश्वर० ना० पु० तांबेकी बङ्ग।

ताम्बूल० ना० पु० पान।

ताम्र० ना० पु० तांबा।

ताम्रचूड़० ना० पु० मुरग़ा, करौंदा।

ताम्रवर्ण० ना० पु० हरिन, तांबेके रङ्ग।

ताम्रवल्ली० ना० स्त्री० मजीठ।

ताम्रसार० ना० पु० लालचन्दन।

ताम्राक्ष० ना० पु० कोयल।

तार० ना० पु० बानर विशेष, मोतीमाला, निर्मलमोती, उच्चस्वर, ताड़।

तारक० ना० पु० मुक्तिदाता, रांगाधातु, गुरू, उद्धार करनेहारा, जो पारले-जावे, मन्त्रविशेष, दैत्य विशेष।

तारकारि० ना० पु० स्वामि कार्तिक।

Digitized by Google

तारकी० ना० स्त्री० देवदाली ।

तारकूट० ना० पु० रूपापीतल ।

तारकेश्वर० ना० पु० सदाशिवजी ।

तारण० ना० पु० उद्धार करनेहारा, उद्धार कारकर्ता, मुक्तिदाता, तारनेहारा ।

तारणीय० गु० तारने हारा, योग्य, उद्धार करने लायक ।

तारतम्य० ना० पु० न्यूनाधिक, थोड़ाबहुत ।

तादर्थ्य० ना० पु० उसका अर्थ, उसकेलिये ।

तारना० स० क्रि० उतारना, पारकरना, मुक्तिदेना ।

तारा० ना० पु० नक्षत्र, ना० स्त्री० नेत्रकीपुतली, अङ्गद की महतारी ।

तारागण० ना० पु० नक्षत्रोंका समूह ।

तारापथ० ना० पु० आकाश ।

तारिका० ना० स्त्री० पुतली, नक्षत्र ।

तारिणी० ना० स्त्री० उद्धार करनेहारी ।

तारुण्य० ना० स्त्री० तरुणता, जवान, जुवा ।

तालू० ना० पु० तालू ।

तार्किक० ना० पु० नैयायिक न्याय शास्त्र जानने हारा ।

तार्क्ष्य० ना० पु० रसौत, गरुड़, पक्षी, पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मान्तौ रणकुन्तौ भास पक्षिणौ इत्यमरः ।

ताल० ना० पु० ताड़वृक्ष, तालाब, हरताल, ना० स्त्री० करताल, रागका परिमाण, मल्लयुद्धमें वा ऊपर बाहु पटकना ।

तालखजूरी० ना० स्त्री० दुपहरिया वृक्ष ।

Digitized by Google

तालध्वज० ना० पु० श्री बलरामजी।

तालपत्री० } ना० स्त्री०
तालमूलिका० } मूसली, औषधि।

तालवृन्त० ना० पु० ताड़ का पंखा।

तालव्य० ना० पु० जो अक्षर तालु से उच्चारण किये जावें यथा, त, थ, द, ध, न, ल, स,।

ताला० ना० पु० कुफ़ल, द्वारबन्दकरने का यन्त्र।

तालाङ्क० ना० पु० श्री बलदेवजी।

ताली० ना० स्त्री० कुंजी, चाबी, दोनों हाथोंको आपस में मारने से जो शब्द होता है।

तालीस० ना० पु० वृक्ष विशेष।

तालु० } ना० पु० मुखके ऊपर
तालू० } का भाग।

ताव० ना० पु० ताप, क्रोध, बल, चटक, ऐंठ, कागज़का तख़ता, क्रम।

तावत्० अव्य० इतना, वहांतक, तबतक।

तावना० स० क्रि० गरम करना कसना, ऐंठना।

ताश० } ना० पु० गञ्जीफ़ह,
तास० } लफ़्ज़, पारसी है।

तासु० } सर्व० उसको उस
तासुको० } का।

ताहि० सर्व० उसको।

ताहिरी० ना० स्त्री० भोजन, विशेष।

तिकतिक० ना० पु० गाड़ी, आदि के बैल चलाने में यह शब्द बोलाजाताहै।

तिकुरी० ना० स्त्री० तिहाई, तीसरा।

तिकोनिया० पु० तीन कोन का पदार्थ।

Digitized by Google

तिक्का० ना० पु० मांसका छोटा, टुकड़ा ।

तिक्त० गु० तीता, चरपरा, ना० पु० चिरायता ।

तिक्तका० ना० स्त्री० चिरपोटा ।

तिक्तचक्रा० ना० स्त्री० कुटकी ।

तिक्ता० ना० स्त्री० कालीमिरच, खीरा ।

तिखरा० गु० तिबारा, तिहरा ।

तिखरा करना० स० क्रि० तीन बेर जोतना ।

तिखारना० स० क्रि० ठहराना सचकरना, यत्नसेपूछना, तीनबेर जोतना ।

तिगुण० } गु० जिसका तीन-
तिगुना० } गुनहै, तिहराना ।

तिग्म० ना० पु० धौपरि ।

तिजरा० ना० पु० } अन्तरिया
तिजरी० स्त्री० } तीसरेदि-
तिजारी० स्त्री० } न जाड़ा और विषमका आना ।

तिणुका० ना० पु० काष्ठ का टुकड़ा ।

तित० अव्य० तिधर, तब ।

तितना० ना० पु० } गु० प्रमाण
तितनी० स्त्री० } वा अवधि वा निश्चय बोधक ।

तितरबितर० गु० भिन्न, भिन्न, संग फूट जाना ।

तितरी० } ना० स्त्री० कीटविशेष
तितली० } जो उड़ता है ।

तिथि० ना० स्त्री० चन्द्रकलाकी क्रियासे उपलचितकाल, दिन, तारीख ।

तिथिपत्र० ना० पु० पत्रा, जंत्री० ।

तिथिक्षय० ना० पु० तिथिका अवम, हानि ।

तिदरा० ना० पु० } तीनद्वार
तिदरी० ना० स्त्री० } का स्थान ।

Digitized by Google

तिधारा०ना०पु० पौधा विशेष, तीनधार का संगम।

तिनकना० अ० क्रि० धड़कना, फड़फड़ाना, टीसना।

तिनका०ना०पु० डांडीवा टहनी वा घासका छोटा, टुकड़ा।

तिन्तिणी०ना० स्त्री० अमिलीवृक्ष।

तिन्दुक०ना०पु० तेंदुवा, तमालवृक्ष।

तिन्दुला०ना० स्त्री० पीपरि।

तिन्नी०ना० स्त्री० चावल वा, उसका पौधाविशेष।

तिबारा० गु० तीनिबेर ना० पु० तीन दरका।

तिब्बत०ना० पु० देशविशेष जो हिमालयके उत्तरमेंहै।

तिमि०ना० स्त्री० मछली, अव्य, तैसे, उसीविधि।

तिमिङ्गिल०ना० पु० मत्स्य, मछली।

तिमिर०ना० पु० अन्धकार, अज्ञान।

तिमिरहर०ना० पु० सूरज।

तिय० } ना० स्त्री० योषिता,
तिया० } स्त्री० नारि।

तिरके०ना० गु० तीनकोने वालापदार्थ।

तिरखूंटी०ना०स्त्री० तीनकोने का अस्त्र विशेष।

तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हठीला।

तिरछाना० अ० क्रि० टेढ़ाकरना, अ० क्रि० हठीला होना, हठकरना।

तिरछी० गु० टेढ़ी, बांकी।

तिरतिराना० अ० क्रि० रिसना, झिर झिराना।

तिरना० अ० क्रि० पैरना, तैरना।

तिरपद०ना०पु० } तिपाई,
तिरपदी० स्त्री० } तीनपद।

Digitized by Google

तिरपन० गु० पचास, और तीन० ५३।

तिरपौलिया० ना० पु० धनुषाकारके तीन द्वारका स्थान।

तिरफल० ना० पु० त्रिफला, तीनफलका अर्थात् आंवला, हर्र, बहेड़ा।

तिरभङ्गा० गु० तिरछा खड़ा होना।

तिरभङ्गी० ना० स्त्री० छन्द विशेष, ना० पु० श्रीकृष्ण चन्द्रकीकाएकनाम।

तिरस्कार० ना० पु० निन्दा, भञ्जन, अवज्ञा, अपमान।

तिरसठ० गु० साठि और तीन, ६३।

तिरहुत० ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष।

तिरोधान० ना० पु० पोशाक, आच्छादन, वस्त्र।

तिरोहित० गु० छुपाहुआ, गुप्त, ना० पु० मिथिलादेश।

तिमिर० ना० पु० तेलकीबूंद जो पानीपर बहती है थर थरा।

तिर्मिराना० अ० क्रि० झूलना, लहरना, थरथराना, चमकना यथा तेल की बूंद पानीपर।

तिर्मिराहट० ना० स्त्री० थर थराहट, फरफराहट।

तिर्मिरी० ना० स्त्री० घुमड़ी।

तिर्यक्पति० } ना० पु० शार्दूल, सिंह।
तिर्यग्पति० }

तिल० ना० पु० पौधा विशेष जिसके बीजसे तेलनिकालते हैं, शरीरमें कालाचिह्नविशेष, लघु।

तिलक० ना० पु० ललाट में विहित चन्दनादि का टीका, पीनाखली, अर्थकरना, अर्थ, वृक्षविशेष गु० शिरोमणि।

Digitized by Google

तिलकुट० ना० पु० तिल और मिठाई विशेष।

तिलङ्गा० ना० पु० तैलङ्गा, सिपाही।

तिलङ्गी० ना० स्त्री० गुड्डी, पतङ्ग।

तिलचट्टा० ना० पु० कीट विशेष।

तिलचावली० ना० स्त्री० तिल और चावलोंकी मिलौनी, काले और सफेद बालों की मिलौनी।

तिलचूरी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष।

तिलड़ा० ना० पु० } तीनलड़का भूषण विशेष।
तिलड़ी० ना० स्त्री० }

तिलपर्णी० ना० स्त्री० चन्दन।

तिलपिष्टक० ना० पु० पीना, तिलकी खली।

तिलवर० ना० पु० पक्षीविशेष।

तिलभेद० ना० पु० पोस्त का बिरवा।

तिलहा० गु० तेलिया।

तिलुआ० ना० स्त्री० पिलई।

तिलोत्तमा० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।

तिष्ठना० अ० क्रि० ठहरना, स्थिर होना, बिराजना।

तिष्ठित० गु० ठहरा हुआ।

तिष्य० ना० स्त्री० आठवां नक्षत्र, पुष्य।

तिसका० सर्व० उसका, जिसका

तिसरायत० ना० पु० मध्यवर्ती मैत्रियत, दुजागी, अपनायतरहित।

तिसूल० ना० पु० औषधि विशेष।

तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३।

तिहरा० गु० तिगुना, तिलड़ा

तिहराना० स० क्रि० तिहरा करना।

तिहरावट० ना० स्त्री० तिगुण करनेका काम।

तिहरे० सर्व्व० तिहारे।

तिहाई० ना० स्त्री० तीसरा भाग—$\frac{1}{3}$।

तिहायत० ना० पु० तिसरा-यतु।

तिहारी० ना० स्त्री० | सर्व्व०
तिहार० ना० पु० | तेरी,
तिहारो० ना० पु० | तेरे।

तिहु० गु० तीनों, तीन।

तिहुपुर० | ना० पु० तीनों
तिहुलोक० | लोक।

तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा।

तीखी० गु० सूक्ष्मस्वर, पैनी।

तीखुर० ना० पु० श्वेतवस्तु जि-सको व्रतके दिनफलाहार करते हैं।

तीछन० गु० तीक्ष्ण, तीव्र, तेज़।

तीज० ना० स्त्री० तृतीया।

तीजा० गु० तीसरा, मृतक के तीसरे दिनका काम वा तीसरादिन।

तीजिया० | ना० स्त्री० श्रावण
तीजैं० | सुदी तीन का त्योहार।

तीत० गु० तीता।

तीतर० ना० पु० पक्षीविशेष।

तीतरी० ना० स्त्री० तितरी, पतङ्ग विशेष।

तीता० गु० कडुवा, पड़पड़ा, तीखा।

तीन० गु० त्रि, ३।

तीनतेरह० गु० तित्तरबित्तर।

तीय० ना० स्त्री० अबला, स्त्री।

तीयल० ना० स्त्री० स्त्रीकेपहि-रनके तीनों वस्त्र।

तीर० ना० पु० समुद्रवानदीका तट, अव्य० ढिग, पास।

Digitized by Google

तीरथ॰ना॰ पु॰ पुण्यस्थान, यात्रा।

तीरथराज॰ना॰ पु॰ प्रयाग।

तीर्थ॰ना॰ पु॰ तीरथ।

तीली॰ना॰ स्त्री॰ पिञ्जड़ा की कामी।

तीव्र॰गु॰ अत्यन्तकड़ुवा तीता, पैना।

तीसरा॰गु॰ तृतीय।

तीसी॰ना॰ स्त्री॰ अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।

तीक्ष्ण॰ना॰ पु॰ मद्या, मिरच, गु॰ पड़पड़ा, तत्ता, क्रोधी, भांभिया, पैना, तीता।

तुक॰ना॰ स्त्री॰ पद, सम्बन्ध।

तुकला॰ना॰ पु॰ }
तुकली॰ना॰ स्त्री॰ } छोटीपतङ्ग विशेष।
तुक्कल॰ना॰ पु॰ }

तुक्का॰ना॰ पु॰ बाण जिसकी नोकनहीं है छोटा-पर्य्यन्त।

तुगावंशी॰ }
तुगाक्षीरी॰ } ना॰ पु॰ वंशरोचन।

तुङ्ग॰गु॰ ऊंचा, लम्बा, समूह।

तुङ्गफल॰ना॰ पु॰ नारियल।

तुच्छ॰गु॰ शून्य, कुत्सित, अपमानी।

तुड़ाना॰स॰ क्रि॰ तोड़ाना।

तुण्ड॰ना॰ पु॰ चोंच, मुख।

तुतरा॰गु॰ जोतुतलाताहो।

तुतराना॰अ॰ क्रि॰ अधूरा बोलना जैसे बालक बोलते हैं।

तुतला॰गु॰ तुतरा।

तुतलाना॰अ॰क्रि॰तुतराना

तुत्थ॰ }
तुत्थिक॰ } ना॰पु॰नीलाथोथा।

तुनतुनाना० अ० क्रि० शर्राटा देना।

तुन० ना० पु० वृक्ष विशेष।

तुन्दिल० गु० तोंदल, बड़ी तोंदका।

तुन्न० ना० पु० तुन, टूटा।

तुपक० ना० पु० बन्दूक।

तुपकिया० ना० स्त्री० छोटी बन्दूक।

तुम० सर्व्व० मध्यम पुरुष का सूचक वा वाचक।

तुमतनो० सर्व्व० तुम्हारा।

तुमाई० ना० स्त्री० तुमानेका पैसा।

तुमाना० स० क्रि० धुनवाना।

तुमुल० ना० पु० रौला, हल्लड़।

तुम्बा० ना० पु० लौका, कद्दू।

तुम्बिका०, तुम्बी० ना० स्त्री० लौकी, कद्दू, बजाने की तोम्बी जो मदारी लोग रखते हैं।

तुरई० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।

तुरक० ना० पु० तुरक, देश विशेष।

तुरग०, तुरङ्ग०, तुरङ्गम० ना० पु० घोड़ा।

तुरङ्गाह्वा० ना० स्त्री० असगन्ध।

तुरत०, तुरन्त० अव्य० शीघ्र, अभी।

तुरपना० स० क्रि० सीना, टांकना विशेष।

तुरही० ना० स्त्री० बाजा विशेष नरसिंघा।

तुराई० ना० स्त्री० तोशक, रजाई।

तुराना० अ० क्रि० छूटजाना, कुदाना, मर्य्यादासे बाहिर चलना, बहिः चलना।

तुराषाट्० ना० पु० इन्द्र।

तुरिय० ना० पु० घोड़ा।

तुरी ० ना० पु० घोड़ा, ना० स्त्री० तुरङ्गी ।

तुरीय० ना० पु० मुक्तयवस्था, मुक्ति, मोक्ष चौथा ।

तुरुक० } ना० पु० यवन, देश
तुरुष्क० } विशेष ।

तुर्त० } अव्य० तुरन्त,
तुर्तफुर्त० }
तुर्त्तीव० } शीघ्र ।
तुर्त्तीफुर्त्ती० }

तुल० गु० तुल्य ।

तुलमा० अ० क्रि० तुलापर चढ़ना, तुल्य होना ।

तुलसा० } ना० स्त्री० छोटा
तुलसी० } वृक्ष जिसकी पत्ती विष्णु वा सालग्राम को चढ़ाते हैं ।

तुलसीदास० ना० पु० प्रसिद्ध भक्त श्रीरामायण भाषा बनाने हारे ।

तुला० ना० स्त्री० तराजू, अपनी देहकी बराबर दानदेना सातवीं राशि विशेष ।

तुलाना० स० क्रि० तौलाना, तुलापरचढ़ाना, तकुआ ठीक कराना ।

तुलित० गु० तुलाकृआ, तुलापर चढ़ाया गया ।

तुली० ना० स्त्री० मोटीसींक, चित्रलिखने की कलम ।

तुल्य० ना० पु० समान, बराबर, सदृश ।

तुल्यता० ना० स्त्री० समानता, बराबरी ।

तुवर० ना० पु० तिल ।

तुवरी० ना० स्त्री० फटकरी ।

तुष० ना० पु० धानादिकाछिलका

तुषार० ना० पु० शीत, पाला, हिम ।

तुष्ट० गु० प्रसन्न, तृप्त, सन्तोषी ।

तुष्टता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, तृप्ति, सन्तोष ।

Digitized by Google

तुष्टित० गु० प्रसन्नित, सन्तोषित।

तुसार० ना० पु० तुषार।

तुहिन० ना० पु० तुसार, तुषार, हिम।

तुह्मी० सर्व० तुझको।

तू० सर्व० मध्यम पुरुष का एक वचन।

तूंकारना० स० क्रि० तुकारना।

तूकाना० स० क्रि० अबे तबे करना।

तूष्टौ० गु० सन्तोषित।

तूण० } ना० पु० बाणरख-
तूणीर० } नेकाघर, तरकश।

तूतई० ना० स्त्री० टोंटीदार मिट्टीका बर्तन।

तूतिया० ना० पु० नीलाथोथा।

तूबरि० ना० स्त्री० तुम्बी।

तूमना० } स० क्रि० रुइको हाथ
तूम्ना० } से बनाना।

तूर० ना० पु० तूर्य, नक्कारह।

तूरक० ना० पु० जलपिप्पल।

तूरना० स० क्रि० तोड़ना।

तूरी० ना० पु० धतूरा।

तूर्ण० ना० पु० शीघ्र, जल्दे।

तूर्य० ना० पु० नक्कारह, नगाड़ा।

तूल० ना० स्त्री० निर्बीजकपास अर्थात् रुइ, तुल्य।

तूलनीय० ना० पु० कदम-वृक्ष।

तूलिनी० ना० पु० सेमरवृक्ष।

तूवर० ना० पु० राजपूतों में जाति विशेष।

तृण० ना० पु० घास।

तृणराज० ना० पु० नारियल, अख, ताल वृक्ष।

तृणवत्० गु० घासके समान निकम्मा।

तृणावर्त्त० ना० पु० दैत्यविशेष बौंड़रा, घासका भंवर।

Digitized by Google

तृणोदक ना० पु० घासपानी।
तृतीय गु० तीसरा।
तृतीया ना० स्त्री० तीन, तीसरीतिथि, तीसरी।
तृतीयान्त गु० जिसके अन्तमें तृतीयाका चिह्न है।
तृतीयांश ना० पु० तीसरा भाग।
तृप्त गु० सन्तुष्ट।
तृप्ति ना० स्त्री० भोजनादि करके सन्तोष।
तृष्टता } ना० स्त्री० निर्लोभ।
तृष्टत्व }
तृषा ना० स्त्री० प्यास।
तृषार्त्त गु० पिपासाकरके व्याकुल।
तृषावन्त } गु० पिपासाशक्त, प्यासा।
तृषित }
तृष्णा ना० स्त्री० प्यास, लालच, अभिलाषा।
ते अव्य० से, सर्व्व, वे, ये।
तें सर्व्व० तू० अव्य, से।
तेंतालीस गु० चालिस और तीन, ४३।
तेंतीस गु० तीस और तीन, ३३।
तेंदुआ ना० पु० चीताविशेष, वृक्ष विशेष।
तेंदू ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष।
तेईस गु० बीसऔरतीन २३।
तेज ना० पु० दमक, प्रताप, बल, अग्नि।
तेजपति ना० पु० सूर्य, भाषा में प्रचलित है।
तेजपात ना० पु० तज की पत्ती।
तेजमान् } गु० प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी।
तेजवन्त }
तेजवल ना० पु० औषधिविशेष
तेजवती } ना० स्त्री० तेजवल।
तेजस्विनी }

तेजस्कर० ना० पु० वीर्य्यबढ़ाने हारा, द्रव्य, पुष्टई।

तेजस्वी० } गु० प्रतापी, दीप्तिमान्, तेजवाप्रकाश से युक्त।
तेजोमय० }

तेता० गु० तितना।

तेमन० गु० भीगा, गीलाई, व्यञ्जन।

तेरस० ना० स्त्री० त्रयोदशी।

तेरह० गु० दशऔरतीन १३।

तेरुस० ना० पु० तीसरा वर्ष, त्योरस।

तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस।

तेलिन्० ना० स्त्री० तेली की स्त्री।

तेलिया० ना० पु० तेलकासा रङ्ग विशेष।

तेली० ना० पु० तेलकार जाति विशेष।

तेवर० ना० स्त्री० घुमनी, घुमड़ी, गु० तीखड़ा।

तेवराना० अ० क्रि० घुमड़ीमें होना, गिरपड़ना।

तेवरी० ना० स्त्री० घुमड़ी घुमनी, दृष्टि।

तेवहार० ना० पु० पर्व्व, त्योहार।

तेह० ना० पु० क्रोध, क्रोक बहादुरी, साहस।

तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीकेपांवका गहना विशेष।

तेहा० ना० पु० तेह।

तेहीं० अव्य० अभी, सभी, उसको।

तैतिल० ना० पु० करणविशेष

तैरना० स० क्रि० पैरना।

तैल० ना० पु० तेल।

तैलकार० ना० पु० तेली।

तैलङ्ग० ना० पु० करणाटक देश वा उसके वासी।

Digitized by Google

तैलङ्गा० ना० पु० तैलङ्गदेश के लोग, और अंगरेज़ों के प्यादे ।

तैसा० गु० तिसके समान, अव्य० त्योंकर ।

तो० अव्य० तब, तदा, निश्चय करके, सर्व्व० तुझ ।

तों० अव्य० यों कर ।

तोंद० ना० पु० बड़ा पेट ।

तोंदी० ना० स्त्री० नाभि ।

तोंदैल० } गु० जिसका पेट
तोंदैला० } बड़ा है ।

तोंहीं० अव्य० तभी, उसी समय में ।

तोकहं० सर्व्व० तुझको ।

तोड़० ना० पु० फूट, नदी की धारा का बल, दही का पानी ।

तोड़जोड़० ना० स्त्री० बात बनाना ।

तोड़ना० स० क्रि० फोड़ना रुपया भुनाना, टुकड़ा कर्ना ।

तोड़ल० ना० पु० कड़ा खगोरी हाथके ।

तोड़वाना० स० क्रि० फोड़वाना, टुकड़े कराना, रुपैया भुनवाना वा भुनाना ।

तोड़ा० ना० पु० टटका, सहस्र रुपयों की थैली, रंजक में आगि लगाने की वस्तु, चरची, गले की सांकर, धन्नी का टुकड़ा ।

तोड़ाना० स० क्रि० तोड़वाना ।

तोतला० गु० हकला ।

तोतलाना० अ० क्रि० हकलाना ।

तोता० ना० पु० शुक, सूआ ।

तोपना० स० क्रि० ढांपना, गाड़ना ।

तोपाना० स० क्रि० गड़वाना ।

Digitized by Google

तोबड़ा॰ ना॰ पु॰ थैलीजिसमें घोड़े को दाना दिया जाता है।

तोमर॰ ना॰ पु॰ बाण, तीर, छन्द विशेष।

तोय॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

तोयनिधि॰ ना॰ पु॰ समुद्र, जलधि।

तोयपिप्पली॰ ना॰ स्त्री॰ जलपीपल।

तोर॰ ना॰ पु॰ दालविशेष, सर्व्व॰ तेरा।

तोरण॰ ना॰ पु॰ फूलोंकी माला जो आनन्द वा त्योहार के दिनबांधतेहैं।

तोरी॰ ना॰ स्त्री॰ ककरीविशेष।

तोल॰ ना॰ स्त्री॰ तौल।

तोलक॰ } ना॰ पु॰ बांट जो
तोला॰ } बारहमाशेभरहोता है वा सोलहमाशेभर।

तोष॰ ना॰ पु॰ हर्ष, तृप्ति, धीरज।

तोषक॰ गु॰ हर्षदाता, धीरज दाता।

तोषित॰ गु॰ हर्षित, धीरजवान्।

तोहि॰ सर्व्व॰ तुझको।

तौ॰ अव्य॰ तब, तो।

तौंसना॰ अ॰ क्रि॰ धूपकेमारे शिथिलहोना।

तौल॰ ना॰ पु॰ जोख, परिमाण की क्रिया।

तौलना॰ स॰ क्रि॰ जोखना, परिमाण करना।

तौलवाई॰ } ना॰ स्त्री॰ तौ-
तौलाई॰ } लने का कामवा पैसा।

तौलाना॰ स॰ क्रि॰ जोखवाना

तौलिया॰ } ना॰ स्त्री॰ पात्र
तौली॰ } विशेष।

तौहीं॰ अव्य॰ अभी।

Digitized by Google

तौहू० अव्य० तथापि।

त्यक्त० गु० जिसको त्यागदिया।

त्याग० ना० पु० छुड़ाव वैराग्य।

त्यागन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़न।

त्यागना० स० क्रि० छोड़ना, तजना।

त्यागी० गु० वैरागी, छोड़े हुये।

त्याज्य० गु० जो त्यागने के योग्य है।

त्यों० अव्य० तैसे, इस प्रकार, एकही समय में।

त्योंधा० गु० चुन्धला।

त्योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी।

त्योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपनाकामबड़ी चतुरता से स्वच्छ बनाती है।

त्योरुस० ना० पु० दो वर्ष पहिले।

त्योरी० ना० स्त्री० मत्थेकी सकोड़, घुमनी

त्योरीचढ़ाना० स० क्रि० क्रोधित होना।

त्योहार० ना० पु० पर्व, पर्वनी, आनन्द का दिन।

त्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया।

त्रय० गु० त्रि, ३।

त्रयईषा० ना० स्त्री० तीनिईषा अर्थात् पुत्र, सम्पत्ति, पत्नी।

त्रयगङ्गा० ना० स्त्री० तीनगङ्गा अर्थात् मन्दाकिनी, भागीरथी, प्रभावती।

त्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप, अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक।

त्रयपावक० ना० पु० तीनअग्नि अर्थात् आहवनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल, दावानल, वडवानल।

त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा, अर्थात् त्रिवचादि तीनलकीर।

Digitized by Google

त्रयरोग० ना० पु० तीनरोग, अर्थात् वात, पित्त, कफ।

त्रयीतनु० ना० पु० सूर्य्य।

त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस।

त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी,

त्रसित० गु० डरताहुआ, भयमान्।

त्रस्त० गु० कायर, डरपोक, नामर्द।

त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।

त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक।

त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता, रक्षक।

त्रात० गु० बचायागया, रक्षित।

त्राता० गु० रक्षक, पालक।

त्रास० ना० पु० भय, दुःख।

त्रासक० गु० भयदायक, दुःखदाता।

त्रासा० } गु० भयमान्, डराहुआ।
त्रासित० }

त्राह० } अव्य० दया चाहनेका शब्द, पश्चात्ताप का शब्द।
त्राहि० }

त्रि० गु० तीन, ३ परन्तु यह शब्द विशेष के आगे योग होता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।

त्रिंश० गु० तीसवां $\frac{1}{30}$।

त्रिंशति० गु० तीस, ३०।

त्रिक० } ना० पु० गोखुरू।
त्रिकटु० }

त्रिकाल० ना० पु० तीनकाल, अर्थात् भूत, भविष्य, वर्त्तमान, अथवा, प्रातःकाल, मध्यान्ह, सन्ध्या।

त्रिकुट० ना० पु० सिंघाड़ा

त्रिकुटा० ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।

त्रिकूट० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लङ्का है।

Digitized by Google

त्रिकोण० ना० पु० तीनकोन, तीनकोनेवाला सिंघाड़ा ।

त्रिगुण० ना० पु० तीनबेर, तीनगुणअर्थात् सात्विक, राजस, तामस ।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, तिर्यग् ।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु-पक्षी आदि ।

त्रिज्या० ना० स्त्री० व्यासार्द्ध, आधाविस्तार ।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामेदा ।

त्रिदश० ना० पु० देवता, गु० तेरह, १३ ।

त्रिदशकस्यपस्त्री० ना० स्त्री० तेरह कश्यप की स्त्री, अर्थात् दिति, अदिति, कद्रू, विनता, श्रीधर्मा, भानुयोगेश्वरी, श्रीगति-लक्ता, पवनतिका, पर्व-नावर्ती, मेधावती, कल-कदम्बा, वन्ध्या, बर्व-कमाला, १३ ।

त्रिदोष० ना० पु० तीनदोष अर्थात् कफ, वात, और पित्त ।

त्रिदशालय० ना० पु० स्वर्ग ।

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग ।

त्रिधा० गु० तीनठाम, तीन प्रकार ।

त्रिध्वनि० ना० स्त्री० तीनध्वनि अर्थात् मधुर मन्द, गम्भीर ।

त्रिनयन० } ना० पु० श्रीसदा
त्रिनेत्र० } शिव ।

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भवानी विशेष ।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० श्रीगङ्गा-जी ।

त्रिपद० ना० पु० } तिपाई ।
त्रिपदी० ना० स्त्री० }

त्रिमर्षी० ना० स्त्री० शाक-[illegible]

Digitized by Google

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हंस-पादी ।

त्रिपु० ना० पु० सीसा, धातु, विशेष ।

त्रिपुंसी० ना० स्त्री० इन्द्र-वारुणी ।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हंसपादी ।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० निसोत ।

त्रिपुण्ड्र० ना० पु० शाक्त मतका तिलकजो आड़ा होताहे, वैष्णव मत का तिलक जो ठाढ़ा होता है ।

त्रिपुर० ना० पु० त्रिलोक, दैत्य विशेष ।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहा-देवजी ।

त्रिपुस० ना० पु० खीरा ।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीनि द्वार का मार्ग ।

त्रिफला० ना० पु० तीन फल, अर्थात् आंवला, हड़, बहेड़ा ।

त्रिभङ्ग० गु० तिरछा खड़ा होना ।

त्रिभङ्गी० ना० पु० छन्दविशेष, श्री कृष्णचन्द्र जी का एक नाम ।

त्रिभुज० गु० तीन भुजा का, तिकोना ।

त्रिभुवन० ना० पु० तीनलोक अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य, पाताल ।

त्रिमुहानी० ना० स्त्री० त्रि-वेणी ।

त्रिय० } ना० स्त्री० अबला
त्रिया० } पत्नी, नारी ।

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्द्ध, मध्य, अधः वा, उत्तम, मध्यम और नीच ।

त्रिलोकी० ना० पु० तीन लोक का समुदाय ।

त्रिलोह० ना० पु० पीतल ।

त्रिशङ्कु० ना० पु० राजाविशेष ।

Digitized by Google

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्र विशेष ।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन संध्या अर्थात् प्रातः काल, मध्यान्ह, संध्या ।

त्रिसंध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त, शुक्ल, श्याम ।

त्रिसोता० } ना० स्त्री० श्री
त्रिस्रोता० } गङ्गा जी ।

त्रुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता ।

त्रेता० ना० पु० युग विशेष ।

त्रैराशिक० गु० तीन राशिका गणित ।

त्रोटक० ना० पु० छन्द विशेष ।

त्रीस० ना० पु० तृषा, तरकश ।

त्वं० सर्व्व, तू ।

त्वक्० ना० स्त्री० छाल, स्पर्शेन्द्रिय, खाल ।

त्वचा० ना० स्त्री० छिलका, बकला, खाल ।

त्वची० ना० पु० बांस, गु० त्वचा धारी ।

त्वदंघ्रि० ना० पु० तुम्हारे चरण ।

त्वदीय० सर्व्व, तुम्हारी, रामायणे यथा त्वदीय भक्ति संयुतं ।

त्वरा० ना० स्त्री० उतावली ।

[थ]

थट्ट० ना० स्त्री० वस्त्रादिका ढेर ।

थंब० }
थंबा० } ना० पु० खम्भ, थून्ही, खम्भ ।
थंभ० }

थंभना० प० क्रि० ठहरना, रुकना, संभलना ।

थर्व्वी० ना० पु० थक्का ।

थकथक० गु० थपथप ।

थकना० प्र० क्रि० मांदा होना, हारना

थका० गु० मांदा, हारा।

थकाना० स० क्रि० मांदा करना, हराना।

थकित० गु० थका, जो थक गया, अचम्भित।

थक्का० ना० पु० चक्कान।

थन० ना० पु० गौआदिकास्तन।

थनी० ना० स्त्री० घोड़े का दोष विशेष।

थनैला० ना० पु० थनकारोग विशेष।

थनेसरी० ना० पु० कुरुक्षेत्र के ब्राह्मण।

थपक० ना० पु० थाप।

थपड़ा० ना० पु० थप्पड़, चपेटा।

थपड़ी० ना० स्त्री० ताली।

थपना० स० क्रि० स्थापना, बैठाना, अ० क्रि० स्थापित होना, बैठजाना।

थपा० गु० स्थापित, बैठाया-हुआ।

थपाना० स० क्रि० स्थापित-कराना, बैठाना।

थपेड़ा०
थप्पड़० } ना० पु० चपेटा।

थमना० अ० क्रि० रुकना।

थम्बना०
थम्भना० } अ० क्रि० रुकना।

थर० ना० पु० सिंह, और शेर का खोह।

थरथर० गु० कम्पा।

थरथराना० अ० क्रि० कांपना, कम्पना।

थरथराहट०
थरथरी० } ना० स्त्री० कपकपी, कम्पाहट।

थरहरना०
थरहराना०
थर्राना० } अ० क्रि० कांपना, कम्पना हलहलाना

थल० ना० पु० भूमि, स्थल।

थलकना॰ अ॰ क्रि॰ धड़कना, तलपना।

थलथलकना॰ } अ॰ क्रि॰
थलथलाना॰ } हिलना, यथा स्थूल मनुष्य का मांस हिलता है।

थलचर॰ }
थलचारी॰ } गु॰ मनुष्यादि।

थलिया॰ ना॰ स्त्री॰ भोजन करने का पीतलादि का पात्र।

थली॰ ना॰ स्त्री॰ घर, पाण्डुर।

थवई॰ ना॰ पु॰ राज, मीमार, घरकारी।

थहराना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना।

थाङ्॰ ना॰ स्त्री॰ चोरोंकी मांदि।

थांगी॰ ना॰ पु॰ चोर, धनिक।

थांभ॰ ना॰ पु॰ स्तम्भ।

थांभना॰ स॰ क्रि॰ टेकना, थाड़ना, अटकाना, रोकना, सहायताकरना।

थांवला॰ ना॰ पु॰ वृक्षआदि का थाला।

थाकना॰ अ॰ क्रि॰ थकना।

थाका॰ गु॰ थका।

थाती॰ } ना॰ स्त्री॰ धरोहर,
थाथी॰ } अमानत, सौंप।

थान॰ ना॰ पु॰ सारा कपड़ा, अश्वादि के रहने का स्थान, मुद्रा, कक्ष, मकान, ठिकाना।

थाना॰ ना॰ पु॰ रक्षकों का स्थान, बांसों का ढेर।

थानी॰ ना॰ पु॰ स्थान का स्वामी, थांगी।

थाप॰ ना॰ स्त्री॰ धौल, थप्पड़ पशुका पांव, मर्याद, बैठक।

थापना॰ स॰ क्रि॰ थोपना धौलियाना, ना॰ पु॰ व्यवहारविशेष, स्थापन करना।

Digitized by Google

थापा॰ ना॰ पु॰ पशुके पांव का चिह्न, थपा।

थापित॰ गु॰ बैठायागया, स्थापित, नियत भया, मुक़र्रर हुआ।

थापी॰ ना॰ स्त्री॰ थापने का शब्द, काठकीवस्तु विशेष जिससेछतपीटते हैं।

थाम॰ ना॰ पु॰ थम्भ, थूनी।

थामना॰ स॰ क्रि॰ रोकना, पकड़ना।

थार॰ } ना॰ पु॰ बड़ीथाली।
थाल॰ }

थाला॰ ना॰ पु॰ थांवला, थाल।

थाली॰ ना॰ स्त्री॰ भोजनकरने का पात्र विशेष।

थावर॰ ना॰ पु॰ स्थावर, वृक्षादि, अचल।

थाह॰ ना॰ स्त्री॰ नदी कीतली, नदी में वह स्थानजहां पैदल उतर जावें।

थाहा॰ ना॰ पु॰ नदीकास्थान जो गहिरा न हो।

थाही॰ ना॰ स्त्री॰ थाहपना, गु॰ जोगहरी नहीं।

थिति॰ ना॰ स्त्री॰ स्थिति, थिरता, पालन।

थिर॰ गु॰ स्थिरअचल, क़ायम।

थिरकना॰ अ॰ क्रि॰ चमत्कार करके नाचना।

थिरकाना॰ स॰ क्रि॰ चमत्कार से नचाना।

थिरकी॰ ना॰ स्त्री॰ चमत्कार, घुमाव।

थिरता॰ ना॰ स्त्री॰ } स्थिरता अचलता।
थिरत्व॰ ना॰ पु॰ }

थिरा॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।

थिराना॰ स॰ क्रि॰ बैठाना, ठहराना, अ॰ क्रि॰ बैठना, ठहरना, पानी की मिट्टीका बैठजाना।

Digitized by Google

थीर० गु० सुस्थित, स्थिर, मन्दा ।

थुकथुकाना० स० क्रि० कुवासनादि घिन की वस्तु देखकर थूकना, वा कुदृष्टि दूर करने के लिये थूकना ।

थुकाना० स० क्रि० थूकफिकवाना, और निन्दा कराना ।

थुथकारना० स० क्रि० तुच्छ करके किसू को बाहर करना ।

थुथनी० ना० स्त्री० शूकरादि का मुख ।

थुथाना० स० क्रि० मोंह टेढ़ी करना ।

थूक० ना० पु० मुखमें का पानी ।

थूकना० स० क्रि० मुखमें से पानी फेंकना ।

थूणी ना० स्त्री थूनी ।

थूतड़ा० ना० पु०, थूथन० ना० पु०, थूथना० ना० पु०, थूथनी० स्त्री० } शूकरादि का मुख ।

थूनी० ना० स्त्री० धरन, टेकन ।

थूहर० ना० पु० वृक्ष विशेष ।

थेईथेई० ना० स्त्री० चहल बहल ।

थेगली० ना० स्त्री० कपड़े में जोड़, पैवन्द ।

थेवा० ना० पु० नग ।

थैला० ना० पु०, थैलिया० स्त्री०, थैली० स्त्री० } बटुआ, दुस्तमियान ।

थोक० ना० पु० समूह, ढेर, एक भाग, टोला, महल्ला ।

थोड़० ना० पु० फले केले के गर्भा ।

Digitized by Google

थोड़ा० गु० अल्प, कम।

थोथला० गु० भोंता, मोटा।

थोथा० ना० पु० औषधिविशेष फलरहित, गु० छूछा, पोपला, बदसूरत, कुभगड़ा।

थोप० ना० पु० पालकीके बांस के अन्तका भूषण, छाप।

थोपना० स० क्रि० टेकना, छोपना, गांजना, बटोरना।

थोपियाना० अ० क्रि० बुन्दियाना, झिरझिराना।

थोपी० ना० स्त्री० थप्पा।

थोब० } ना० स्त्री० लटी का टेकन।
थोभ० }

थोहर० ना० पु० थूहर।

थौना० ना० पु० गौने के पीछे स्त्री की विदा।

[द]

द० अव्य० यह अक्षर जबशब्दके अन्तमें आता है तब उसका अर्थ देनेहारा होजाता है यथा सुखद अर्थात् सुखदेनेहारा।

दई० ना० पु० दैव, भगवान्, ब्रह्मा, स्त्री, मिठाईविशेष।

दंश० ना० पु० बन की मकड़ी, दांत।

दंशन० ना० पु० दांतों से काटन।

दंष्ट्री० ना० पु० शूकर, सर्प।

दंस० ना० पु० कुत्ता, सिंह, डांस।

दखन० ना० पु० दक्षिण।

दगड़० ना० पु० धक्का, ढक्का डक्का, राह।

दगड़ा० ना० पु० पैंड़ा।

दगड़ाना० स० क्रि० चलाना, दौड़ाना, डगराना।

दगदगा० गु० चमकीला।

Digitized by Google

दगदगाना० अ० क्रि० चमकना, चड़कना, तमतमाना ।

दगदगाहट० ना० स्त्री० चमक ।

दगधना० स० क्रि० जलाना, छेड़ना, सताना, डांटना, धुथकारना ।

दगला० ना० पु० रूईभरा अंगरखा ।

दग्ध० गु० जो जलगया ।

दग्धा० गु० जला, तिथिविशेष, वार विशेष, मास युक्त तिथि ।

दङ्गल० ना० पु० चौकी विशेष, बड़तात ।

दङ्गा० ना० पु० बखेड़ा, रौला ।

दङ्गैत० गु० रौला वा बखेड़ा करनेहारा ।

दटना० अ० क्रि० अड़ना, सा-म्नाकरना ।

दण्ड० ना० पु० लाठी, शासन, डांट, घड़ी, छुड़ौती, जुर्माना ।

दण्डक० ना० पु० राजाविशेष, गु० दण्डकर्ता ।

दण्डधर० } ना० पु० जम-
दण्डधारी० } राज, गु० दण्ड बांधनेहारा ।

दण्डमान० गु० दुखदाता, दण्डदाता, ना० पु० जमराज ।

दण्डवत्० ना० स्त्री० दण्ड के समान पड़के प्रणाम करना ।

दण्डादण्डी० ना० पु० आपस में लाठी से लड़ना ।

दण्डायमान० ना० पु० दण्डा की नांई खड़ा ।

दण्डित० गु० दण्डलिया गया, सतायागया, पीड़ित, शिक्षाकियागया ।

दण्डी० ना० पु० तपेश्वरी, गु० दुःखरूपी, डांडी ।

दण्डय० गु० दण्डदेनेके योग्य ।

दतवन० } ना० पु० दन्तधावन,
दतून० } मिसवाक ।

दतूना० ना० पु० पौधाविशेष ।

दतूली० ना० स्त्री० छोटे २ दांत ।

दतौन० ना० पु० दतून ।

दत्त० गु० जो दियागया ।

दत्तात्रेय० ना० पु० हरिअवतार मुनिविशेष ।

ददरीक्षेत्र० ना० पु० भृगुमुनि का स्थान पटना के पास है ।

ददियाल० } ना० पु० दादा
ददियाला० } का घर, पुरखे ।

ददोड़ा० ना० पु० मच्छड़ आदि के काटने की सूजन ।

दद्रू० ना० पु० दादुरोग ।

दधि० ना० पु० दही, समुद्र ।

दधिकांदो० ना० पु० जन्माष्टमी के दूसरेदिन का पर्व्वानन्द ।

दधिमुख० ना० पु० लड़का बहुतकम उमर, बाल्य, वानर विशेष जो राम दलमें था ।

दधिरिपु० ना० पु० अगस्ति मुनि ।

दधिबल० ना० पु० सुग्रीव का पुत्र विशेष ।

दधिसुत० ना० पु० चन्द्रमा आदिक ।

दधीचि० ना० पु० मुख्यराजा, मुनि विशेष ।

दनुज० ना० पु० दैत्य, राक्षस ।

दनुजपति० }
दनुजराज० } ना० पु० दैत्यों का राजा ।
दनुजाधिप० }

Digitized by Google

दनुजारि० ना० पु० देवता, श्रीनारायण।

दनुजेश० } ना० पु० दैत्यों
दनुजेश्वर० } का राजा।

दन्त० ना० पु० दांत, दशन।

दन्तकाष्ठ० ना० पु० दतूनकरना, दतून।

दन्तधावनी० ना० पु० धनियां।

दन्तबीज० ना० पु० अनार।

दन्तशठ० ना० पु० माड़ं औषधि, जंभीरी।

दन्तशूल० ना० पु० दांतों की पीड़ा।

दन्तिका० ना० स्त्री० बड़ी छतावर।

दन्ती० ना० पु० हाथी।

दन्तीफल० ना० पु० पिस्ता।

दन्तुर० } गु० जिसके दांत
दन्तेल० } होंठ से नढकें, या
दन्तैल० } जिसजन्तु आदि के
बड़े२दांतहों इबड़ा, दंतिला।

दन्त्य० गु० जिनअक्षरों का उच्चारण दांतसे होता है यथा,तथदधन लस।

दन्दनाना० अ० क्रि० विराजना, निडरबैठना।

दन्ना० ना० पु० इन्द्रिय, लिंग, गु० निडर।

दन्नापेल० गु० व्यभिचारी, अतिनिश्शङ्क।

दपट० ना० स्त्री० दौड़, झपट, डांट।

दपटना० अ० क्रि० दौड़ना, डांटना।

दपटाना० स० क्रि० दौड़ाना, डांटदिखाना।

दबकना० अ० क्रि० छिपना, घातमें बैठना।

दबकर० ना० स्त्री० कल।

दबकाना० स० क्रि० धमकाना डांटना, लुकाना।

दबकी० ना० स्त्री० दांव, छिपकी।

Digitized by Google

दबकीला० } गु० घुसड़, दब-
दबकैल० } कने हारा ।

दबड़्ग० } गु० कुशील, कुढङ्गा ।
दबड़्गा० }

दबना० अ० क्रि० नीचे होना, कुचिलना, कानिकरना, मानना ।

दबा० ना० पु० दांव, घात ।

दबाना० स० क्रि० दाबना, निचोड़ना, डांटना ।

दबाव० ना० पु० पराक्रम, आधीनता, बोझ, अदब ।

दबीला० ना० पु० औषधि विशेष, बैठा, चप्पू ।

दबेपांव० अव्य० होले, धीमे ।

दबेल० ना० पु० प्रजा, अधीन ।

दबोचना० स० क्रि० दबाय डालना ।

दम० ना० पु० मनको निजवशरखना अर्थात् इन्द्रियोंको रोकना, दोनासुगन्धि ।

दमक० ना० स्त्री० चमक, दहक, झलक, दाह ।

दमकना० अ० क्रि० झलकना, चमकना ।

दमड़ा० ना० पु० सम्पत्ति दौलत ।

दमड़ी० ना० स्त्री० पैसे का आठवां भाग ।

दमदमाना० स० क्रि० हिलाना ।

दमन० ना० पु० सूरमा, नागदौन, पुष्प विशेष, अधीनता, नाशन, दमयन्ती ।

दमनीय० गु० दमनके योग्य, दमनकारक, तोड़नेहारा, रामायणे यथा, कुंवरिमनोहरि विजय बड़ि कीरति अति कमनीय, पावनहारविरञ्चि जनु रच्यो न धनुदमनीय ।

दमयन्ती० ना० स्त्री० राजा नलकी भार्य्या।

दमाना० स० क्रि० चचकाना, निझराना, खुदवाना।

दमामा० ना० पु० डंका, धौंसा।

दम्पति० } ना० पु० स्त्री
दम्पती० } पुरुष।

दम्भ० ना० पु० अहंकार, घमण्ड, पाखण्ड, छल, बनाव।

दम्भी० गु० अहंकारी, घमण्डी, पाखण्डी छली।

दम्य० गु० शास्य, ना० पु० खेला।

दया० ना० स्त्री० कृपा, करुणा, दान वितरण।

दयायुक्त० }
दयालु० }
दयावन्त० } गु० कृपावन्त, मिलन सार, दाता, मायावन्त मेहरबान।
दयावान्० }
दयाशील० }

दर० ना० पु० मोल, भाव, शंख, छेद, डर, पीड़ा।

दरकना० अ० क्रि० चिरजाना, फटना।

दरका० ना० पु० दारर, फटाव।

दरकाना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।

दरकी० गु० स्त्री० फटी।

दरदर० ना० पु० ईंगुर सिन्दूर।

दरदरा० गु० अधकूटा, अधपिसा।

दरश० } ना० पु० दर्श, देखना।
दरस० }

दरही० ना० स्त्री० मछली विशेष।

दरांती० ना० स्त्री० हंसिया, कटनी।

दरार० } ना० पु० दरका
दरारा० } चीर।

Digitized by Google

दरि० ना० स्त्री० मोल, भाव।

दरिद्र० ना० पु० } दीनता,
दरिद्रता० स्त्री० } कङ्गालता, निर्धनता।

दरिद्री० गु० दीन, कङ्गाल।

दरी० ना० स्त्री० खोह, गुफा, बिछौना विशेष।

दरीभृत्० ना० पु० पर्व्वत, पहाड़।

दरीन० ना० स्त्री दरीका बहु वचन।

दर्दुर० ना० पु० मेंढक।

दर्प० ना० पु० अहंकार, अभिमान, मान।

दर्पक० ना० पु० कामदेव।

दर्पण० ना० पु० आदर्श, मुकुर, शीशा।

दर्पणी० ना० स्त्री० दर्पण।

दर्पणीय० गु० सुन्दर दिखनोट सुथरा, अच्छा।

दर्पणोदर० ना० पु० चौरस दर्पण का पेट।

दर्पी० गु० अभिमानी, मानी।

दर्भ० ना० पु० कुश, घास।

दर्र० ना० पु० दरारा।

दर्राना० अ० क्रि० निडर, आगे बढ़ना, बेधड़क आगे चलेआना।

दर्विका० ना० स्त्री० गोभी।

दर्वी० ना० स्त्री० कर्छी।

दर्वीकार० ना० पु० सांप।

दर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा।

दर्शक० गु० दिखनौट, देखने वाला।

दर्शकता० ना० स्त्री, दर्शन, दिखावट।

दर्शन० ना० पु० दृष्टि, भेंट।

दर्शनधारी० गु० सुन्दर।

Digitized by Google

दर्शनी॰ ना॰ स्त्री॰ हुण्डी विशेष जिसका देखतेही रुपया दिया जावे।

दर्शी॰ गु॰ देखने वाला।

दल॰ ना॰ पु॰ पत्ता, बड़ीफौज, ढेर, मोरपंख।

दलक॰ ना॰ स्त्री॰ झलक।

दलकना॰ अ॰ क्रि॰ झलकना।

दलदल॰ ना॰ पु॰ घस्साव, पांक, कीचड़।

दलदलाना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना, थरथराना।

दलदलाहट॰ ना॰ स्त्री॰ थरथराहट, कम्प।

दलन॰ ना॰ पु॰ नाशन, टोटूक करने का काम विशेष।

दलना॰ स॰ क्रि॰ टोटूककरना।

दलबादल॰ ना॰ पु॰ मेघोंका समूह।

दलवाना॰ स॰ क्रि॰ टोटूक कराना।

दलवैया॰ ना॰ पु॰ दलनेहारा।

दलाना॰ स॰ क्रि॰ दलवाना।

दलिद्र॰ ना॰ पु॰ } दरिद्र।
दलिद्रता॰ स्त्री॰ }

दलिद्री॰ गु॰ दरिद्री।

दलित॰ गु॰ टोटूक कियागया, आधा।

दलिया॰ ना॰ पु॰ अधकुट्टा, अधपिसा।

दलिहन॰ ना॰ पु॰ जो अन्न दाल के काम आता यथा चरद आदि।

दली॰ गु॰ टोटूक कीगई, ना॰ पु॰ वृक्ष।

दलैंता॰ ना॰ पु॰ } छोटी
दलैंती॰ ना॰ स्त्री॰ } चक्की।

दव॰ ना॰ पु॰ वनकी आग, वाता, दावा।

Digitized by Google

दवागि०, दवाग्नि०, दवानल०, दवारि० ना० पु० वनकी आगि।

दश० गु० दस, १०।

दशकण्ठ० ना० पु० रावण।

दशगात्र० ना० पु० मृतकका कर्म विशेष।

दशदिग्पाल० ना० पु० दश-दिशापाल अर्थात् इन्द्र, १ अग्नि, २ यम, ३ नैर्ऋति ४ वरुण, ५ वायु, ६ कुबेर, ७ ईशान, ८ ब्रह्मा ९ अनन्त १०।

दशदिशा०, दशदिशि० ना० स्त्री० दश ओर अर्थात् पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अधऊर्ध्व, १०।

दशन० ना० पु० दांत।

दशम० गु० दसवां।

दशमांश० ना० पु० दसवां भाग।

दशमी० स्त्री० दशवींतिथि।

दशरथ० ना० पु० श्री रामचन्द्र जीके पिता।

दशहरा० ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विनि शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि।

दशा० ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, गति।

दशांश० ना० पु० दशवां भाग, $\frac{1}{10}$

दशांगुल० ना० पु० फलविशेष अर्थात् खरबूजा।

दस० गु० दश, १०।

दसन० ना० पु० दशन, दांत।

दसम० गु० दशम, दसवां।

दसरथ० ना० पु० दशरथ।

दसहरा० ना० पु० दसहरा।

Digitized by Google

दसी॰ ना॰ स्त्री॰ सूत, दशा, गाड़ी की फड़।

दसीला॰ गु॰ सुखकी दशा में रहने वारा।

दसोखा॰ ना॰ पु॰ पंख का झाड़ना।

दसोद्वार॰ ना॰ पु॰ शरीरके दशद्वारअर्थात्आंख,कान,नाक,मुख,लिंग,गुदा,आदि,परन्तु आदिरहित केवलनवद्वार ठीक हैं।

दसौंधी॰ ना॰ पु॰ भाट,बरदैत।

दस्यु॰ ना॰ पु॰ बैर, चोर।

दस्युवृत्ति॰ ना॰स्त्री॰ चोरी।

दह॰ ना॰ पु॰ महराव।

दहक॰ ना॰स्त्री॰दाह,चमक।

दहकना॰ अ॰ क्रि॰ जलना, पछिताना, सत्या नाश होना।

दहकाना॰ स॰क्रि॰ जलाना, बिगाड़ना॰, पश्चात्ताप कराना, गर्माना।

दहन॰ ना॰ पु॰ अग्नि।

दहनं॰
दहना॰
दहनो॰
} अ॰ क्रि॰ जलना, बरना।

दहलना॰ अ॰ क्रि॰ दहना, कांपना।

दहलाना॰ स॰ क्रि॰ दबाना, कम्पाना।

दहसेरा॰ ना॰ पु॰ दस सेर का तोल।

दहा॰ गु॰ जल गया वा जला। झुवा।

दहाड़ना॰ अ॰ क्रि॰ गर्जना, यथा शेरका शब्द।

दहाना॰ स॰ क्रि॰ जलाना।

दहिना॰ गु॰ दक्षिण, सीधा, सहायक।

दही० ना० पु० गोरस, दधि, गु० जलगई।

दहेंड़ी० ना० स्त्री० दही की हांडी।

दहेड़० ना० पु० पक्षीविशेष।

दहेल० ना० पु० पक्षीविशेष।

दह्यो० ना० पु० दही, स० क्रि० जलाया।

दक्ष० ना० पु० निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र जिसको ब्रह्माने दक्षिणाङ्गुष्ठ से उत्पन्न किया था, स्मृति विशेष।

दक्षन० ना० पु० दक्षका बहुवचन भाषामें प्रचलित है यथा देव देवन, और लोक लोकन आदि।

दक्षसुत० ना० पु० प्रचेता।

दक्षसुता० ना० स्त्री० दक्ष की कन्या विशेष, सती।

दक्षिण० गु० खरा, उदित, सूर्य्यका वामाभाग, दक्षिना, दखिन।

दक्षिणअक्षांश० ना० पु० रेखाभूमिके दक्षिणकेन्द्र तक जो माप है।

दक्षिणकेन्द्र० ना० पु० जिसके चारोंओर हिम समुद्र है वा जिसको हिन्दू शास्त्रज्ञ बड़वानल कहते हैं।

दक्षिणखण्ड० ना० पु० विन्ध्याचल के दक्षिण का देश विशेष।

दक्षिणा० ना० स्त्री० कर्मकरवाने के निमित्त ब्राह्मण को दान देना, कार्य्यकावेतन।

दक्षिणाग्नि० ना० पु० अग्नि विशेष।

दक्षिणायन० ना० पु० कर्क संक्रान्ति से धनुः संक्रान्ति तक का काल।

दक्षिणीय० गु० दक्षिणदेश के मनुष्यादि।

Digitized by Google

दा० अव्य० पदान्त में दाताका अर्थ सूचक यथा सुखदा अर्थात् सुखदाता ।

दाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी ।

दाऊ० ना० पु० बड़ा चचा, श्रीबलदेवजी का एक नाम ।

दांड़० ना० पु० दण्ड, चम्पू ।

दांड़ा० ना० पु० रीति, धूरा सिवाना ।

दांड़ाभेंड़ा० ना० पु० सिवाना, छोर, धूरा ।

दांड़ी० ना० पु० नाविक, नावचलाने हारा, ना० स्त्री० दण्डीतुलाआदिकी।

दांत० ना० पु० दन्त, दशन ।

दांतन० ना० पु० दन्त धावन, काष्ठ, दतुन ।

दांतपीसना० अ० क्रि० किच किचाना ।

दांताकिलकिल० ना० स्त्री० झगड़ा बखेड़ा ।

दांती० ना० स्त्री० आराकेदांत ।

दांव० ना० पु० घात, अवसर, छोड़, बारी ।

दाख० ना० पु० अंगूर ।

दाग़० ना० पु० चिन्ह यह शब्द फ़ारसी का है ।

दाग़ना० स० क्रि० चिह्नकरना, छोड़ना, यह शब्द यामिनी भाषाका है ।

दाडिम० ना० पु० अनार ।

दाढ़ी० ना० स्त्री० ठोढ़ीपरके बाल ।

दातन० ना० पु० दतुन ।

दातव्य० गु० देने के योग्य, दातापन ।

दातव्यता० ना० स्त्री० दातापन, देनहारी ।

दाता० गु० पु० धर्मात्मा, देने हारा, दयालु ।

Digitized by Google

दातार॰ गु॰ दाता,

दात॰ना॰ पु॰ दरांतीविशेष।

दाद॰ना॰ पु॰ रोग विशेष, दद्रु।

दादमर्दन॰ना॰ पु॰ दद्रुमर्दन, औषधि विशेष।

दादा॰ना॰पु॰ पिताकापिता, बड़ाभाई।

दादी॰ना॰ स्त्री॰ पिता की माता।

दादु॰ना॰ पु॰ दादरोगविशेष दद्रु।

दादुर॰ना॰ पु॰ मेंढ़क।

दादू॰ना॰ पु॰ महापुरुष विशेष, जिसने अपना पन्थ चलाया जो जाति का पिंजना था।

दाधना॰स॰ क्रि॰ दग्धना।

दान॰ना॰ पु॰ पुण्यार्थ धन का त्याग, भूर, ख़ैरात।

दानपत्र॰ना॰ पु॰ पुण्यार्थ धनादि का दानपत्र, माफ़ी नामा।

दानव॰ना॰ पु॰ दैत्य, असुर।

दानवारि॰ना॰ पु॰ देवता, श्रीविष्णुजी।

दाना॰ना॰ पु॰ अन्नादि के खाने का अन्न।

दानी॰गु॰ दाता, सखी।

दाप॰ना॰ पु॰ क्रोध, अभिमान।

दापक॰गु॰क्रोधी, अभिमानी।

दाबना॰स॰ क्रि॰ दबाना।

दाम॰ना॰ पु॰ रुपया पैसा, ना॰ स्त्री॰ माला, रस्सी, गु॰ पैसे का चौबीसवां भाग, मोल।

दामवती॰ना॰ स्त्री॰माला।

दामासाही॰ना॰ स्त्री॰ यथार्थ भागकी कर्त्तव्यता।

दामिनी॰ना॰ स्त्री॰ बिजली, कौंधा।

Digitized by Google

दामी० ना० स्त्री० यथार्थ विहारी ।

दामोदर० ना० पु० श्रीकृष्ण चन्द्र जीका एक नाम, वर्द्धमानदेशका एकनद, गु० जिसके पेटतक मालाहो ।

दाम्भिक० गु० दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी ।

दाय० ना० पु० पैतृकधन ।

दायक० ना० पु० देनेहारा ।

दायजा० ना० पु० व्याह का दान, यौतुक ।

दाया० ना० स्त्री० दावा, कृपा, मया, दया ।

दार० ना० स्त्री० दारा, काष्ट, दारु ।

दारचीनी० ना० स्त्री० काष्ट विशेष ।

दारा० ना० स्त्री० स्त्री, पत्नी, जोरू ।

दारिका० ना० स्त्री० लड़की, लकड़ी ।

दारिद० ना० पु० दरिद्र ।

दारिदी०
दारिद्री० } गु० दरिद्री ।

दारिद्र्य० ना० पु० दरिद्रता ।

दारी० ना० स्त्री० लौंडी जो लूटकरके लाई है ।

दारु० ना० पु० काष्ठ, वृक्ष विशेष ।

दारुक० ना० पु० श्रीकृष्णजी का रथवान् ।

दारुगत० गु० काष्ठान्तर, काठके भीतर ।

दारुजचित्र० ना० पु० काठ की पुतली ।

दारुण० गु० भयानक, असह्य, कठिन ना० पु० चीता औषधि ।

दारुनारि० ना० स्त्री० काठ की पुतली ।

दारुफल० ना० पु० चिलगोज़ा ।

Digitized by Google

दारुमय॰ गु॰ जो काष्ठ से निर्मित।

दारुहरिद्रा॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी।

दारू॰ ना॰ स्त्री॰ औषधि, मद, यह शब्द यामिनी भाषा का है।

दारुड़ा॰ ना॰ पु॰ } मदिरा,
दारुड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } मद।

दारौ॰ ना॰ पु॰ दाड़िम, अनार, विहारीलालसतशतिकायां, सुभरभस्यो तुवगुणगणन पचयेकपट कुचाल, क्यों धौंदारौ लौंहियोदरकत नहिन-न्दलाल।

दार्ढ्य॰ ना॰ पु॰ दृढ़ता।

दार्वा॰ }
दार्व्य॰ } ना॰ स्त्री॰ रसोत।

दार्वी॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी।

दाल॰ ना॰ स्त्री॰ चनेआदि अन्न के दो खण्ड।

दालिद्र॰ ना॰ पु॰ दरिद्र।

दालिद्री॰ गु॰ दरिद्री।

दाव॰ ना॰ पु॰ दांव, घात, पेंच, छोड़, कुल्हाड़ी विशेष, वन।

दावन॰ ना॰ पु॰ गाहन, चलावन, कुचलन।

दावना॰ स॰ क्रि॰ दाबना।

दावरि॰ ना॰ स्त्री॰ रस्सी।

दावा॰ ना॰ पु॰ दाईकास्वामी। दवा।

दावाग्नि॰ } ना॰ पु॰ बनमें
दावानल॰ } उपजके जोअग्नि बनको जलावे, बनकी अग्नि।

दाशरथि॰ ना॰ पु॰ श्री राम, चन्द्रादि।

दास॰ ना॰ पु॰ भृत्य, सेवक, नौकर।

Digitized by Google

दामी० ना० स्त्री० यथार्थ विहारी।

दामोदर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जीका एक नाम, वर्द्धमानदेशका एकनद, गु० जिसके पेटतक मालाहो।

दाम्भिक० गु० दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी।

दाय० ना० पु० पैतृकधन।

दायक० ना० पु० देनेहारा।

दायजा० ना० पु० व्याह का दान, यौतुक।

दाया० ना० स्त्री० दावा, कृपा, मया, दया।

दार० ना० स्त्री० दारा, काष्ट, दारु।

दारचीनी० ना० स्त्री० काष्ट विशेष।

दारा० ना० स्त्री० स्त्री, पत्नी, जोरू।

दारिका० ना० स्त्री० लड़की, लकड़ी।

दारिद० ना० पु० दरिद्र।

दारिदी० }
दारिद्री० } गु० दरिद्री।

दारिद्र० ना० पु० दरिद्रता।

दारी० ना० स्त्री० लौंडी जो लूटकरके लाई है।

दारु० ना० पु० काष्ठ, वृक्ष विशेष।

दारुक० ना० पु० श्रीकृष्णजी का रथवान्।

दारुगत० गु० काष्ठान्तर, काठके भीतर।

दारुजचित्र० ना० पु० काठ की पुतली।

दारुण० गु० भयानक, असह्य, कठिन ना० पु० चीता औषधि।

दारुनारि० ना० स्त्री० काठ की पुतली।

दारुफल० ना० पु० चिलगोजा।

Digitized by Google

दारुमय० गु० जो काष्ठ से निर्मित।

दारुहरिद्रा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दारू० ना० स्त्री० औषधि, मद, यह शब्द यामिनी भाषा का है।

दारुडा० ना० पु० } मदिरा,
दारूड़ी० ना० स्त्री० } मद।

दारौ० ना० पु० दाड़िम, अनार, विहारीलालसतसतिकायां, सुभरभर्‌यो तुवगुणगणन पचयेकपट कुचाल, क्यों धोंदारौ लौंहियोदरकत नहिन-न्दलाल।

दार्ढ्य० ना० पु० दृढ़ता।

दार्वी० } ना० स्त्री० रसोत।
दार्व्य० }

दार्वी० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दाल० ना० स्त्री० चनेआदि अन्न के दो खण्ड।

दालिद्र० ना० पु० दरिद्र।

दालिद्री० गु० दरिद्री।

दाव० ना० पु० दांव, घात, पेंच, छोड़, कुल्हाड़ी विशेष, वन।

दावन० ना० पु० गाहन, चलावन, कुचलन।

दावना० स० क्रि० दाबना।

दावरि० ना० स्त्री० रस्सी।

दावा० ना० पु० दाईकास्वामी। दवा।

दावाग्नि० } ना० पु० बनमें
दावानल० } उपजके जोअग्नि बनको जलावे, बनकी अग्नि।

दाशरथि० ना० पु० श्री राम, चन्द्रादि।

दास० ना० पु० भृत्य, सेवक, नौकर।

Digitized by Google

दासता० ना० स्त्री० लौंडीपना, सेवकाई ।

दासा० ना० पु० हंसुआ, कड़ीके नीचे का काष्ठ जो भीत पर रखते हैं ।

दासी० ना० स्त्री० चेली, लौंडी, सेवकिन् ।

दास्य० ना० पु० दासता ।

दाह० ना० स्त्री० जलन, दहक ।

दाहक० गु० जलाने वाला, ना० पु० अग्नि, ।

दाहना० स० क्रि० जलाना ।

दाहिना गु० दक्षिण, सीधा, सहायक ।

दाक्षायणी० ना० स्त्री० देवी विशेष ।

दाक्षिक० ना० पु० सिंघाड़ा ।

दिक० ना० पु० दिग् दिशा, ओर, तरफ़ ।

दिकपाल ना० पु० दिग्पाल, दिशा का मालिक ।

दिखलाना० स० क्रि० दिखाना ।

दिखाई० ना० स्त्री० सुझाई, लखाई ।

दिखाऊ० गु० सुन्दर, दिख-नौट, सजीला ।

दिखाना० स० क्रि० सुझाना, लखाना, बताना ।

दिखाव० ना० पु० भड़काव, टीमटाम, छटा ।

दिग्० ना० स्त्री० दिशा, ओर, तरफ़ ।

दिग्वान्० } ना० पु० रखवा-
दिग्वार० } रा, पहरू ।

दिग्शूल० ना० पु० दिशाशूल, किसी दिशि में जाने के लिये बुरादिन, यथा सोमवार शनिश्वर पूर्व को, वृहस्पति दक्षिण को शुक्र रविवार पश्चिम को मंगलबुधउत्तरको ।

दिगम्बर० गु० वस्त्र हीन, नग्न, परम हंस ।

Digitized by Google

दिगीश॰ ना॰ पु॰ इन्द्रादि।

दिग्गज॰ ना॰ पु॰ एक दिशा का रक्षक हाथी।

दिग्गी॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ा पोखरा।

दिग्पाल॰ ना॰ पु॰ इन्द्रादि दश १०।

दिग्भाग॰ ना॰ पु॰ दिशाका भाग, देश।

दिग्विजय॰ ना॰ स्त्री॰ सब देशों का जीतना।

दिग्विजयी॰ ना॰ पु॰ जो सब दिशाओं को जीते।

दिग्विभाग॰ ना॰ पु॰ दिग्भाग, देश।

दिठौना॰ ना॰ पु॰ चशमा, उपनेत्र, ऐनक।

दिण्ड॰ ना॰ पु॰ नृत्य विशेष।

दिति॰ ना॰ स्त्री॰ दैत्यमाता, कश्यप की स्त्री।

दितिसुत॰ ना॰ पु॰ असुर, दैत्य हिरण्याक्षादि।

दिन॰ ना॰ पु॰ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का काल, रोज़।

दिनकर॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

दिनदानि॰ गु॰ बड़ा दाता, दीन प्रति पालक।

दिनपति॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

दिनप्रति॰ अव्य॰ प्रतिवासर, हररोज़।

दिनमणि॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

दिनमान॰ ना॰ पु॰ दिनका परिमाण।

दिनाई॰ ना॰ स्त्री॰ दादु, संझ्या।

दिनामार॰ ना॰ पु॰ डेन्मार्क देश के लोग।

दिनी॰ गु॰ बहुत दिनका, पुराना।

दिनेश॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

दिनैला। ० गु० दिनी, पुराना।

दिया। ० ना० पु० दीपक, चिराग।

दियासलाई। ० ना० स्त्री० दिया जलाने के लिये वस्तु विशेष।

दिलवाना। ० स० क्रि० देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दिलाना।

दिलवाली। ० ना० पु० दिल्ली के वासी।

दिलवैया। ० ना० पु० दिलवाने वारा।

दिलाना। ० स० क्रि० दिलवाना।

दिलीप। ० ना० पु० राजा विशेष।

दिल्ली। ० ना० पु० नगर विशेष जो भूतकाल में भरतखण्ड की राजधानी था।

दिव:। ० ना० पु० स्वर्ग, आकाश।

दिवस्पति। ० ना० पु० स्वर्ग का राजा, इन्द्र।

दिवस। ० ना० पु० वासर, दिन।

दिवह। ० ना० पु० मुख्यपवन।

दिवा। ० ना० पु० दिन।

दिवाकर। ० ना० पु० सूर्य्य।

दिवान्ध। ० ना० पु० जो दिन में नहीं देखसकता यथा उलूक, चमगीदड़ आदि।

दिवाला। ० ना० पु० ऋणभरने में असमर्थ।

दिवारी। ० } दिवाली। ० } ना० स्त्री० कार्तिक मास की अमावस का त्यौहार, दीपमालिका।

दिविषद। ० ना० पु० देवता।

दिवेश। ० ना० पु० इन्द्र।

दिवौकस। ० ना० पु० देवता।

दिव्य। ० गु० शपथ, स्वच्छ, उज्ज्वल ना० स्त्री० लौंग।

दिव्यतना। ० ना० स्त्री० अप्सरा।

दिव्यदृष्टि० ना० स्त्री० उज्ज्वल दृष्टि, अलौकिक ज्ञान।

दिव्यवसन० } ना० पु० उज्ज्वल वस्त्र, स्वच्छ कपड़े, साफ़ पोशाक।
दिव्यवस्त्र० }

दिव्यस्थान० ना० पु० उज्ज्वल मकान, पवित्र स्थान।

दिव्यज्ञान० ना० पु० उज्ज्वल ज्ञान, अलौकिक ज्ञान।

दिश० } ना० स्त्री० पूर्वादि दश, ओर, तरफ़।
दिशा० }

दिशाशूल० ना० पु० दिग्शूल।

दिशि० ना० स्त्री० दिशा।

दिशिनाथ० ना० पु० दिशपाल।

दिशिप० } ना० पु० दिग्पाल।
दिशिपाल० }

दिष्ट० ना० पु० भाग्य, प्रारब्ध।

दिसावर० ना० पु० देसावर।

दिहरा० ना० पु० देवालय।

दिहली० ना० स्त्री० ड्योढ़ी, चौखट, देहली।

दीखना० अ० क्रि० दिखाई देना।

दीठा० गु० देखने हारा।

दीठ० } ना० स्त्री० दृष्टि, दर्शन।
दीठि० }

दीधिति० ना० स्त्री० किरण।

दीन० गु० कङ्गाल, आधीन, दुखी।

दीनता० } ना० स्त्री० दरिद्रता, आधीनता, ग़रीबी।
दीनताई० }

दीनदयालु० गु० दीनप्रतिपालक, ग़रीबपरवर, दीनोंपर दयाकरनेहारा।

दीनपाल० } गु० दीनदयालु, दीनोंकापालने हारा।
दीनप्रतिपालक० }
दीनबन्धु० }

दीना० स० क्रि० देना, दीनमया।

दीनानाथ॰ गु॰ दीनपाल, दीनदयालु ।

दीप॰ ना॰ पु॰ दिया, चिराग दीप ।

दीपक॰ ना॰ पु॰ दीप, दिया रागविशेष, अजवायन् ।

दीपदान॰ ना॰ पु॰ दिया जलाना ।

दीपनी॰ ना॰ स्त्री॰ बटपत्ती ।

दीपनीया॰ } ना॰ स्त्री॰ अ-
दीप्य॰ } जवायन् ।

दीपमाला॰ } ना॰ स्त्री॰
दीपमालिका॰ } दिवाली ।

दीपसुत॰ ना॰ पु॰ काजल ।

दीपि॰ स॰ क्रि॰ दीपदेकर ।

दीपिका॰ ना॰ स्त्री॰ दीपक का प्रकाश ।

दीपित॰ गु॰ दीपदियागया ।

दीप्त॰ गु॰ प्रज्वलित, प्रकाशित ।

दीप्ति॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, प्रकाश ।

दीर्घ॰ गु॰ लम्बा, गुरु, द्विमात्रिक अक्षर ।

दीर्घक॰ ना॰ पु॰ श्वेतजीरा, सफेदजीरा ।

दीर्घकीलक॰ ना॰ पु॰ अंकोल ।

दीर्घजङ्घ॰ ना॰ पु॰ ऊंट ।

दीर्घजिह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ राजा विरोचन की कन्या ।

दीर्घदण्ड॰ ना॰ पु॰ अरण्ड, एरण्ड, रण्ड ।

दीर्घदर्शी॰ गु॰ अग्रशोची, दूरअन्देश ।

दीर्घपत्रक॰ ना॰ पु॰ लहसुन, पुनर्नवा ।

दीर्घपत्रा॰ ना॰ स्त्री॰ चिरपोंठा ।

दीर्घपुष्पक॰ ना॰ पु॰ मदार, आंक ।

Digitized by Google

दीर्घपृष्ठ० ना० पु० सांप।

दीर्घमूल० ना० पु० जवासा, शालपर्णी।

दीर्घमूलक० ना० पु० विधारा।

दीर्घसूची० ना० पु० जो विलम्बसे कामको करे।

दीवट० ना० स्त्री० दीपकरखने का आधार।

दीवली० ना० स्त्री० छोटादिया।

दीवा० ना० पु० दीपक,दिया।

दीसना० स० क्रि० देखना।

दीसा० स० क्रि० भू, देखा, देखता।

दीह० ना० पु० बड़ा, रामचन्द्रिकायां यथा, दीह दीह दिग्गजनके केशव मनोकुमार, दीन्हेराजा दशरथहि दिग्पालन उपहार।

दीक्षा० ना० स्त्री० मन्त्र का ग्रहण, उपदेश।

दीक्षित० गु० दीक्षाकियागया, ना० पु० ब्राह्मणजातिविशेष।

दु० गु० दो २।

दुः० अव्य० शब्दकीआदिमें निषेधवानिंदाका सूचक।

दुःकर्णी० ना० स्त्री० किरवाली।

दुःख० ना० पु० पीड़ा, क्लेश, कष्ट, व्यथा।

दुःखड़ा० ना० पु० आपदा, दुर्गति।

दुःखदाई० गु० दुःखदाता।

दुःखदाता० गु० दुःख देनेहारा।

दुःखना० अ० क्रि० पीड़ाहोना।

दुःखाना० स० क्रि० दुःखदेना।

दुःखित०, दुःखिया०, दुःखियारा०, दुःखियारी०, दुःखी० — गु० पीड़ित, क्लेशित, अभागी, कङ्गाल।

दुःखशील० गु० जिसका स्वभाव दुष्ट हो।

दुःप्रधर्षिणी० ना० स्त्री० खेतकट्याई।

दुःसमय० ना० पु० विपत्तिकाल।

दुःस्पर्शा० ना० स्त्री० जवासा।

दुकर० ना० पु० दोनोंहाथ।

दुकान० ना० पु० दोनोंकान, हाट।

दुकाल० ना० पु० विपत्तिकाल, दुर्भिक्ष।

दुकूल० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष, दोनोंतट।

दुख० ना० पु० दुःख।

दुखद०, दुखदा०, दुखदाई०, दुखदाता० } गु० दुःखदाई, कष्टदेनेवाला।

दुखत्रय० ना० पु० तीन दुख अर्थात् दैविक, दैहिक भौतिक, अथवा, कफ, पित्त, और वात।

दुखारी०, दुखित०, दुखिया०, दुखियारा०, दुखियारी०, दुखी० } गु० दुःखिया, पीड़ित।

दुखेन० ना० पु० दुःखसुत, दुःखकरके।

दुगई० ना० स्त्री० चियारी, कँवी, जो छपर में लगाते हैं।

दुगन०, दुगना० } गु० द्विगुण, दोहरा, दूना।

दुग्ध० ना० पु० दूध।

दुग्धिका० ना० स्त्री० दूधिया पौधा।

दुग्धिमी० ना० स्त्री० कडुई-तोंबी।

दुग्धी० ना० स्त्री० दूधियापोधा, सेहुड़।

दुचित० } गु० जिसकामनदो
दुचिता० } ओरलगाहो।

दुचिताई० ना० स्त्री० चिन्ता, दुविधा, भ्रम।

दुचित्ता० गु० दुचित।

दुत० अव्य० दूर।

दुतकार० ना० पु० चरहना, झिड़क।

दुतकारना० स० क्रि० सांस-ना, कुत्तेकोडांटना।

दुतकारी० ना० स्त्री० सांस, ताड़न।

दुताना० स० क्रि० दबाना, डांटना।

दुति० ना० स्त्री० चटक, भड़क, सुन्दरता।

दुतिवन्त० } ना० गु० भड़की-
दुतिवान्० } ला, चमकदार, सुन्दर, सूर्य्य चन्द्रादि यथा हैं, रामचन्द्रिका यां यथा दुतिवन्तनको विपदा अतिकीन्ही, धरणी कह इन्दु वधूगति-दीन्ही।

दुदही० } ना० स्त्री० औषधि
दुद्धी० } पौधा विशेष।

दुधा० ना० स्त्री० दोजगह, दोप्रकार।

दुधार० } गु० दूधदेनेहार,
दुधारा० } दोधारकी।

दुधैल० गु० दूधदेनेहारी।

दुन्दभि० ना० स्त्री० नक्कार:, निशान्, दैत्य विशेष, जिसको बालिने-माराथा।

दुपट्टा० ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र विशेष।

Digitized by Google

दुपद० ना० पु० दोपांववाला अर्थात् मनुष्य।

दुपहरिया० ना० स्त्री० पुष्पविशेष।

दुबधा० ना० स्त्री० सन्देह, अधड।

दुबला० गु० दुर्बल।

दुबलाई० } ना० स्त्री० दुर्बलता।
दुबलापा० }

दुबिधा० ना० स्त्री० सन्देह, छपांच, शक।

दुबिधि० ना० स्त्री० दोतरह, दोप्रकार।

दुमुख० ना० पु० राक्षसविशेष, दोमुखवाला।

दुभाव० ना० पु० दुबिधा।

दुभाषिया० } गु० दोभाषाओं काजानने-
दुभाषी० } हारा।

दुर० अव्य० शब्द के प्रथम में संयोगिकअव्यय जिसका अर्थ कु, कठिन, ना० स्त्री० कानका भूषणजो लड़के पहिनते हैं।

दुरतिक्रम० गु० कठिन, मुश्किल।

दुरद० ना० पु० हाथी।

दुरध्वा० ना० स्त्री० कुमार्ग, बुरीराह।

दुरना० अ० क्रि० छुपना, लुकना।

दुरदृष्ट० ना० पु० मन्दभाग्य।

दुरन्त० गु० अशान्त, कठिन, अन्तहीन।

दुराचार० गु० जिसका व्यवहारनिन्दित है, ना० पु० निन्दित व्यवहार वा कर्म।

दुराचारी० गु० जिसका व्यवहारनिन्दित है।

दुरात्मा० गु० पापी, दुष्ट।

Digitized by Google

दुराधर्ष० गु० अडर, अभय, अशङ्क ।

दुराना० स० क्रि० छुपाना, लुकाना ।

दुराराध्य० गु० कष्टसे सेवनेके योग्य ।

दुरारोह० ना० पु० ताड़वृक्ष ।

दुरालभा० } ना० स्त्री०
दुरालम्भा० } जवासा ।

दुराव० ना० पु० छुपाव, छुल ।

दुराशा० ना० स्त्री० कुत्सित आशा, दुष्टतृष्णा ।

दुरित० ना० पु० पाप, दोष ।

दुरी० ना० स्त्री० खेलमें दो पड़ना वा टूआ ।

दुरुखा० गु० जिसकी दोनों ओर एक सा होवे, यह शब्द फ़ारसी का है ।

दुरेफ० ना० पु० भौंरा ।

दुर्ग० ना० पु० गढ़, घाट, क़िलअ, अगम ।

दुर्गति० ना० स्त्री० कुमति, बुरी अवस्था, नरक, दरिद्रता ।

दुर्गन्ध० ना० स्त्री० } दुर्ग-
दुर्गन्धि० ना० स्त्री० } न्धि, बोय, कुवास ।

दुर्गन्धा० ना० स्त्री० पियाज़, गु० कुवासित ।

दुर्गम० गु० औघट, गम्भीर, अगम्य, कठिन ।

दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरता, औघटता ।

दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती बिशेष ।

दुर्गामी० गु० कुगामी, कुमार्गी, बद चलन् ।

दुर्घट० गु० जो कष्ट से हो सके कुघाट, औघट ।

दुर्जन० ना० पु० शत्रु, गु० दुष्ट, अपकारी ।

Digitized by Google

दुर्जनता० } नाο स्त्रीο शठता, द्रोह, दुष्टता।
दुर्जनताई० }

दुर्जय०गुο बलवान् शत्रु, जो पराभवनहोसके।

दुर्दशा०नाο स्त्रीο दुर्गति, विपत्ति।

दुर्नाम०नाο पुο बदनाम, अपयश।

दुर्नामी०गुο बदनाम, अपयशी, अपकीर्त्ती।

दुर्नाद०नाο पुο राक्षसविशेष, कुत्सितनाद।

दुर्नीति०नाο स्त्रीο कुचाल, अनीति, अन्याय।

दुर्बल० गुο दुर्बल, निर्बल, असमर्थ।

दुर्बलता०नाο स्त्रीοनिर्बलता, असामर्थ्य।

दुर्भगा० गुο अभागिन् स्त्री, जिसका स्वामी प्यार नहीं करता है।

दुर्भाग्य० गु० प्रारब्धहीन, अभागी।

दुर्भाव० नाοपुο बुरास्वभाव।

दुर्भिक्ष० नाο पुο अकाल, काल, कुसमय।

दुर्मति० ना० स्त्रीο कुबुद्धि मूर्खता।

दुर्मद० गुο मस्त, मदगलित, मत्त, सिड़ी।

दुर्मनी०नाο स्त्रीοदूब घास।

दुर्मुख० नाο पुο नाग विशेष बानरों का एक राजा, गुο कठोर भाषी।

दुर्मूल्य० गुο महंगा।

दुर्योग० नाο पुο बहुतेरे बाधकों का समूह,कुसंगति।

दुर्योधन० नाο पुο राजा, कौरवाधीश।

दुर्लभ०गु० जो दुःख से मिले, अनोखा।

Digitized by Google

दुर्लक्षण॰ ना॰ पु॰ अशुभ चिन्ह।

दुर्वचन॰ ना॰ पु॰ बुरीबात, गाली।

दुर्वर्ण॰ ना॰ पु॰ बुरारूप, कुवर्ण, चांदी।

दुर्वर्णता॰ ना॰ स्त्री॰ कुरूपता, चांदी।

दुर्वाक्य॰ } ना॰ पु॰ बुरीबात,
दुर्वाच्य॰ } गाली।

दुर्वाद॰ ना॰ पु॰ कुत्सितवार्ता, बुरी बातें।

दुर्वासा॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष।

दुर्बुद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ मूर्खता, कुबुद्धि, नादानी।

दुर्बुद्धी॰ गु॰ नादान, कुबुद्धि, मूर्ख।

दुलकी॰ ना॰ स्त्री॰ कूकरचाल, घोड़े की एक प्रकारकी चाल विशेष।

दुलड़ा॰ ना॰ पु॰ } दोलड़ा,
दुलड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } दुगुन।

दुलत्ती॰ ना॰ स्त्री॰ पशुका पिछले दो पैरों का मारना।

दुलहा॰ ना॰ पु॰ वर, बनरा, दूल्हा।

दुलहिन॰ ना॰ स्त्री॰ नईबहू, बधू बनी बनरी।

दुलाई॰ ना॰ स्त्री॰ ओढनेका वस्त्र विशेष।

दुलार॰ ना॰ पु॰ प्यार, स्नेह।

दुलारा॰ ना॰ पु॰ } गु॰ प्यार
दुलारी॰ स्त्री॰ } युत, प्यारा, प्यारी लाडिला, लाडिली।

दुवार॰ ना॰ पु॰ द्वार।

दुविद॰ ना॰ पु॰ बानरविशेष।

दुबे॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मण जाति विशेष।

दुशाला॰ ना॰ पु॰ पाटवस्त्र विशेष।

Digitized by Google

दुष्कर० गु० जोकष्टसेकियाजाय।

दुष्कर्म०
दुष्कृत० } ना० पु० कुकर्म, पाप।

दुष्कर्मी० गु० कुकर्मी, पापी।

दुष्ट० गु० बुरा, उत्पाती, नीच, कठिन।

दुष्टता० ना० स्त्री० नीचता, पाप, बुराई।

दुष्टजन्तु० ना० पु० सर्पादि, मूज़ी जानवर।

दुष्टा० ना० स्त्री० छिनाल, सापिन्, पापिन्।

दुस्तर० गु० जोतरने के योग्य न होवे, कठिन, अगम्य।

दुस्पर्शा० ना० स्त्री० छोटी कटाई।

दुसह०
दुस्सह० } गु० जो सहा न जावे असह्य।

दुहना० स० क्रि० दूधनिकालना, निचोड़ना।

दुहनी० ना० स्त्री० पात्र जिसमें दूध दुहते हैं।

दुहाई० ना० स्त्री० न्यायके लिये पुकार, हायहाय, शपथ, किरिया, क़सम।

दुहाईतिहाई० ना० स्त्री० कई बार दुहाई कर्ना।

दुहाना० स० क्रि० दूध निकलवाना।

दुहार० ना० पु० दूध दोहने वाला।

दुहिता० ना० स्त्री० कन्या, पुत्री।

दुहेला० गु० कठिन, भारी।

दूआ० ना० पु० दोका अङ्क।

दूज० ना० स्त्री० द्वितीया तिथि।

दूजवर० ना० पु० जिसने दो बिवाह किये।

दूजा० गु० दूसरा।

Digitized by Google

दूत० ना० पु० समाचार पहुंचानेहारा, सन्देशिया, हरकारह, शैतान, पैगंबर।

दूतता० ना० स्त्री० चालाकी, तोड़फोड़ और दूतका काम।

दूती० ना० स्त्री० कुटनी।

दूध० ना० पु० दुग्ध, गोरस, चीर।

दूधिया० गु० दूधका, ना० पु० अनेक पौधों का नाम जिनका रस दूधकासा होता है।

दूधी० गु० दूधका, दुधैला, ना० पु० आहार, मांडी, दुधियापोधा।

दूना० गु० द्विगुण, दोहरा।

दूब० ना० स्त्री० दूर्वा, घासविशेष।

दूबर० गु० कठिन, दुर्बल।

दूबिया० ना० स्त्री० तृण की हरियाई।

दूर० ना० स्त्री० अन्तर, बीच, दूर, व्यवधान, अव्य, परे।

दूरगम० ना० पु० गदहा।

दूरतर० गु० बहुतदूर।

दूरदर्शक० ना० पु० दूरबीन्-यन्त्र, गु० दूरकादेखने वाला, अग्रशोची।

दूरदर्शी० ना० पु० विवेकी, दूरअन्देश।

दूरदृग्० ना० पु० गिद्ध।

दूरबीन्० ना० स्त्री० दूर की वस्तुदेखने का यन्त्र, गु० दूर का देखनेहारा, शब्द फारसीका है।

दूरमूल० ना० पु० जवासा।

दूर्वा० ना० स्त्री० तृण विशेष, दूबघास।

दूषक० गु० दोष लगानेहारा, दूषणकर्ता टोकनेवाला, बिठोकनेहारा।

Digitized by Google

दूषण० ना० पु० निशाचर विशेष, दोष।

दूषित० गु० दोषलगाया गया, दोषयुत।

दूष्य० गु० निन्दित, कुत्सित।

दूसरा० गु० दूजा, अन्य।

दृग्० ना० पु० नयन, नेत्र, आंख।

दृगञ्चल० ना० पु० नयनकोर, पलककी चाल।

दृढ़० गु० पोढ़ा, अचल, कड़ा, मज़बूत।

दृढ़ता० ना० स्त्री० } पोढ़ाई,
दृढ़त्व० ना० पु० } पौरुष, पायदारी।

दृढ़ाना० स० क्रि० पोढ़ाकर्ना।

दृश्य० गु० जो देखने केयोग्य है, जो देखाजावे।

दृष्ट० गु० जो देखागया, प्रकट।

दृष्टिकूट० ना० पु० पहेली।

दृष्टान्त० ना० पु० उपमा, उदाहरण, मिसाल।

दृष्टि० ना० स्त्री० दर्शन, नज़र, दीठि, आंख।

दृष्टिगोचर० गु० जो आंख के सामने हो।

दृषद्भेद० ना० पु० पाषाणभेद।

दृषद्गर्भ० ना० पु० पत्थारल।

देआड़ा० ना० पु० दीमक का बनायाहुआ घर।

देखना० स० क्रि० लखना, दृष्टिकरना, विलोकना।

देखवैया० ना० पु० देखनेहारा।

देनलेन० ना० पु० व्यवहार।

देना० स० क्रि० देडालना सौंपना।

देमारना० स० क्रि० पटकना, फेंकदेना।

देय० }
देयमान० } गु० देनेकेयोग्य।

देर० } नाo स्त्रीo विलम्ब, ढील।
देरी० }

देव० नाo पुo देवता, मेघ, देना।

देवऋषि० नाo पुo देवर्षि, नारदमुनि।

देवक० नाo पुo देवकीकापिता, देवता, गुo देनेहारा।

देवकांड़र० नाo पुo घनसुर।

देवकी० नाo स्त्रीo श्री कृष्ण कीमाता।

देवकुसुमा० नाo स्त्रीo लौंग।

देवगरी० नाo स्त्रीo रागिनी विशेष।

देवगृह० नाo पुo देवालय, दोहरा

देवठान० नाo स्त्रीo देवोत्थानी, कार्तिक सुदी एकादशी को ये त्योहार होता है।

देवतरु० नाo पुo कल्पवृक्ष का वृक्ष।

देवता० नाo पुo देव, सुर, फ़रिश्तह।

देवताड़० नाo पुo देवदाली।

देवदत्त० नाo पुo संज्ञाविशेष, गुo जो देवता का दियाहुआ है।

देवदारु० नाo पुo वृक्ष वा काठ विशेष।

देवधुनि० नाo स्त्रीo श्रीगङ्गा जी।

देवनागरी० नाo स्त्रीo हिन्दोके यथार्थ अक्षर।

देवनारि० नाo स्त्रीo देवता कीस्त्री।

देवपूजक० नाo पुo देवताकी पूजा करनेहारा, पौत्तलिक मूर्त्ति पूजक।

देवपूजा० नाo स्त्रीo देवता का पूजन।

Digitized by Google

देवबधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी, राजरानी, सीता जू, रामचन्द्रिकायां, देवबधूजबहीहरिल्यायो क्योंतबहीं तजिताहिन आयो।

देवमुनि० ना० पु० नारदजी।

देवर० ना० पु० पतिकाछोटा भाई।

देवराणी०) ना० स्त्री० देवर
देवरानी०) की स्त्री, देवताओं की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रिकायां देवराजाजिये देवरानी मनोपुत संयुक्त भूलोक में सोहियो।

देवरिपु० ना० पु० दैत्य, निशाचर।

देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि।

देवृ० ना० पु० देवर।

देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा, दोहरा, यथा, तुलसीदेवल देवको लागे लाखकरोरि, कागअभागे हगिभर्यो महिमाभई नथोरि।

देववल्लभा० ना० स्त्री० केसर, ज़ाफ़रान्।

देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत।

देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष।

देवसर० ना० पुं० मानसरोवर।

देवश्रेणी० ना० स्त्री० सुरश्रेणी, देवतों का समूह।

देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी।

देवस्थान० ना० पु० देवालय, देवता का घर।

देवस्व० ना० पु० देवताकाधन

देवा० ना० पु० देवता, देनेहारा।

देवाङ्गना० ना० स्त्री० देवी, देवबामा।

Digitized by Google

देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर।

देवाल० ना० पु० देनेहारा।

देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर।

देवाला० ना० पु० दिवाला।

देवालिया० गु० जिसका दिवाला निकलगया।

देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी।

देवालेई० ना० स्त्री० देनलेन।

देवी० ना० स्त्री० देवताकीस्त्री, भगवती, सुरहरी ओषधि।

देवेन्द्र० ना० पु० देवाधि राज अर्थात् इन्द्र।

देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्तिक शुक्लपक्षकी तिथि जिसमें विष्णु नींदसे उठतेहैं, वा कार्तिकशुक्लएकादशी।

देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर।

देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता।

देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, लोक, रागिनी विशेष, मुल्क, विलायत।

देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह।

देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली।

देशमात्र० गु० सर्वत्र, सबदेश।

देशाचार० ना० पु० देशकी रीति।

देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना।

देशाधि०
देशाधिप०
देशाधिपति० } ना० पु० राजा, बादशाह।

देशाधीश०
देशाध्यक्ष० } ना० पु० देशका रक्षकवा राजा।

देशान्तर० ना० पु० दूसरादेश

देशावर॰ ना॰ पु॰ परदेश, अन्यदेश।

देशी॰ गु॰ जो देशका है।

देह॰ ना॰ स्त्री॰ तन, शरीर।

देहरा॰ ना॰ पु॰ दोहरा, देवालय।

देहली॰ ना॰ स्त्री॰ चौखट, डेयोढ़ी।

देही॰ गु॰ शरीरी, ना॰ पु॰ जीव, प्राण।

दैजा॰ ना॰ पु॰ कंन्यादान, योतुक।

दैत्य॰ ना॰ पु॰ असुर, दितिजात।

दैत्यगुरु॰ | दैत्यपुरोधा॰ | दैत्यपुरोहित॰ | दैत्यपूज्य॰ | दैत्याचार्य्य॰ } ना॰ पु॰ शुक्राचार्य्य।

दैत्यारि॰ ना॰ पु॰ देवता, श्रीविष्णुजी।

दैदीप्य॰ गु॰ प्रकाशित, रोशन।

दैदीप्यमान॰ गु॰ प्रकाशित, चमकीला।

दैन्य॰ ना॰ पु॰ दीनता।

दैय॰ ना॰ पु॰ दैव, ईश्वर।

दैया॰ ना॰ स्त्री॰ माता।

दैव॰ ना॰ पु॰ प्रारब्ध, ब्रह्मा, देवके आधीन।

दैवगति॰ ना॰ स्त्री॰ कर्मकी चाल, ब्रह्माकीगति।

दैवतामणि॰ ना॰ स्त्री॰ महामेदा।

दैवयोग॰ ना॰ पु॰ कर्मप्रभाव, इत्तिफ़ाक़न्।

दैववादी॰ गु॰ आलसी, भाग्याधीन।

दैवज्ञ॰ ना॰ पु॰ गणक, ज्योतिषी।

दैवात्॰ | दैवी॰ } अव्य॰ अकस्मात्, नागहान्।

दैविक० गु० जो देवता करके होवे।

दो० गु० दूसरीसंख्या २।

दोऊ० गु० दोनो।

दोक० ना० पु० बछेड़ा, दोवर्ष का घोड़ा।

दोचर० गु० दुहरा, दूसरा।

दोजीवा० ना० स्त्री० गर्भिणी।

दोभा० ना० पु० द्विजवर।

दोदना० स० क्रि० मुकरना।

दोना० ना० पु० दोना, पत्तों का पात्र, पुष्पविशेष।

दोनाली० ना० स्त्री० बन्दूक दोनालकी।

दोबर० गु० दोबेर, दुहरा।

दोमुहा० ना० पु० दोमुखका सांप।

दोय० गु० दो २।

दोल० ना० पु० डोल।

दोष० ना० पु० निन्दा, अपगुण, चूक, अपराध, काम क्रोधादि, कलङ्क।

दोषक० गु० निन्दक, अपगुणी, पापी।

दोषना० स० क्रि० दोषदेना वा दोषलगाना।

दोषित० } गु० कलङ्कित, पापी
दोषी० } अपयशी, अपराधी।

दोहत्तड़० ना० पु० दोनों हाथों का देमारना।

दोहता० ना० पु० नाती।

दोहती० ना० स्त्री० नातिनी, नातिन्।

दोहद० ना० पु० स्नेह, प्रीति, हित, गर्भ।

दोहन० ना० पु० रसका खींचना।

दोहन० } स० क्रि० दूहना,
दोहना० } गारना।

Digitized by Google

दोहनी० ना० स्त्री० दूहने का पात्र।

दोहरा० गु० द्विगुण, दोलड़।

दोहराव० ना० पु० दोहराने का काम।

दोहा० ना० पु० छन्द विशेष।

दोहाई० ना० स्त्री० दुहाई।

दोहान० ना० पु० दो वर्ष का गौ का बच्चा, खेला।

दौड़० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलने की चाल, धावा।

दौड़धूप० ना० स्त्री० जतन, परिश्रम।

दौड़ना० अ० क्रि० बहुत शीघ्र चलना, धावा।

दौड़ाक० ना० पु० दौड़नेहारा।

दौड़ादौड़ी० ना० स्त्री० वेगा वेगी।

दौड़ाना० स० क्रि० शीघ्र चलाना।

दौड़ाहा० ना० पु० सन्देशिया, अगुआ।

दौहित्र० ना० पु० नाती, नवासा।

दौहित्री० ना० स्त्री० नातिनी, नवासी।

द्युमणि० ना० पु० सूर्य्य।

द्यूत० ना० पु० जूआ, जूप।

द्यौरानी० ना० स्त्री० देवर की स्त्री।

द्रम्म० ना० पु० १६ पणका।

द्रव० गु० बहता हुआ, घुला।

द्रविड़० ना० पु० देशविशेष।

द्रवित० गु० बहता हुआ, कृपायुत, नम्रतामय।

द्रवौ०
द्रवहु० } अ० क्रि० दयाकरो।

द्रव्यजन्यभाव० गु० वस्तु और वस्तु रचित पदार्थ का सम्बन्ध।

द्रष्टा० ना० पु० देखनेवाला।

द्रावक॰गु॰ घुलावन हारा, कृपालु।

द्रावन॰ना॰ पु॰ निर्मली।

द्राविड़॰ना॰ पु॰ कचूर, द्रविड़ देश का ब्राह्मण, वा लोग।

द्राविड़ी॰ना॰ स्त्री॰ छोटीइ-लायची, द्रविड़देश की भाषावावासीवावस्तु।

द्रावी॰ना॰ पु॰ सुहागा।

द्राक्षा॰ना॰स्त्री॰अंगूर, दाख।

द्रुत॰ना॰ पु॰ जल्द, शीघ्र।

द्रुपद॰ना॰ पु॰ राजाविशेष।

द्रुपदी॰ना॰ स्त्री॰ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री।

द्रुम॰ना॰ पु॰ वृक्ष, पेड़।

द्रुमलिक॰ना॰ पु॰ राक्षस विशेष।

द्रुहिण॰ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

द्रोण॰ ना॰ पु॰ कालाकाग, कारिज, पर्वत विशेष, द्रोणाचार्य्य।

द्रोणपुष्पी॰ना॰ स्त्री॰ गूमा पौधा।

द्रोणाचार्य्य॰ना॰ पु॰ कौरव और पाण्डवोंकागुरु।

द्रौपदी॰ना॰ स्त्री॰ पांडवोंकी स्त्री, द्रुपदकन्या।

द्रोह॰ना॰ पु॰ वैर, शत्रुता, अदावत।

द्रोहिया॰ }
द्रोही॰ } ना॰पु॰शत्रु, वैरी, मुद्दई।

द्वन्द्व॰ना॰ पु॰ युगल, जोड़ा, रागद्वेषादि, कलह, दुस्वभाव।

द्वादश॰गु॰ बारह १२।

द्वादशउपवन॰ना॰ पु॰ बारह उपवन अर्थात् श्यामकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगांव, गोकुल, चन्दनवन १२।

द्वादशभानु॰ ना॰ पु॰ बारह सूर्य्य नाम अर्थात् विष्णु, शक्र, अर्यमा, धाता, पूषण, त्वष्टा, विवस्वान्, सविता, भग, वरुण, अंशुमलि, तेजपति।

द्वादशभानुकला॰ ना॰ स्त्री॰ बारह सूर्य्य की कला अर्थात् तपिनि, तापिनी, धूम्र, मरीची, ज्वालिनी, रुचि, रुचिनिम्न, भोगदा, विश्वबोधिनी, धारिणी, क्षमा।

द्वादशवन॰ ना॰ पु॰ बारह वन ब्रजके अर्थात् मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर।

द्वापर॰ ना॰ पु॰ तीसरा युग जो ८६४००० वर्षका होता है।

द्वार॰ ना॰ पु॰ घरकामुख, दरवाज़ा।

द्वारपाल॰ } पु॰ ड्योढ़ीवान्, द्वारका रक्षक।
द्वारपालक॰ }

द्वारा॰ अव्य॰ कारणसे, वसीला, मारफत।

द्वारावती॰ ना॰ स्त्री॰ द्वारिका

द्वारिका॰ ना॰ स्त्री॰ नगर प्रसिद्ध जो गुजरात में है।

द्वारिकाधीश॰ } ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्र जी।
द्वारिकानाथ॰ }

द्वारी॰ ना॰ पु॰ द्वारपाल।

द्विगुण॰ गु॰ दूना, दोहरा।

द्विज॰ ना॰ पु॰ पक्षी, दांत, ब्राह्मण, नक्षत्र, कौआ।

Digitized by Google

द्विजदोष० ना० पु० ब्रह्महत्या।

द्विजनायक० ना० पु० ब्राह्मण, गरुड़, चन्द्रमा, सिंह।

द्विजन्मा० ना० पु० ब्राह्मण।

द्विजपति० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजपत्नी० ना० स्त्री० ब्राह्मणी।

द्विजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवल्ली, ब्राह्मणी।

द्विजराज० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजा० ना० स्त्री० छोटी इलायची।

द्विजाङ्गिका० ना० स्त्री० कुटकी।

द्विजाति० ना० पु० द्विज, ब्राह्मण।

द्वितीय० गु० दूसरा।

द्वितीया० ना० स्त्री० दूज, दूसरी तिथि, दूसरी,।

द्वितीयान्त० गु० जिसके अन्त में द्वितीया का प्रत्यय होवे।

द्वित्व० अव्यय० दोहरा करना।

द्विधा० अव्य० दो प्रकार।

द्विपद० ना० पु० मनुष्य।

द्विरसन० ना० पु० सांप।

द्विरागमन० ना० पु० गौना, चलौआ।

द्विरुक्ति० ना० स्त्री० पुनरुक्ति, फेरफेर कहना।

द्विरेफ० ना० पु० भौंरा।

द्विवचन० ना० पु० द्वित्वसंख्या युक्त जो शब्द. जिसका भाषा में प्रयोग नहीं है।

द्विविद० ना० पु० वानरविशेष।

द्विषट्० गु० द्वादश, वा षट।

द्विस्वभाव० ना० पु० द्विविधा।

Digitized by Google

द्विचिंशल्लक्षण० ना० पु० बत्तीस लक्षण अर्थात्, सुरत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुद्धात्मा, अभ्यास, वरविद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्री त्याग, पूर्णता, सोकेश, दास विभाग, पुष्टविद्या, प्रियवाद, सत्सङ्ग, अकाम, गुणपूर्ण, मातृ भक्ति, पितृ भक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज, ३२।

द्वीप० ना० पु० टापू, पृथ्वी, का खण्ड, जो जल से घिरा हुआ है, पृथ्वी के सप्त खण्डों में से एक।

द्वीपवती० ना० स्त्री० नदी

द्वीपशत्रु० ना० पु० छतावर, सतावर।

द्वीपसम्भवा० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर।

द्वीपिका० ना० स्त्री० सता-वर, छतावर।

द्वीपी० ना० पु० सिंह, शेर।

द्वेष० ना० पु० वैर, द्रोह, हिंसा ईर्षा।

द्वेषी० ना० पु० शत्रु, वैर, हिंसक।

द्वै० गु० दो० २।

द्वैत० ना० पु० सन्देह, भेद, दुगुना, छट।

द्वैतवादी० ना० पु० भेदवादी।

द्वैध० ना० पु० संदेह, दोखण्ड।

द्वैधीकरण० ना० पु० छेदन।

द्वैमातुर० ना० पु० श्रीगणेशजी

द्वैमधुक० ना० पु० मुलहठी।

द्वैष० ना० पु० द्वेष।

Digitized by Google

द्व्यर्थ० गु० जिसमें दो प्रकार के अर्थ हों।

द्व्यक्षर० गु० जिसमें दो अक्षर हों।

[ध]

धंधलाना० स० क्रि० छलना, धोखा देना।

धंधक० गु० बड़ चिन्तक, धन्धे वाला, धन्धक।

धंधा० ना० पु० काम, धन्धा।

धंधार० गु० उदास, एकान्ती।

धंधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकेला पन।

धंसना० अ० क्रि० धसना, गड़ना बैठ जाना।

धकधक० ना० पु० धड़क, भय से कलेजा कांपना।

धक्का० ना० पु० ढकेल, झोंक, ठेला।

धक्काधक्की० ना० स्त्री० ठेला ठेली।

धगड़ा०, धग्गड़० ना० पु० यार, लगुआ।

धज० ना० पु० चाल, आसन, डौल, रूप, ठाठ, सामान साज़ बाज़।

धजभङ्ग० ना० पु० नपुंसकी।

धजा० ना० स्त्री० पताका, ध्वजा।

धजीला० गु० धजसे चलने वाला, सजीला।

धज्जी० ना० स्त्री० पुराने कपड़े का टुकड़ा।

धड़० ना० पु० देह, शिरसे नीचे का तन।

धड़क० ना० स्त्री० फड़क, भय, धड़धड़ाहट।

धड़कना० अ० क्रि० फड़कना, हिलना, धक धकाना।

धड़का० ना० पु० भय, सन्देह, दुबिधा, धड़क।

Digitized by Google

धड़काना॰ स॰ क्रि॰ डराना, धड़ धड़ाना अ॰ क्रि॰ धड़कना।

धड़ा॰ ना॰ पु॰ यथा, पत्त, तौल जोख।

धड़ाका॰ ना॰ पु॰ धांय धाय हड़हड़ाहट, शब्द होना।

धड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ लकीर, पांच सेरकी तौल, वा जितना एकबार तोला जावे।

धत॰ ना॰ पु॰ हाथी चलाने का शब्द।

धतूरा॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष।

धतूरिया॰ गु॰ छलिया, बहुरूपिया।

धधकना॰ अ॰ क्रि॰ भभकना, धायं धायं जलना।

धन॰ ना॰ पु॰ द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति लक्ष्मी शुक्र।

धनक॰ ना॰ स्त्री॰ गोटेसे बनी वस्तु जो टोपीआदि में लगाते हैं।

धनकटी॰ ना॰ स्त्री॰ कपड़ा विशेष, धान काटनेका समय।

धनञ्जय॰ ना॰ पु॰ अग्नि, अर्जुन पाण्डु पुत्र, पवन।

धनन्तर॰ ना॰ पु॰ धन्वन्तरि।

धनद॰ ना॰ पु॰ कुबेर, धनका दाता।

धनपति॰ ना॰ पु॰ कुबेर, गु॰ धनी।

धनवन्त॰ } गु॰ द्रव्यवान् लक्ष्मीवान्।
धनवान्॰ }

धना॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री, नारी ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

धनाकुला॰ ना॰ स्त्री॰ रासना।

धनाढ्य॰ गु॰ धनवान्, साहूकार।

Digitized by Google

धनाध्यक्ष० ना० पु० धन का स्वामी, कुवेर।

धनान्ध० गु० जो धनके कारण अन्धा अर्थात् अहंकारी हो रहाहो।

धनार्जन० ना० पु० द्रव्य का उपार्जन।

धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की आशा।

धनासरी० } ना० स्त्री० रागिणी विशेष।
धनासिरी० }

धनिक० ना० पु० महाजन, ऋणका दाता।

धनिया० ना० पु० बीज विशेष, ना० स्त्री० नारि।

धनिष्ठा० ना० स्त्री० तेईसवां नक्षत्र।

धनी० गु० लक्ष्मीवान् मालदार, ना० पु० मालिक, स्वामी।

धनु:० ना० पु० धनुष, और नवीं राशि चारि हाथ का प्रमाण, भिलावां।

धनुपट० ना० पु० चिरौंजी।

धनुर्द्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के पास धनुष रहता हो, विशेष अर्जुन।

धनुर्विद्या० ना० स्त्री० युद्ध-विद्या, और वाण ज्ञान, तीरन्दाज़ी।

धनुष० ना० पु० कमान्, कमठा।

धनुषाकृति० } ना० पु० धनुष के डौल।
धनुषाकार० }

धनुषी० } ना० स्त्री० छोटा धनुष, धनकीकमठी।
धनुही० }

धनेश० ना० पु० पक्षी विशेष, कुवेर, गु० धनवान्।

धन्य० गु० प्रशंसा के योग्य, गुणी।

धन्वयासक० ना० पु० जवासा।

Digitized by Google

धन्यवाद॰ना॰ पु॰ स्तुति, कृतज्ञता, गुणमानना।

धन्यवादी॰ गु॰ कृतज्ञ, स्तुत, गुणगायक।

धन्या॰ना॰ स्त्री॰ नदीविशेष।

धन्याक॰ना॰ पु॰ धनिया।

धन्वन्तरि॰ना॰ पु॰ वैद्यविशेष जो स्वर्ग वासियों के वैद्य हैं।

धन्वायाा॰ना॰ स्त्री॰ जवासा।

धन्वी॰ गु॰ धनुर्द्धर।

धप॰ } ना॰ पु॰ चपेटा, थप्पड़, छलावा।
धप्पा॰ }

धब्बा॰ना॰ पु॰ कपड़े में जो लीख, कपड़े का दाग़।

धमक॰ना॰ स्त्री॰ भयकासूचकशब्द, पैरों का शब्द, विशेष।

धमकना॰ अ॰ क्रि॰ टीसना, धड़कना, जगमगाना, स॰ क्रि॰ मटकाना।

धमका॰ना॰ पु॰ बड़ीधूप, सांस, भारीवस्तु के गिरने का शब्द।

धमकाना॰ स॰ क्रि॰ झिड़कना, डांटना।

धमकाहट॰ } ना॰ स्त्री॰ घुड़की, डाट।
धमकी॰ }

धमधूसड़॰ गु॰ मोटा, स्थूल।

धमन॰ना॰ पु॰ नड़कुल।

धमनी॰ना॰ स्त्री॰ नारी, नली।

धमाका॰ना॰ पु॰ तोपविशेष जो हाथीपर रखते हैं भारी वस्तु गिरने का शब्द।

धमाचौकड़ी॰ना॰ स्त्री॰ रोला, बखेड़ा।

धमाधम॰ना॰ पु॰ पांवपीटने का शब्द, लगातारपीटना।

Digitized by Google

धमार० } नाο पुο तालवि-
धमाल० } शेष वागीत विशेष जोहोलीमेंगातेहैं।

धमिना० नाο पुο सांपविशेष।

धमोका० नाο पुο खंजरी विशेष।

धम्मिल्ल० नाο पुο केशपास, वेणी।

धर० नाο स्त्रीο धरती, नाο पुο धड़।

धरक० नाο स्त्रीο धड़क।

धरका० नाο पुο धड़का।

धरणि० } नाο स्त्रीο पृथ्वी,
धरणी० } धरती, ज़मीन।

धरणीधर० नाο पुο शेषादि, सांप।

धरती० नाο स्त्रीο पृथ्वी, ज़मीन।

धरधरा० नाο पुο धड़ाका।

धरन० नाο स्त्रीο कड़ी।

धरना० सο क्रिο रखना, थांभना, पकड़लेना नाο पुο किसी के द्वारपर अड़ना।

धरनी० नाο स्त्रीο धरणी, धरन।

धरनैत० नाο पुο धरनादेने वाला।

धरमना० सο क्रिο दबाना, डपटना, झपटना।

धररुह० नाο पुο वृक्ष पौधा-मात्र, जोपृथ्वीपरउगे।

धरषना० सο क्रिο घिसना, रगड़ना।

धरहर० नाο स्त्रीο सहाय, मदद, सहजराम कृत प्रह्लाद चरित्रेयथा, यहि संसार असारमहं राम नामस्तुतिसार, रविसुत पुरधरहरकरै नरहरि नामउदार।

धरा० नाο स्त्रीο धरती, पृथ्वी क्रिο भूο रक्खा, पकड़ा।

Digitized by Google

धरातल० ना० पु० पृथ्वीतल, सूयज़मीन।

धराधर० ना० पु० शेषादि।

धराना० अ० क्रि० धरोहोना, स० क्रि० रखवाना, पकड़ाना, लराना।

धरासुर० ना० पु० ब्राह्मण।

धरित्री० ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

धरोहर० ना० स्त्री० थाती, सौंप, अमानत।

धरौना० ना० पु० पुनर्विवाह।

धर्त्तव्य० गु० ग्राह्य।

धर्त्ता० ना० पु० धनी, धार्मिक।

धत्तूर० ना० पु० धतूरा, जिसके फलमें विषहोता है।

धर्म० ना० पु० न्याय, कीर्त्ति, पुण्य, व्यवहार, शास्त्र, गुण, काम, मज़हब।

धर्मकूप० ना० पु० काशीजीमें स्थान विशेष।

धर्ममूल० ना० पु० वेद, शास्त्र, गुरु।

धर्मराज० ना० पु० जमराज, नीति युतराज्य, राजा युधिष्ठिर।

धर्मशाला० ना० स्त्री० धर्म विचारने का स्थान।

धर्मशील० ना० गु० भक्तिमान्, कीर्तिमान्, साधु।

धर्माधिकार० ना० पु० पुण्य कर्म की पदवी, भण्डार का काम।

धर्माधिकारी० गु० जो पुण्य कर्मका सिरताजहो।

धर्मात्मा० गु० कीर्तिमान्, साधु, ना० पु० ईश्वरत्व में जोतीसरा है उसका नाम।

धर्माध्यक्ष० गु० न्यायी, विचारकर्त्ता।

Digitized by Google

धर्मावतार०ना० पु० धर्मका अवतार।

धर्माज्ञा०ना० स्त्री० धर्म की आज्ञा।

धर्मिष्ठ० } गु० धर्म में जिनकी
धर्मी० } निष्ठा है पुण्यवान्।

धर्षण०ना०पु०धांसन्, रगड़न्।

धर्षना० स० क्रि० कोपना, रगड़ना।

धवल०ना० पु० शुक्लवर्ण।

धवलाख्य०ना० पु० पियाज़।

धवलागिरि०ना० पु० पर्व्वत विशेष।

धसकना०अ० क्रि० गड़ना, धसजाना।

धसन्०ना० पु० धसान्, धसने की अवस्था।

धसना०अ० क्रि० घुसड़ना, चुभना,छिदना, पैठना।

धसान०ना० पु० दलदल, गड़न्, धसन।

धसाना०स० क्रि० घुसेड़ना, घुसेड़वाना, पैठालना, पैठवाना, पिलाना।

धसाव०ना० पु० धसान्।

धंधल०ना०पु० नटखटी, फरफन्द, झगड़ा।

धंधली०गु० झगड़ाल, नटखट।

धंगर०ना० पु० जातिविशेष।

धांयधांय०ना० स्त्री० तोपों का शब्द, धड़ाका।

धांसना०स० क्रि० खांसना, खोंखना।

धांसी०ना० स्त्री० खांसी, खोंखी।

धाई०ना० स्त्री० दूधपिलानेवारी।

धाक०ना० स्त्री० ठाठ, प्रताप, कीर्ति, भय, डर, ढाक।

धागा०ना० पु० सूत, डोरा।

धाता०ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य्य।

Digitized by Google

धातु॰ना॰ पु॰ तांबा आदि, बोध्य, क्रियावाचकशब्द, मसदर ।

धातुमाक्षिक॰ना॰ पु॰ सोनामखी ।

धातुसाधित॰गु॰ जो धातु से बनाया गया ।

धात्वितर॰गु॰धातुसेरहित, ।

धान॰ना॰ पु॰ अन्नविशेष ।

धाना॰अ॰ क्रि॰ दौड़ना, टहलकरना, स॰ क्रि॰ पूजना, अर्चना ।

धानी॰ना॰ स्त्री॰ धानविशेष, धानके सदृश रङ्ग विशेष ।

धानुक॰ना॰ पु॰ धनुहार, कमानदार, और जाति विशेष ।

धानेय॰ना॰ पु॰ धनिया ।

धान्य॰ना॰ पु॰ धनिया, धान, धन, माश ।

धान्यक॰ना॰ पु॰ धनिया ।

धाप॰ना॰ स्त्री॰ हाथसे दो तिहाई का माप, जहां तक मनुष्य एक स्वांसमें दौड़सके ।

धाम॰ना॰ पु॰ घर, स्थान, तेज, तन, किरण, ज्योति, वैकुंठ, ब्रह्म ।

धामा॰ना॰पु॰बेतकाटोकड़ा ।

धामिन्॰ना॰ पु॰ सूर्य्य ।

धाय॰ना॰ स्त्री॰ धाई ।

धायमारना॰अ॰क्रि॰ पुकार करोना, दौड़केमारना ।

धार॰ना॰ स्त्री॰ लकीर, बहाव, अस्त्र कीबाढ़ ।

धारक॰ना॰ पु॰ ऋणी ।

धारण॰ना॰ पु॰ धारने की अवस्था, मानलेना स॰ क्रि॰ धारना, मंजूर करना ।

धारणा० स० क्रि० रखना, संभालना, धराना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष।

धारना० स० क्रि० धारणा।

धारस० ना० स्त्री० ढाड़स, धीरज।

धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, बहाव, रीति।

धारावाहिक० गु० विच्छेदबिनु।

धारि० ना० स्त्री० डाकू की सेना।

धारित० गु० जो धारण किया गया।

धारी० ना० स्त्री० लकीर, पौधाविशेष।

धार्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, यथा, राजहंसास्तुते चंचुचरणैर्लोहितैः सिताः। मलिनैर्मल्लिकाख्यास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतरैः॥ इत्यमरः धृतराष्ट्र का पुत्र, सुयोधन।

धाव० ना० पु० पौधाविशेष दौड़।

धावंक्ष्य:० ना० पु० दौड़ने-वाला खरगोश।

धावन० ना० पु० सन्देशिया, दूत, हरकारह।

धावना० अ० क्रि० दौड़ना, फिराकरना, चढ़ना, रखड़ना, अर्चना।

धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटीकटाई खेत।

धावमान० गु० दौड़ताभया।

धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृत्तविशेष।

धाह० ना० स्त्री० शराटा, कूक।

धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० आंवला।

धिक्० अव्य० निन्दा का बोधक शब्द, फिट, लानत कुछनभये।

धिक्कार० ना० पु० फिटकार, निन्दा, शाप, लानत।

Digitized by Google

धिक्कारना० स० क्रि० निन्दा करना, फिटकारना, लानत करना ।

धिक्कारी० गु० शापित, निन्दित, फिटकारी ।

धिग्० अव्य० धिक् ।

धिया० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री ।

धिर्यो० क्रि० धमकाया, डांटा ।

धिराना० स० क्रि० धमकाना, डांटना ।

धिषण० ना० पु० ब्रह्मा, बृहस्पति ।

धिषणा० ना० स्त्री० बुद्धि ।

धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेटी ।

धीति० ना० स्त्री० प्रतीति, विश्वास, कविवाक्ययथा, मो हिहार बैठाय सखिलू किनजलछितजाय, धीतिलालतेरीकहा दधि चुराइ अजखाय ।

धीम० ना० पु० ढील, कोमलता ।

धीमर० ना० पु० कहारजाति विशेष ।

धीमा० गु० ढीला, कोमल मध्यम ।

धीमाई० ना० स्त्री० ढील, धीरज, सुस्ती ।

धीमान्० गु० बुद्धिवान्, चतुर ।

धीमेधीमे० अव्य० हौलेहौले ।

धीय० ना० स्त्री० बुद्धि, कन्या ।

धीर० गु० ढीला, सन्तोषी, जीवटा, स्थिर, ना० पु० धीरज ।

धीरज० ना० पु० धैर्य, स्थिरता, साहस, सन्तोष ।

धीरजी० गु० दृढ़, सन्तोषी, स्थिर ।

धीरता० ना० स्त्री० धैर्य, स्थिरता, साहस ।

धीरा० गु० कोमल, सन्तोषी, साहसी, विचारशील ।

धीरिया० ना० स्त्री० बेटी ।

धीरी० ना० स्त्री० नेत्रकीपुतली ।

Digitized by Google

धीर० गु० दृढ़, धीरजी, बहादुर।
धीवर० ना० पु० धीमर, कैवर्त्त।
धुंगार० ना० पु० छौंकन, बघार।
धुंगारना० स० क्रि० बघारना, छौंकना।
धुंधकार० ना० पु० अंधेरा।
धुंधकारना० अ० क्रि० धुआं समेत आगका जलना।
धुंधराना० अ० क्रि० अन्धा होना।
धुंधला० गु० अन्धा, अन्धला, ना० पु० अन्धेरा।
धुंधलाई० ना० स्त्री० अन्धेरा, धुंधलाई।
धुंधेला० गु० छली, ठग।
धुकड़ी० ना० स्त्री० छोटीथैली, पैसारखनेकी होतीहै।
धुकधुकी० ना० स्त्री० कण्ठका भूषण विशेष, घबराहट, सन्देह, ध्यान।
धुत्ता० ना० पु० धूर्तता।
धुन० ना० स्त्री० चसका, लौ, अभ्यास, परिश्रम, टहक, उमङ्ग।
धुनकना० स० क्रि० तूमना, धुनना।
धुनना० स० क्रि० तूमना, पीटना, मारना।
धुनिया० ना० पु० विछना, तूमनेवाला।
धुन्ना० स० क्रि० धुनना।
धुमला० गु० धुन्धा, अन्धा, अन्धेरा।
धुमलाई० ना० स्त्री० इंधियारा।
धुर० ना० पु० आरम्भ, अवधि, पास, बोझ।
धुरपद० ना० पु० गीतविशेष।
धुरसांझ० ना० स्त्री० गोधूली, सायंकाल।
धुरन्धर० गु० धुरीधरनेवाला, ना० पु० धवटद्ध।

Digitized by Google

धुरवा॰ना॰ पु॰ मेघ, काव्ये- यथा, धुंधुधारे धुरवा चक्रपासा। समुझि परे नहिं अवनिअकासा।

धुरव्य॰ना॰ पु॰ मेघ।

धुरियाना॰स॰ क्रि॰ मटियाना, धूललगाना, धूल फेंकना।

धुरी॰ना॰ स्त्री॰ काष्ठवालोहे की वस्तु जिसपर पहिया फिरता है।

धुलना॰अ॰ क्रि॰ स्वच्छ होना, पाकहोना, धोजाना।

धुलवाना॰स॰क्रि॰ धुलाना।

धुलाई॰ना॰ स्त्री॰ वस्त्रधोने का काम वा पैसा।

धुलाना॰स॰ क्रि॰ मैलनिकलाना, वस्त्रकोस्वच्छ करवाना।

धुलेंडी॰ ना॰ स्त्री॰ होली का दूसरादिन।

धुस्सा॰ना॰ पु॰ लोई, ऊर्ण- वस्त्र विशेष।

धूंआं॰ }
धूंवा॰ } ना॰ पु॰ धुंवा, धूम।

धूंवारा॰ना॰ पु॰ धुंवानिकलने का स्थान।

धूंधरा॰ना॰ पु॰ अंधेरा।

धूत॰गु॰ धूर्त्त।

धूति॰ना॰ स्त्री॰ ठग, छली, यथा, तुलसी रघुवर सेवकहि सकैन कलियुगधूति।

धूना॰ना॰ पु॰ राल।

धूनी॰ना॰ स्त्री॰ धुंवा, आगजो साधुलोग तापते हैं, गु॰ स्थिर।

धूप॰ना॰ स्त्री॰ घाम, सुगन्धि द्रव्यजो पूजामें जलाके चढ़ाते हैं, वृक्षविशेष वा उसका काष्ठविशेष।

Digitized by Google

धूपना० स०क्रि० रालसगाना, धूपजलाना।

धूपित० गु० धूपदियागया।

धूम० ना० पु० धुंवा, ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा, उत्पात, भीड़।

धूमकेतु० ना० पु० अग्नि।

धूमधाम० ना० पु० धुंवांका घर, हुक्का, रौला, बनाव।

धूमपुष्पा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष।

धूमयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।

धूमर०, धूमरा०, धूमल०, धूमला० गु० मटमैला, धुमैला, धुंवाका रङ्ग।

धूमशिखा० ना० पु० अग्नि।

धूमशीर्षा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष।

धूमा० गु० धूमला।

धूमी० गु० उत्पाती, जिसकीधूम होरही।

धूम्र० ना० पु० धूंवां, ऊंट।

धूम्रपान० ना० पु० धुवाका पीना।

धूम्रपानयंत्र० ना० पु० हुक्का।

धूम्रयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।

धूम्राक्ष० ना० पु० राक्षस विशेष,

धूर० ना० स्त्री० धूलि।

धूरा० ना० पु० जो रोगी के हाथ पांव आदि में रगड़ते हैं॥

धूरि० ना० स्त्री० धूलि।

धूरी० ना० स्त्री० धुरी।

धूर्त्त० गु० नटखट, शठ, ठग, ना० पु० धतूरा।

धूर्त्तता० ना० स्त्री० ठगई, शठता।

Digitized by Google

घूल० } नाo स्त्रीo रज, रेणु,
धूलि० } खाक।

घूसना० सo क्रिo ठांसना, भरना, दबाना।

धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये- नाo पुo जाति विशेष।

धूसरि० नाo स्त्रीo धूलि।

धूहा० नाo पुo धोखा, पक्षी आदिके डराने के लिये खेत में गाडते हैं, तूदा।

धृक० } अव्यo धिक्।
धृग० }

धृत० गुo जो धारण किया जाय, रक्खा गया।

धृतराष्ट्र० नाo पुo दुर्योधन का पिता।

धृति० नाo स्त्रीo दृढता, कामोंमें धीरज।

धृष्ट० गु० विशारद, चतुर, परिपूर्ण, पण्डित, शाली।

धेंगामुष्टी० नाo स्त्रीo घूसमघूसा।

धेनु० नाo स्त्रीo गायवा बछड़ा समेत गाय, दुधार गाय।

धेनुक० नाo पुo खर रूपी दैत्य विशेष।

धेनुमति० नाo स्त्रीo गोमती नदी।

धेला० नाo पुo अधेला।

धेली० नाo स्त्रीo अधेली, आधा रुपया।

धैर्य्य० नाo पुo धीरता, धीरज।

धैर्य्यवान्० गुo धीरजी, संतोषी।

धैवत० नाo पुo रागका स्वर विशेष।

धोआ० नाo पुo फलकोंमें डाली।

धोई० नाo स्त्रीo भिगोई हुई दाल।

धोंआला० ना० पु० धुंवा निकलनेका मार्ग।

धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुकना, आड, तकिया।

धोकड़० गु० महा बली।

धोखा० ना० पु० भ्रम, छल, धांधल।

धोता० ना० पु० धूर्त्त, पाखण्डी।

धोती० ना० स्त्री० कटि में पहिरनेका वस्त्रविशेष।

धोना० स० क्रि० पखारना, फीचना।

धोप० ना० स्त्री० खड्गविशेष।

धोब० ना० स्त्री० पक्षालन, धोने का काम।

धोबिन्० ना० स्त्री० धोबी की स्त्री०।

धोबी० ना० पु० कपड़ा धोने वाला।

धोरी० ना० स्त्री० मुख्यबैल जो गाड़ी में सबसे पहिले मचाया जाताहै।

धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष।

धौं० अव्य० अथवा, वा, मानो, या।

धौंक० ना० स्त्री० झंफाहट, आंच, आग।

धौंकना० स० क्रि० धोंकनीसे आग फूंकना।

धौंकनी० ना० स्त्री० धोंकी, खलेती जिससे आगको प्रचण्डकरतेहैं, निगाली।

धौंकी० ना० स्त्री० धोंकनी।

धौंताल० गु० धनवान, बलवान्, सूर्मा, दुर्जन।

धौंताली० ना० स्त्री० धन, बल, सूर्मापन, दुष्टता।

धौंन० ना० पु० चारि पंसेरी का परिमाण।

धौंस० ना० पु० दौड़, धंकी।

Digitized by Google

धौंसा० ना० पु० बड़ा डंका ।
धौंसिया० ना० पु० दौड़करने हारों का प्रधान ।
धौर० ना० पु० कपोत की जाति विशेष ।
धौरा० गु० धोला ।
धौल० ना० स्त्री० टीप, थप्पड़ ।
धौलधप्पा० ना० पु० धप्पा धप्पी ।
धौला० गु० श्वेत, सफ़ेद ।
धौलाई० ना० स्त्री० उज्ज्वलता, गोराई ।
धौलाना० } स० क्रि० थप्पड़
धौलियान्० } मारना, मुकियाना ।
ध्यान० ना० पु० विचार, सोच, चिन्ता ।
ध्यानी० गु० विचारवान्, सोची ।
ध्याना० } स० क्रि० सोचना,
ध्यावना० } विचारना, मानना, भजना, गाना यशका ।
ध्रुव० ना० पु० धूरी, योग, राग विशेष, दैत्य विशेष, उत्तर दक्षिणकेन्द्र स्थान में प्रायस्थिर एकतारा उत्तानपाद का पुत्र भक्त विशेष, गु० स्थिर, अचल, सनातन, निश्चय ।
ध्रुवतारा० ना० पु० उत्तर दक्षिण केन्द्रमें प्रायस्थिर एक तारा ।
ध्रुवनन्दा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी ।
ध्रुवपद० ना० पु० ध्रुरपद गीत विशेष ।
ध्रुवमत्स्ययंत्र० ना० पु० क़ुतुबनुमा ।
ध्रुवा० ना० स्त्री० शालपर्णी कील, लगाव ।
ध्वंस० ना० पु० नाश ।
ध्वंसोली० ना० स्त्री० काकोली
ध्वज० ना० स्त्री० झण्डा, पताका, ध्वजा ।

ध्वजिनी० ना० स्त्री० सेना, फौज।

ध्वजा० ना० स्त्री० पताका।

ध्वनि० ना० स्त्री० शब्द, बाजे का शब्द।

ध्वनित० गु० संक्षेप से कथित।

ध्वनी० ना० स्त्री० नदी, गु० शाब्दक।

ध्वन्यात्मक० गु० शब्द विशेष जिसमें वर्णविवरणहो।

ध्वस्त० गु० भ्रष्ट, खराब।

ध्वान० ना० पु० शब्द।

ध्वान्त० ना० पु० अंधियारा, काव्य यथा, यथा ध्वान्त विध्वंस आदित्यकारी, तथा देविविश्वेष शोक प्रहारी।

[न]

न० अव्य० अ० नहीं।

नक० ना० स्त्री० नाक।

नकचढ़ा० गु० क्रोधी, चिड़चिड़ा

नकछिकनी० ना० स्त्री० पौधा विशेष।

नकटा० गु० नाक कटा।

नकड़ा० ना० पु० नाक में रोग विशेष।

नकतोडा० गु० इंसोड, धूर्त्त।

नकसीर० ना० स्त्री० नाक की शिरा।

नकार० अव्य० ना० पु० अस्वीकार।

नकारना० स० क्रि० नकार, करना, मुकरना।

नकुल० ना० पु० न्यौला सांप का वैरी, बगुला, पाण्डु का पांचवां पुत्र।

नकुआ० ना० पु० नाक, अग्र।

नकेल० ना० स्त्री० काठ की वस्तु विशेष जो ऊंट की नाक में पहिनाते हैं।

Digitized by Google

नक्का० ना० पु० पांसे वा ताश का टुक्का।

नक्की० ना० स्त्री० नाक से बोलना, जूप में एक बढ़ना गउडे से।

नक्कीमूठ० ना० स्त्री० द्यूत विशेष, जूआ विशेष।

नक्कू० गु० अपयशी, बदनाम।

नक्र० ना० पु० कुम्भीर, मगर नाका।

नख० }
नखर० } ना० पु० अंगुलियों के अग्र परका अस्थि भाग, नाखून, नह।

नखरेखा० ना० स्त्री० खसोट, बकोट।

नखियाना० स० क्रि० खसोटना, बकोटना।

नखी० गु० नख धारी, नख वाला पशु।

नग० ना० पु० अंगूठे का पाषाण विशेष, मणि, पर्वत, वृक्ष धाम।

नगचाई० ना० स्त्री० अवाई।

नगचाना० अ० क्रि० पास आना।

नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई।

नगदौना० ना० पु० पौधा विशेष।

नगन० ना० पु० हाथी, गु० नग्न।

नगभिन्नक० ना० पु० पाषाण भेद।

नगर० ना० पु० शहर, पुरी, ग्राम।

नगरकोट० ना० पु० कोट कांगड़ा।

नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, वेश्या।

नगरवर्ती० ना० पु० नगरवासी।

नगरवासी० गु० पुरी वा शहर का वासी।

Digitized by Google

नगरी० ना० स्त्री० छोटानगर, बस्ती।

नगा० ना० स्त्री० नारी, स्त्री।

नग्न०
नङ्ग०
नङ्गा०
} गु० दिगम्बर, वस्त्रहीन।

नङ्गी० ना० स्त्री० नग्न स्त्री।

नचवाना० स० क्रि० नचाना, नाचकराना।

नचवैया० ना० पु० नाचनेहारा।

नचाना० स० क्रि० नाचकराना।

नट० ना० पु० डीठबन्दों वा नाचनेहारों की जात विशेष, कौतुकी, स्वांगी।

नटखट० गु० धूर्त, कपटी, छली, फरफन्दिया।

नटखटी० ना० स्त्री० धूर्तता, कपट, छल, फरफन्द।

नटत० क्रि० अस्वीकार करता है, नाचता है।

नटना० अ० क्रि० नमानना, अस्वीकार करना।

नटनागर० ना० पु० चतुर नट, डीठबन्द, टोनहा।

नटभूषण० ना० पु० हरताल, नटका भूषण।

नटवर०
नटवा०
} ना० पु० डीठबन्द, टोनहा।

नटसाल० ना० पु० टूटाकांटा।

नटिन्०
नटिनी०
} ना० स्त्री० नटकी स्त्री।

नटी० ना० स्त्री० वेश्या, नाचनेहारी।

नटुआ०
नटुवा०
} ना० पु० नटवा।

नठना० अ० क्रि० नशना, बिगड़ना, स० क्रि० नाशना, बिगाड़ना।

नत० गु० नम्र, ना० पु० तगर औषधि, अव्य० नतर, नहीं तो।

नतरु० अव्य० नहीं तो।

नताङ्गी० ना० स्त्री० ककरासिंघी।

नति० ना० स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।

नतिनी० ना० स्त्री० नातिन्, दौहित्री।

नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गोतैत।

नथ० ना० स्त्री० नाक में का गहना विशेष, नथुनी।

नथना० अ० क्रि० छिदना, फसना, ना० पु० नथुना।

नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अस्त्रविशेष, नथुनी।

नथी० गु० छिदी, फंसी।

नथुआ० ना० पु० छिदुआ।

नथुई० ना० स्त्री० छिदुई।

नथुना० ना० पु० नाक का मार्ग।

नद० ना० पु० ब्रह्मपुत्रादि जलप्रवाहविशेष।

नदिया० ना० स्त्री० छोटी-नदी, ना० पु० नगर विशेष।

नदी० ना० स्त्री० जो जल की धारा पर्व्वतादि से निकलकर देशान्तरों में होकर समुद्र में जावे, जैसे गङ्गा और सिन्धु आदि।

नदीकान्ता० ना० स्त्री० काग जंघाबूटी।

नदोला० ना० पु० नाद।

ननद०, ननदिया० } ना० स्त्री० ननदी पति की बहिन्।

ननदी० ना० स्त्री० पति की बहिन्।

ननिहाल० ना० पु० नाना का घर वा घराना।

नन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के कथित पिता, बेटा, नौ ९।

नन्दन० ना० पु० देव उपवन, देववन, चन्दन, लड़का गु० आनन्ददाता।

नन्दलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

नन्दिग्राम० ना० पु० बस्ती विशेष, जहां भरतजी तपस्या करते थे।

नन्दिनी० ना० स्त्री० पार्व्वती, पुत्री, पत्नीकी बहिन, प्रियंगु, सोंठि, हर्रं।

नन्दी० ना० पु० शिवजी का वाहन।

नन्दीगण० ना० पु० शिवजी का गण।

नन्दीघोष० ना० पु० रथजो, अग्निदेवने अर्जुन को दियाथा।

नन्दोई० ना० पु० पतिकीबहिन का स्वामी, ननद का पति।

नन्दोला० ना० पु० नांद।

नन्दोसी० ना० पु० नन्दोई।

नन्हा० गु० छोटा, लघु।

नपुंसक० ना० पु० क्लीव, हीजड़ा, मोर।

नपुंसकलिङ्ग० ना० पु० तीसरालिङ्ग।

नभ:० ना० पु० आकाश, आश्रय, और आवणमास।

नभग० गु० पक्षी, नक्षत्र, ग्रह, देवता।

नभगनाथ० ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा।

नभगामी० गु० पक्षीआदि, नभग।

नभगेश० ना० पु० नभगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा।

नभश्चर० ना० पु० आकाश में उड़नेहारे, यथा पक्षी, तारागण, ग्रह, देवता।

नभस्य० ना० पु० भाद्रपद।

नभस्वत्० ना० पु० पवन, वायु।

Digitized by Google

नमः० ना० पु० नमस्कार, त्याग।

नमत० गु० प्रणामकरते।

नमन० गु० सदृश, समान।

नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, सम्मानका बोधक।

नमस्कारी० ना० पु० लजाहू।

नमस्य० गु० नमस्कार केयोग्य।

नमामि० क्रि० नमस्कार करता हूं।

नमित० गु० नीचेसिर किये, शिरझुकाये, नमस्कार करने।

नमो० ना० पु० नमस्कार, वा प्रणामकरताहूं, दोहा, नमोनमो शुकदेव जी करोंप्रणाम अनन्त। तुव प्रसादस्वरभेदको चरणदासवरनन्त॥१॥ इतिस्वरोदये।

नम्र० गु० विनयी, मिलनसार, आधीन, नर्म।

नम्रता० ना० स्त्री० आधीनता, विनय, नर्मी।

नय० ना० पु० नीति, क़ानून।

नयन० ना० पु० नेत्र, आंख।

नयनअमिय० ना० पु० नेत्रों का अमृत, यथा, श्रीगुरुपद नख मंजुल अंजन। नयन अमिय दृग दोष विभंजन। इतिरामायणे।

नया० गु० नवीन, ताज़ा।

नर० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, पुंस।

नरक० ना० पु० पापों के भोग फलका स्थान, दैत्यविशेष जिसे भौमासुर भी कहते हैं।

नरकाट० ना० पु० सरकण्डा, तृणविशेष जिसकी चटाई बनती है।

नरकासी० ना० स्त्री० हवस, गर्दा।

नरकुल० ना० पु० नरकट।
नरपति० ना० पु० मनुष्यों का रक्षक, राजा।
नरपुर० ना० पु० मर्त्यलोक।
नरवाहन०, नरयानी० } ना० पु० कुवेर, यक्षराज।
नरसिङ्गा० ना० पु० बाजाविशेष, तुरही।
नरसिङ्गिया० ना० पु० नरसिङ्गाबजानेहारा।
नरसिंह० ना० पु० विष्णु का चौथा अवतार।
नरसों० अव्य० बीताहुआ चौथादिन, चौथादिन आनेवाला।
नरहड़० ना० पु० पिण्डली की हड्डी।
नरहरि० ना० पु० नरसिंह जी, कवि विशेष।
नरहरिदास० ना० पु० गोसाईं तुलसीदास के गुरु।
नरान्तक० ना० पु० नरों का काल, दैत्य विशेष।
नरिया० ना० स्त्री० छोटीनाली, खपरा।
नरी० ना० स्त्री० चर्म विशेष, लोहेका यन्त्र विशेष, जिसमें बानेका सूत रखते हैं।
नरुख० गु० पुल्लिङ्ग।
नरेट० ना० पु०, नरेटा० ना० पु०, नरेटी० ना० स्त्री० } घांटी, नली, नटई।
नरेन्द्र०, नरेश० } ना० पु० राजा, बहुतदेश का प्रतिपालक।
नरोत्तम० गु० अच्छा मनुष्य, ना० पु० श्रीकृष्णजी।
नर्त्तक० ना० पु० नाचनेहारा।
नर्त्तकी० ना० स्त्री० नटी, नाचनेवाली।

Digitized by Google

नर्त्तन॰ ना॰ पु॰ नाच, नृत्य ।

नर्मदा॰ ना॰ स्त्री॰ नदीविशेष ।

नल॰ ना॰ पु॰ मुख्यवानर, मुख्यराजा, कुवेरका पुत्र, नड़कुल, फोंफी, खोखल ।

नलकूबर॰ ना॰ पु॰ कुवेर के बालक ।

नलपुरष्टिक॰ ना॰ पु॰ कांतिहारी ।

नला॰ ना॰ पु॰ उदर में स्थान विशेष ।

नलिका॰ ना॰ स्त्री॰ नली, नाड़ी ।

नलिन॰ ना॰ पु॰ कमल ।

नलिनी॰ ना॰ स्त्री॰ बहुतनलिनका संयोगस्थान वा कमलिनी ।

नली॰ ना॰ स्त्री॰ नरेटी, फोंफी, नाल, नरहड, लोहेका यन्त्र जिसमें सूतरख कर बिनते हैं ।

नलुआ॰ ना॰ पु॰ भारी बांस का एक पोड़ जो पत्रादि रखने के काम आता है ।

नव॰ गु॰ गिनती विशेष, ९ नया ।

नवखण्ड॰ ना॰ पु॰ पृथ्वी के नौभाग अर्थात् भरतखण्ड, इलावर्त, किं पुरुष, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुरुखण्ड ।

नवजल॰ ना॰ पु॰ प्रथम वर्षा, नयापानी ।

नवयौवना॰ ना॰ स्त्री॰ जोवनवती ।

नवद्वार॰ ना॰ पु॰ शरीर के नौ द्वार अर्थात्, आंख २ कान २ नाक १ मुख, गुदा, लिङ्ग ।

नवधा॰ गु॰ नौप्रकार ।

Digitized by Google

नवधाभक्ति० ना० स्त्री० नौ-
प्रकारकी भक्ति अर्थात्,
सत्संग, हरिकथा, गुरु-
सेवा, हरिगुणगान, वेद-
पाठ, सज्जनधर्म, सम-
भाव, लाभालाभसम,
हरिशरण।

नवधाभजन० ना० पु० नौप्र-
कार का भजन, अर्थात्,
हरिगुण श्रवण, हरिगु-
णकीर्त्तन, हरिस्मरण,
हरिपदसेवन, हरिअर्च-
न, हरिपदवन्दन, दास्य-
भाव, मित्रभाव, आत्म-
ज्ञान ६।

नवनाटिका० ना० स्त्री०
नौस्त्रोता अर्थात् इड़ा,
पिङ्गला, सुषम्णा, पय-
स्विनी, कुहू, गन्धारी,
शंखिनी, पूषा, अल-
म्बुषा।

नवनि० ना० स्त्री० झुकनि,
प्रणाम।

नवनिधि० ना० स्त्री० कुवेर
का धन।

नवनीत० ना० पु० मक्खन,
नैनू, मसका।

नवबधू० ना० स्त्री० नईबधू,
नईदुलहन्।

नवबाला० ना० स्त्री० नवजो-
बना।

नवम० गु० नवां ९।

नवमांश० ना० पु० नवांभाग।

नवमी० ना० स्त्री० नवींतिथि,
नवीं।

नवरङ्ग० ना० पु० कामदेव,
नयारङ्ग, नौरङ्ग।

नवरत्न० ना० पु० बाहुमेंपहि-
रनेके लिये भूषण
विशेष।

Digitized by Google

नवरस० ना० पु० नयारस व नौप्रकारका रस अर्थात् शृङ्गाररस, वीररस, वीभत्स, शान्तरस, भद्र रस, करुणारस, अद्भुत, हास्य, भयानक ९ ।

नवल० गु० सुन्दर, नया, ना० पु० केलापौधा ।

नवला० ना० स्त्री० नवबाला, नवयौवना ।

नवा० ना० गु० नया ।

नवाड़ा० ना० पु० नावविशेष ।

नवाना० स० क्रि० झुकाना, झुकना, टेढ़ाकरना, आधीनकराना ।

नवानो० अ० क्रि० रमना, भटकना ।

नवारी० ना० स्त्री० पुष्पविशेष वा उसका वृक्ष ।

नवासी० गु० अस्सी और नो, ८९ ।

नवी० ना० स्त्री० रस्सी जिससे गायके पांव दूध दुहते समय बांधते हैं ।

नवीन० गु० नया, ताज़ा ।

नवीनता० ना० स्त्री० नयापन ।

नवोढ़ा० ना० स्त्री० नईस्त्री, नवयौवना ।

नवोद्भिद० ना० पु० अङ्कुर, अंखुआ ।

नव्य० गु० नया, नवीन, उपरा ।

नव्वे० गु० नव्दहाई, ९० ।

नश्वर० गु० नाशवान्, विनाशी, झूंठ ।

नशावा० क्रि० मिटाया, नाशकिया ।

नक्षत० ना० पु० नक्षत्र, तारागण, तारा ।

नष्ट० गु० जिसका नाशहोगया, भ्रष्ट ।

नष्टता० ना० स्त्री० भ्रष्टता ।

Digitized by Google

नष्टा॰ ना॰ स्त्री॰ व्यभिचारिणी।

नस॰ ना॰ स्त्री॰ नाड़ी, रग।

नसाना॰ स॰ क्रि॰ नाशकरना, बिगड़ना।

नसी॰ ना॰ स्त्री॰ फालेकाअग्र भाग, वाफालजोनो है का अनमें लगता है।

नस्य॰ गु॰ सानुनासिक, उवास, जो नासिका से सूंघते हैं।

नह॰ ना॰ पु॰ नख, नाखून।

नहक्का॰ गु॰ दुबला, पतला, सुखटा।

नहट्टा॰ ना॰ पु॰ नखोट, खसोट।

नहनी॰ ना॰ स्त्री॰ नहनीं, नखहरनी विशेष।

नहरुआ॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष।

नहरनी॰ ना॰ स्त्री॰ नाखूनकाटने का अस्त्र विशेष।

नहलावना॰ स॰ क्रि॰ स्नान कराना, नहाना।

नहान॰ ना॰ पु॰ स्नान।

नहाना॰ स॰ क्रि॰ स्नानकरना।

नहारमुंह॰ अव्य॰ बिनाखाये।

नहारू॰ ना॰ पु॰ चमड़े का टुकड़ा।

नहियर॰ ना॰ पु॰ स्त्री की ससुराल वा मैका।

नहीं॰ अव्य॰ निषेध, न।

नछत्र॰ ना॰ पु॰ तारा, तारा-गण।

ना॰ अव्य॰ नहीं।

नाईं॰ अव्य॰ प्रकार सदृश, समान।

नाइन॰ ना॰ स्त्री॰ नाई की जोरू।

नाई॰ } ना॰ पु॰ नापित,
नाऊ॰ } जातिविशेष, छौरकर्म।

नाक॰ ना॰ पु॰ आकाश, स्वर्ग, स्त्री, नासिका।

नाकड़ा॰ ना॰ पु॰ नाक में रोगविशेष।

Digitized by Google

नाकपति॰ ना॰ पु॰ इन्द्र।

नाकनटी॰ ना॰ स्त्री॰ अप्सरा, परी।

नाका॰ ना॰ पु॰ मार्गका बेड़े का अन्त, सूईका छेद, गली, नक्र, जलजन्तु विशेष।

नाकिन्॰ ना॰ स्त्री॰ नाककी स्त्री।

नाग॰ ना॰ पु॰ सांप, पच, हाथी, दुष्टनर, सूक्ष्मवायु भेद।

नागउरग॰ ना॰ पु॰ सीसा-धातु।

नागकन्या॰ ना॰ स्त्री॰ कन्या जो पाताल में रहती है, सुलोचना, मेघनाद की बीबी।

नागकेसर॰ ना॰ पु॰ पुष्प विशेष।

नागगर्भ॰ ना॰ पु॰ सिन्दूर, बन्दन।

नागचाम्पेय॰ ना॰ पु॰ नाग-केसर।

नागज॰ ना॰ पु॰ सिन्दूर, बन्दन।

नागदन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्र वारुणी।

नागदमनी॰ ना॰ स्त्री॰ नागदौन।

नागदौन॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष, मरुआ।

नागन्॰ ना॰ स्त्री॰ सांपिनी।

नागनी॰ ना॰ स्त्री॰ पान, नागकी स्त्री।

नागपञ्चमी॰ ना॰ स्त्री॰ श्रावण शुक्लपञ्चमी का पर्व्व विशेष।

नागपत्नी॰ ना॰ स्त्री॰ सांपिन, नागिन्।

नागपाश॰ } ना॰ पु॰ फांसा
नागपास॰ } वा बन्धनविशेष।

नागपुर॰ ना॰ पु॰ नगरविशेष, नागलोक।

नागफांस॰ ना॰ स्त्री॰ फांसी विशेष।

Digitized by Google

नागबला ० ना० स्त्री० गंगेरुआ।

नागबल्ली ० ना० स्त्री० नागबेलि।

नागबेलि ० ना० स्त्री० पान आदि।

नागभाषा ० ना० स्त्री० प्राकृत भाषा जो पातालके रहने हारे बोलते हैं।

नागमाता ० ना० स्त्री० कद्रू, मनसिल।

नागर ० ना० पु० गुजराती ब्राह्मणकी जाति विशेष, नगरोत्पन्न अर्थात् चतुर, और पानी खौरा, सोंठि।

नागरङ्ग ० ना० पु० नारङ्गी।

नागरमोथा ० ना० पु० सुगन्धितणविशेष कामूल।

नागरि ० } ना० स्त्री० चतुरस्त्री, नागरकी स्त्री।
नागरिन् ० }

नागरिपु ० ना० पु० न्यौला, मोर, गरुड़, सिंह।

नागरी ० ना० स्त्री० संस्कृत के अक्षर, चतुरस्त्री।

नागल ० ना० पु० हलखेत जोतने का।

नागा ० ना० पु० संन्यासी, नग्न।

नागाह्वा ० ना० स्त्री० नागदौन।

नागारि ० ना० पु० नागरिपु।

नागार्जुन ० ना० पु० सहस्रबाहु राजा विशेष।

नागिन ० } ना० स्त्री० सांप की स्त्री।
नागिनी ० }

नागौर ० ना० पु० मारवाड़ देशकेपासकाप्रदेश।

नाघना ० } स० क्रि० लांघना, पारजाना।
नाङ्घना ० }

नाच ० ना० पु० नृत्य।

नाचना ० अ० क्रि० नाचकरना, कूदना।

नाज ० ना० पु० अन्न, अनाज।

Digitized by Google

नाट० ना० पु० नाश।

नाटक० ना० पु० ग्रन्थविशेष।

नाटा० गु० ठिंगना, टेनी।

नाटिका० ना० स्त्री० नाड़ी।

नाटी० ना० स्त्री० छोटी, ठिंगनी।

नाठि० ना० स्त्री० नाश, विनाश।

नाठी० गु० नाशगई।

नाड़० ना० स्त्री० ग्रीवा, नाली।

नाड़िका० ना० स्त्री० एकघड़ी।

नाड़ी० ना० स्त्री० पेटमेंकी नस, रोगपरीक्षा के लिये हाथमें की एकरग, स्वासा, नस, नली।

नाड़ीतिक्त० ना० पु० चिरायता।

नाड़ीधम० ना० पु० सोनार, स्वर्णकार।

नाड़ीमण्डल० ना० पु० नाड़ियों का समूह।

नाड़ीज्ञान० ना० पु० रोगपरीक्षा, और स्वासा, का ज्ञान।

नात० ना० पु० सम्बन्ध, रिश्तह, बिरादरी।

नातर० } अव्य० नान्यथा, नहीं तो।
नातरु० }

नाता० ना० पु० सम्बन्ध।

नातिन् ० ना० स्त्री० कन्या की कन्या, बेटाकी बेटी।

नाती० ना० पु० बेटीका पुत्र, बेटाका पुत्र, रामायणे यथा उत्तमकुल पुलस्ति के नाती, शिव विरंचि पूजे बहुभांती।

नाथ० ना० पु० स्वामी, प्रभु, ना० स्त्री० बैलकी नाक कीरस्सी, घावकीबत्ती।

नाथना० स० क्रि० छेदना, बैल की नाक में रस्सी डालना।

नाथित० गु० जो नाथागया।

नाद० ना० पु० शब्द, गरज, गीत, राग।

नादना० स० क्रि० आरम्भ-करना।

नादिया० ना० पु० नन्दी, पशु विशेष जो जोगियों के पास होता है।

नाधना० स० क्रि० जुयेमें लगाना, आरम्भकरना।

नाधा० ना० पु० तालाब वा नदी मेंसे पानीनिकालने का गड्ढा।

नानक० ना० पु० सिक्खों का गुरु विशेष।

नाना० ना० पु० माताकापिता, गु० अनेक, बहुत, समूह।

नानाकार० गु० बहुतरूपके, अनेकप्रकारके।

नानाकारण० ना० पु० अनेकप्रकारके कारण।

नानाप्रकार० } गु० अनेक-
नानाभांति० } प्रकार।

नानारूप० ना० पु० अनेक रूप।

नानार्थ० ना० पु० अनेकअर्थ।

नानाविधि० गु० अनेकप्रकार।

नानी० ना० स्त्री० माता की माता।

नान्द० ना० स्त्री० नांद, मिट्टी का बड़ाबर्तन विशेष।

नान्दिया० ना० पु० शिवका वाहन, वृषभ।

नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष जो पुत्र जन्म के पीछे होता है वा विवाहादिमें।

नान्धना० स० क्रि० आरम्भ करना।

नान्यतर० } अव्य० अन्यथान-
नान्यथा० } हीं, असत्यनहीं।

Digitized by Google

नाप॰ ना॰ स्त्री॰ माप, परि-माण ।

नापना॰ स॰ क्रि॰ मापना, परिमाण करना ।

नापित॰ ना॰ पु॰ नाई, ह-ज्जाम ।

नाभि॰ ना॰ स्त्री॰ पेटके मध्य का स्थान, ढोंढ़ी, तोंदी, ना॰ पु॰ राजाविशेष ।

नाम॰ ना॰ पु॰ कीर्त्ति, यश, विख्याति, संज्ञा ।

नामकरण॰ ना॰ पु॰ संस्कार विशेष, नामरखना ।

नामानि॰ ना॰ पु॰ नाम का बहुबचन ।

नामी॰ गु॰ प्रसिद्ध, कीर्त्तिमान्, विख्यात, यशी, मशहूर ।

नायक॰ ना॰ पु॰ मुखिया, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीतिसे गायकवानर्त्तक, बनजारोंका प्रधान ।

नायका॰ ना॰ स्त्री॰ नायिका ।

नायन्॰ ना॰ स्त्री॰ नाई की जोरू ।

नायिका॰ ना॰ स्त्री॰ नायक की स्त्री, धर्मी, खिया, कुट्टनी ।

नार॰ ना॰ स्त्री॰ नारि, नाल, भुण्ड, ग्रीवा ।

नारक॰ ना॰ पु॰ नरक ।

नारकी॰ गु॰ नरकनिवासी, नरकी ।

नारङ्क॰ ना॰ पु॰ } फल
नारङ्गी॰ ना॰ स्त्री॰ } विशेष ।

नारद॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष ।

नारा॰ ना॰ पु॰ नाला, कमर-बन्द ।

नाराच॰ ना॰ पु॰ बाण, तीर ।

नारायण॰ ना॰ पु॰ श्रीभग-वान् ।

नारायणी० ना० स्त्री० लक्ष्मी, छतावरपौधा, नारायण सम्बन्धी, ज्योति विशेष।

नारि० ना० स्त्री० स्त्री, अबला, नाडी, जिसमें बाने का सूत रख कर बुनते हैं, बन्दूक बिनाकाठ, बांस का पोढ़ जिसमें लोन पानी आदि भरके बैल गायआदिको पिलाते हैं।

नारिकेर०, नारिकेल०, नारियल० ना० पु० फल विशेष।

नारियली० ना० पु० नारियल का हुक्का।

नारी० ना० स्त्री० अबला, स्त्री० नाड़ी० सामविशेष, जिसे कर सुआ कहते हैं।

नाल० ना० पु० कमलादि की दण्डी, नाक, फोंफा, नल, नली।

नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष।

नाला० ना० पु० जल निकलने का मार्ग।

नालिसिन्दुक० ना० पु० संभालू।

नाली० ना० स्त्री० मुहरी छोटा नाला, जिसगढ़ में दण्ड करते हैं, जिस काठ को चढ़ाते हैं।

नाव० ना० स्त्री० नौका, तरनी।

नावना० स० क्रि० झुकाना, डालना, नवाना।

नावरि० ना० पु० निवारा, जलक्रीड़ा।

नाविक० ना० पु० मांझी, नाव वा जहाज़ चलाने हारा, मल्लाह, कप्तान।

नाशक० गु० नाश करने हा-
रा, मिटाने हारा।

नाशन० ना० पु० मिटावन, मेटन।

नाशना० स० क्रि० मिटाना, ध्वंस करना, नासना।

नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष।

नाशा० ना० स्त्री० नासिका।

नाशासम्मेटन० ना० पु० नक छीकनी बूंधा।

नाशिका० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

नास० ना० पु० सुंघनी, हुलास।

नासना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० नाश करना।

नासा० ना० स्त्री० नाक, नाकड़ा।

नासिका० ना० स्त्री० नाक।

नास्ति० अव्य० जो नहीं है।

नास्तिक० } ना० पु० जिनके
नास्तिकी० } मतमें पर लोक
की बात कोनहीं मानते हैं, जैनी।

नाह० ना० पु० नाथ, स्वामी।

नाहर० ना० पु० शेर, व्याघ्र।

नाहीं० अव्य० नहीं।

निः० अव्य० यहशब्द जिसशब्द-
पहिले के संयोगी होवे उस-
का अर्थ रहित करे, यथा,
निः शङ्क, अर्थात् शङ्का
रहित, निषेध।

निःपाप० गु० अदोष।

निःशङ्क० गु० निडर, अभय।

निःशेष० गु० शेषरहितअर्थात्
सम्पूर्ण।

निःशठ० गु० अति मूर्ख।

निःसङ्ग० गु० सङ्ग रहित
अर्थात् अकेला।

Digitized by Google

निःसरण० ना० पु० शरण हीनअर्थात् मृत्यु, उपाय, विदा ।
निःस्व० गु० दरिद्री, अधन ।
नि० अव्य० में भीतर, ऊपर, रहित ।
निकंटक० गु० सुगम, बेखटके, निर्दोष, सीधा, सुखी, बेधड़के ।
निकंद० गु० स्कन्द रहित, अर्थात् उखड़ा, निर्मूल ।
निकंदन० गु० निर्मूलकर्त्ता, उखाड़ने हारा ।
निकट० अव्य० पास, समीप, क़रीब ।
निकटवर्त्ती० ना० पु० पासकी, समीपमें ।
निकटी० ना० स्त्री० छोटी तराज़ ।
निकम्मा० गु० निगुणी जो किसी कामका नहीं है शिथिल ।
निकर० ना० पु० समूह, झुण्ड, सारे, सब ।
निकरना० अ० क्रि० निकलना ।
निकरम्ब० ना० पु० समूह, गिरोह ।
निकलचलना० अ० क्रि० भाग जाना, बढ़के बोलना, अधिक हो जाना ।
निकलना० अ० क्रि० निकसना, बहना, आगेजाना, भागना, उठना, उखड़ना ।
निकलपड़ना० अ० क्रि० बाहर आना ।
निकसना० अ० क्रि० निकलना ।
निकाना० स० क्रि० खेतकी घास निकालना ।
निकाम० गु० अति, कामना रहित, बेकाम ।
निकाय० ना० पु० सब, सम, ष, समूह ।

Digitized by Google

निकारना० स० क्रि० निकालना, अस्वीकारकरना।

निकाल० ना० पु० उभार, निकास, जोड़तोड़।

निकालना० स० क्रि० उतारना, बिनना, चुनना, उठाना, उखाड़ना।

निकास० ना० पु० कगर, नगर की आस पास, मार्ग निकलने का चुकोता, मूल।

निकासना० स० क्रि० निकालना।

निकासी० ना० स्त्री० कर, महसूल, बेठ।

निकासू० गु० जो निकाला गया,

निकेत० ना० पु० घर।

निकुञ्च० ना० पु० बड़हल।

निकुञ्ज० ना० पु० कुञ्ज, मंडवा।

निकुटी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।

निकुम्भिला० ना० स्त्री० राक्षसोंका चोहरा।

निकृष्ट० गु० अधम, नीच, ख़राब।

निषङ्ग० ना० पु० तून, तरकश।

निखट्टू० गु० आलसी, उड़ाऊ, लुटाऊ।

निखगड़० गु० मध्य।

निखरना० अ० क्रि० छिलका उतरना, उजलाहोना, चमड़ा उधड़ना।

निखराना० स० क्रि० उजला कराना, फचाना।

निखर्व० गु० १० खर्व, १०००००००००००००।

निखारना० स० क्रि० उजला करना, कपड़ेकी माड़ी निकालना।

निखारा० गु० स्वच्छ, उज्ज्वल।

निखिल० गु० सर्व, सम्पूर्ण, बिलकुल।

Digitized by Google

निखोट० ना० पु० खोटरहित मनुष्य ।

निखोड़ना । ० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना ।

निगड़० ना० पु० कटि बन्धन, बेड़ी, पैकड़ी, काठ ।

निगत० गु० नङ्गा ।

निगन्दना । ० स० क्रि० तागना ।

निगन्दा । ० ना० पु० } तागने का
निगन्दाई । ० ना० स्त्री० } काम ।

निगम० ना० पु० बेद, नीचे, जहां जानसके ।

निगमनदी । ० ना० स्त्री० श्री गङ्गाजी ।

निगमनिवासी० ना० पु० ब्रह्मा, बेदनिवासी ।

निगर० ना० पु० दीर्घ, बड़ा, ठोस ।

निगलना । ० स० क्रि० लीलना, घूंटना ।

निगाली । ० ना० स्त्री० हुक्का पीने की नली, फुकनी ।

निगुण० गु० निर्गुण ।

निगूढ़० गु० अतिअगम, दुर्गम, अतिकठिन, अप्रकट, गुप्त ।

निगोड़ा । ० ना० पु० अकर्मी, भागहत ।

निग्गर० गु० ठोस ।

निग्रह० ना० पु० त्याग, रोक, घिन, चिढ़, कुपथ, त्याज ।

निग्रही० गु० ताड़नेहारा, रोकनेहारा ।

निघटत० क्रि० घटतेही ।

निघटना । ० अ० क्रि० घटना ।

निघटाना । ० स० क्रि० घटवाना ।

निघटी० क्रि० भू० घटीथा बहुत घटचुके ।

निघण्टु० ना० पु० औषधियों के नामकी पुस्तक ।

Digitized by Google

निघरघटा० ना० पु० कुलच्छना, हट्टाई करना, ढिठाई करना।

निचय० ना० पु० समूह।

निचिन्त० गु० चिन्तारहित, अचिन्त, अशोच।

निचिन्ताई० ना० स्त्री० अप्रमाद, सुभीता, बेखटके।

निचोड़० ना० पु० काम का पूरा होना या कुछशेष रहना।

निचोड़ना० स० क्रि० दबाना, गारना, चूसलेना।

निचोड़० गु० लुटेरा, गठकप।

निचोलनि० ना० स्त्री० चोलनी, कापड़ा, वस्त्र।

निछावर० ना० स्त्री० उतारा, बलि।

निज० गु० आप, निश्चय, उत्कृष्ट।

निजका० गु० अपना।

निजगति० ना० स्त्री० अपनी दशा वा चाल।

निजगुरु० ना० पु० अपना गुरु।

निजतंत्र० गु० निजइच्छा, स्ववश।

निजपति० ना० स्त्री० अपनी प्रतिष्ठा, ना० पु० अपना स्वामी।

निजवर्ती० गु० निजाश्रित, स्वतन्त्र।

निजसन्धि० ना० स्त्री० अवसर, निज समय।

निजस्थान० ना० पु० अपना घर वा स्थान।

निजानन्द० ना० पु० गु० अपनेसुखमें, निजमेंमग्न।

निजाश्रित० गु० स्ववश, निजवश, अथवा निज भरोसे।

निझाना० स० क्रि० निरखना, झांकना।

Digitized by Google

निझोटना० स० क्रि० खसोटना, झटकना।

निझोल० गु० झोलरहित अर्थात् सुडौल चलने द्वारा।

निठुर० गु० कठोर, निर्दय, असनेही, बिनप्रीति।

निठुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता।
निठुराई० }

निडर० गु० निर्भय, अशङ्क।

निढाल० } गु० स्थावर, अचल।
निढौल० }

नित० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।

नितनव० गु० नितनया।

नितप्रति० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।

नितम्ब० ना० पु० चूतड़, कटिके पीछे का नीचला भाग।

नितम्बिनी० ना० स्त्री० युवती, स्त्री, औरत।

नितान्त० अव्य० अत्यन्त, अधिक।

नित्य० अव्य० नितप्रति, सदा, सत्य, पवित्र, अमर।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादिकर्त्तव्यकर्म, शुक्लकर्म।

नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव।

नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिन देना, सत्यदान, सात्विकदान।

नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदा काल आनन्द।

नियम्भ० ना० पु० खम्भ, पीलपाया।

नियरा० गु० फर्चा, फर्छा।

नियारना० स० क्रि० चउेलना, फर्छाकरना।

निदग्धिका० ना० स्त्री० खेतछोटीकटाई।

निदरहि० क्रि० निन्दाकरे, नासाने।

निदरना० स० क्रि० निन्दा करना।

निदरि० स० क्रि० निरादर करके, अपमानकर।

निदाघ० ना० पु० ग्रीष्म, गर्मी।

निदान० अव्य० अन्त, पीछे, पूरा, निम्नद; ना० पु० रोगपरीचा, औषधिकथन, अन्त विचार, कारण।

निदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन, श्रीन्हसिमोर बिदेश्वनिमेटू, ईभदवाय तान्तर पेटू, इति मन्वादचरिते सहज रामकाव्ये।

निद्रा० ना० स्त्री० घौंघाई, नींद।

निद्रारि० ना० पु० चिरायता।

निद्रालु० गु० स्वभाव वश जो अधिक सोवे।

निद्रित० गु० निंदासा, सोवासा।

निधड़क० गु० निर्भय, अव्य० अचानक।

निधन० ना० पु० मृत्यु, नाश, धनहीन।

निधरक० गु० निधड़क।

निधान० ना० पु० स्थान, घर, धन, आधार, भांड़ा।

निधि० ना० स्त्री० कुबेरकाएक रत्न, सम्पत्ति, ना० पु० समुद्र, गु० नौ, ६।

निधिजात० ना० पु० चन्द्रमा आदि।

निधिसुता० ना० स्त्री० श्री लक्ष्मीजी।

निनन्द०, निनाद० ना० पु० शब्द, धराटा, ध्वनि।

निबाया० ना० पु० [illegible]।

निनाबो० ना० पु० रोगविशेष।

निन्दक० गु० निन्दाकरनेवारा, नींदनेवारा।

निन्दकाई॰ ना॰ स्त्री॰ निन्दकता, निन्दा।

निन्दना॰ स॰ क्रि॰ दोषदेना, कलङ्क लगाना।

निन्दनीय॰ गु॰ निन्दाकेयोग्य।

निन्दा॰ ना॰ स्त्री॰ दोष, कलङ्क, बुराकहना।

निन्द्य॰ गु॰ निन्दाकेयोग्य।

निनावा॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष।

निन्नानवे॰ गु॰ एकोनशत, ९९।

निपट॰ अव्य॰ निरा निर, अधिक, बहुत, अति, सरासर, सर्व।

निपटना॰ अ॰ क्रि॰ चुकना, पूराहोना।

निपटाना॰ स॰ क्रि॰ चुकाना, पूराकरना, ठहराना, निबड़ना।

निपटारा॰ ना॰ पु॰ निबेड़ा, फैसला।

निपटारु॰ ना॰ पु॰ निबेड़ा।

निपात॰ ना॰ पु॰ मृत्यु, नाश, गिरना।

निपाता॰ क्रि॰ नाशकिया, गिराया।

निपान॰ ना॰ पु॰ जलाशय, दोहनी।

निपुण॰ गु॰ प्रवीण, चतुर, दक्ष।

निपूता॰ गु॰ जिसके सन्तान नहीं।

निफल॰ गु॰ विरथ, फलरहित।

निबटेरा॰ ना॰ पु॰ निबेरा, छुटकारा।

निबड़ना॰ अ॰ क्रि॰ निपटना, चुकना।

निबन्ध॰ ना॰ पु॰ बन्धेज, इक़रार, गु॰ जो ठहरगया।

निबन्धन॰ ना॰ पु॰ बन्धन, ठहराव।

निबन्धित॰ गु॰ जो ठहरगया, बन्धित।

Digitized by Google

निबल० गु० निर्बल, लाचार, बुड्ढा।

निबाह० ना० पु० समाप्त, निबेड़ा, निर्वाह, बात का पूराकरना।

निबाहू० गु० टिकाऊ, ना० पु० निपटाहू।

निबेड़ना० स० क्रि० निपटाना।

निबेड़ा० ना० पु० निबटेरा, निपटारा।

निबेड़ि० गु० निबाहू।

निभ० ना० पु० तुल्य, बराबर।

निभना० अ० क्रि० निबाहहोना, पारहोना।

निभाना० स० क्रि० निबाहना, पारकरना।

निमकी० ना० स्त्री० लोन का निम्बू।

निमकौड़ी० ना० स्त्री० नीब का फल।

निमन० गु० ठोस, पोढ़ा, सुन्दर।

निमनाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई।

निमनाना० स० क्रि० पोढ़ा करना, संभालना।

निमंत्र०
निमंत्रण० } ना० पु० न्योता।

निमाना० गु० भोला, मैदान।

निमि० ना० पु० राजाविशेष।

निमित्त० ना० पु० कारण, लिये, भाग, हेतु।

निमिष० ना० पु० थोड़ीदेर, पलक, चाख।

निमिषमात्र० ना० पु० अत्यन्त थोड़ाकाल।

निमीलन० ना० पु० मृत्यु, झपकी, पलक।

निमेष० ना० पु० पलक, विपल।

निम्न० गु० नीचास्थान, नीचान, अधो।

निम्नगा० ना० स्त्री० नदी।

Digitized by Google

निम्ब० ना० पु० नीबवृक्ष।
निम्बक० ना० पु० निम्ब।
निम्बरक० ना० पु० नीब वा महानीब।
निम्बू०
निम्बूक० } ना० पु० नीबू।
नियत० गु० जोठहंकागया, मुक़र्रर, क़ायम।
नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नियतकर्त्ता।
नियम० ना० पु० प्रण, वचन, अङ्गीकार, जो कुछ धर्म की क्रियाकरें, यथाव्रत।
नियमित० गु० निश्चित, प्रणकिया गया।
नियमन० ना० पु० नीमरक्ष, रोक।
नियर०
नियरे० } अव्य० समीप, पास।
नियराई० ना० स्त्री० समीपता, निकटता।
नियामक० ना० पु० नाविक, नियन्ता।
नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित।
नियुत० गु० दशलाख, १०००००० ।
नियोग० ना० पु० प्रेरण-आज्ञा, तथा, मुक़र्रर करना।
नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा।
नियोजित० गु० स्थापित, रक्खा।
निर० अव्य, निः।
निरखना० स० क्रि० देखना, विलोकना।
निरङ्कार० गु० निराकार।
निरङ्कुश० गु० स्वेच्छाचारी, निडर।
निरञ्जन० गु० निर्मल, रागरहित, अविद्यारहित, ना० पु० ईश्वर।

निरत॰ गु॰ प्रतिप्रीतिमय, लीन।

निरतंक॰ ना॰पु॰ नचवैया।

निरर्थ॰ गु॰ झूंठ, निःप्रयोजन, बेफ़ायदः।

निरन्त॰ गु॰ अन्तरहित, अपरम्पार, ना॰पु॰ आकाश, ईश्वर।

निरन्तर॰ अव्य॰ निरवधि, जिसमें वियोग नहीं, सत्य, अन्तरबिन।

निरक्ष॰ गु॰ द्रष्टा, देखनेवाला।

निरपराध॰ } गु॰ अपराध रहित,
निरपराधी॰ } निर्दोष।

निरम्बु॰ गु॰ जलरहित।

निरय॰ ना॰पु॰ नरक, दोज़ख़।

निरर्थक॰ गु॰ ढीला, प्रमादी, अनरीति, अर्थरहित, निष्प्रयोजन।

निरवग्रह॰ गु॰ स्वच्छन्द, स्वतन्त्र।

निरवद्य॰ गु॰ आनन्दित, अकथ्य।

निरवारण॰ ना॰पु॰ उबारक, बचाव, सुलझावट।

निरवारना॰ स॰ क्रि॰ खोलना, छोड़ाना।

निरस॰ गु॰ रसहीन, फीका, बदमज़ः।

निरस्त॰ गु॰ त्यागित, जिसका अस्त न हो।

निरस्त॰ गु॰ अस्तहीन।

निरस्य॰ गु॰ त्यागनेके योग्य, त्यागकिये।

निरा॰ गु॰ केवल, सारा, ठठ, छूछा।

निराकांक्षी॰ ना॰ पु॰ निःस्पृह, आकांक्षारहित।

निराकार॰ गु॰ आकाररहित, यथा ईश्वर।

निरादर॰ गु॰ आदररहित, अवज्ञा युत, वा अवज्ञा करनेहारा।
निराधार॰ गु॰ सहाररहित, आधारहीन।
निरामिष॰ गु॰ मांसरहित भोजन।
निरालम्ब॰ गु॰ आलम्बरहित, अवलम्बहीन।
निरालस्य॰ गु॰ आलस्यहीन, कामकाजी, मिहनती, उपायी।
निराम॰ गु॰ भरोसारहित, आशाटूटगई।
निराहार॰ गु॰ भोजनहीन, बिनकुछखाये।
निरिच्छा॰ } गु॰ इच्छारहित, बिनइच्छा, जिसको कुछ चाह न हो।
निरिच्छित॰ }
निरीश॰ गु॰ स्वामीरहित, जिसका मालिक न हो, पतिहीन। ना॰ पु॰ जो बयर्थात् ईश्वर नहीं।
निरीह॰ गु॰ चेष्टारहित अर्थात् ईश्वर।
निरीक्षण॰ ना॰ पु॰ ताक, दृष्टि।
निरुत्तर॰ गु॰ उत्तरहीन, लाजवाब।
निरुपधि॰ गु॰ निष्प्रयोजन।
निरुपम॰ } गु॰ उपमाहीन,
निरुपमा॰ } दृष्टान्तरहित।
निरुपाधि॰ गु॰ उपाधिरहित, बेखटके।
निरुपाय॰ गु॰ उपायहीन, बिना उपाय किये।
निरूप॰ गु॰ रूपहीन, निराकार।
निरूपण॰ ना॰ पु॰ दृष्टि, विचार, जवाब, विस्तारपूर्वक कथन।
निरूपित॰ गु॰ जो विस्तारपूर्वक कहागया या निर्णय किया गया, निर्धारित, स्थापित।

निरेखना० स० क्रि० विलोकना, झांकना।

निरोग० } गु० निरोग, भला,
निरोगी० } चङ्गा, रोगरहित।

निरोध० ना० पु० घेरना, गांसना।

निर्गत० गु० निकला।

निर्गता० गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली।

निर्गम० ना० पु० जहां जाय न सके, अगम।

निर्गुण० गु० गुण हीन, निकम्मा, मूर्ख।

निर्गुण्डी० ना० स्त्री० संभालू।

निर्घण्ट० ना० पु० सूचीपत्र।

निर्घात० ना० पु० वज्र, शब्द।

निर्दया० गु० निर्दया, कठोर।

निर्घोष० ना० पु० ध्वनि, शब्द।

निर्जर० ना० पु० देवता, जो बूढ़ा नहो, गु०।

निर्जन० गु० मनुष्य हीन, जन रहित।

निर्जरनदी० ना० स्त्री० श्री गङ्गा जी।

निर्जल० गु० जलहीन, सूखा, पायाब।

निर्जीव० गु० जिसमें जीव नहीं। है यथा मिट्टी पत्थर आदि, मृतक।

निर्जास० गु० सार, सिद्धान्त।

निर्झर० ना० पु० झरना।

निर्झरिणी० ना० स्त्री० नदी।

निर्णय० ना० पु० निश्चय, ठिकाना, न्याय, झगड़ा मिटाना।

निर्णीत० गु० निश्चित, निर्णय किया गया।

निर्दई० }
निर्दय० } गु० जिसमें दया
निर्दया० } नहीं है, कठोर,
निर्दयी० } बेरहम।

Digitized by Google

निर्दिष्ट॰ गु॰ जो अच्छी विधि देखागया वा निरूपित हुआ वा वर्णन हुआ।

निर्दोष॰ } गु॰ दोष हीन,
निर्दोषी॰ } अकलङ्की, अदोष।

निर्द्वन्द॰ गु॰ बिना झगड़ा, बेखटके।

निर्धन॰ गु॰ धनहीन, दरिद्री।

निर्धार॰ } ना॰ पु॰ निश्चय,
निर्धारण॰ } निर्णय।

निर्धारित॰ गु॰ निश्चित, निर्णीत।

निर्बंध॰ गु॰ बंध रहित, असम्मान, बावल्ट।

निर्बन्धु॰ गु॰ बन्धु रहित, अकेला।

निर्बल॰ गु॰ लाचार, बुड्ढा, जिसको सामर्थ्य नहीं है।

निर्बस॰ गु॰ वशरहित, असमर्थ।

निर्बीज॰ गु॰ बीज रहित, पुत्र हीन।

निर्बुद्धि॰ गु॰ बुद्धिहीन, मूर्ख।

निर्बूझ॰ गु॰ जो समझ में न आवे, मूर्ख।

निर्भय॰ गु॰ अभय, निडर।

निर्भर॰ गु॰ पूर्ण, पूरा।

निर्मम॰ गु॰ ममता रहित।

निर्मल॰ गु॰ मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ, पाकी।

निर्मलता॰ ना॰ स्त्री॰ पवित्रता, स्वच्छता, सफाई।

निर्मली॰ ना॰ पु॰ बीज विशेष जिससे पानी को स्वच्छ करते हैं।

Digitized by Google

निर्मास० ना० पु० बनावट, रचना, बनाना, कर्त्तव, सार।

निर्माल्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदितवस्तु, स्वच्छता, शुद्धता।

निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माणकियागया।

निर्मूल० गु० हीनमूल, बिना जड़।

निर्मोह० } गु० मोहरहित,
निर्मोही० } उदासी।

निर्यास० ना० पु० शिलाजीत, दृक्षकारस अर्थात् गोंद, काथ।

निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान।

निर्लज्ज० गु० लज्जा रहित, बेहया, अकोटा।

निर्लिप्त० गु० लगावहीन, जो लिप्त नहीं है।

निर्लेप० } गु० निर्मला, चिकना
निर्लोम० } नहीं वा लेशनहीं, बिनाभाग, सर्व।

निर्लोभ० गु० लोभ रहित, दाता।

निर्वन्ध० गु० छूटाहुआ।

निर्वाण० ना० पु० मोक्ष, अपवर्ग, लय, गु० वैकुण्ठवासी, मोक्षहोगया।

निर्वाणसुख० ना० मोक्ष, मुक्ति, वैकुण्ठवास।

निर्वाधा० गु० बाधा रहित, अकण्टक।

निर्वाह० गु० निबाह।

निर्वाहक० गु० निबाहकरनेहारा।

निर्विकल्प० गु० भेदरहित, अतर्क, कल्पनाहीन।

निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्व्याधि, अरोग।

निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, सानन्द, निर्वाधा।

Digitized by Google

निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्यु, आनन्द, सुखमार्ग, तरीक़, पन्थ।

निर्वैर० गु० वैरभावहीन।

निर्व्याज० गु० अचल, अस्वारथ।

निर्व्याधि० गु० व्याधिहीन, अरोग, अकण्टक।

निर्हर० ना० पु० हरनेवाला।

निलज० गु० निर्लज्ज, लज्जाहीन।

निलय० ना० पु० घर।

निवान० गु० नीचान।

निवाना० स० क्रि० नवाना।

निवार० ना० स्त्री० कोर पट्टी सूत की।

निवारक० गु० बचाने वाला, रोकने वाला।

निवारण० ना० पु० निषेध, रोक, बचाव।

निवारना० स० क्रि० रोकना, बचाना, बरजना।

निवारत० क्रि० बचावत, रोकत, बर्जत।

निवारि० क्रि० बचाय कर, रोकि, बरजि।

निवारित० गु० बचायागया, बर्जागया।

निवावना० स० क्रि० नवाना।

निवास० ना० पु० बसने का स्थान, वास, घर।

निवासी० ना० पु० बसने वाला, रहनेवाला।

निबिड़० गु० अधिक, सघन, निरवकाश।

निबुकि० अ० क्रि० झपटि कूदि।

निवृत्ति० ना० स्त्री० ठहराव, रुकावट, विश्राम, चैन।

निवेदन० ना० पु० प्रार्थना, विनती, अर्ज़।

निवेदनपत्र० ना० पु० अर्जी, विनय पत्र।

निवेदित० गु० अर्पित, विनय कियागया।

निवेशन० ना० पु० विवाह, शादी।

निशङ्क० गु० निडर, निस्सन्देह, बिन प्रयास।

निशा० ना० स्त्री० रात्रि।

निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा।

निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, संध्या, सांझ, शाम।

निशाचर० ना० पु० राक्षस, चोर, उलूकादि, चन्द्रमा आदि नक्षत्र।

निशाटन० ना० पु० निशाचर।

निशि० ना० स्त्री० निशा।

निशिचर० ना० पु० निशाचर।

निशिनाथ० ना० पु० चन्द्रमा, चांद।

निशिमुख० ना० पु० संध्या, सांझ।

निशिभानु० ना० पु० चन्द्रमा।

निशीथ० ना० पु० आधीरात।

निशीश० ना० पु० चन्द्रमा, चांद।

निश्चय० ना० पु० निर्णय, विश्वास, गु० ठीक।

निश्चल० गु० स्थिर, अचल।

निश्चित० गु० निर्णीत।

निश्चिन्त० गु० चिन्तारहित, बिना खटके।

निश्चेष्ट० गु० चेष्टारहित, मूर्छित

निश्छिद्र० गु० निर्दोष, छेद रहित।

निश्रेणी० ना० स्त्री० निसेनी, सीढ़ी, ज़ीना।

निश्श्वास० ना० पु० श्वास, माश्वाप्त।

निश्शेष० गु० अशेष, समस्त, सब।

निषङ्ग० ना० पु० तून, तरकश, मेल।

निषाद० ना० पु० गाने में पहिला स्वर, चाण्डाल, शङ्करवर्णी, केवट, मल्लाह।

निषिद्ध० गु० जोकर्त्तव्यनहीं, वर्जित।

निषिद्धता० ना० स्त्री० निवारण, कर्त्तव्य रहित, इन्कार।

निषेद० ना० पु० अदुख, दुविधा।

निषेध० ना० पु० इनकार, निवारण, कर्तव्यरहित।

निषेधित० गु० वर्जित, निवारित।

निष्क० ना० पु० हीरा, १६ द्रम्मका प्रमाण।

निष्कण्टक० ना० पु० उपाधि रहित, बेधड़क।

निष्कपट० गु० सत्य, सच्चा, छलहीन, भोला।

निष्कर्ष० ना० पु० निश्चय।

निष्कारण० गु० बिनाप्रयोजन, बेसबब।

निष्केवल० गु० एकही, सत्यकार।

निष्क्रमण० ना० पु० संस्कार विशेष।

निष्ठ० गु० स्थापित, तत्पर, उत्तम, उत्कर्ष।

निष्ठमति० ना० स्त्री० उत्तम बुद्धि, उत्तमज्ञान।

निष्ठा० ना० स्त्री० विश्वास, भरोसा।

निष्ठुर० गु० निठुर, निर्दय, कठोर, अप्रीति।

निष्ठुरता० ना० स्त्री० } कठोरता,
निष्ठुरत्व० ना० पु० } निर्दयता, निठुरता।

Digitized by Google

निष्पत्ति० ना० स्त्री० सिद्धि, समाप्ति।

निष्पन्न० गु० कृत, बना, सिद्ध।

निष्पादन० ना० पु० सम्पादन।

निष्पाप० } गु० पापरहित,
निष्पापी० } निर्दोष।

निष्प्रपञ्च० गु० छलहीन।

निष्प्रयोजन० गु० व्यर्थ, विना प्रयोजन।

निष्फल० गु० फलहीन, वृथा, बेफ़ायदह।

निस० ना० स्त्री० निशा।

निसक्त० गु० अशक्त, पौरुष-रहित।

निसङ्क० गु० निश्शङ्क।

निसङ्कट० गु० सङ्कटरहित।

निसन्धि० गु० ठोस, सन्धि-रहित।

निसरना० धा० क्रि० निकलना।

निसाँस० गु० आहभरना।

निसाँसी० गु० तङ्ग, हैरान्।

निसान० ना० पु० तूर्य्य, नकारह।

निसास० ना० पु० विश्वास।

निसि० ना० स्त्री० निशि।

निसित० गु० पैनो० तेज़, बाढ़िदार।

निसेनी० ना० स्त्री० सीढ़ी, ज़ीना।

निसोत० ना० पु० औषधि विशेष, गु० ठोस।

निस्तार० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, छुटकार।

निस्तारा० ना० पु० निपटारा।

निस्तारना० धा० क्रि० निस्ता-रकरना।

निस्तेज० गु० प्रताप हीन, तेजरहित।

निस्तोक० ना० पु० चुकौता, निपटारा।

निसन्द० ना० पु० निचोड़, हिसाब।

Digitized by Google

निस्पृह० गु० लालसाहीन।

निस्व० गु० निर्धन, दरिद्री।

निस्वना० गु० ध्वनि, शब्द।

निस्सन्देह० गु० सन्देहरहित, बेखटके।

निहङ्ग० गु० नङ्गा, अकिञ्चन।

निहत्था० गु० छूछा, अस्त्र-रहित, लूला, हाथ रहित।

निहाई० ना० स्त्री० लोहेकी वस्तु विशेष जिस पर लोहाआदिगढ़ते हैं।

निहानी० ना० स्त्री० रन्दा; कपड़े।

निहार० ना० पु० अन्धकार, कुहीरा, रामायणे यथा, [illegible] दिन-कर दुरा, हष्टि।

निहारना० स० क्रि० देखना, निहोकना, झांकना।

निहारा० स० क्रि० देखा।

निहुरना० अ० क्रि० लचना, झुकना, दबना।

निहुराना० स० क्रि० लचाना, झुकाना, दबाना।

निहोर० } ना० पु० कृपा,
निहोरा० } उपकार, विनती, फुसलाहट, खुशामद।

निक्षिप्त० गु० जो निक्षेप किया जावे, त्यागित।

निक्षेप० ना० पु० परित्याग, धरोहर।

नींद० ना० स्त्री० औंघाई, निद्रा।

नींदना० अ० क्रि० सोना, स० क्रि० मुकरना।

नींदू० ना० पु० सोवैया।

नीब० ना० पु० वृक्षविशेष, निम्ब।

नींबू० ना० पु० लीमू, फलविशेष।

नीक० गु० भला, अच्छा।

नीका० } गु० सुन्दर, भला,
नीको० } अच्छा।

Digitized by Google

नीच० गु० छोटा, कमीना, हीन, कुत्सित, निकम्मा, तले, हेठ।
नीचगामी० गु० जो नीचे जाता है, यथा जल।
नीचा० गु० ऊंचे के विरुद्ध, नशेब।
नीचाई० ना० स्त्री० छोटाई, नीचापन।
नीचे० अव्य० तले।
नीठ० गु० तुम्हारा।
नीति० ना० स्त्री० उचित, व्यवहार, रीति, क़ानून।
नीतिज्ञ० गु० धार्मिक, न्यायी।
नीद० ना० स्त्री० नींद।
नीदना० स० क्रि० नींद आना, मुँद जाना।
नीप० ना० पु० कदम्ब
नीपूर० ना० पु० [illegible]
नीबी० ना० स्त्री० [illegible] स्त्रियों [illegible] धसी है।
नीबु० ना० पु० निम्बू।
नीम० ना० पु० नींब।
नीमन० गु० निमग्न।
नीमावत० ना० स्त्री० [illegible] [illegible]
नीर० ना० पु० जल, पानी।
नीरज० ना० पु० कमल, जो जल जात है।
नीरथ० गु० निरर्थ, निष्फल।
नीरद० ना० पु० मेघ।
नीरधर० ना० पु० मेघ, बादल।
नीरस० गु० विरस, रसहीन, फीका।
नीरोग० गु० निरोग, आरोग्य।
नीरोगी० गु० चंगा, भला, रोगहीन।

नील० गु० श्यामवर्ण विशेष, काला, ना० पु० वस्तुविशेष जो गणक के अङ्कों से बनाते हैं, संख्याकार, सो खर्व, १०००००००००००० ।

नीलक० गु० नीला, ना० पु० नीलरत्न का हरित विशेष, बीजगणित में विशेष प्रमाण ।

नीलकण्ठ० ना० पु० पक्षी विशेष, मोर, अग्नि, और श्रीशङ्करजी ।

नीलगवय० ना० पु० नीलगाव, रोझ ।

नीलगाव० ना० पु० रोझ ।

नीलता० ना० स्त्री० } श्यामता,
नीलत्व० ना० पु० } कालापन ।

नीलपर्वत० ना० पु० जिसका एकभाग जो गङ्गा के दहिना है, हरिद्वार के समीप तीर्थविशेष ।

नीलपुष्पी० ना० स्त्री० विष्णुक्रान्ता, अलसी ।

नीलवल्ली० ना० स्त्री० नीलकी वल्ली ।

नीलाश्म० } ना० पु० मणि
नीलमणि० } विशेष ।

नीलरत्न० ना० पु० नीलम ।

नीललोहित० ना० पु० श्री महादेवजी ।

नीलवर्ण० गु० श्यामरङ्ग, आकाशीरङ्ग ।

नीला० गु० जो नीलरङ्ग का है ।

नीलाई० ना० स्त्री० श्यामता, नीलापन ।

नीलाण्डक० ना० पु० नील गाव, रोझ ।

नीलाथोथा० ना० पु० तूतिया ।

नीलाम० ना० पु० बिक्री, बिकाव ।

Digitized by Google

नीलाम्बर॰ ना॰ पु॰ नीलवर्ण वस्त्र, और श्रीवल-देवजी ।

नीलार्त्त॰ ना॰ पु॰ पियाबासा ।

नीलोत्पल॰ ना॰ पु॰ नील-कमल ।

नीलोपल॰ ना॰ पु॰ नीलम ।

नीवा॰ ना॰ पु॰ सुनाहट, मन्दाई ।

नीसारना॰ स॰ क्रि॰ निसा-रना, निकालना ।

नीहार॰ ना॰ पु॰ शिशिर, ओस, कुहिरा ।

नूल॰ } गु॰ नया, नवीन ।
नूतन॰
नूत्न॰

नूधा॰ ना॰ पु॰ तमाकू विशेष ।

नून॰ ना॰ पु॰ लोन ।

नूनी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटे बालक का लिङ्ग ।

नूपुर॰ ना॰ पु॰ स्त्रियों के पैर का गहना अर्थात् बिछुआ वा नेवर वा पायजेब ।

नृग॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष जि-सको श्रीकृष्णचन्द्र ने सरट तन से उद्धार किया था ।

नृत्य॰ ना॰ पु॰ नाच, नाचना ।

नृत्यक॰ } पु॰ गु॰ नाच-
नृत्यकारी॰ } नेवाला ।

नृदेव॰ }
नृदेवता॰ } ना॰ पु॰ राजा,
नृप॰ } बादशाह ।
नृपति॰ }
नृपाल॰ }

नृशंसी॰ गु॰ दुष्ट, कुवासी ।

नृसिंह॰ ना॰ पु॰ चौथा विष्णु का अवतार, और मनु-ष्यों का शिरोमणि ।

Digitized by Google

ने ० अव्य० सकर्मक क्रिया के भूतकाल में कर्त्ता के अन्त में यह चिह्न आता है, यथा, उसने मारा।

नेई ० ना० स्त्री० नींव, दीवार की भीति की जड़।

नेक ० }
नेकु ० } गु० तनिक, अल्प, थोड़ा।

नेग ० ना० पु० विवाह में जो दान दिया जाता है, अथवा जो नेगी मांगते हैं वा जो पटवारी गांव में पाता है।

नेटा ० ना० पु० सेंटा, रेंट।

नेठना ० क्रि० [illegible], [illegible], कायम।

नेतक ० ना० पु० नड़कुल।

नेता ० ना० पु० नायक, ईश्वर।

नेति ० अव्य० न इति, नहीं।

नेती ० ना० स्त्री० रस्सी जो किवाड़ी में बांधते हैं, सूत जो नथने में डालकर मुख में निकालकर नाक को स्वच्छ करते हैं, उसका नाम।

नेम ० ना० पु० नियम, संयम, प्रण, शोच।

नेमी ० गु० संयमी, नियमी, प्रणी।

नेरे ० अव्य० निकट।

नेव ० ना० स्त्री० भीति की जड़, अव्य० [illegible]।

नेवतना ० स० क्रि० न्योता देना, भोजन के लिये किसी को बुलाना।

नेवता ० ना० पु० बुलाना, निमन्त्रण।

नेवताना ० स० क्रि० न्योता दिलाना।

नेवर ० ना० पु० घोड़े के पांव का रोग विशेष, भूषण विशेष।

Digitized by Google

नैगमेय ॰ ना॰ पु॰ अग्निकेतु
नैमत्ता ॰ विषेले औ सांप का बेटी होता है ।
नेह ॰ ना॰ पु॰ स्नेह, प्रीति, तेल ।
नेही ॰ पु॰ स्नेही, ना॰ पु॰ मित्र ।
नेत्र ॰ ना॰ पु॰ नयन, आंख, मृगकस्तूरी, प्राण ।
नेत्रपुत्तलिका ॰ ना॰ स्त्री॰ आंख की पुतली ।
नेवलात ॰ ना॰ पु॰ कम्बुका ।
नेत्राम्बु ॰ ना॰ पु॰ आंसू ।
नेत्रनेयमना ॰ ना॰ स्त्री॰ बादाम, आंखों की ववर्ना ।
नैर्ऋत्य ॰ ना॰ पु॰ पश्चिम और दक्षिण का कोण, राक्षस ।
नैकाठ्य ॰ ना॰ पु॰ निकठता ।
नैक ॰ गु॰ थोड़ा, अल्प ।
नैजाना ॰ अ॰ क्रि॰ झुकना, निकलना ।
नैना ॰ ना॰ पु॰ नैन, पनघा ।

नैगमक ॰ ना॰ पु॰ अंशा॰ इष्ट विषेय, नीति का प्रतिपाद्य ।
नैपाली ॰ ना॰ पु॰ मनशिल, नैपालवासी ।
नैपुण्य ॰ ना॰ निपुण ॰ ।
नैपुण्य ॰ ना॰ पु॰ निपुणता ।
नैमित्तिक ॰ पु॰ गुनकी, निमित्तका ।
नैमित्तिकदान ॰ ना॰ पु॰ समयभाव देना ।
नैया ॰ ना॰ स्त्री॰ नावछोटी, खेवट, डांडी ।
नैयायिक ॰ ना॰ पु॰ न्यायशास्त्र का ज्ञाता, तार्किक ।
नैर्मल्य ॰ ना॰ पु॰ निर्मलता ।
नैवेद्य ॰ ना॰ पु॰ देवता के भोजन की सामग्री, षड् रस ।
नैष्ठिक ॰ गु॰ ब्रह्मचारी, निष्ठावान
नैहर ॰ ना॰ पु॰ पीहर, मैका

नो० सब्य० भर्ती।

नोखा० } गु० अनूठा, अजायब।
नोखो० }

नौच०ना० पु० बकोट, चुटकी।

नोचना० स० क्रि० बकोटना, चुटकीलेना।

नोन० ना० पु० लोन।

नोना० स० क्रि० दुहने केसमय गायके पैरबांधना, ना० पु० सीताफलविशेष।

नोनापानी० ना० पु० लव-णाम्बु, समुद्र्काजल।

नोनिया० ना० पु० लोनिया।

नोय० क्रि० दुहतेसमय गायके पांवबांधना।

नौका० ना० स्त्री० नाव।

नौखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौखण्ड।

नौगरी० ना० स्त्री० नवगिरी।

नौछावर० ना० पु० निछावर।

नौढ़ना० स० क्रि० झुकना, नि-छुरना, आधीनहोना।

नौढ़ाना० स० क्रि० झुकाना, निछुराना।

नौतना० स० क्रि० नेवतना।

नौता० ना० पु० नेवता।

नौमासा० ना० पु० गर्भसेनवें मासका उत्सव।

नौमि० क्रि० नमस्कारकरताहूं।

नौमी० ना० स्त्री० नवमी, नवमी-तिथि।

नौरतन० ना० पु० नवरत्न।

नौल० ना० पु० नवल।

नौसादर० ना० पु० औषध विशेष।

न्यक्कार० ना० पु० कुत्सा।

न्यग्रोध० ना० पु० बरगदकावृक्ष।

न्यस्त० गु० सौंपाभया, सौंपित।

न्याय० ना० पु० धर्म, विचार, तर्कशास्त्रविशेष वगैरह।

न्यायक० ना० पु० न्यायकरनेहारा।

न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र।

न्यायी० ना० पु० न्यायज्ञ, न्यायशास्त्र का जाननेहारा, न्यायज्ञ।

न्यार० ना० पु० चारा।

न्यारा० गु० अलग, निराला, अनूठा।

न्यारिया० गु० सचेत, चोकस।

न्यून० गु० छोटा, घाट, हीन, कम।

न्यूनकोण० ना० पु० छोटाकोना।

न्यूनता० ना० स्त्री० घटती,

न्यूनत्व० ना० पु० कमी।

न्यूनवय० गु० कमउमर।

न्यूनाधिक० ना० पु० छोटाबड़ा।

न्यौतना० स० क्रि० नेवतना।

न्यौता० ना० पु० नेवता।

न्यौताना० स० क्रि० नेवताना।

न्यौला० ना० पु० जन्तुविशेष

न्यस्तभट्टी० ना० स्त्री० नि[illegible]

[प]

पकड़० ना० स्त्री० ग्रहण [illegible] गिरिफ्त।

पकड़ना० स० क्रि० गोहना, रोकना, गहना, ग्रहण करना, धरलाना।

पकड़ाना० स० क्रि० पकड़वाना, सौंपना, गहाना

पकना० अ० क्रि० रंधना, प[illegible] काहोना, सीझना।

पकवाई० ना० स्त्री० पकानेका काम वा पैसा।

पकवान० ना० पु० पाक जो घी में पकायागया, यथा पूरी, समोसा आदि मिठाई।

पकवाना० स० क्रि० रंधाना, पका-कराना, चुराना।